मुसलमानाने आलम के लिए एक आला तरीन
इस्लामी दस्तूरुल— अमल
यानी
मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत मुजद्दिद दीन व मिल्लत
रज़िअल्लाहु तआला अन्हु

मोसम्मा बनाम तारीखी

अल' मल्फ़ूज़

1338 हिजरी हिस्सा सोम

लेखक
मुफ़्ती [illegible] मौलाना
मुस्तफा रज़ा [illegible] कुद्दिसा सिर्रुहू

RAZVI KITAB GHAR
प्रकाशक
रज़वी किताब घर दिल्ली-६

तमाम भाईयो को सलाम किताबे स्केन करके पीडिएफ में आप तक पहुँचाने के लिए इस फक़ीर को अपनी दुआओ मे खास तौर पर याद रखे।

दुआओ का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

غلام اعلیٰ حضرت

بسم الله الرحمن الرحيم

मुसलमानाने आलम के लिए एक आला तरीन

इस्लामी दस्तूरुल-अमल

यानी

मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत

रज़ि अल्लाहु अन्हु

मुसम्मा बनाम तारीख़ी

अल-मल्फ़ूज़

1338 हिजरी

हिस्सा अव्वल

लेखक

शहज़ादए आला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी कुद्देसे सिर्रुहू

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524

नाम किताव	:	मुसम्मा बनाम तारीख़ी अल-मल्फ़ूज़
लेखक	:	मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी कुद्देसे सिर्रहू
वइहतमाम	:	हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी
कम्पोज़िंग	:	रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6
प्रूफ़-रीडिंग	:	मंज़ूरुल-हक़ जलाल निज़ामी
हिन्दी एडीशन	:	पहली वार 2013
प्रकाशक	:	रज़वी किताव घर, दिल्ली-6
पेज	:	416
तादाद	:	1100
क़ीमत	:	

फेहरिस्त मज़ामीन

उनवानात सफ़ा

उनवानात सफ़ा

उनवानात सफ़ा

उनवानात सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

उनवानात सफ़ा

अल-मल्फ़ूज़ (हिस्सा दोम)

उनवानात सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

अल-मल्फ़ूज़ (हिस्सा सोम)

उनवानात सफ़ा

उनवानात सफ़ा

अल-मल्फ़ूज़ (हिस्सा चहारुम)

उनवानात सफ़ा

उनवानात सफ़ा

उनवानात सफ़ा

उनवानात सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

उनवानात सफ़ा

उनवानात सफ़ा

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

अल-मल्फ़ूज़ और उसका मक़ाम व मरतबा

अज़ : मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी, एडीटर सुन्नी दुनिया, बरैली

हिन्दुस्तान में मल्फ़ूज़ात की तरतीब व तदवीन की तारीख़ निहायत अहम और दिलचस्प है। अह्दे उस्ता के फ़ारसी अदब का गिरां क़द्र सरमाया उन मल्फ़ूज़ात की शक्ल में महफ़ूज़ है। नीज़ अरबी में भी मल्फ़ूज़ात का सिलसिला शुरू हुआ है मगर ज़रूर यह सिलसिला उर्दू फ़ारसी में ज़्यादा अख़्तियार किया गया।

मल्फ़ूज़ात के सिलसिला में बीसों किताबें फारसी, उर्दू में शाया हो चुकी हैं, उन्हें यूं समझना चाहिए कि जिस तरह क़दीम ज़माने में मुख़्तलिफ़ लोग किताबत या रिवायत करते थे इसी तरह फ़ारसी उर्दू में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल, हिकायात को सुनकर नक़ल करने का नाम मल्फ़ूज़ात पड़ गया, उन मल्फ़ूज़ात की सेहत ज़्यादा तर नाक़िल की सक़ाहत पर मबनी होती है। मल्फ़ूज़ात की बहुत सी क़िस्में की जा सकती हैं अब तक उमूमन तसव्वुफ़ व मज़्हब के सिलसिले में मल्फ़ूज़ात लिखे गये हैं।

इमाम अहमद रज़ा बरैलवी के अल-मल्फ़ूज़ की नौइयत अगरचे मल्फ़ूज़ात की है लेकिन इसमें वाक़ेआत भी हैं और हिकायात व रिवायात भी, ज़िया कुरआन भी है और बहारे हदीस भी। मारिफ़त की झलक भी है और हक़ीक़त की ख़ामोश बयानी भी, मुजाहिदात व रियाज़ात भी हैं और मसाइले फ़क़ीहात भी, रुमूज़ व नेकात भी हैं और अमली ज़ख़ाइर भी बहरहाल हर जुमल-ए-मल्फ़ूज़ात व इरशादात इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी को कई बड़ी क़िस्मों में तक़सीम किया जा सकता है।

हिन्दुस्तान में मल्फ़ूज़ नवेसी की इब्तिदा हज़रत अमीर हसन अल्लामा संजरी के मरतबा मल्फ़ूज़ात हज़रत शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया कुद्दिसा सिर्रुहू मौसूम बेही फ़वाइदुल-फ़ुवाद से होती है, साहिबे सियरुल-औलिया ने लिखा है कि -

दीन व दुनिया के फ़ख़्र व मुबाहात, ख़ैर व बरकत की ख़ातिर हज़रत अमीर ख़ुसरू अलैहिर्रहमा अपनी तमाम तसानीफ़ इस मल्फ़ूज़ के बदले देने के लिए आमादा थे। शैख़ुल-औलिया हज़रत निज़ामुद्दीन के

रूहानी फ़ैज़ के तसर्रुफ़ और बरकत की वजह से हिन्दुस्तान की मुख़्तलिफ़ ख़ानक़ाहों में मल्फ़ूज़ात नवेसी का आग़ाज़ हो गया।

मल्फ़ूज़ात की हैसियत एक सवानेह और बिखरे हुए पारों के मानिन्द होती है। इसमें किसी अज़ीम बुज़ुर्ग के सवानेह व अज़्कार, तालीमात व नज़्रियात, पन्द व नसाइह और इल्मी जवाहिर पारों को जमा कर दिया जाता है। ऐसी किताब की तरतीब व तदवीन में दो शख़्सियतें कारफरमा होती हैं जिनके अक़्वाल व मवाइज़ होते हैं, वह उन्हें मुरत्तब नहीं करते बल्कि फ़ैज़ याफ़्ता तलामिज़ा, सोहबत याफ़्ता अख़्लाफ़ अह्ले इरादत और हाज़िर बाश जो कुछ देखते और सुनते हैं ज़ब्त तहरीर में लाए जाते हैं।

मल्फ़ूज़ात की तरतीब व तदवीन में इरादत व अक़ीदत के नेक और सआदतमन्द हाथों ने बड़ी ख़िदमात अंजाम दी हैं। मल्फ़ूज़ात के जामे हज़रात ने अपने मुर्शिद के अक़्वाल व गुफ़्तार, तालीमात व मवाइज़ को जिस तरह सुना उसी तरह महफ़ूज़ रखने और क़लम बन्द करने की सई बलीग़ की। इस एहतियात से यह फ़ाइदा हुआ कि वह अल्फ़ाज़ व तग़ैयुरात महफ़ूज़ रह गये जो उन बुज़ुर्गों की ज़बाने फ़ैज़े तरजमान से गाहे बगाहे सादिर होते रहते थे। वह हज़रात अपने हल्क़-ए-असर में अपनी तालीमात व नज़्रियात को आम से आम तर करने के लिए मवाइज़ कहते। अह्ले इरादत के सवालात पर ऐसे-ऐसे जवाबात देते जो रुमूज़ व नेकात पर मबनी होते। और उन हज़रात के अक़्वाल व गुफ़्तार से ऐसे ला यनहल मसाइल हल हो जाते जिसका वहम व गुमान भी न होता था, वह मशाइख़ कोई बात कहते तो शरीअत ही की रौशनी में कहते। चलते तो उस्व-ए-हसना को पेशे नज़र रखते। किसी से मह्वे गुफ़्तार होते तो फूल की तरह उनके अल्फ़ाज़ को महफ़ूज़ कर लिया जाता।

वह अपने मोअ्तक़ेदीन को तालीम व तर्बियत देते तो एक किताब हो जाती। अगर मुजाहिदात व रियाज़ात कराते तो बज़्मे सहाबा की याद ताज़ा हो जाती। हल्क़-ए-ज़िक्र करते तो चरिन्द व परिन्द समाअत के लिए नीचे आ जाते। मवाइज़े हसना बयान करते तो लोगों के संग दिल मोम की तरह पिघल जाते.........और उन पर रिक़्क़त तारी हो जाती, ज़ार व क़तार आह व बुका होने लगती तो फिर एक अजीब सा आलम हो जाता। उनके फ़ुक़रात लोगों के ज़हन व दिमाग़ पर इस तरह असर

गुर्जी होते कि हर वक़्त ज़िक्रे इलाही और मारिफ़ते हक़ में गुम रहते.... ....वह ज़बान पारे यानी मल्फ़ूज़ात हमारी ज़बान के इर्तिक़ाई पहलुओं को समझने के लिए बड़ी मदद देते हैं.......लिसानी नुक़्त-ए-नज़र से उनका मुतालेआ काफी दिलचस्प है।

रूहानी, ईमानी, ईक़ानी और अख़्लाक़ी तालीम के सलसबील व कौसर मल्फ़ूज़ात में अह्ले सुलूक व तसव्वुफ़ को बातनी ख़ूबियों से मुत्तसिफ़ होने के लिए..........तज़्किय-ए-नफ़्स और तस्फ़िय-ए-बातिन की तालीम दी गई है। मल्फ़ूज़ात में ज़ंग आलूद दिलों को साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ किया गया है.......पज़्मुर्दा कुलूब को ज़िन्दगी बख़्शी गई है......... मल्फ़ूज़ात ने *इहदिनस्सिरातल-मुस्तक़ीम* की तफ़्सीर बयान की है....... और *कुल हुवल्लाहु अहद* उनका निशाने मंज़िल है.........और अह्ले दुनिया को तल्क़ीन की गई है कि वह अपने आप में उम्दा सिफ़ात पैदा करें अस्लाफ़ अख़्लाफ़ के मनाहिज को न छोड़ें.........अख़्लाक़े हसना के पैकर बन जाएं......रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरामीन को दिल व जान से तस्लीम करें। कुरआन रूहे ईमान है..... अहादीस मताअ़े हयात है........इनकी तालीमात को फ़रामोश न करें। बुज़ुर्गों की तमाम ज़िन्दगी का नमूना उनके सामने है।

मल्फ़ूज़ात के मुताला से नेक आमाल का जज़्बा और ख़्वाहिश पैदा होती है.......तज़्किय-ए-नफ़्स हासिल होता है......तस्फ़िय-ए-बातिन मिलता है। अपने बदले हुए किरदार का सही पता चलता है कि वह बस ज़िक्रे इलाही में हमा वक़्त सरगरदाँ रहते थे एक ग़ायर मुताला से अन्दाज़ा होता है कि हमारे बुज़ुर्ग अपने आमाल व अज़्कार से इंसान के ज़ाहिरी आमाल की इस्लाह किस तरह करना चाहते थे..........बुराइयों को किस तरह नीस्त व नाबूद करना चाहते थे, वह बुराई के सोते ख़ुश्क कर देना चाहते थे....अच्छे अख़्लाक़ उम्दा तौर तरीक़ा को इंसान के अन्दर उजागर करना चाहते थे, मल्फ़ूज़ात की ख़ामोश रवानी में आपको इर्तिक़ाए रूहानी का पाक रास्ता और बुलन्द ज़ीना मिलेगा।

मल्फ़ूज़ात में बहुत से तमद्दुनी व तहज़ीबी पहलुओं पर रौशनी पड़ती है....तारीख़ के औराक़ में वाक़ेआत शहान के रुक़्आ मिलते हैं, मल्फ़ूज़ात में अवाम की ज़िन्दगी की सच्ची तस्वीरें मिलती हैं, मल्फ़ूज़ात में फरमां रवाओं का हल्का फुल्का ज़िक्र होता है......मल्फ़ूज़ात में तारीख़ी इरशादात

पाए जाते हैं। इन वाक़ेआत में तारीख़ों व सना के हवाले नहीं होते मगर वाक़ेआत के ततावुक़ और दीगर मुतअल्लिक़ात में नज़र रखने से तारीख़ सेहत के साथ मालूम की जा सकती है।

मल्फ़ूज़ात की अदबी अहमियत मुसल्लम है। आम तौर से मल्फ़ूज़ात की ज़बान आम और सलीस होती है.......मल्फ़ूज़ात में बुज़ुर्गों के ख़ूराक़ व करामात का ज़िक्र भी होता है......वह बातें आम ज़हन की रसाई से बालातर होती हैं, यह अह्ले बातिन के मुआमलात में तसव्वुफ़ की खुसूसी शान बल्कि उसकी रूह है।

इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिस सिर्रुहू की शख़्सियत एक हमागीर शख़्सियत है......जिन्होंने अपनी छोटी बड़ी तक़रीबन एक हज़ार किताबों के ज़रिया हिमायते हक़ का गिरांक़द्र फ़रीज़ा अंजाम दिया.......और रिफ़अत व अज़्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुतअल्लिक़ जिनके ईमान अफ़रोज़ तरानों की गूंज आज भी एशिया व अफ़्रीक़ा और यूरोप और अमरीका के हर उस शहर में सुनाई देती है जहाँ उर्दू जानने वाले मुसलमान थोड़ी तादाद में भी मौजूद हैं। इमाम अहमद रज़ा बरैलवी के उलूम व मआ़रिफ़ का एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा अल-मलफ़ूज़ भी है और उनके इरशादात और कलिमाते तैयबात पर मुश्तमिल है। अगरचे यह इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की तस्नीफ़ नहीं बल्कि उनकी ज़बाने मुबारक से निकले हुए जवाहिर पारों और ज़ख़ाइर इल्म व हिक्मत का एक गंज गिरां माया है और यह एहसान है मुफ़्ती आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू का उन्होंने इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की इल्मी मजालिस के इन ख़ज़ाइन व ज़ख़ाइर को क़लम बन्द फरमाया......और मलफ़ूज़ के नाम से चार जिल्दों में उन्हें शाए कर दिया।

अल-मलफ़ूज़ के मुक़द्दमा में हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुद्दिसा सिर्रुहू ने उसके जल्वहाए सबब तालीफ़ पर रौशनी डालते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू की मज्लिसे इल्म व हिक्मत और फ़ैज़ व बरकत का जो नक़्शा खींचा है वह आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल है हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म तहरीर फरमाते हैं।

यहाँ जो देखा कि शरीअ़त व तरीक़त के वह बारीक मसाइल जिन में मुद्दतों ग़ौर व ख़ौज़ कामिल के बाद भी हमारी क्या बिसात बड़े-बड़े

सर टेक कर रह जाएं फ़िक्र करते-करते थक जाएं और हरगिज़ न समझें और साफ़ ला अदरी का दम भरें, वह यहाँ एक फ़िक़रे में ऐसे साफ़ फरमा देते हैं कि हर शख़्स समझ ले कि गोया अश्काल ही न था।

और वह दक़ाइक़ व नुकात मज़्हव व मिल्लत जो एक चीस्तां और एक मुअम्मा हों जिन का हल दुश्वार से दुश्वार हो, वह यहाँ मिन्टों में हल फरमा दिए जाते हैं तो ख़्याल हुआ कि यह जवाहिरे आलिया, और जवाहिरे ग़ालिया यूं ही विखरे रहे और उन्हें सिल्क तहरीर में न लाया गया, तो अन्देशा है कि वह कुछ अरसा के वाद ज़ाए हो जाएं फिर यह कि इन मल्फ़ूज़ाते आलिया से या तो खुद मुतमत्तअ् होते या ज़्यादा से ज़्यादा उनका नफ़अ् हाज़िर वा शाने दरवार आली ही को पहुंचता, वाक़ी और मुसलमानों को महरूम रखना ठीक नहीं, वल्कि उनका नफ़अ् जिस क़द्र आम होता है उतना ही भला, लिहाज़ा जिस तरह हो यह तफ़रीक़ जमा हो मगर यह काम मुझ से वेवेज़ाअत और अदीमुल-फ़ुरसत की विसात से कहीं सिवा था और गोया चादर से ज़्यादा पाँव फैलाना था इसलिए वार-वार हिम्मत करता और वैठ जाता, मेरी हालत उस वक़्त उस शख़्स की सी थी जो कहीं जाने के इरादे से खड़ा हो मगर मुज़बज़व हो, एक क़दम आगे डालता और दूसरा पीछे हटा लेता हो, मगर दिल जो वेचैन था किसी तरह क़रार न लेता था आख़िर *अस्सईयु मिन्नी वल-इतमाम मिनल्लाह* कहता कमर हिम्मत चुस्त करता और *हस्बुनल्लाहु व नेअ्मल-वकील* पढ़ता उठा और उन जवाहिरे नफ़ीसा का एक खुशनुमा हार तैयार करना शुरू किया और मैं अपने रव अज़्ज़ा व जल के करम से उम्मीद रखता हूँ कि वह इस हार ही को मेरी जीत का ज़रिया वनाए। (अल-मल्फ़ूज़ जिल्द १, स० ५, हवीवुल-मुतावेअ् दिल्ली)

इमाम अहमद रज़ा वरैलवी के इन इरशादात व अक़्वाल को जमा करने का यह सिलसिला तसलसुल के साथ जारी नहीं था। हज़रत मुफ़्ती आज़म वरैलवी की दूसरी मस्रूफ़ियात के वाइस अक्सर नाग़े हो जाते थे। हज़रत मुफ़्ती आज़म अगर एक तरफ़ रिज़वी दारुल-इफ़्ता के मुफ़्ती थे। तो दूसरी जानिव इमाम अहमद रज़ा वरैलवी के मुईने रास्त थे। अगर एक तरफ़ तस्नीफ़ व तालीफ़ की सरगरमियाँ थीं तो दूसरी जानिव दर्स व तद्रीस का वाज़ार सर गर्म था अगर एक तरफ़ तवलीग़े दीन मतीन में मसरूफ़ थे तो दूसरी जानिव गुस्ताख़ाने रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम के लिए वरहना शमशीर लिए हुए नवर्द आज़मा थे। अगर एक तरफ़ तहरीक शुधी के इंसिदाद के लिए सरगर्दां थे.......तो दूसरी जानिव जमाअत रज़ाए मुस्तफ़ा के सरगरम रुक्न थे.........इन सारी ज़िम्मेदारियों ने मुफ़्ती-ए-आज़म कुद्दिसा सिर्रुहू को तसलसुल के साथ जमा व तरतीव का मौक़ा न दिया, वरना अल-मलफ़ूज़ की सिर्फ़ चार ही जिल्दें न होतीं वल्कि एक अज़ीम दफ़्तर होता जैसा कि हुज़ूर मुफ़्ती आज़म ने अपने मुक़द्दमा में उसकी सराहत फरमाई है........रक़्म तराज़ हैं :

"मैंने चाहा तो यह था कि रोज़ाना के मल्फ़ूज़ात जमा करूं मगर मेरी वेफ़ुर्सती आड़े आई और मैं अपने इस आली मक़सद में कामयाव न हो सका ग़रज़ जितना और जो कुछ मुझ से हो सका मैंने किया आगे क़ुवूल व अज्र का अपने मौला तआला से साइल हूं।" (स० ६)

हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म के दिल में यह ख़्याल आया कि वड़े अफ़सोस की वात है कि यह हालाते अजीवा और मक़ामाते ग़रीवा अन लिखे रह जाएं.......और यह आली मिक़्दार असरार कुछ मुद्दत गुमनाम हो जाएं. और यह मक्तूवात व मल्फ़ूज़ात जो हर एक इल्क़ाए रहमानी से दिल व जान से निकलते हैं हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म का यह एहसान है कि इमाम अहमद रज़ा के इरशादात को उम्मते मुस्लेमा की मज्लिस का तज़्किरा वनाया........इसलिए कि मुहिब्वों में यह वात क़ुदरती तौर पर पाई जाती है कि उन्हें अपने आक़ा और पीर व मुर्शिद की वातें सुनने की ज़्यादा रग़वत होती है। और अपनी जुदाई की ज़्यादती और अपने दरजात की तरक़्क़ी ख़्याल करते हैं।

हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म वरैलवी का यह वहुत वड़ा और लाज़वाल कारनामा है कि उन्होंने हम महजूरों को इमाम अहमद रज़ा कुद्दिसा सिर्रुहू की मज्लिस में विठा दिया। मुज़्तरिवे नफ़्स को इत्मीनान हासिल हुआ और क़ल्वे मुज़्तरिव को चैन आया। इसलिए कि जुदाई की तीर के ज़ख़्म के लिए गुफ़्तगू से वढ़ कर कोई अच्छा मरहम नहीं.......और जुदाई की चिंगारी के सोज़िश को कम करने का इलाज इस जुस्तजू से वढ़ कर और कोई अच्छा नहीं हो सकता।

जामे अल-मलफ़ूज़ मुफ़्ती आज़म कुद्दिसा सिर्रुहू का अन्दाज़े वयान यह है कि वह मज्लिस में वैठने वाले किसी साइल के सवाल को अर्ज़

और इमाम अहमद रज़ा के जवाब को इरशाद से तावीर करते हैं और चूंकि सवालात के दर्मियान फ़न्नी तरतीव नहीं है इसलिए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के इरशादात इल्म व फ़न के बेशुमार अस्नाफ़ पर मुश्तमिल हैं और रंगा रंग फूलों की पंखुड़ियों की तरह ४०० सफ़हात पर बिखरे हुए हैं.......अल-मलफ़ूज़ को इसलिए भी अहमियत हासिल है कि इसमें सूफ़ियाए किराम का तसव्वुफ़ भी मिलेगा और उलमा-ए-इज़ाम का ततब्बुअ् भी.....मुअर्रेख़ीन की तहक़ीक़ भी मिलेगी और सैय्याहों के अस्फ़ार भी......फ़ुक़्हा की फ़ुक़ाहत भी मिलेगी और मुहद्देसीन की हदीसे बयानी भी.......मुस्लेहीन का किरदार भी मिलेगा और मुवल्लेग़ीन के कारनामे भी। दूसरे मल्फ़ूज़ात से अल-मलफ़ूज़ की नौइयत इसलिए भी जुदागाना है कि मुफ़्ती-ए-आज़म ने ऐसे उस्लूब में उसको तरतीव दिया है कि मुताला करते वक़्त कुछ ऐसा महसूस होता है कि सवाल साइल कर रहा है और इमाम अहमद रज़ा बरैलवी उसका जवाब दे रहे हैं गोया कि क़ारी अपने आपको इमाम अहमद रज़ा की मज्लिस में बैठा हुआ महसूस करता है।

मारूफ़ मुहक़्क़िक़ डॉक्टर मुख़्तारुद्दीन अहमद आरज़ू (बिन मौलाना ज़फ़रुद्दीन रिज़वी बिहारी) अल-मलफ़ूज़ का तआरुफ़ कराते हुए इज़्हारे ख़्याल फरमाते हैं।

"उर्दू में शाए शुदह मशहूर मल्फ़ूज़ात को देख कर यह अन्दाज़ा होता है कि चौदहवीं सदी के मल्फ़ूज़ाती अदव में बहुत अहम हैसियत मुजद्दिदे माइता हाज़िरा मुवैदे मिल्लते ताहिरा आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती रहमतुल्लाह अलैहि के मल्फ़ूज़ात की है जिन्हें मुफ़्ती-ए-आज़म हज़रत मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी बरकाती बरैलवी नूरी ने १३३८ हि० में मुरत्तब फरमाया, यह मल्फ़ूज़ात उस जलीलुल-क़द्र आलिम के हैं जो तफ़्सीर, हदीस, उसूले हदीस, फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह, अक़ाइद व कलाम, सर्फ़ व नह्व, मआनी व बयान व बदीअ्, मन्तिक़ व फ़ल्सफ़ा, तक्सीर व हैयत व तौक़ियत, हिसाब व हिन्दसा, तसव्वुफ़ व सुलूक अदब व अख़्लाक़ सैर व तारीख़, जब्र व मुक़ाबला, ज़ीजात व मुरब्बेआत वग़ैरह ५० पचास उलूम व फुनून के माहिर थे। ऐसी जामे हस्ती हमें इस अहद में कोई और नहीं मिलती यही वजह है कि यह मल्फ़ूज़ात दो साल के कुछ महीनों ही के क़लम बन्द

किए जा सके। अगर ८, १० साल के भी मल्फ़ूज़ात मुरत्तव किए जाते तो उस में कोई शुबह नहीं कि उसकी जिल्दें उलूम व फुनून की मुख़्तसर सी दाइरतुल-मआरिफ़ बन जातीं।" (माहनामा जहाने रज़ा लाहौर, स० ३६, सितम्बर १९९४ ई०)

गोया कि मज़्कूरा उलूम व फुनून का माहिर व शनावर और कामिले इद्राक रखने वाले के मल्फ़ूज़ात में उन उलूम व फुनून की झलक का होना लअबदी अमर है अल-मलफ़ूज़ के मुताला करने वालों से यह बात मख़्फ़ी नहीं कि इसमें उलूम की मौजें मारती हुई लहरें कामिल तौर पर मौजूद हैं। यह मल्फ़ूज़ात उस मुक़द्दस ज़ाते गिरामी के हैं जिस ने चुटकियों में ला यांख़िल मसाइल हल किए। इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की सूरत उनकी सीरत उनकी गुफ़्तार, उनकी परवरिश, उनकी हर अदा, उनका हर किरदार, असरारे परवरदिगार का एक बेहतरीन मुरक़्क़अ्, और बोलती हुई तस्वीर है, मुरत्तिव अल-मलफ़ूज़ का यह जज़्बा था कि मल्फ़ूज़ात का सिलसिला तादेर चलता रहे, उनको इस बात का भी एहसास था कि आइन्दा की जदीद नस्लों की तामीर व तशकील निहायत ही ज़रूरी है, और नई नस्लों की ज़हन साज़ी उसी वक़्त मुम्किन है जब वह अपने अस्लाफ़ के अहवाल व अफ़आल का गहराई से मुताला करें।

और उनके क़ल्ब व जिगर में अस्लाफ़ व अख़्लाफ़ के मल्फ़ूज़ात व कारनामों को जागुज़ीं कर दिया जाए......उसकी अहमियत व इफ़ादीयत यूं उजागर करते हैं :

इसीलिए अस्लाफ़े किराम रहमतुल्लाहि अलैहिम ने ऐसे अन्फ़ासे कुदसीया के हालाते मुबारका, व मकातीबे तैयबा, व मल्फ़ूज़ाते ताहिरा जमा फ़रमाए या उसका इज़्न दिया, कि उनका नफ़अ् क़यामत तक आम हो जाए और सिर्फ़ हम ही मुस्तफ़ीद व महफ़ूज़ न हों बल्कि हमारी आइन्दा नस्लें भी फ़ाइदा उठाएं और फिर वह भी यूं ही अपने अख़्लाफ़ के लिए पन्द व नसाइह व वसाया अज़्कार इश्क़ व मुहब्बत मसाइले शरीअ़त व तरीक़त छोड़ जाएं, और यह सिलसिला यूं ही क़यामत तक जारी रहे।"

अल-मल्फ़ूज़ के मुताला से मालूम होता है कि इमाम अहमद रज़ा

बरैलवी को मुख़्तलिफ़ उलूम पर कैसा तबह्हुर हासिल था......हाज़िरीने मज्लिस में किसी ने कोई सवाल पूछा। आपने फौरन जवाब दिया, और ऐसा जवाब कि साइल मुत्मइन हो गया उसके तमाम अश्काल दूर हो गये.....हाफ़िज़ा ऐसा ग़ज़ब का था कि मालूम होता था कि सारे उलूम मुस्तहज़र हैं। इस्तिदलाल की ज़रूरत पड़ी तो कुतुबे मुतदावला की मारूफ़ किताबों के हवाला जात और इबारतें सुना देते थे.......फाजिर को बुरा कहने के बारे में एक हदीस शरीफ़ का ज़िक्र आया तो बेग़ैर मुराजिअते कुतुब के इरशाद फ़रमाया, यह हदीस इमाम अबू बकर इब्ने अबी अदुनिया ने किताब ज़म्मुल-ग़ीबा, इमाम तिर्मिज़ी ने नवादिरुल-उसूल, हाकिम ने किताबुल-कुनी, शीराज़ी ने किताबुल-अंक़ाब, इब्ने अदी ने कामिल, तबरानी ने मुअ्जम कबीर, बैहक़ी ने सुनने कुबरा, ख़तीब ने तारीख़ में हज़रत माविया कुसैरी रज़ि अल्लाहु अन्हु, और ख़तीब ने रुवाते मालिक में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की. अल-मल्फ़ूज़ में इस तरह की बहुत सी मिसालें मौजूद हैं।

डॉक्टर मुख़्तारुद्दीन अहमद (अलीगढ़) ने इमाम अहमद रज़ा बरैलवी, और मुफ़्ती आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी के कुव्वते हाफ़िज़ा का ज़िक्र करते हुए दोनों शख़्सियात को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया है। इन्हीं के अल्फ़ाज़ में -

"जहाँ हैरत आला हज़रत के खुदा दाद हाफ़िज़े, और उनके इस्तिहज़ारे पर होती है, वहीं जामे मल्फ़ूज़ात अलैहिर्रहमा की बेपनाह सलाहियतों पर भी होती है कि किस ख़ूबी से उन्होंने यह मल्फ़ूज़ात क़लम बन्द किए हैं, उन्होंने इफ़ाज़ाते रज़्वीया सुन कर उसका मफ़्हूम अदा नहीं किया, बल्कि जैसा कि मुझे यक़ीन है, आला हज़रत की ज़बाने मुबारक से निकले हुए अल्फ़ाज़ मल्फ़ूज़ात में दर्ज किए हैं, बाज़ क़दीम व जदीद मल्फ़ूज़ निगारों की तरह अपने शैख़ की बातें हाफ़िज़े में महफ़ूज़ रख कर, या मुख़्तसर से इशारात लिख कर फ़िर अपने मुस्तक़र पर जा कर उन्हें क़लम बन्द नहीं किया है बल्कि ऐसा मालूम होता है कि वह इरशादे गिरामी को सुनते रहे और उसी वक़्त उन्हें ज़ब्त करते गये, यह भी मुस्तअ्बद नहीं कि मल्फ़ूज़ात सुपुर्दे क़लम करके वह आला हज़रत के मुलाहिज़े में ले आते हैं कि वह उन पर एक नज़र डाल

कर तरमीम व तस्हीह फरमा दें अगर अल-मल्फ़ूज़ का मुसव्वदा कहीं मिल जाए तो उस से इस ख़्याल की ताईद हो सकती है।"

(मआरिफ़े रज़ा १९६४ ई० इदारा तहक़ीक़ात इमाम अहमद रज़ा कराची)

अल-मल्फ़ूज़ किताबी शक्ल में बहुत बाद में मंज़रे आम पर आई.......राक़िमुस्सुतूर ने "तारीख़ जमाअत रज़ाए मुस्तफ़ा" की तरतीब व तदवीन के दौरान मुल्क की शोहरत याफ़्ता लाइब्रेरियों का दौरा किया, और हर जगह कुछ दिनों क़याम करके मवाद की फ़राहमी में मशग़ूल रहा। उसी दौरान माहनामा अर्रज़ा बरैली, माहनामा तोहफ़-ए-हन्फ़ीया पटना और माहनामा यादगारे रज़ा बरैली के क़दमी शुमारे देखने को मिले। यह याद रहे कि मज़्कूरा दो रिसाले इमाम अहमद रज़ा बरैलवी की हयात और उनकी ही सरपरस्ती में इशाअत पज़ीर होते थे, बित्तरतीब मौलाना हसनैन रज़ा बरैलवी, क़ाज़ी अब्दुल-वहीद फ़िर्दौसी अज़ीमाबादी और मौलाना अबरार हसन हामिदी तिल्हरी एडीटर थे......अल-मल्फ़ूज़ *अव्वलन*: माहनामा अर्रिज़ा बरैली। *सानियन*: माहनामा तोहफ़-ए-हन्फ़ीया पटना। *सालिसन*: यादगारे रज़ा बरैली में क़िस्त वार शाए हुआ। सबसे ज़्यादा क़िस्तें तोहफ़-ए-हन्फ़ीया में शाए हुई बअ्दहू हसनी प्रेस बरैली के ज़ेरे एहतमाम किताबी साइज़ में शाए हुआ मतबअ् हसनी बरैली के एडीशन की नक़ल दीगर इदारों ने की, और उन्होंने उसकी किताबत वग़ैरह कराई और लापरवाही से शाए कर दिया, प्रूफ़ रीडिंग पर ज़्यादा ध्यान न दिया गया जिसकी वजह से ग़लतियाँ रह गई और अग़्यार को एतरज़ात का मौक़ा मिल गया......ज़ेरे नज़र एडीशन हसनी प्रेस बरैली के मत्बूआ का अक्स है और उसके नाशिर साहबज़ादा सदरुश्शरीआ मौलाना बहाउल-मुस्तफ़ा क़ारी मद्दा ज़िल्लहुल-आली ने तस्हीह का एहतमाम किया है और यह क़ाबिले मुताला है।

मल्फ़ूज़ात के जमा करने में किसी क़िस्म की तरतीब मद्दे नज़र नहीं रखी गई है कि असल मक़्सूद मज़ामीन का मज़्बूत करना था......हज़रत मुफ़्ती आज़म के लिखे हुए तम्हीदी कलिमात पर तारीख़ वग़ैरह का इंद्राज नहीं है इसलिए क़यास से यह कहा जा सकता है कि यह १३३८ हिज० १९१९ ई० की तरतीब है चूंकि इस पर इमाम अहमद रज़ा का लिखा हुआ क़तआ मरक़ूम है.....ज़रूरत है कि उम्दा करा कर जदीद

तरतीब व तहज़ीब और उनवानात के साथ एक आला एडीशन शाए किया जाए। असरे हाज़िर के जदीद तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुए उसकी तक्मील बआसानी मुम्किन है।

अल्लाह अल्लाह अह्लुल्लाह की ज़िन्दगी अल्लाह तआला व तबारक की एक आला नेअ्मत है उनकी ज़ात पाक से हर मुसीबत टलती है और हर बड़ी मुश्किल बआसानी बदलती है, सुबहानल्लाह उन्हीं नुफ़ूसे तैयबा ताहिरा के क़ुदूम की बरकत से वह अक़्द-ए-माला यख़िल चुटकी बजाते हल होते हैं जिन्हें क़्यामत तक कभी भी नाखुने तदबीर न खोल सके जिस से कैसा ही कोई अक़ील व मुदब्बिर हो हैरान रह जाए कुछ न बोल सके जिसे मीज़ाने अक़्ल में कोई न तोल सके, अल्लाहु अक्बर उनकी सूरत उनकी सीरत उनकी रफ़्तार उनकी गुफ़्तार उनकी हर रविश उनकी हर अदा उनका हर-हर किरदार असरारे परवरदिगार इज़्ज़ा मज्दुहू का एक बेहतरीन मुरक़्क़अ् और बोलती तस्वीर है कि यह अंफ़ासे नफ़्सीया मज़्हरे ज़ाते अलैहि व सिफ़ाते कुदसीया होते हैं मगर दवाम किसी के लिए नहीं हमेशा न कोई रहा है न रहे हमेशगी रब अज़्ज़ा व जल्ल को है बाक़ी जो मौजूदा है मअ्दूम और एक दिन सबको फना है इसी लिए अस्लाफ़े किराम रहमतुल्लाहि अलैहिम ने ऐसे अंफ़ासे कुदसीया के हालाते मुबारका व मकातीबे तैयबा व मल्फ़ूज़ाते ताहिरा जमा फरमाए या उसका इज़्न दिया कि उनका नफ़ा क़्यामत तक आम हो जाए और हमें मुस्तफ़ीद व महज़ूज़ न हों बल्कि हमारी आइन्दा नस्लें भी फाइदा उठाएं और फिर वह भी यूं ही अपने ख़िलाफ़ के लिए पन्द व नसाइह व बिसाया तंबीहात व इख़्लास के ज़ख़ीरे अज़्कार इश्क़ व मुहब्बत मसाइले शरीअ़त व तरीक़त के मज्मूआ, सिने शुऊर मअ्रिफ़त व हक़ीक़त के गंजीना को अपने पिछलों के लिए छोड़ जाएं और यह सिलसिला यूं ही क़्यामत तक जारी रहे सच है -

न तन्हा इश्क़ अज़ दीदार ख़ीज़द
बसाकीने दौलत अज़ गुफ़्तार ख़ीज़द

फ़क़ीर जब तक सिने शुऊर को न पहुंचा था और अच्छे बुरे की तमीज़ न थी भलाई बुराई का होश न था उस वक़्त में ऐसे ख़्याल होना क्या मानी फिर जब सिने शुऊर को पहुंचा तो और ज़्यादा बेशुऊर हुआ जवानी दीवानी मशहूर है मगर *अस्सुहबतु मुअस्सिरह* सोहबत बेग़ैर रंग

लाए नहीं रहती और फिर अच्छों की सोहबत और वह भी कौन जिन्हें सैयदुल-उलमा कहें तो हक़ यह है कि हक़ अदा न हुआ जिन्हें ताजुल-उरफ़ा कहें बजा जिन्हें मुजद्दिदे वक़्त और इमामे औलिया से ताबीर करें तो सही। जिन्हें हरमैन तैयबैन के उलमाए किराम ने मदाइह जलीला से सराहा इन्नहू *अस्सैदुल-फ़र्दिल-इमाम* कहा उनके हाथ पर बैअ़त हुए उन्हें अपना शैख़े तरीक़त बनाया उन से सनदें लें उन्हें अपना उस्ताद माना फिर ऐसे की सोहबत कैसी बाबरकत सोहबत होगी सच तो यह है कि इस सोहबत की बरकत ने इंसान कर दिया उस ज़माने में कि आज़ादी की तुन्द हवा चल रही है क्या अजब था कि मैं ग़रीब भी इस बादे सर-सर के तेज़ झोंकों से जहाँ सदहा *बिइसल-मसीर* पहुंचे वहीं जा रहता मगर अपने मौला के कुरबान जिसकी नज़रे इनायत ने पक्का मुसलमान बना दिया। बल-हम्दु *लिल्लाहि अला ज़ालिका* अब न वह खुदी है जो बेखुद बनाए थे न वह मदहोशी जो बेहोश किए थी न वह जवानी की उमंग न किसी क़िस्म का। कोई और तरंग मौलाना मनअवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने क्या ख़ूब फरमाया है। सोहबते सालेह तेरा सालेह कुनद, मौलाना के इस फरमान की मुझे आंखों देखी तस्दीक़ हुई इसी मानी में हज़रत सअ्दी शीराज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया और कितना अच्छा फरमाया मैं बार-बार उनके अश्आर पढ़ता हूँ और हज़ उठाता हूँ जब पढ़ता हूँ एक नया लुत्फ़ पाता हूँ-

ग़रज़ मेरी जान इन पाक क़दमों पर कुरबान जब से यह क़दम पकड़े आंखें खुलीं अच्छे बुरे की तमीज़ हुई अपना नफ़ा व ज़यान सूझा मन्हियात से ता बमक़्दूर व एहतराज़ किया और अवामिर की बजा आवरी में मशग़ूल हुआ और अब आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुल-अक़्दस की बाफ़ैज़े सोहबत में ज़्यादा रहना अख़्तियार किया, यहाँ जो यह देखा कि शरीअ़त व तरीक़त के वह बारीक मसाइल जिन में मुद्दतों ग़ौर व ख़ौज़ कामिल के बाद भी हमारी क्या बिसात। बड़े-बड़े सर टेक कर रह जाएं फ़िक्र करते-करते थकें, और हरगिज़ न समझें और साफ़ *इन्ना ला अदरी* का दम भरें वह यहाँ एक फ़िक़्रे में ऐसे साफ़ फ़रमा देते हैं कि हर शख़्स समझ ले गोया अश्काल ही न था और वह दक़ाइक़ व निकाते मज़्हब व मिल्लत जो एक चीस्तान और एक मुअ़म्मा हों जिनका हल दुशवार से ज़्यादा दुशवार हो यहाँ मिन्टों में हल फ़रमा दिए जाएं। तो

ख़्याल हुआ कि यह जवाहिरे आलिया व ज़वाहिरे ग़ालिया यूं ही बिखरे रहे तो इस क़द्र मुफ़ीद नहीं जितना उन्हें सिल्क तहरीर में नज़्म कर लेने के बाद हम फ़ाइदा उठा सकते हैं फिर यह कि खुद ही मुतमत्तअ् होना या ज़्यादा से ज़्यादा उनका नफ़ा हाज़िर बाशाने दरबार आली ही को पहुंचना बाक़ी और मुसलमानों को महरूम रखना ठीक नहीं, उनका नफ़ा जिस क़द्र आम हो, उतना ही भला लिहाज़ा जिस तरह हो यह तफ़रीक़ जमा हो मगर यह काम मुझ से बे बेज़ाअत और अदीमुल-फुरसत की बिसात से कहीं सवा था और गोया चादर से ज़्यादा पाँव फैलाना था इसलिए बार-बार हिम्मत करता और बैठ जाता मेरी हालत इस वक़्त उस शख़्स की सी थी कि जो कहीं जाने के इरादे से खड़ा हो मगर मुज़बज़ब हो एक क़दम आगे डालता और दूसरा पीछे हटा लेता हो मगर दिल जो बेचैन था किसी तरह क़रार न लेता था *आख़िरस्सई मिन्नी वल-इतमाम मिनल्लाह* कहता कमर हिम्मत चुस्त करता और *हस्बुनल्लाहु व नेअ्मल वकील* पढ़ता उठा और उन जवाहिरे नफीसा का एक खुशनुमा हार तैयार करना शुरू किया और मैं अपने रब अज़्ज़ा व जल के करम से उम्मीद रखता हूँ कि वह इस हार ही को मेरी जीत का बाइस बनाए।

मैंने चाहा तो यह था कि कि रोज़ाना के मल्फ़ूज़ात जमा करूं मगर मेरी बेफ़ुर्सती आड़े आई और मैं अपने इस आली मक़्सद में कामयाब न हुआ ग़रज़ जितना और जो कुछ मुझ से हो सका मैंने किया, आगे कुबूल व अज्र का अपने मौला से साइल हूँ *व हुवा हस्बी व रब्बी* वह अगर कुबूल फ़रमाए तो यही मेरी बिगड़ी बनाने को बस है, मैं अपने सुन्नी भाईयों से उम्मीदवार कि वह मुझ से बेबेज़ाअत व मुसाफिर बेतोश-ए-आख़िरत के लिए दुआ फ़रमाएं कि रब्बुल-इज़्ज़त उसे मेरी फलाह व नजात का ज़रिया बनाए आमीन।

मौलवी अब्दुल-अलीम साहब सिद्दीक़ी मेरठी हाज़िरे ख़िदमत थे उन्होंने अर्ज़ की। हुज़ूर सबसे पहले क्या चीज़ पैदा फ़रमाई गई।

इरशाद : हदीस में इरशाद फ़रमाया। ऐ जाबिर बेशक अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने तमाम अशिया से पहले तेरे नबी का नूर अपने नूर से पैदा फ़रमाया।

अर्ज़ : हुज़ूर मेरी मुराद दुनिया की हर चीज़ से पहले से है।

इरशाद : रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला ने चार रोज़ में ज़मीन और दो दिन में आसमान यक्शंबा ता चहार शंबा ज़मीन व पंजशंबा ता जुमा आसमान नीज़ उस जुमा में बैनल-अस्र वल-मग़्रिब आदम अला नबीयना अलैहिमुस्सलात वस्सलाम को पैदा फ़रमाया।

अर्ज़ : अदना दरजा इल्मे बातिन का क्या है।

इरशाद : हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने एक बार सफर किया और वह इल्म लाया जिसे ख़्वास व अवाम सबने कुबूल किया दोबारा सफर किया और वह इल्म लाया जिसे ख़्वास ने कुबूल किया अवाम ने न माना, सेह बारह सफर किया और वह इल्म लाया जो ख़्वास व अवाम किसी की समझ में न आया।

यहाँ सफर से सैरे अक़्दाम मुराद नहीं बल्कि सैरे क़ल्ब है उनके उलूम की हालत तो यह है और अदना दरजा उन से एतक़ाद उन पर एतमाद व तस्लीम, इरशाद जो समझ में आया *फ़बेहा* वरना *कुल्लु मिन इन्दा रब्बना वमा यज़्ज़क्करू ऊलुल-अल-बाब*। हज़रत शैख़ अकबर और अकाबिरे फन ने फ़रमाया है कि अदना दरजा इल्मे बातिन का यह है कि उसके आलिमों की तस्दीक़ करे कि न जानता तो उनकी तस्दीक़ न करता नीज़ हदीस में फ़रमाया है सुबह कर इस हालत में कि तू खुद आलिम है या इल्म सीखता है या आलिम की बातें सुनता है या अदना दरजा यह कि आलिम से मुहब्बत रखता है और पाँचवां न होना हलाक हो जाएगा।

अर्ज़ : क्या वाइज़ का आलिम होना ज़रूरी है।

इरशाद : ग़ैर आलिम को वअ्ज़ कहना हराम है।

अर्ज़ : आलिम की क्या तारीफ़ है।

इरशाद : आलिम की तारीफ़ यह है कि अक़ाइद से पूरे तौर पर आगाह हो और मुस्तक़िल हो और अपनी ज़रूरियात को किताब से निकाल सके बेग़ैर किसी की मदद के।

अर्ज़ : कुतुब बीनी ही से इल्म होता है।

इरशाद : यही नहीं बल्कि इल्म अफ़्वाहे रिजाल से भी हासिल होता है।

अर्ज़ : हुज़ूर मुजाहिदे में **उम्र की क़ैद है।**

इरशाद : मुजाहिद के लिए **कम अज़ कम** अस्सी (८०) बरस

दरकार होते हैं बाक़ी तलब ज़रूर की जाए।

अर्ज़ : एक शख़्स अस्सी (८०) बरस की उम्र से मुजाहिदात करे या अस्सी (८०) बरस मुजाहिदा करे।

इरशाद : मक़्सूद यह है कि जिस तरह इस इल्म में मुसब्बबात को अस्बाब से मरबूत फरमाया गया है उसी तरीक़ा पर अगर छोड़ें और जज़्ब व इनायते रब्बानी बईद को क़रीब न कर दे तो उस राह की क़तअ् को अस्सी (८०) बरस दरकार हैं और रहमत तवज्जोह फ़रमाए तो एक आन में नसरानी से अब्दाल कर दिया जाता है और सिद्क़ नीयत के साथ यह मशग़ूल मुजाहिदा हो तो इम्दादे इलाही ज़रूर कार फरमा होती है अल्लाह तआला फ़रमाता है : वह जो हमारे राह में मुजाहिदा करें हम ज़रूर उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे।

अर्ज़ : यह तो हुज़ूर अगर किसी का हो रहे तो हो सकता है दुनियवी ज़राए मआश अगर छोड़ दिए जाएं तो यह भी निहायत दिक़्क़त तलब है और यह दीनी ख़िदमत (१) जो अपने ज़िम्मा ली है उसे भी छोड़ना पड़ेगा। (१. हिमायत मज़्हब अह्ले सुन्नत व रद्दे वहाबिया वग़ैरेहिम मुर्तदीन १२)

इरशाद : इसके लिए यही ख़िदमात मुजाहिदात हैं बल्कि अगर नीयते सालेहा है तो उन मुजाहिदों से आला इमाम अबू इसहाक़ इसफराईनी जब उन्हें मुब्तदेईन की बिदआत की इत्तिला हुई पहाड़ों पर उन अकाबिर उलमा के पास तशरीफ़ ले गये जो तर्के दुनिया व माफ़ीहा करके मुजाहिदात में मस्रूफ़ थे उन से फरमाया : ऐ सूखी घास खाने वालो तुम यहाँ हो और उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ित्नों में है उन्होंने जवाब दिया कि इमाम यह आपका काम है हम से हो नहीं सकता। वहाँ से वापस आए और मुब्तदेईन के रद्द में नहरें बहाएं।

अर्ज़ : क्या दुनियवी तफ़क्कुरात का क़ल्ब (२) जारी पुर असर होता है।

(१. क़ल्ब जारी वह क़ल्ब है जो खुदा और रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्रे शरीफ़ में जागता रहे। २)

इरशाद : हाँ दुनिया की फ़िक्रें जारी क़ल्ब की हालत में ज़रूर फ़र्क़ डालती हैं।

अर्ज़ : सफर के लिए कौन-कौन से दिन मख़्सूस हैं।

इरशाद : पंजशंबा। शंबा दो शंबा हदीस शरीफ़ में है बरोज़ शंबा क़ब्ल तुलूअ् आफ़ताब जो किसी हाजत की तलब में निकले उसका ज़ामिन मैं हूं (इसी सिलसिला तक़रीर में फरमाया) बहम्दुलिल्लाह दूसरे बारे की हाज़िरी हरमैन तैयबैन में यहाँ से जाने और वहाँ से वापस आने में उन्हें तीन दिन में से एक दिन में रवानगी हुई थी। और बफ़ज़्लेही तआला फ़क़ीर का यौमे विलादत भी शंबा है।

अर्ज़ : उमर शरीफ़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की क़ुबूले इस्लाम के वक़्त क्या थी।

इरशाद : ३८ साल और सिवाए उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु के कि हुज़ूर की उम्र शरीफ़ ८३ साल हुई हर सेह खुलफ़ाए राशिदीन रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन की उम्र मुबारक नीज़ उम्र शरीफ़ हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र मुबारक के बराबर हुई यानी ६३ साल अगरचे इसमें कुछ रोज़ माह कम व बेश ज़रूर थी लेकिन साले वफ़ात यही था।

अर्ज़ : हुज़ूर सिद्दीक़े अक्बर रज़ि अल्लाहु अन्हु क़ब्ल क़ुबूले इस्लाम क्या मज़्हब रखते थे।

इरशाद : सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने कभी बुत को सज्दा न किया ४ बरस की उम्र में आपके बाप बुत ख़ाने में ले गये और कहा यह हैं तुम्हारे बुलन्द व बाला खुदा इन्हें सज्दा करो, जब आप बुत के सामने तशरीफ़ ले गये फ़रमाया मैं भूखा हूँ मुझे खाना दे मैं नंगा हूँ मुझे कपड़ा दे मैं पत्थर मारता हूँ अगर तू खुदा है तो अपने आप को बचा वह बुत भला क्या जवाब देता आपने एक पत्थर उसके मारा जिसके लगते ही वह गिर पड़ा और कुव्वते खुदा दाद की ताब न ला सका बाप ने यह हालत देखी उन्हें गुस्सा आया उन्होंने एक पत्थर रुख़्सार मुबारक पर मारा और वहाँ से आपकी माँ के पास लाए सारा वाक़या बयान किया माँ ने कहा उसे उसके हाल पर छोड़ दो जब यह पैदा हुआ था तो ग़ैब से आवाज़ आई थी कि-

ऐ अल्लाह की सच्ची लौंडी तुझे मुज़्दा हो इस आज़ाद बच्चे का आसमानों में उसका नाम सिद्दीक़ है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यार व रफ़ीक़ है मैं नहीं जानती कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं और क्या मुआमला है। उस वक़्त से सिद्दीक़े

अकबर को किसी ने शिर्क की तरफ़ न बुलाया यह रिवायत सिद्दीक़े अकबर ने खुद मज्लिसे अक़्दस में बयान की जब यह बयान कर चुके जिब्रीले अमीन हाजिरे बारगाह हुए (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) और अर्ज़ की अबू बकर ने सच कहा और वह सिद्दीक़ हैं यह हदीस *अवालिल-फ़र्शे इला मआलिल-अर्श* में है और इससे इमाम अहमद क़स्तलानी ने शरह सही बुख़ारी में ज़िक्र की।

जब से ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए किसी वक़्त जुदा न हुए यहाँ तक कि बाद वफ़ात भी पहलुए अक़्दस में आराम फरमा हैं एक मरतबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दाहिने दस्ते अक़्दस में सिद्दीक़ का हाथ लिया और बाएं दस्ते मुबारक में हज़रत उमर का हाथ लिया और फ़रमाया हम क़यामत के रोज़ यूं ही उठाए जाएंगे। इमाम अह्ले सुन्नत सैयदना इमाम अबुल हसन अशअरी कुद्दिसा सिर्रुहु-अज़ीज़ फ़रमाते हैं : अबू बकर हमेशा अल्लाह तआला की नज़रे रज़ा से मन्ज़ूर रहे इब्ने असाकिर इमाम ज़हरी तल्मीज़ अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी *मन फ़ज़ला अबू बकर अन्नहू लम य यकु फ़िल्लाहि साअतन* सिद्दीक़ के फ़ज़ाइल से एक यह है कि उन्हें कभी अल्लाह में शक न हुआ इमाम अब्दुल-वहाब शेअ्रानी यवाक़ीत वल-जवाहिर में फरमाते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अबू बकर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया। अतज़्किरू यौमन यौम क्या तुम्हें उस दिन वाला दिन याद है अर्ज़ की हाँ याद है और यह भी याद है कि उस दिन सबसे पहले हुज़ूर ने बला फ़रमाया था बिल-जुमला सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रोज़े अलस्तु से रोज़े विलादत और रोज़े विलादत से रोज़े वफ़ात और रोज़े वफ़ात से अबदल-आबाद तक सरदारे मुस्लेमीन हैं यूं ही सैयदना मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुल-करीम। इस बारे में मेरा एक ख़ास रिसाला है।

इस्तिफ़्ता : धोबी के यहाँ ग्यारहवीं शरीफ़ का खाना जाइज़ है या नहीं और फाहिशा के यहाँ खाने और उस से कुरआने अज़ीम तिलावत करने की तन्ख़्वाह लेने का क्या हुक्म है।

जवाब : धोबी के यहाँ खाने में कोई हरज नहीं यह जो जाहिलों में मशहूर है कि धोबी के यहाँ का खाना नापाक है महज़ बातिल हैं हाँ फ़ाहिशा के यहाँ खाना जाइज़ नहीं वह तन्ख़्वाह अगर उस नापाक

आमदनी से दे तो वह भी हरामे क़तई और अगर उसके हाथ कोई चीज़ बेची हो और वह अपने इसी माल से दे उसका लेना क़तई हराम अल्बत्ता अगर क़र्ज़ लेकर क़ीमत दे तो जाइज़ है। वल्लाहु तआला आलम।

(१) कुरआने अज़ीम की तिलावत पर उजरत लेना देना दोनों हराम हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं इक़्रउल-कुरआन वला ताकुलू बेही। हाँ जब कि ख़ास तिलावत पर मुआहेदा न हुआ हो मसलन एक हाफ़िज़ को मुलाज़िम रखा और उसके मुतअल्लिक़ फिर यह काम भी कर दिया। तो अब उसे तन्ख़्वाह लेना जाइज़ है कि वह उजरते तिलावत कुरआन नहीं बल्कि उसके वक़्त की उजरत है यही मक़्सूद आला हज़रत है और तालीमे कुरआन बख़ौफ़े ज़िहाब कुरआन पर जवाज़ उजरत का फ़तवा मुतअख़्ख़ेरीन ने दे दिया है अगर यह सूरत हो तो भी जाइज़ है और महज़ तिलावत पर उजरत का वही हुक्म है।

अर्ज़ : अगर बच्चे की नाक में किसी तरह दूध चढ़ कर हलक़ में पहुंच गया हो तो क्या हुक्म है।

इरशाद : मुँह या नाक से औरत का दूध जो बच्चे के जौफ़ में पहुंचेगा हुर्मत रज़ाअत लाएगा। यह वही फतवा है जो चौदह (१४) शाबान १२८६ हि० को सबसे पहले इस फ़क़ीर ने लिखा और उसी १४ शाबान १२८६ हि० को मन्सबे इफ़्ता अता हुआ और इसी तारीख़ से बहम्दुलिल्लाह तआला नमाज़ फर्ज़ हुई और विलादत १० शव्वालुल-मुकर्रम १२७२ हि० रोज़ शंबा वक़्त जुहर मुताबिक़ १४ जून १८५६ ई० ११ जेठ सदी १६१३ सम्वत को हुई तो मन्सबे इफ़्ता मिलने के वक़्त फ़क़ीर की उम्र १३ बरस दस महीना चार दिन की थी जब से अब तक बराबर यही ख़िदमते दीन ली जा रही है। *वल-हम्दुलिल्लाह*।

अर्ज़ : रुकूअ् व सुजूद में बक़द्र सुबहानल्लाह कह लेने के। ठहरना काफी है।

इरशाद : हाँ रुकूअ् व सुजूद में इतना ठहरना फ़र्ज़ है कि एक बार सुबहानल्लाह कह सके जो रुकूअ् व सुजूद में तअ्दील न करे साठ बरस तक इसी तरह नमाज़ पढ़े उसकी नमाज़ें क़ुबूल न होंगी। हदीस में है। हम अन्देशा करते हैं कि अगर तू इसी हाल पर मरा तो दीने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर न मरेगा।

अर्ज़ : क्या जिस क़द्र मुम्किनात हैं वह तहते कुदरत बई नाना

दाख़िल हैं कि उनको पैदा फ़रमा चुका है।

इरशाद : नहीं बल्कि बहुत सी चीज़ें वह हैं जो मुम्किन हैं और पैदा न फ़रमाएं मसलन कोई शख़्स ऐसा पैदा कर सकता है कि सर आसमान से लग जाए मगर पैदा न फ़रमाया।

अर्ज़ : हुज़ूर क्या जिन्न व परी भी मुसलमान होते हैं।

इरशाद : हाँ (और इसी तज़्किरा में फरमाया) एक परी मुशर्रफ़ बइस्लाम हुई और अक्सर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ करती थी एक बार अरसा तक हाज़िर न हुई जब हाज़िर हुई। सबब दरयाफ़्त फरमाया। अर्ज़ की हुज़ूर मेरे एक अज़ीज़ का हिन्दुस्तान में इंतिक़ाल हो गया था वहाँ गई थी, राह में मैंने देखा कि एक पहाड़ पर इबलीस नमाज़ पढ़ रहा है। मैंने उसकी यह नई बात देख कर कहा कि तेरा तो काम नमाज़ से ग़ाफ़िल कर देना है तू खुद कैसे नमाज़ पढ़ता है। उसने कहा कि शायद रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला मेरी नमाज़ क़बूल फ़रमाए और मुझे बख़्श दे।

अर्ज़ : ज़ैद मुहम्मद शेर मियाँ साहब पीली भीती से बैअ़त हुआ थोड़ा अरसा हुआ कि उनका विसाल हो गया अब किसी और का मुरीद हो सकता है।

इरशाद : तब्दीले बैअ़त बिला वजहे शरई मम्नूअ़ है और तज्दीद जाइज़ बल्कि मुस्तहब है सिलसिला आलिया क़ादरीया में न हुआ हो और अपने शैख़ से बग़ैर इंहिराफ़ किए इस सिलसिल-ए-आलिया में बैअ़त करे यह तब्दीले बैअ़त नहीं बल्कि तज्दीद है कि जमीअ़ सलासिल इस सिलसिला आला की तरफ़ राजे हैं। (इसी सिलसिला में इरशाद हुआ) तीन क़लन्दर निज़ामुल-हक़ वालिदैन महबूब इलाही कुद्दिसा सिर्रुहू अल-अज़ीज़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और खाना मांगा खुद्दाम को लाने का हुक्म फ़रमाया ख़ादिम ने जो कुछ उस वक़्त मौजूद था उनके सामने रखा उन में से एक ने वह खाना उठा कर फेंक दिया और कहा अच्छा खाना लाओ हज़रत ने इस नाशाइस्ता हरकत का कुछ ख़्याल न फ़रमाया खुद्दाम को उस से अच्छा लाने का हुक्म फ़रमाया ख़ादिम पहले से अच्छा लाया उन्होंने फिर फेंक दिया और उस से भी अच्छा मांगा हज़रत ने और अच्छे का हुक्म दिया ग़रज़ उन्होंने इस बार भी फेंक दिया और उस से भी अच्छा मांगा उस पर उस क़लन्दर को अपने पास बुलाया और कान में इरशाद फरमाया कि यह खाना उस

मुरदार बैल से तो अच्छा था जो तुमने रास्ता में खाया यह सुनते ही क़लन्दर का हाल मुतग़ैयर हुआ राह में तीन फ़ाक़ों के बाद एक मरा हुआ बैल जिसमें कीड़े पड़ गये थे मिला था उसका गोश्त खा कर आए थे क़लन्दर हुज़ूर के क़दमों पर गिरा हुज़ूर ने उसका सर उठा कर अपने सीने से लगा लिया और जो कुछ अता फ़रमाना था फ़रमा दिया। उस वक़्त वह वज्द में रक़्स करता और यह कहता था कि मेरे मुर्शिद ने मुझे नेमत अता फ़रमाई हाज़िरीन ने कहा बेवकूफ़ जो कुछ तुझे मिला वह हज़रत का अता किया हुआ है यहाँ तक तो तू बिल्कुल ख़ाली आया था कहा बेवकूफ़ तुम हो अगर मेरे मुर्शिद ने मुझ पर नज़र न की होती तो हुज़ूर क्यों नज़र फ़रमाते यह इसी नज़र का ज़रिया है उस पर हज़रत ने कहा यह सच कहता है और फ़रमाया भाईयो! मुरीद होना उस से सीखो।

मुअल्लिफ़ : एक रोज़ बाद नमाज़े अस्र मस्जिद से तशरीफ़ लाए उस वक़्त हाज़िरीन में मौलाना अमजद अली साहब आज़मी भी थे रिसाला *अंफ़ुसुल-फ़िक्र फ़ी कुरबान अल-बक़र* उन दिनों तबअ़ हो रहा था उस में मौलवी अब्दुल-हई साहब के दो फतवे कि कुरबानी गाव से मुतअल्लिक़ थे उस रिसाला में नक़ल किए गये थे उसी रिसाला की निस्बत तज़्किरा हो रहा था उन फतवों का भी ज़िक्र आया उस पर मौलाना से फ़रमाया।

इरशाद : मौलवी साहब हुनूद के धोखे में आ गये मुसलमानों के ख़िलाफ़ फ़तवा लिख दिया तंबीह पर मुतनब्बेह हुए यही सवाल मेरे पास भी आया था बफ़ज़्लेही बनिगाहे अव्वलीन मकर मक्कारान पहचान लिया और गरवा किश्तन रोज़े अव्वल बायद पुर अमल किया *वलिल्लाहिल-हम्द*।

अर्ज़ : हुज़ूर उनके फतावे देखने से मालूम हुआ कि उनके अक्सर अक़्वाल मुतआरिज़ हैं और यह इसलिए कि यह अपने फहम पर बड़ा एतमाद करते थे।

इरशाद : हाँ अपने फ़हम पर एतमाद और वह भी अइम्मा किराम के मुक़ाबला पर कहीं लिखते हैं। *वस्तदेलू लेअबी हनीफ़ा बेवज्हे वल-कुल्ले बातिल* अबू हनीफ़ा के लिए कई तरह दलीलें लाए और सब बातिल हैं कहीं *क़ाला अबू हनीफ़ा कज़ा वल-हक़्क़े कज़ा* अबू हनीफ़ा ने यूं कहा और हक़ यूं है इमाम मुहम्मद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को कहते हैं

हाहुना वहुम आख़रा लेसाहिबिलं-किताब यहाँ किताब वाले का एक और वहम है आदमी को अपनी हालत का लिहाज़ ज़रूरी है न कि अपने को भूले या सताइश मर्दुम पर फूले अपने नफ़्स का इल्म तो हुज़ूरी है। उलमा ने इब्ने तैमिया को लिखा है इल्मुहू *अक्बरु मिन अक़्लुहू* उसका इल्म उसकी अक़्ल से बड़ा है। इल्म नाफ़े वह जिसके साथ फ़क़ाहत हो, मौलवी साहब ने अपनी किताब *नफ़उल-मुफ़्ती वस्साइल* में जिसमें खुद ही साइल और खुद ही मुजीब हैं सवाल व जवाब को इस्तिफ़्सार व इस्तिबशार लिखा है एक सवाल क़ायम किया कि जिस मकान में जानवर हो कोई आदमी न हो वहाँ जिमाअ़ जाइज़ है या नहीं इसका जवाब लिखाना जाइज़ है इस जवाब से लाज़िम कि मकान से तमाम मक्खियों को निकाले और चारपाइयाँ खटमलों से साफ करे और यह तक्लीफ़ माला युताक़ है हालांकि फुक़्हा तस्रीह फ़रमाते हैं जो बच्चा समझता और दूसरे के सामने बयान कर सकता हो। उसके सामने जिमा मक्रूह है वरना हरज नहीं तो जब नासमझ बच्चे के सामने जाइज़ है हालांकि आदमी है जानवर के सामने क्यों मुमानेअत।

मुअल्लिफ़ : फ़ुक़्हाए किराम ने यह शर्त क्यों ज़ाइद की कि ग़ैर से बयान कर सकता हो महज़ समझना काफी था और उस पर यह भी इल्ज़ाम आता है कि गूंगे अपाहिज सामने जाइज़ हो और उसे किसी तरह अक़्ल तस्लीम करने के लिए तैयार नहीं है।

इरशाद : समझने के दो मानी हैं एक नफ़्से हरकात को समझना यह बच्चे में कुव्वत बयान आने से पहले होता है और यह समझना कि यह हरकात शर्म व हया हैं उनका इख़्फ़ा ज़रूर है यह कुव्वते बयान आने बहुत बाद होता है बयान के लिए पहला समझना लाज़िम है और इसी क़द्र मुमानेअत के लिए काफी कि खुद अगरचे उसे कोई अम्र शर्म व हया न समझा मगर दूसरों से कह तो सकेगा बख़िलाफ़ दूसरे मानी फ़हम के वह माने मुस्तक़िल है उसम दूसरे से बयान की हाजत नहीं तो जिसमें दूसरे मानी का समझना हो उसके सामने बदरज-ए-औला मुतलक़न मुमानेअत है अगरचे बयान न कर सके।

अर्ज़ : हुज़ूर आज क्या पहली तारीख़ है।

इरशाद : पहली तारीख़ थी कल चाँद हुआ आज दूसरी शब है तारीख़ की इब्तिदा व इंतिहा में चार तरीक़े हैं। एक तरीक़ा नसारा का

कि उनके यहाँ निस्फ़े शब से निस्फ़े शब तक तारीख़ का शुमार है। दूसरा हुनूद का कि तुलूअ़-ए-आफ़ताब से तुलूअ़-ए-आफ़ताब तक। तीसरा तरीक़ा फ़लासफ़ा यूनान का है कि निस्फ़ुन्नहार से निस्फ़ुन्नहार तक इल्मे हैयात में यही माख़ूज़ है। चौथा तरीक़ा मुसलमानों का कि गुरूबे आफ़ताब से गुरूबे आफ़ताब तक और यही अक़्ले सलीम पसन्द करती है कि ज़ुल्मते नूर से पहले है।

मुअल्लिफ़ : हाज़िरीन में गाय का गोश्त खाने का और उसके मुज़िर होने का ज़िक्र आया उस पर फ़रमाया।

इरशाद : वह क़तअन हलाल और निहायत ग़रीब परवर गोश्त और बाज़ अमज़जा में गोश्त बुज़ से नाफ़े तर है बहुतेरे गोश्त के शौक़ीन उसे पसन्द करते और बकरी के गोश्त को बीमार की ख़ुराक कहते हैं और उसकी कुरबानी का तो ख़ास कुरआने अज़ीम में इरशाद है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उसकी कुरबानी अज़्वाजे मुतहहरात की तरफ़ से फरमाई हिन्दुस्तान में बिल ख़ुसूस शआइरे इस्लाम से है और उसका बाक़ी रखना वाजिब बाज़ लीडर बनने वाले कि हुनूद से इत्तिहाद मनाने के लिए उसका इंसिदाद चाहते हैं। बदख़्वाह मुसलमानान हैं मगर अजब है कि कोई हिन्दू इत्तिहाद बघारने को मसाजिद के क़रीब भी घन्टा या संख बन्द करने की कोशिश नहीं करता। यह इत्तिहाद की एक तरफ़ा ताली उन लीडरों ही को नसीब है हाँ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से उसका गोश्त तनावुल फ़रमाना साबित नहीं और मुझे तो सख़्त ज़रर करता है एक साहब ने मेरी दावत की बइसरार ले गये उन दिनों जनाब सैयद हबीबुल्लाह साहब दमिश्क़ी जीलानी फ़क़ीर के यहाँ मुक़ीम थे उनकी भी दावत थी मेरे साथ तशरीफ़ ले गये वहाँ दावत का यह सामान था कि चन्द लोग गाय के कबाब बना रहे थे और हल्वाई पूरियाँ, यही खाना था सैयद साहब ने मुझ से फ़रमाया तो (आप) गाय के गोश्त का (के) आदी नहीं और यहाँ कोई और चीज़ मौजूद नहीं बेहतर कि साहिबे खाना से कह दिया जाए मैंने कहा कि यह मेरी आदत नहीं वही पूरियाँ कबाब खाए उसी दिन मसूढ़ों में वर्म हो गया और इतना बढ़ा कि हलक़ और मुँह बिल्कुल बन्द हो गया मुश्किल से थोड़ा दूध हलक़ से उतारता और उसी पर इक्तिफ़ा करता, बात बिल्कुल न कर सकता था यहाँ तक कि

क़िरअत सिर्रीया भी मयस्सर न थी सुन्नतों में भी किसी की इक़्तिदा
करता उस वक़्त मज़हबे हन्फ़ी में अद्मे जवाज़ क़िरअत ख़लफुल-इमाम
का यह नफीस फ़ाइदा मुशाहिदा हुआ। जो किसी से कहना होता लिख
देता बुख़ार बहुत शदीद था और कान के पीछे गिल्टी मेरे मंझले भाई
मरहूम एक तबीब को लाए उन दिनों बरैली में मरज़े ताऊन बशिद्दत था
उन साहब ने बग़ौर देख कर सात आठ मरतबा कहा यह वही है वही
है वही है यानी ताऊन में बिल्कुल कलाम न कर सकता था इसलिए
उन्हें जवाब न दे सका हालांकि मैं ख़ूब जानता था कि यह ग़लत कह
रहे हैं न मुझे ताऊन है न इन्शाअल्लाहुल-अज़ीज़ कभी होगा इसलिए कि
मैंने ताऊन ज़दह को देख कर बारहा वह दुआ पढ़ ली है जिसे हुज़ूर
सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स किसी
बला रसीदा को देख कर यह दुआ पढ़ लेगा उस बला से महफ़ूज़ रहेगा
वह दुआ यह है। *अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मबतलाका बेही व फ़ज़्ज़लनी अला कसीरिन मिम्मन ख़लक़ा तफ़्ज़ीला*। जिन-जिन अमराज़
के मरीज़ों, जिन-जिन बलाओं के मुब्तलाओं को देख कर मैंने उसे पढ़ा
बहम्दुलिल्लाह तआला आज तक उन सबसे महफ़ूज़ हूँ और बेऔनेही
तआला हमेशा महफ़ूज़ रहूंगा अल्बत्ता एक बार उसे पढ़ने का मुझे
अफ़्सोस है मुझे नौ उम्री में आशोबे चश्म अक्सर हो जाता और बवजहे
हिद्दत मिजाज़ बहुत तक्लीफ़ देता था १६ साल की उम्र होगी कि राम
पुर जाते हुए एक शख़्स को रमदे चश्म में मुब्तला देख कर यह दुआ
पढ़ी जब से अब तक आशोबे चश्म फिर न हुआ उसी ज़माना में सिर्फ़
दो मरतबा ऐसा हुआ कि एक आंख कुछ दबती मालूम हुई दो चार दिन
बाद वह साफ़ हो गई। दूसरी दबी फिर वह भी साफ हो गई मगर दर्द
खटक, सुर्ख़, कोई तक्लीफ़ असलन किसी क़िस्म की नहीं। अफ़्सोस
इसलिए कि हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से
हदीस है कि तीन बीमारियों को मक्रूह न रखो। (१) जुकाम : कि
उसकी वजह से बहुत सी बीमारियों की जड़ कट जाती है। (२) खुजली:
कि इससे अमराज़े जिल्दीया जुज़ाम वग़ैरह का इंसिदाद हो जाता है।
(३) आशोब : चश्म नाबीनाई को दफ़अ् करता है इस दुआ की बरकत
से यह तो जाता रहा एक और मरज़ पेश आया जिमादिल-ऊला १३००
हि० में बाज़ मुहिम तसानीफ़ के सबब एक महीना कामिल बारीक ख़त

की किताबें शबाना रोज़ अलल-इत्तिसाल देखना हुआ गर्मी का मौसम था
दिन को अन्दर के दालान में किताब देखता और लिखता अट्ठाईसवां
साल था आंखों ने अंधेरे का ख़्याल न किया एक रोज़ शिद्दते गर्मी के
बाइस दोपहर को लिखते-लिखते नहाया सर पर पानी पड़ते ही मालूम
हुआ कि कोई चीज़ दिमाग़ से दाहिनी आंख में उतर आई बाई आंख
बन्द करके दाहिनी से देखा तो वस्त से शय मरई में एक सियाह हल्क़ा
नज़र आया उसके नीचे शय का जितना हिस्सा हुआ वह नासाफ़ और
दबा हुआ मालूम होता यहाँ उस ज़माना में एक डॉक्टर इलाजे चश्म में
बहुत सरबर आउरदह था। सैंडरसन या एन्डर्सन कुछ ऐसा ही नाम था
मेरे उस्ताज़ (हज़रत मिर्ज़ा साहब मरहूम मग़फ़ूर आला हज़रत क़िबला
के उस्ताद भी थे कि हज़रत कुद्दिसा सिर्रुहू ने इब्तिदाई तालीम मिर्ज़ा
साहब से कुछ दिन हासिल की और आला हज़रत रज़ि अल्लाहु तआला
अन्हु के शागिर्द भी थे कि बाज़ कुतुबे दर्सीया ग़ालिबन हिदाया वग़ैरह
उन्होंने हुज़ूर पुर नूर मरहूम मग़फ़ूर से पढ़ीं) जनाब मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर
बेग साहब रहमतुल्लाहि अलैहि ने इसरार फ़रमाया कि उसें आंख
दिखाई जाए इलाज करने न करने का इख़्तियार है डॉक्टर ने अन्धेरे
कमरे में सिर्फ़ आंख पर रौशनी डाल कर आलात से बहुत देर तक
बग़ौर देखा और कहा कसरत किताब बीनी से कुछ पैवस्त आ गई है
पन्द्रह दिन किताब न देखो मुझ से पन्द्रह घड़ी भी किताब न छूट सकी।
हकीम सैयद मौलवी अशफ़ाक़ हुसैन साहब मरहूम सहसवानी डिप्टी
कलक्टर तबाबत भी करते थे और फ़क़ीर के मेहरबान थे फ़रमाया
मुक़द्दमा नुज़ूले आब है बीस बरस बाद (खुदा नाकरदह) पानी उतर
आएगा मैंने इल्तिफ़ात न किया और नुज़ूले आब वाले को देख कर वही
दुआ पढ़ ली और अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के
इरशाद पाक पर मुत्मइन हो गया १३१६ हिज० में एक और हाज़िक़
तबीब के सामने ज़िक्र हुआ बग़ौर देख कर कहा चार बरस बाद (खुदा
नख़्वास्ता) पानी उतर आएगा उनका हिसाब डिपटी साहब के हिसाब से
बिल्कुल मुवाफ़िक़ आया उन्होंने बीस बरस कहे थे उन्होंने सोला बरस
बाद चार कहे मुझे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के
इरशाद पर वह एतेमाद न था कि तबीबों के कहने से मआज़ल्लाह
मुतज़लज़ल होता अल्हम्दुलिल्लाह कि बीस दरकिनार तीस बरस से

ज़ाइद गुज़र चुके हैं और वह हल्का ज़र्रा भर न बढ़ा न बऔनेही तआला बढ़े, न मैंने किताब बीनी में कभी कमी की, न इन्शाअल्लाह तआला कमी करूं यह मैंने इसलिए बयान किया यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दाइम व बाक़ी मोजिज़ात हैं जो आज तक आंखों देखे जा रहे हैं और क़यामत तक अह्ले ईमान मुशाहिदा करेंगे मैं अगर उन्हें वाक़ेआत को बयान करूं जो इरशादात के मुनाफ़े मैंने खुद अपनी ज़ात में मुशाहिदा किए तो एक दफ़्तर हो। मुझे इरशादे हदीस पर इत्मीनान था कि मुझे ताऊन कभी न होगा आख़िर शब में कर्ब बढ़ा मेरे दिल ने दर्गाहे इलाही में अर्ज़ की। *अल्लाहुम्मा सिद्‌कुल हबीब व किज़्बुत्तबीब* (ऐ अल्लाह अपने हबीब को सच्चा कर और तबीब को झूठा) किसी ने मेरे दाहिने कान पर मुँह रख कर कहा कि मिस्वाक और सियाह मिरचें। लोग बारी-बारी से मेरे लिए जागते उस वक़्त जो शख़्स जाग रहा था मैंने इशारे से उसे बुलाया और उसे मिस्वाक और सियाह मिर्च का इशारा किया वह मिस्वाक तो समझ गये गोल मिर्च किस तरह समझें ग़रज़ बमुश्किल समझे जब यह दोनों चीज़ें आई बदिक़्क़त मैंने मिस्वाक के सहारे पर थोड़ा-थोड़ा मुँह खोला और दांतों में मिस्वाक रख कर छोड़ दी कि दांतों ने बन्द हो कर दबा ली पिसी हुई मिर्चे उसी राह से दाढ़ों तक पहुंचाई थोड़ी ही देर हुई थी कि एक कुल्ली ख़ालिस ख़ून की आई मगर कोई तक्लीफ़ व अज़ीयत महसूस न हुई उसके बाद एक कुल्ली ख़ून की आई और बहम्दुलिल्लाह तआला वह गिल्टी जाती रहीं मुँह खुल गया मैंने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और तबीब साहब से कहला भेजा कि आपका वह ताऊन बफ़ज़्लेही तआला दफ़ा हो गया दो तीन रोज़ में बऔनेही तआला बुख़ार भी जाता रहा।

मुअल्लिफ़ : चूंकि अस्ना गुफ़्तगू में ताऊन का ज़िक्र था लिहाज़ा मौलाना मौलवी हकीम अमजद अली साहब ने यूं अर्ज़ किया।

अर्ज़ : ग़ालिबन यह बलाएं कुफ़्फ़ार जिन्न हों।

इरशाद : हाँ कुफ़्फ़ार हैं हदीस है *अत्ताऊना व ख़ज़ आदाइकुम मिनल-जिन्न* ताऊन तुम्हारे दुशमन जिन्नों का कोंचा है व लिहाज़ा ताऊन ज़दह ख़ास शुहदा में शामिल किया जाएगा।

(इसी सिलसिला में एक हिकायत बयान फरमाई कि) शैख़ मुहक़्क़िक़ ऊलफ़ी मदनी मुझ से कहते थे कि हज़रत सैयद मुहम्मद यमनी

रहमतुल्लाहि तआला अलैहि नमाज़े फज्र के लिए मस्जिद में तशरीफ़ लाए देखा कि मिंबर पर एक बच्चा बैठा है सिवा हज़रत के किसी ने न देखा आपने कुछ तअर्रुज़ न फ़रमाया नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ ले आए। फिर जुहर के लिए आए तो देखा कि एक जवान बैठा है नमाज़ पढ़ कर चले आए और उस से कुछ न कहा फिर अस्र के लिए गये तो वहीं मिंबर पर एक बूढ़े को पाया अब भी कुछ न पूछा और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर वापस आए फिर मग़्रिब के लिए गये तो एक बैल को वहाँ देखा अब फ़रमाया तो क्या है इतनी मुख़्तलिफ़ हालतों में मैंने तुझे देखा है उसने कहा मैं वबा हूँ अगर आप इस वक़्त मुझ से कलाम करते जब मैं बच्चा था तो यमन में कोई बच्चा बाक़ी न रहता और अगर उस वक़्त दरयाफ़्त फ़रमाते जब मैं जवान था तो यहाँ कोई जवान न रहता यूं ही अगर उस वक़्त बात करते जब मैं बुड्ढा था तो उस शहर में कोई बूढ़ा न रहता अब आपने इस हाल में कि मुझे बैल देखा कलाम फ़रमाया यमन में कोई बैल न रहेगा यह कह कर ग़ायब हो गया यह अल्लाह तआला की अपने बन्दों पर रहमत थी कि आपने पहली तीन हालतों में उस से सवाल न फ़रमाया बैलों में मर्ग आम हो गई अगर उस वक़्त कोई बैल अच्छा भी ज़िबह किया जाता तो उसका गोश्त ऐसा ख़राब होता कि कोई खा न सकता। उसमें गन्धक की बू आती उन्हें सैयद मुहम्मद यमनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के एक साहबज़ादे मादर ज़ाद वली थे एक मरतबा जब उमर शरीफ़ चन्द साल की थी बाहर तशरीफ़ लाए और अपने वालिद माजिद की जगह तशरीफ़ रखी एक शख़्स से कहा लिख *फुलां फ़िल-जन्नह* यानी फुलां शख़्स जन्नत में है यूंही नाम बनाम बहुत से अश्ख़ास को लिखवाया फिर फ़रमाया कि लिख *फुलां फ़िन-नार* यानी फुलां शख़्स दोज़ख़ में है। उन्होंने लिखने से हाथ रोक लिया आपने फिर फ़रमाया उन्होंने न लिखा आपने से राह बारह इरशाद किया उन्होंने लिखने से इंकार कर दिया, उस पर आपने फ़रमाया *अन्ता फ़िन्नार* तू आग में है वह घबराए हुए उनके वालिद माजिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए हज़रत ने फ़रमाया *अन्ता फ़िन्नार* कहा *या अन्ता फ़ी जहन्नम* अर्ज़ की *अन्ता फ़िन्नार* फ़रमाया, हज़रत ने इरशाद फ़रमाया मैं उसके कहे को बदल नहीं सकता अब तुझे अख़्तियार है दुनिया की आग पसन्द कर या आख़िरत की अर्ज़ की दुनिया की आग पसन्द है उनका

जल कर इंतिक़ाल हुआ हदीस में आग के जले हुए को भी शहीद फरमाया है।

अर्ज़ : (१) हुज़ूर मेरे भतीजा पैदा हुआ है उसका कोई तारीख़ी नाम तज्वीज़ फरमा दें।

(१. जनाब दिलावर हुसैन ख़ाँ साहब मरहूम ज़मींदार मौज़ा जवाहर पुर ज़िला बरैली की अर्ज़ है। १२)

इरशाद : तारीख़ी नाम से क्या फाइदा नाम वह हों जिनके अहादीस में फ़ज़ाइल आए हैं मेरे और मेरे भाईयों के जितने लड़के पैदा हुए मैंने सबका नाम मुहम्मद रखा यह और बात है कि यही नाम तारीख़ी भी हो जाए हामिद रज़ा ख़ाँ का नाम मुहम्मद है और उनकी विलादत १३६२ हिज० में हुई और इस नाम मुबारक के अदद भी बानवे हैं एक दिक़्क़त तारीख़ी नाम में यह है कि अस्माए हुसना से एक या दो जिन के आदाद मुवाफ़िक़ अदद नाम क़ारी हों अदद नाम दो चन्द करके पढ़े जाते हैं वह क़ारी को इस्मे आज़म का फ़ाइदा देते हैं तारीख़ी नाम से मिक़्दार बहुत ज़्यादा हो जाएगी मसलन अगर किसी की विलादत इस १३२६ हिज० में हुई तो उसके मुताबिक़ अदद के अस्माए हुस्ना २६५८ बार पढ़े जाएंगे और मुहम्मद नाम होता तो एक सौ चौरासी बार दोनों में किस क़द्र फ़र्क़ हुआ (फिर इस नामे अक़्दस के फ़ज़ाइल में यह चन्द हदीसें ज़िक्र फरमाई) एक हदीस में है हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो मेरी मुहब्बत की वजह से अपने लड़के का नाम मुहम्मद या अहमद रखेगा अल्लाह तआला बाप और बेटे दोनों को बख़्शेगा एक रिवायत में है क़यामत के दिन मलाइका कहेंगे कि जिनका नाम मुहम्मद या अमहद है जन्नत में चले जाओ एक रिवायत में है मलाइका इस घर की ज़्यारत को आते हैं जिसमें किसी का नाम मुहम्मद या अहमद है एक रिवायत में है जिस मशवरे में इस नाम का आदमी शरीक हो उसमें बरकत रखी जाती है एक रिवायत में है तुम्हारा क्या नुक़्सान है कि तुम्हारे घरों में दो या तीन मुहम्मद हों।

अर्ज़ : जूता पहन कर नमाज़ पढ़ना चाहिए या नहीं।

इरशाद : नहीं आलमगीरी में तस्रीह है कि मस्जिद में जूता पहन कर जाना बेअदबी है।

अर्ज़ : ग़ैर मुक़ल्लेदीन पढ़ते हैं और कहते हैं कि सरवरे आलम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पढ़ी।

इरशाद : बाज़ अहकाम में उर्फ़ व मसालेह के सबब तग़ैयुर व तबद्दुल होता है मैंने ख़ास इस बारे में एक रिसाला मुसम्मा बनाम तारीख़ी *जमालुल-इजमाल लेतौक़ीफ़े हुक्मस्सलाते बिन्नेआल* लिखा है और उसकी एक शरह *कमालुल-अक्माल* की है (फिर फरमाया) ताज़ीम व तौहीन उर्फ़ पर मबनी हैं एक चीज़ से एक ज़माना में ताज़ीम या तौहीन होती है दूसरे ज़माना में नहीं या एक क़ौम में होती हैं दूसरी क़ौम में नहीं मसलन अरब में बड़े छोटे सब को सेग़ा मुफ़रद से ख़िताब है *अन्ता कुल्ता* तूने कहा यह वहाँ कोई तौहीन नहीं और हमारे यहाँ तौहीन है या यूरोप का अदब यह है कि मुलाक़ात मुअज़्ज़म के वक़्त सर नंगा कर ले और जूता पहने हो और हमारे यहाँ यह तौहीन है अदब इसमें है कि पाँव नंगे हों और सर पर अमामा हो जब हमारे यहाँ यह दरबार बादशाहान मजाज़ी की तौहीन है तो दरबारे इलाही कि मलकुल-मुलूक और हक़ीक़ी शहनशाह सच्चे बादशाह का दरबार है अहक़्क़ु बित्ताज़ीम है।

अर्ज़ : रेल गाड़ी में बेंच पर बैठ कर पाँव लटका कर फ़र्ज़ या वित्र पढ़े नमाज़ हुई या नहीं बाज़ ऐसा करते हैं।

इरशाद : नहीं कि क़्याम फ़र्ज़ है और जब तक उज़्र न हो साक़ित नहीं हो सकता फ़र्ज़ और वित्र और सुबह की सुन्नतें यूं न हो सकेंगे।

अर्ज़ : रेल में ऐसा मौक़ा कम मिलता है कि खड़े हो कर नमाज़ अदा की जाए।

इरशाद : मुझे बड़े-बड़े सफर करने पड़े और बफ़ज़्लेही तआला पंज वक़्ता जमाअत से नमाज़ पढ़ी क़्याम और रुकूअ़ तो रेल में भी बख़ूबी हो सकता है हाँ बाज़ वक़्त सज्दे में दिक़्क़त होती है जबकि क़िबला बेंच की तरफ़ हो वह यूं हो सकता है कि सर को ख़म करके बेंच के नीचे करे सिर्फ़ थोड़ा सा तकल्लुफ़ करना होगा, मगर इस क़द्र ज़ख़्म न करे कि ४५ दर्जे किसी जानिब माइल हो जाए ४५ दर्जे के क़रीब तक इजाज़त है एक ख़त के निस्फ़ पर दूसरा ख़त अमूद क़ाइम करो कि दो ज़ाविया क़ाइमे बनाएगा इन दोनों क़ाइमों की दो ख़त्तों से तन्सीफ़ कर दो यह ४५+४५ दर्जे के ज़ाविया होंगे फ़र्ज़ करो ख़िता ज सिम्त क़िबला तो शुमाल को हम्ज़ा ह या जुनूब को हम्ज़ा ज़ तक झुकना मुफ़्सिद नमाज़ नहीं कि सिम्त क़िबला न बदलेगी ज़्यादा में फ़साद है।

अर्ज़ : जितनी नमाज़ें इसी तरह पढ़ी हों उनके एआदा की तो ज़रूरत न होगी इसलिए कि वह नादानिस्तगी में पढ़ी हैं हाँ आइन्दा यूंही पढ़ना फ़र्ज़ है।

इरशाद : जेहल अद्मे एआदा का सवव नहीं हो सकता जेहल खुद गुनाह है। हमारे उलमा ने अहकाने शरईया शर्क़ से ग़र्ब तक रौशन कर दिए और कुरआने अज़ीम में फरमाया। *फ़स्अलू अह्लज़्ज़िक्रे इन कुनतुम ला तालमून*। तुम्हें न मालूम हो तो जानने वालों से पूछो अब न जानने वाले की ग़लती है उसने क्यों न सीखा क्यों न पूछा इन नमाज़ों का एआदा ज़रूर है।

अर्ज़ : फिर किस क़द्र का एआदा किया जाए।

इरशाद : इतनी कि ज़न ग़ालिव हो जाए कि अब बाक़ी न रहेगी।

अर्ज़ : एक शख़्स ने नमाज़ पढ़ाई मुसल्ला कज था न उन्होंने इस्तिक़्बाल क़िवला किया न मुसल्ला ही को ठीक किया नमाज़ हुई या नहीं।

इरशाद : अगर मुसल्ला का मैलाना क़िवला से ४५ दर्जे के अन्दर था तो नमाज़ हो गई और अगर ज़्यादा था तो वातिल (फिर फरमाया) वरैली में अक्सर मसाजिद क़िवला से दो-दो दर्जे जानिव शुमाल हटी हुई हैं और वम्वई की मसाजिद दस दर्जे जुनूब अगर शरअ़ मुतह्हर उसकी इजाज़त न देती तो लाखों नमाज़ें वातिल होती (फिर फरमाया) इंसान की पेशानी क़ौसी के शक्ल होने में यह भी मस्लेहत है ताकि यह आसानी रहे कि अगर क़िवला से ४५ दरजा तक इंहिराफ़ भी होगा तो भी पेशानी के किसी जुज़ से महाज़ात हो जाएगी। अगर पेशानी मस्तवी होती तो यह वात हासिल न होती (इंहिराफ़े मसाजिद की वजह वयान फरमाई) लोगों ने यह समझा कि मग़्रिव की तरफ़ मुँह करके इस तरह खड़े हों कि क़ुतुव दाहिने शाने पर हो तो जो जेहत महाज़ी वजह हो वही सिम्त क़िवला है हालांकि यह तहक़ीक़ नहीं अल्वत्ता हिन्दुस्तान में तक़रीव के लिए काफ़ी है।

अर्ज़ : औरतों की नमाज़ वारीक कपड़ों से होती है या नहीं।

इरशाद : आज़ाद औरतों को सर से पाँव तक तमाम वदन का छुपाना फ़र्ज़ है मगर चेहरा यानी पेशानी से ठोढी और एक कन्पटी से दूसरी कन्पटी तक. जिसमें सर के वालों या कान कोई हिस्सा दाख़िल

नहीं न ठोढी के नीचे का) यह तो विल-इत्तिफ़ाक़ नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ नहीं और गट्टों तक दोनों हाथ टखनों तक दोनों पाँव उनमें इख़्तिलाफ़ रिवायात है कि सिवा अगर किसी अज़्व का चौथाई हिस्सा नमाज़ में क़स्दन खोले अगरचे आन को या विला क़सद वक़्द्र अदाए रुक्न यानी तीन वार *सुवहानल्लाह* कहने की देर तक खुला रहे तो नमाज़ न होगी और वारीक कपड़े जिन से वदन नज़र आए या रंगत दिखाई दे या सर के वालों की सियाही चमके तो नमाज़ न होगी।

मुअल्लिफ़ : एक साहव जिनका मैलान क़द्रे वहावियत की तरफ़ था उन्होंने इल्मे ग़ैव नवी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम की निस्वत सवाल किया तो फरमाया।

इरशाद : क्या आप मुतलक़ इल्मे ग़ैव को पूछते हैं या इल्म मा काना वमा यकून जैसा सवाल हो उसके मुवाफ़िक़ जवाव दिया जाए।

अर्ज़ : मैं हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सवसे अफ़्ज़ल व आला जानता हूँ और हुज़ूर को रौशन ज़मीर मानता हूँ मगर यह कि वह दिलों की वात जानते हैं यह नहीं मानता।

इरशाद : रौशन ज़मीर होने के तो यही मानी हैं कि दिलों की हालतें जानें (फिर उसके सुवूत की तरफ तवज्जोह फरमाई) कुरआन अज़ीम फ़रमाता है। *वमा कानल्लाहु लेयुतलेअकुम अलल-ग़ैव वलाकिन्नल्लाह यज्तवी मिन रुसुलेही मिन यशाओ।* ऐ आम लोगो अल्लाह इसलिए नहीं कि तुम्हें ग़ैव पर मुत्तला फरमा दे हाँ अपने रसूल से चुन लेता है जिसे चाहे और फ़रमाता है। *इल्मुल-ग़ैव फ़ला युज़्हिरू अला ग़ैवेही अहदन इल्ला मनिर्तज़ा मिन रसूलिन।* अल्लाह तआला आलमुल-ग़ैव है तो अपने ग़ैव पर किसी को मुसल्लत नहीं फ़रमाता मगर अपने पसन्दीदा रसूल को सिर्फ़ इज़्हार ही नहीं वल्कि रसूलों को इल्मे ग़ैव पर मुसल्लत फ़रमा दिया (उसके वाद इरशाद फ़रमाया कि) उलमाए अह्ले सुन्नत रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन का इत्तिफ़ाक़ है कि जो फ़ज़ाइल और अंवियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को इनायत फ़रमाए गये। वह सव व अक्मल वजूह उन से वदरजहा ज़ाइद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मरहमत हुए और अह्ले वातिन का उस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जो कुछ फ़ज़ाइल और अंविया सलवातुल्लाहि तआला व सलामुहू अला सैयदेहिम व अलैहिम को मिले वह सव हुज़ूर

के दिए से और हुज़ूर के तुफ़ैल में। अस्हाब सही बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत की। *काला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन्नमा अना क़ासिमुन वल्लाहु युअ्ती*। मैं बाटनें वाला हूँ और अल्लाह तआला अता फ़रमाता है। अल्लाह तआला सैयदना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम की बावत फ़रमाता है। *वकज़ालिका नरा इब्राहीम मलकूतुस्समावाते वल-अर्ज़े*। यानी ऐसा ही हम इब्राहीम को आसमान व ज़मीन की सारी सलतनत दिखाते हैं और लफ़्ज़ नुरी इस्तिमरार व तजद्दुद पर दाल है जिसका यह मतलव कि वह दिखाना एक बार के लिए न था वल्कि मुस्तमिर है तो यह सिफ़त हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में अकमल तौर पर सावित हुज़ूर के दिए से और हुज़ूर के तुफ़ैल में हुज़ूर के जद्दे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला अवीहे व वारिक व सल्लिम यह फ़ज़ीलत मिली उसका इंकार न करेगा मगर कोर वातिन *अआज़नल्लाहु तआला मिन हाज़ेही अल-अक़ीदतुल-वातिलते*। और लफ़्ज़ कज़ालिका तशवीह के वास्ते है जिसे हर मामूली अरवी दाँ जानता है और तशवीह के लिए मुशव्वह और मुशव्वह वेही ज़रूर है मुशव्वह तो खुद कुरआने करीम में मज़्कूर है यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम वाक़ी रहा मुशव्वह वेही वह नवी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम हैं। मतलव यह हुआ कि ऐ हवीवे लवीव जैसे हम आपको आसमानों और ज़मीनों की सलतनतें दिखा रहे हैं यूंही आपके तुफ़ैल में आपके वालिद माजिद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को भी उनका मुआइना करा रहे हैं और कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है। *वमा हुआ अलल-ग़ैवे वेज़नीन*। यानी मेरा महवूव ग़ैव पर वख़ील नहीं जिसमें इस्तेअ्दाद पाते हैं उसे वताते भी हैं और ज़ाहिर की वख़ील वह कि जिसके पास माल हो और सर्फ़ न करे वह कि जिसके पास माल ही नहीं क्या वख़ील कहा जाएगा और यहाँ वख़ील की नफ़ी की गई तो जव तक कोई चीज़ सर्फ़ न की हो क्या मफ़ाद हुआ लिहाज़ा मालूम हुआ कि हुज़ूर ग़ैव पर मुत्तला हैं और अपने गुलामों को उस पर इत्तिला वख़्शते हैं और फ़रमाता है। *नज़्ज़लना अलैकल-किताबा तिवयानन लेकुल्लि शैइन* हम ने तुम पर यह किताब हर शय का रौशन वयान कर देने के लिए उतारी *तिवयानन* इरशाद फ़रमाया *वयानन* न फ़रमाया कि मालूम हो जाए कि इसमें

वयान अशिया इस तरह पर है कि असलन ख़फ़ा नहीं और हदीस में है जिसे इमाम तिर्मिज़ी वग़ैरह ने दस सहावा से रिवायत किया कि सहावा किराम फ़रमाते हैं कि एक रोज़ हम सुवह को नमाज़े फज्र के लिए मस्जिदे नववी में हाज़िर हुए। और हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी में देर हुई *हत्ता किदना अन नतरा अ शम्स* यानी क़रीव था कि आफ़ताव तुलूअ् कर आए इतने में हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हुए और नमाज़ पढ़ाई फिर सहावा से मुख़ातव हो कर फ़रमाया कि तुम जानते हो क्यों देर हुई सव ने अर्ज़ की *अल्लाहु व रसूलुहू आलम* अल्लाह व रसूल ख़ूव जानते हैं इरशाद फ़रमाया *अतानी रब्वी फ़ी अहसने सूरतिन* मेरा रव सवसे अच्छी तजल्ली में मेरे पास तशरीफ़ लाया यानी मैं एक दूसरी नमाज़ में मशग़ूल था इस नमाज़ में अब्द, दर्गाह मावूद में हाज़िर होता है और वहाँ खुद ही मावूद की अब्द पर तजल्ली हुई *काला मुहम्मद फीमा यख़्तसिमुल-मलउल-आला* उसने फ़रमाया ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यह फ़रिश्ते किस वात में मुख़ासमा और मुबाहात करते हैं *फ़कुलतु ला अदरी* मैंने अर्ज़ की कि मैं वे तेरे वताए क्या जानूं। *फ़वज़आ कफ़्फ़हू वैना कतफ़ी फवजदत वरदन नामिलहू वैना सुदय फतजल्ला ली कुल्ले शैइन व अरफ़त*। तो रब्वुल-इज़्ज़त ने अपना दस्ते कुदरत मेरे दोनों शानों के दर्मियान रखा और उसकी ठण्डक मैंने अपने सीने में पाई और मेरे सामने हर चीज़ रौशन हो गई और मैंने पहचान ली सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा न फ़रमाया कि किसी वहावी साहव को यह कहने की गुन्जाइश न रहे कि कुल्लु शय से मुराद हर शय मुतअल्लिक़ वशराए है वल्कि एक रिवायत में फ़रमाया। *मा फ़िस्समाए वल-अर्ज़े* मैंने जान लिया जो कुछ आसमान और ज़मीन में है और दूसरी रिवायत में फरमाया *फ़अलिम्तु मा वैनल-मश्रिक़े वल-मग़्रिवे* और मैंने जान लिया जो कुछ मश्रिक़ से मग़्रिव तक है यह तीनों रिवायतें सही हैं तो तीनों लफ़्ज़ इरशादे अक़्दस से सावित हैं यानी मैंने जान लिया जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और जो कुछ मश्रिक़ से मग़्रिव तक है हर चीज़ मुझ पर रौशन हो गई और मैंने पहचान ली और रौशन होने के साथ पहचान लेना इसलिए फ़रमाया कि कभी शय मारूफ़ होती है पेशे नज़र नहीं और कभी शय पेशे नज़र होती है और मारूफ़ नहीं जैसे हज़ार आदमियों की मज्लिस की छत पर से देखो वह सव तुम्हारे पेशे

नज़र होंगे मगर उन में बहुत को पहचानते न होंगे इसलिए इरशाद फ़रमाया कि तमाम अशियाए आलम हमारे पेशे नज़र भी हो गई और हम ने पहचान भी लें कि उन में न कोई हमारी निगाह से वाहर रही न इल्म से ख़ारिज *वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन*। मुसलमान देखें नुसूस में बिला ज़रूरत तावील व तख़सीस वातिल व ना मस्मूअ् है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने फरमाया हर चीज़ का रौशन बयान कर देने को यह किताव हम ने तुम पर उतारी। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर चीज़ मुझ पर रविश हो गई और मैंने पहचान ली तो बिला शुबह यह रूयत व मारिफ़त जमीअ् मक्नूनात क़लम व मक्तूबाते लौह को शामिल है जिस में सब *मा काना वमा यकून मिनल-यौमिल-अव्वल इला यौमिल-आख़िर* व जुमला ज़माइर व ख़्वातिर सब कुछ दाख़िल व लिहाज़ा तबरानी व नईम बिन हम्माद उस्ताद इमाम बुख़ारी वग़ैरहुमा ने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। *इन्नल्लाहा क़द रफ़आ ली अद्दुनिया फ़इन्ना अंज़ुरा इलैहा व इला मा हुवा काइनुन फ़ीहा इला यौमिल-क़ियामते कअन्नमा अंज़ुरा इला कफ़ी हाज़ेही*। वेशक अल्लाह ने मेरे सामने दुनिया उठा ली है तो मैं उसे और उस में जो कुछ क़यामत तक होने वाला है सबको ऐसा देख रहा हूँ जैसे अपनी हथेली को और हुज़ूर के सदक़ा में अल्लाह तआला ने हुज़ूर के गुलामों को यह मरतबा इनायत फ़रमाया एक बुज़ुर्ग फरमाते हैं वह मर्द नहीं जो तमाम दुनिया को मिस्ल हथेली के न देखे उन्होंने सच फरमाया अपने मरतबा का इज़्हार किया उनके बाद हज़रत शैख़ बहाउल-मिल्लह वद्दीन नक़्श बन्द क़ुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया मैं कहता हूँ मर्द वह नहीं जो तमाम आलम को अंगूठे के नाखुन की मिस्ल न देखे और वह जो नसब में हुज़ूर के साहबज़ादे और निस्बत में हुज़ूर के एक आला जाह कफ़श बरदार हैं आनी हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु क़सीद-ए-ग़ौसीया शरीफ़ में इरशाद फ़रमाते हैं।

यानी मैंने अल्लाह के तमाम शहरों को मिस्ल राई के दाने के मुलाहिज़ा किया और यह देखना किसी ख़ास वक़्त से ख़ास न था बल्कि **अलल-इत्तिसाल यही हुक्म है और फ़रमाते हैं *अन्ना बुबुव्वते ऐनी फ़िल्लौहिल-महफ़ूज़* मेरी आंख की पुतली लौहे महफ़ूज़ में लगी है लौहे**

महफ़ूज़ किया है उसके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है। *कुल्लु सग़ीरुन व कबीरुन मुस्ततेरुन* हर वड़ी छोटी चीज़ लिखी हुई है और फ़रमाता है। *मा फ़र्रतना फ़िल-किताबि मिन शैइन* हम ने किताव में कोई शय उठा न रखी और फरमाता है। *ला रतबा वला याबिसा इल्ला फ़ी किताबिन मुबीन* कोई तर व खुश्क ऐसा नहीं जो किताबे मुबीन में न हो तो जब लौहे महफ़ूज़ की यह हालत कि इसमें तमाम काइनात रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िर तक महफ़ूज़ हैं तो जिसको उसका इल्म हो वेशक उसे सारी काइनात का इल्म होगा।

अर्ज़ : ज़ुहर का वक़्त कब तक रहता है।

इरशाद : मज़हबे इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि में दो मिस्ल तक रहता है और यही क़ौल असह है।

अर्ज़ : अगर एक मिस्ल के अन्दर ज़ुहर पढ़ी जाए और बाद दो मिस्ल अस्र तो बेहतर होगा कि सब अक़्वाले उलमा जमा हो जाएंगे।

इरशाद : हाँ अच्छा है इमाम व साहिबीन के क़ौल जमा हो जाएंगे तमाम अक़्वाले उलमा का जमा करना नामुम्किन है कि इस्तख़री शाफ़इया से इस अम्र के क़ाइल हैं कि बाद मिस्लैन किसी नमाज़ का वक़्त ही नहीं।

मौलवी अमजद अली साहब : ज़ुहर में ताख़ीर गर्मी के ज़माना में मुस्तहब है इस क़द्र कि शिद्दत हर जाती रहे जैसा कि हदीस में इरशाद हुआ।

इरशाद : हाँ एक मिस्ल तक तो हरगिज़ शिद्दते हरमैन कमी नहीं होती यह आला दरजा की हदीस सही इमाम की आला दलील है और उसे वाज़ेह तर कर दिया बुख़ारी की हदीस अबू ज़र रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने कि एक मंज़िल में तशरीफ फरमा थे मुअज़्ज़िन अज़ान कह कर हाज़िरे वारगाह हुए फ़रमाया अबरद वक़्त ठण्डा करो फिर देर के बाद हाज़िर हुए फ़रमाया अबरद वक़्त ठण्डा करो फिर देर के बाद हाज़िर हुए फ़रमाया अबरद वक़्त ठण्डा करो। *हत्ता सावज़्ज़ल्ला अत्तलूलु* यहाँ तक कि टीलों के साए उनके बराबर हो गये उस वक़्त नमाज़ अदा फ़रमाई ख़ुद अइम्मा शाफ़ईया तस्रीह फ़रमाते हैं कि टीलों का साया शुरू उस वक़्त होता है जब अक्सर वक़्त ज़ुहर निकल जाता है तो उनके बराबर किस वक़्त होगा यक़ीनन जब कि मिस्ल अव्वल देर का

निकल चुका हो काइलाने मिस्ल अव्वल के पास इस हदीस सही से अस्लन कोई जवाब नहीं ग़ैर मुक़ल्लिदों के पेशवा नज़ीर हुसैन देहलवी ने मेअ्यारुल-हक़ में जो हरकत मज़्बूही और हदीस से मुसख़्ख़र की गई है उसका रद्द मेरी किताब हाजिजुल-बहरैन में देखिए।

अर्ज़ : अगर क़बल दो मिस्ल के अस्र की नमाज़ पढ़ ली जाए तो हो जाएगी।

इरशाद : हाँ साहिबैन के नज़्दीक हो जाएगी।

अर्ज़ : क्या एआदा वाजिब न होगा।

इरशाद : फ़र्ज़ न होगा कि इस क़ौल पर भी फतवा दिया गया है अगरचे सही व मोतमद क़ौल इमाम है।

अर्ज़ : तो क्या तमाम मसाइले इख़्तिलाफ़िया का यही हुक्म है।

इरशाद : नहीं बल्कि जिस में इख़्तिलाफ़ फतवा है उसका यही हुक्म है कि जिस क़ौल पर अमल किया जाएगा हो जाएगा और चूंकि इसमें उलमा दोनों तरफ़ गये हैं और दोनों क़ौलों पर फ़तवा दिया है। लिहाज़ा जिस पर अमल किया जाएगा हो जाएगा मगर जो मोतक़िद तरजीह क़ौल इमाम है उसे एहतराज़ चाहिए हरमैन तैयबैन में अब कुछ बरसों से हन्फ़ी मुसल्ला पर नमाज़े अस्र मिस्ल सानी में होने लगी है सुबह के सिवा सब नमाज़ें पहले मुसल्लाए हन्फ़ी पर हो तीन शाफ़ईया ने शिकायत की कि हमारे लिए वक़्त अस्र हमारे मज़हब की रू से तंग हो जाता है उस पर तो यह हुआ नहीं कि नमाज़े अस्र मिस्ल सुबह मुअख़्ख़र कर दी जाए रखी मुक़द्दम और मिस्ले दोम में कर दी इस बार की हाज़िरी में यह नई बात देखी मैं और मक्का के जलील उलमाए हन्फ़ीया मिस्ल मौलाना शैख़ सालेह कमाल मुफ़्ती हन्फ़ीया मौलाना सैयद इस्माईल मुहाफ़िज़ कुतुबे हरम इस जमाअत में शरीक होते तो नफ़्ल की नीयत से फिर हन्फ़ी वक़्त पर अपनी जमाअत करते जिसमें वह अकाबिर इस फ़क़ीर को इमामत पर मजबूर फ़रमाते।

अर्ज़ : जुमा अगर ऐन ज़वाल के वक़्त पढ़ा जाए तो होगा या नहीं।

इरशाद : नहीं कुतुबे फ़िक़्ह बहर वग़ैरह में तस्रीह फ़रमाई जुमा मिस्ल ज़ुहर है।

अर्ज़ : ज़वाल के वक़्त नमाज़ की कराहत इस बिना पर है कि जहन्नम रौशन किया जाता है और यह हदीस में है दूसरी हदीस में

इरशाद फ़रमाया कि जुमा के दिन जहन्नम भड़काया नहीं जाता लिहाज़ा चाहिए कि ज़वाल के वक़्त मक्रूह न हो कि माने मौजूद नहीं।

इरशाद : यह उस वक़्त नवाफ़िल की कराहत में जारी हो सकता है फ़राइज़ के तो अव्वल व आख़िर वक़्त मुक़र्रर हैं अव्वल से पहले बातिल हैं और आख़िर के बाद क़ज़ा मसलन नमाज़ सुबह का अव्वले वक़्त तुलूअ् फज्र है उस से पहले शुरू की तो नमाज़ क़तअन न होगी। न यह कि जाइज़ करें। कि वह वक़्ते कराहत नमाज़ का नहीं जुमा के दिन जहन्नम न सुल्गाए जाने से अगर साबित हुआ तो इतना कि वह औक़ाते कराहत से न रहा न यह कि जुमा जिसका आग़ाज़े वक़्त बाद ज़वाल है पेशे अज़ वक़्त जाइज़ हो जाए हाँ दरबार है नवाफ़िल इसी हदीस की बिना पर इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने रोज़े जुमा वक़्ते ज़वाले कराहत न मानी इशबाह में उसे सही व मोतमद रखा मगर यह हावी क़ुदसी से है मेरा तजरबा है कि साहब हावी यूसफी अल-मज़हब हैं हर जगह क़ौले इमाम अबू यूसुफ़ को *बेही नाख़ुज़* कहते हैं हमारे इमाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का मज़हब जिस पर तमाम मतून व शुरूह हैं इतलाक़ मना है और यही सही व मोतमद है।

मुअल्लिफ़ : आज हज़रत मौलाना वसी अहमद साहब मुहद्दिस सूरती (अलैहिर्रहमा जिनको आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुल-अक़्दस ने अल-असद अल-असद अल-असद से मुख़ातब फरमाया था) और जनाब मौलाना मौलवी अहमदुल्लाह साहब पेशावरी भी दौलत कदह अक़्दस पर मेहमान हैं दोपहर का वक़्त है यह हज़रात और हज़रत क़िबला दामत बरकातुहुम खाना मुलाहिज़ा फ़रमा रहे हैं मौलाना मौलवी हकीम अमजद अली साहब भी हाज़िर और शरीके तआम हैं बरैली के पानी की नफ़ासत का ज़िक्र हुआ उस पर इरशाद हुआ कि पानी अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है जिस से कुरआने अज़ीम में जाबजा बन्दों पर मिन्नत रखी और एक जगह ख़ास उस पर शुक्र की हिदायत फरमाई।

तरजमा : क्या तुमने देखा यह पानी जो पीते हो क्या तुमने उसे बादलों से उतारा या हम हैं उतारने वाले (बल्कि तू ही ऐ रब हमारे) हम चाहें तो उसे सख़्त खारी कर दे फिर क्यों नहीं शुक्र करते (तेरे वज्हे करीम के लिए हमेशा हम्द है ऐ रब हमारे)।

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कभी

खाने पीने पहनने की कोई चीज़ किसी से तलब न फरमाई मगर ठण्डा पानी दोबारा तलब फ़रमाया एक बार फरमाइश फरमाई रात का बासी लाओ। मैंने मदीना तैयबा से बेहतर पानी कहीं न पाया खुद्दामे किराम हाज़िरीने बारगाह के लिए ज़ूरक़ों में पानी भर कर रखते हैं गर्मी के मौसम में इस शहर करीम की ठण्डी नसमें इतना सर्द कर देती हैं कि बिल्कुल बर्फ़ मालूम होता है उम्दा पानी की तीन सिफ़तें हैं और वह तीनों इसमें आला दरजा पर हैं एक सिफ़त यह कि हल्का हो और वह पानी इस क़द्र हल्का है कि पीते वक़्त हलक़ में उसकी ठण्डक तो महसूस होती है और कुछ नहीं अगर खुनकी न हो तो उराका उतरना बिल्कुल मालूम न हो दूसरी सिफ़त शीरीनी वह पानी आला दरजा का शीरीं है ऐसा शीरीं मैंने कहीं न पाया तीसरी खुनकी यह भी इसमें आला दरजा पर है। मेरी आदत है कि खाना खाते में पानी पीता हूँ खाना मकान पर खाया जाए और वह जांफ़ज़ा पानी मस्जिद करीम में लिहाज़ा खाना खाते में पानी न पीता खाने के बाद मस्जिद करीम में बनीयत एतकाफ़ हाज़िर होता और इस अतीया सरकारी से दिल व जान सैराब करता एतकाफ़ तो हर मस्जिद की हाज़िरी में हमेशा होता ही है पानी के लिए एतकाफ़ न होता था बल्कि उसकी मनफ़अत यही ग़ैर मोतकिफ़ को मस्जिद में खाना पीना जाइज़ नहीं।

अर्ज़ : खाने पीने के लिए एतकाफ़ जाइज़ है।

इरशाद : एतकाफ़ सिर्फ़ ज़िक्रे इलाही के लिए किया जाए बित्तबअ् उसके मनाफ़े और हो सकते हैं मसलन रोज़े के बारे में हदीस है। सूमू तुसह्हू रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे। तो यह नहीं हो सकता कि रोज़ा तन्दुरुस्ती की नीयत से रखा जाए बल्कि रोज़ा अल्लाह तआला के लिए होगा और तन्दुरुस्ती की मनफ़अत भी उस से तबअन हासिल होगी फिर उसी हदीस में फ़रमाया हुज्जू *तस्तग़नू* हज करो. ग़नी हो जाओगे तो यह नहीं कि हज माल की नीयत से किया जाए बल्कि हज अल्लाह तआला के लिए होगा और यह नफ़ा भी ज़िम्नन मिलेगा तो जिस तरह यह दोनों अल्लाह ही के लिए हैं और सेहत व ग़िना उनके ज़िम्नी मुनाफ़े इसी तरह एतकाफ़ अल्लाह तआला के लिए होगा और खाने पीने का जवाज़ नफ़ा बितबा फतावा आलमगीरी वग़ैरहा में है अगर मस्जिद में सोना चाहे एतकाफ़ की नीयत कर ले कुछ देर ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल

रहे फिर जो चाहे करे।

मुअल्लिफ़ : खाने के बाद डाक निकालने का हुक्म फरमाया डाक निकाली गई मौलाना मौलवी हकीम मुहम्मद अमजद अली साहब ने खुतूत सुनाना शुरू किए जवाब फरमाते जाते मौलाना लिखते जाते उनमें एक ख़त हज़रत सैयद शाह नूर आलम मियाँ साहब साहबज़ादा सरकारे खुर्द मारहरा मुतहरा का था उन्होंने तहरीर फ़रमाया था कि एक मसला तलब है शर्म इस बात की है कि कोई दीनी मसअला जिस में मुझे सवाब मिलता और आपका क़ीमती वक़्त ज़ाए न होता मैं दरयाफ़्त क़रता सो यह दीनी मसअला नहीं दूसरे कोई सवाल आपके शायाने शान होता तो भी मुझ को पस व पेश न था जो बात दरयाफ़्त करता हूँ वह भी आपके मरतबा उलिया से बहुत दून व अदून है बहरहाल आप ही ऐसे हैं कि हर फन के अकमल व मुकम्मल आप से फ़ैज़याब हो सकते हैं लिहाज़ा बवजूद एतक़ाद व उम्मीद व वसूक़ सौदा का मतला कि उस वक़्त ज़ेरे बहस अइज़्ज़ा है और मुझ से दरयाफ़्त किया गया है पेश करता हूँ।

हुआ जब कुफ़्र साबित है यह तमग़ाए मुसलमानी
न टूटे शैख़ से ज़न्नार तस्बीह सुलेमानी

कुछ समझ में न आया। हर चन्द इस नाचीज़ सवाल में आपके हुमायूं साआत को तल्फ़ करना बहुत गुस्ताख़ी है मगर क्या करें आप ही ऐसे हैं जो इन मुश्किलात को भी हल फरमाएं तो आप को हर फन में इमाम और *अलमुल-आलाम* ख़्याल करता हूँ खुदावन्दे तआला आपके वजूदे मस्ऊद बाजूद को ज़िन्दा सलामत व बा ख़ैरियत रखे। (वह हर शय पर क़ादिर और क़ुबूल फरमाना उसकी शान है) इन्नहू *अला कुल्ले शैइन क़दीर। व बिल-इजाबति जदीरिन*। इस शेअर की शरह मुख़्तसर और थोड़ी तरकीब इबारत और खुलासा और नतीजा मतलब ख़ेज़ बज़रिया किसी तालिबे इल्म साहब के इफादा फरमाया जाए हम सब लोग आपके ही के इरशाद व हल मतलब पर नज़र कर रहे हैं एक आला हज़ीन का मतलअ् तौहीद यह जिसको बड़े-बड़े ज़हीन व सुख़न संज न हल कर सकेंगे पहले आपने आन की आन में हल फरमा दिया था यह तो उसके सामने हैच मालूम होता है बहरहाल मतयक़्क़ा हूँ कि जवाब से मस्रूर व मुफ़ख़्ख़िर फरमाइए फ़क़त।

मौलाना अमजद अली साहब : हुज़ूर इसका क्या मतलब है।

इरशाद : बहुत आसान और ज़ाहिर है अच्छा इसका जवाब लिखिए और उसी डाक से रवाना फरमा दीजिए।

मुअल्लिफ़ : फिर हज़रत क़िबला मद्दा ज़िल्लहुल-अक़दस ने यह जवाब लिखवा कर रवाना फरमा दिया। बशर्फ़ मुलाहिज़ा हज़रते वाला दामत बरकातुहुम। ज़ाहिर मतलब शेअ्र जहाँ तक शाइर ने मुराद लिया होगा सिर्फ़ इतनी मुनासिबत देख लेना है कि दानहू सुलेमानी में जिसकी तस्बीह एबाद व ज़हाद रखते हैं शक्ल जुन्नार मौजूद है और उसका रखना तमग़ाए फ़ुक्र क़रार पाया है शाइर कि मज़हबन सुन्नी न था और बदगुमानी तग़माए शुअ्रा है ग़ालिबन उस से ज़ाइद कुछ न समझा होगा और यह एक बेहूदा मानी थे मगर इत्तिफ़ाक़न उसके क़लम से एक लफ़्ज़ ऐसा निकल गया जिसने इस शेअ्र को बामानी व पुर मग़्ज़ कर दिया वह किया यानी लफ़्ज़ साबित जुन्नार कि कुफ़्फ़ार बांधते हैं ज़नार ज़ाइल है कि एक झटके में टूट सकता है और दाना सुलेमानी में उसकी तस्वीर साबित है कि जब तक दाना रहेगा क़ायम रहेगी यूंही कुफ़्र दो क़िस्म है एक कुफ़्र ज़ाइल जो कुफ़्र कुफ़्फ़ार है और जिस की सज़ा खुलूदे फ़िन्नार है हर काफिर मौत के बाद उस से बाज़ आता है क़ाला तआला (१) वत्तख़ज़ू मिन दूनिल्लाहि आलिहतन लेयकूनू लहुम इज़्ज़न। कल्ला सयक्फ़ुरूना बेएबादतेहिम व यकूनूना अलैहिम ज़िद्दन। (१.उन्होंने अल्लाह के सिवा और खुदा के ठहराए कि उन से उनकी इज़्ज़त हो। हरगिज़ नहीं। अनक़रीब उनकी इबादत से कुफ़्र करेंगे और उनके मुख़ालिफ़ हों। १२ मुँह) दूसरा कुफ़्र साबित जो अबदल-आबाद तक क़ायम रहेगा जिसे उलमाए दीन ने जुज़-ए-ईमान फरमाया है वह है जिसे कुरआने अज़ीम इरशाद फरमाता है।

तरजमा : जो शैतान के साथ कुफ़्र करे और अल्लाह पर ईमान लाए उसने बेशक बड़ी मज़बूत गिरह थाम ली जो कभी न खुलेगी और अल्लाह सुनता जानता है।) इब्राहीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने अपनी क़ौम से फरमाया। *इन्ना बराउन मिनकुम व मिम्मा ताबुदूना मिन दूनिल्लाहि कफरना बेकुम।* हम बेज़ार हैं तुम से और अल्लाह के सिवा तुम्हारे माबूदों से हम तुम से कुफ़्र व इंकार रखते हैं सही हदीस में है जब मेंह बरसता है और मुसलमान कहता है हमें अल्लाह के फ़ज़ल व रहमत से

मेंह मिला अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसे फरमाता है। *मुमिनुन बी व काफ़िरुन बिल-कौकबे।* मुझ पर ईमान रखता है और नक्षत्र से कुफ़्र व इंकार, अल्हम्दु लिल्लाह तागूत व शैतान व बुत व जुमला माबूदाने बातिल के साथ मुसलमानों का यह कुफ़्र व इंकार अबदल-आबाद तक क़ायम रहेगा बख़िलाफ़ कुफ़्र कुफ़्फ़ार के कि अल्लाह व रसूल से उनका कुफ़्र क़यामत बल्कि बरज़ुख़ बल्कि सीने पर दम आते ही जिस वक़्त मलाइका अज़ाब को देखेंगे ज़ाइल हो जाएगा मगर क्या फाइदा। (२) *आल आना व असैता क़बलु*। (२. क्या अब हालांकि पहले तो नाफरमान रहा १२) अब माना वाज़ेह हो गये कि जो कुफ़्र साबित है वह तमग़ाए मुसलमान बल्कि जुज़ व ईमान है बख़िलाफ़ कुफ़्र ज़ाइल *बल-अयाज़ बिल्लाह तआला*। उसी वक़्त सहीफ़ा शरीफ़ा मिला फौरी जवाब हाज़िर है।

मुअल्लिफ़ : इस वक़्त वह हाफ़िज़ साहब हाज़िर हैं जिन्होंने इस वहाबी ख़्याल शख़्स को पेश किया था जिसने इल्म (३) ग़ैब में कुछ दरयाफ़्त किया था। (जिसका जवाब गुज़र चुका।)

अर्ज़ : हुज़ूर वह शख़्स जब यहाँ से गया तो रास्ता ही में कहने लगा कि आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुम की बातें मेरे दिल ने क़बूल कीं और अब मैं इन्शाअल्लाह तआला उनका मुरीद हूँगा।

इरशाद : देखो नर्मी के जो फवाइद हैं वह सख़्ती में हरगिज़ हासिल नहीं हो सकते अगर उस शख़्स से सख़्ती बरती जाए तो हरगिज़ यह बात न होती जिन लोगों के अक़ाइद मुज़बज़ब हों उन से नर्मी बरती जाए कि वह ठीक हो जाएं यह जो वहाबिया में बड़े-बड़े हैं उन से भी इब्तिदा बहुत नर्मी की गई मगर चूंकि उनके दिलों में वहाबियत रासिख़ हो गई थी और मिस्दाक़ *सुम्मा ला यऊदूना* हक़ न माना उस वक़्त सख़्त की गई कि रब अज़्ज़ा व जल्ला फरमाता है *या ऐयुहन्नबीयु जाहिदिल-कुफ़्फ़ारा बल-मुनाफ़ेक़ीना वग़लुज़ अलैहिम।* ऐ नबी जिहाद फरमाओ काफिरों और मुनाफ़िक़ों पर और उन पर सख़्ती करो और मुसलमानों को इरशाद फरमाता है *बलेयजेदू फ़ीकुम ग़लज़तन* लाज़िम है कि वह तुम में दुरुश्ती पाएं।

एक शख़्स ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मेरे लिए ज़ना हलाल फरमा दीजिए सहाबा किराम ने उन्हें क़त्ल करना चाहा कि ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर यह गुस्ताख़ी के अल्फ़ाज़ कहे हुज़ूर

ने मना फ़रमाया और उन से फ़रमाया क़रीव आओ वह क़रीव हाज़िर हुए और क़रीव फ़रमाया यहाँ तक कि उनके ज़ानू ज़ानुवे अक़्दस से मिल गये उस वक़्त इरशाद फ़रमाया क्या तू चाहता है कि कोई शख़्स तेरी माँ से ज़ना करे अर्ज़ की न। फ़रमाया तेरी वेटी से अर्ज़ की न। फ़रमाया तेरी वहन से अर्ज़ की न फ़रमाया जिस से तू ज़ना करेगा आख़िर वह भी किसी की मां या वेटी या वहन या फूफी या ख़ाला होगी यानी जो वात अपने लिए नहीं पसन्द करता दूसरे के लिए क्यों पसन्द करता है। दस्ते अक़्दस उनके सीना पर मार कर दुआ फ़रमाई कि इलाही ज़ना की मुहव्वत उसके दिल से निकाल दे वह सावि कहते हैं जव मैं हाज़िर हुआ था तो ज़ना से ज़्यादा महवूव मेरे नज़्दीक कोई चीज़ न थी, और अव उस से ज़्यादा कोई चीज़ मुझे मवग़ूज़ नहीं उसके वाद हुज़ूरे सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे किसी का ऊंट भाग गया लोग उसे पकड़ाने को उसके पीछे दौड़ते हैं जितना दौड़ते हैं वह ज़्यादा भागता है। उसके मालिक ने कहा तुम लोग ठहर जाओ उसकी राह मैं जानता हूँ। सब्ज़ घास का एक मुट्ठा लेकर चुमकारता हुआ ऊंट के क़रीव गया और उसे पकड़ लिया और विठा कर उस पर सवार हो लिया फ़रमाया उस वक़्त अगर तुम उसे क़त्ल कर देते तो जहन्नम में जाता।

अर्ज़ : हुज़ूर मेरे कुछ रुपये एक शख़्स पर हैं वह नहीं देते।

इरशाद : इस ज़माने में क़र्ज़ देना और यह ख़्याल करना कि वसूल हो जाएगा एक मुश्किल ख़्याल है मेरे पन्द्रह (१५००) सौ रुपये लोगों पर क़र्ज़ हैं जव क़र्ज़ दिया यह ख़्याल कर लिया कि दे दे तो ख़ैर वरना तलव न करूंगा। जिन साहिवों ने क़र्ज़ लिया देने का नाम न लिया (फिर खुद ही फ़रमाया) जव यूं क़र्ज़ देता हूं तो हिवा क्यों नहीं कर देता उसकी वजह यह है कि हदीस शरीफ़ में इरशाद फरमाया जव किसी का दूसरे पर देन हो और उसकी मीआ़द गुज़र जाए तो हर रोज़ उसी क़द्र रुपया की ख़ैरात का सवाव मिलता है जितना देन है। उस सवावे अज़ीम के लिए मैंने क़र्ज़ दिए हिवा न किए पन्द्रह सौ रुपये रोज़ मैं कहाँ से ख़ैरात करता।

अर्ज़ : हुज़ूर हाफ़िज़ कितनों की शफ़ाअत करेगा सुना गया है कि अपने इज़्ज़ा से दस शख़्सों की।

इरशाद : हाँ और उसके मां वाप को क़यामत के दिन ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस से मश्रिक़ से मग़्रिव तक रौशन हो जाए और शहीद पचास (५०) शख़्सों की, हाजी सत्तर (७०) की और उलमा वे गिनती लोगों की शफ़ाअत करेंगे हत्ता कि आलिम के साथ जिन लोगों को कुछ भी तअल्लुक़ होगा उसकी शफ़ाअत करेंगे। कोई कहेगा मैंने वुज़ू के लिए पानी दिया था कोई कहेगा मैंने फुलां काम कर दिया था लोगों का हिसाव हो जाएगा और वह जन्नत को भेजे जाएंगे उलमा का हिसाव कव का हो चुका होगा और वह रोके जाएंगे अर्ज़ करेंगे इलाही लोग जा रहे हैं हम क्यों रोके गये हैं फ़रमाया जाएगा तुम आज मेरे नज़्दीक फ़रिश्तों की मानिन्द हो शफ़ाअत करो कि तुम्हारी शफ़ाअत से लोग वख़्शे जाएं। हर सुन्नी आलिम से फ़रमाया जाएगा अपने शागिर्दों की शफ़ाअत कर अगरचे आसमान के सितारों की वरावर हों।

अर्ज़ : हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम अक़्दस क्या है।

इरशाद : हुज़ूर के इल्मे ज़ात दो हैं कुतुवे साविक़ा में अहमद है और कुरआने करीम में मुहम्मद है सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और हुज़ूर के अस्माए सिफ़ात वेगिनती हैं अल्लामा अहमद ख़तीव क़स्तलानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने पाँच सौ जमा फ़रमाए। सीरत शामी में तीन सौ और इज़ाफ़ा किए और मैंने छेः सौ और मिलाए कुल चौदह सौ हुए और हुज़ूर के अस्मा हर तवक़ा में मुख़्तलिफ़ हैं और हर-हर जिन्स में जुदागाना हैं दरिया में और नाम हैं पहाड़ों में और।

अर्ज़ : यह कसरते अस्मा कसरते सिफ़ात पर दलालत करती है।

इरशाद : हाँ।

अर्ज़ : हर तवक़ा और हर जिन्स में जुदा-जुदा नाम होना इसलिए कि हर जगह हुज़ूर की एक ख़ास तजल्ली है जिस जगह सिफ़त का ज़ुहूर है उसी के मुनासिव नाम भी है।

इरशाद : यह भी है (उसके वाद वयान फरमाया) इंजील शरीफ़ की वहुत सी आयात हैं जो हुज़ूर के औसाफ़ वयान कर रही हैं अगरचे नसारा ने वहुत तहरीफ़ की है और अपनी चलती वह कुल आयतें जो हुज़ूर के औसाफ़ में थीं निकाल डाली मगर जिस अम्र को अल्लाह तआला पूरा करना चाहे उसको कौन नाक़िस कर सकता है वहुत सी

आयते अब भी रह गई मगर उन्हें सूझती नहीं अला हाज़ल-क़्यास तौरात व ज़बूर में।

मुअल्लिफ़ : एक साहब शाह जहानपुर से हाज़िरे ख़िदमत हुए उन्होंने अर्ज़ की मैंने सुना है और बाज़ देवबन्दियों की किताबों में भी देखा है कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इल्म शरीफ़ को जनाब अल्लाह तआला के इल्मे करीम की बराबर फरमाते हैं। मगर चूंकि यह बात समझ में नहीं आती इसलिए मैंने चाहा कि हुज़ूर का शर्फ़े मुलाक़ात हासिल करके उसे अर्ज़ करूं और जो कुछ हज़रत का इस बारे में ख़्याल हो दरयाफ़्त करूं।

इरशाद : उसका फ़ैसला कुरआने अज़ीम ने फरमा दिया। *फनज्अलु लानतल्लाहि अलल-काज़ेबीन* जो मेरे अक़ाइद हैं वह मेरी किताबों में लिखे हैं वह किताबें छप कर शाए हो चुकी हैं कहीं उसका कुछ नाम निशान हो तो कोई दिखा दे। हम अह्ले सुन्नत का मस्अला इल्मे ग़ैब में यह अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को इल्मे ग़ैब (कुरआने करीम की बकसरत आयाते करीमा मिस्ल *व अल्लमका मालम तकुन तालम वकाना फ़ज़्लुल्लाहे अलैका अज़ीमा*। और बहुत अहादीसे शरीफ़ा मसलन *फतजल्ला ली कुल्ले शैइन व अरफ़्ता* नीज़ कसीर अक़्वाले अइम्मा से आफ़ताब निस्फुन्नहार की तरह रौशन है कि हुज़ूर को इल्मे ग़ैब इनायत हुआ तफ़्सील के लिए *ख़ालिसुल-एतक़ाद अंबा-उल-मुस्तफ़ा अद्दौलतुल-मक्कीया मालियुल-हबीब*। वग़ैरहा रसाइल शरीफ़ा इमाम अह्ले सुन्नत मुजद्दिदे मिल्लत हाज़िरा दामत बरकातुहुम नीज़ वक़आतुस्सिनान व अदख़ालुस्सिनान व क़सीदा मुबारका *अल-इस्तिम्दाद अला उजयाला अल-इर्तिदाद* मुलाहिज़ा हों १२ मुअल्लिफ़ ग़ुफ़िर लहू।) इनायत फरमाया रब अज़्ज़ा व जल्ला फरमाता है *वमा हुवा अलल-ग़ैबि बेज़नीन*। यह नबी ग़ैब के बताने में बख़ील नहीं तफ़्सीर मआलिम व तफ़्सीर ख़ाज़िन में है यानी हुज़ूर को इल्मे ग़ैब आता है वह तुम्हें भी तालीम फरमाते हैं और वहाबिया देवबन्दियों का यह ख़्याल है कि किसी ग़ैब का इल्म हुज़ूर को नहीं अपने ख़ातमा (हुज़ूर को मआज़ल्लाह अपने ख़ातमा का भी इल्म नहीं और दीवार के पीछे की ख़बर नहीं और हुज़ूर के लिए इल्मे ग़ैब मानना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है और शैतान का इल्म वसीअ़ है अपने ख़ातम का इल्म न होना दिल्ली के एक वहाबी ने कहा

था बाक़ी सब कुफ़्रियात बराहीने क़ातेआ में हैं। मुअल्लिफ़ ग़ुफ़िर लहू) का भी इल्म नहीं दीवार के पीछे की भी ख़बर नहीं बल्कि हुज़ूर के लिए इल्मे ग़ैब का मानना शिर्क है और शैतान की बुसअत इल्मे नस से साबित है और अल्लाह के दिए से भी हुज़ूर को इल्मे ग़ैब हासिल नहीं हो सकता। बराबरी तो दरकनार मैंने अपनी किताबों में तस्रीह कर दी है कि अगर तमाम अव्वलीन व आख़िरीन का इल्म जमा किया जाए तो उस इल्म को इल्मे इलाही से वह निस्बत हरगिज़ नहीं हो सकती जो एक क़तरे के करूरवे हिस्सा को करूरो समुन्द्र से है कि यह निस्बत मुतनाही की मुतनाही के साथ है और वह ग़ैर मुतनाही मुतनाही को ग़ैर मुतनाही से क्या निस्बत हो सकती है।

अर्ज़ : सदक़ा का जानवर बिला ज़बह किए किसी मसरिफ़ सदक़ा को दे दिया जाए तो जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर सदक़ा वाजिबा है और वजूबे ख़ास ज़बह का है तो बेज़बह अदा न होगा। मगर इस हालत में कि ज़बह के लिए वक़्ते मुऐयन था जैसे कुरबानी के लिए ज़िल-हिज्जा की दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं और वह वक़्त निकल गया तो अब ज़िन्दा तसद्दुक़ किया जाएगा।

अर्ज़ : अक़ीक़ा का गोश्त बच्चा के मां-बाप, नाना-नानी, दादा-दादी, मामू, चचा वग़ैरह खाएं या नहीं।

इरशाद : सब खा सकते हैं *कुलू औ तसद्दकू व अयतजरू* उकूदुद्दरीया में है *अहकामुहा अहकामिल-अज़्हिया।*

अर्ज़ : किया मुहर्रम व सफर में निकाह करना मना है।

इरशाद : निकाह किसी महीने में मना नहीं यह ग़लत मशहूर है।

अर्ज़ : ज़ैद की रबीबा लड़की का निकाह ज़ैद के हक़ीक़ी भाई से हो सकता है।

इरशाद : हाँ जाइज़ है।

अर्ज़ : किया इद्दत के अन्दर भी निकाह हो सकता है।

इरशाद : इद्दत में निकाह तो निकाह। निकाह का पयाम देना भी हराम है।

अर्ज़ : अगर कोई पेशे इमाम या क़ाज़ी इद्दत में निकाह पढ़ाए तो उसके लिए क्या हुक्म है उस पढ़ाने वाले के निकाह में तो कुछ फ़र्क़ न आएगा और ऐसे शख़्स की इमामत का क्या हुक्म है और उस पर कुछ

कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा या नहीं और उस निकाह में जो लोग शरीक हुए उनकी निस्वत भी इरशाद हो पेश इमाम ने इक़रार किया कि मुझ से ग़लती हो गई अव मुझे मुसलमान मआफ़ फरमाएं मगर एक मौलवी साहव ने उस से कह दिया कि तुम कह दो "मुझे इत्तिला न थी मैंने वेख़वरी में निकाह पढ़ा दिया" उन साहव के लिए शरअन क्या हुक्म है।

इरशाद : जिस ने दानिस्ता इद्दत में निकाह पढ़ाया अगर हराम जान कर पढ़ा या सख़्त फासिक़ और ज़ना का दल्लाल हुआ मगर उस से उसका अपना निकाह न गया और अगर इद्दत में निकाह हलाल जाना तो खुद उसका निकाह जाता रहा और वह इस्लाम से ख़ारिज हो गया वहरहाल उसकी इमामत जाइज़ नहीं जव तक कि तौवा न करे यही हुक्म शरीक होने वालों का है जो न जानता था कि निकाह पेश अज़ इद्दत हो रहा है उस पर इल्ज़ाम नहीं और जो दानिस्ता शरीक हुआ अगर हराम जान कर तो सख़्त गुनाहगार हुआ और हलाल जाना तो इस्लाम भी गया और वह शख़्स जिस ने इमाम को झूठ वोलने की तालीम दी सख़्त गुनाहगार हुआ उस पर तौवा फ़र्ज़ है।

अर्ज़ : हिन्दा के निकाह व रुख़्सत को दो साल हुए रुख़्सत के वाद सिर्फ़ चौदह पन्द्रह रोज़ शौहर के यहाँ रही फिर अपने मैके चली आई जव से न शौहर वुलाता है न रोटी कपड़ा देता है और हिन्दा का महर निस्फ़ मुअज्जल और निस्फ़ मुवज्जल है अव शरअन वह निस्फ़ मुअज्जल और नान नफ़्क़ा मिल सकता है या नहीं।

इरशाद : हाँ निस्फ़ मुअज्जल का अभी या जव चाहे दावा कर सकती है और अगर वह शौहर के यहाँ जाने से इंकारी हो कर न वैठी वल्कि वहां जाना चाहती है और शौहर नहीं आने देता तो नान नफ़्क़ा की भी मुस्तहिक़ है मगर जितना ज़माना गुज़र लिया उसका दावा नहीं कर सकती जव तक कुछ माहवार मुक़र्रर न हो गया हो। (फिर एक इस्तिफ़्ता पेश हुआ) कि ज़ैद ने अपनी औरत को तलाक़ दी दो तीन रोज़ के वाद दूसरे शख़्स ने निकाह कर लिया अभी इद्दत न गुज़री थी आया उसका निकाह हुआ या नहीं और अगर नहीं हुआ तो तीस वरस उस ने हराम किया और वह हराम का मुर्तकिव हुआ अव हम विरादरी वाले उस पर जुर्माना डालना चाहते हैं शरीअत क्या हुक्म देती है हम उसे सज़ा भी देना चाहते हैं जो शरअ़ फरमाए वह सज़ा हम उसे दें या

उसे विरादरी से जुदा कर दें या कुछ लोगों को खाना खिला दें।

इरशाद : वह निकाह नहीं हुआ हराम महज़ हुआ और मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है कि फौरन जुदा हो जाएं न मानें तो विरादरी वाले उन्हें क़तअन विरादरी से ख़ारिज कर दें उन से मेल जोल, वोल चाल, नशिस्त वरख़ास्त यक लख़्त तर्क कर दें उसके सिवा यहाँ और क्या सज़ा हो सकती है और जवरन खाना डालना या जुर्माना लेना जाइज़ नहीं।

अर्ज़ : हमारे यहाँ अव यह रिवाज हो चला है कि निकाह के वक़्त शाहिदीन वहमराही वकील नहीं जाते और क़ाज़ी ववकालत वकील और हाज़िरीन की शहादत से निकाह पढ़ा देता है यह अम्र इन्दश्शरह महमूद है या मरदूद। नीज़ मज़हवे हन्फ़ी में इस तौर पर निकाह सहीह भी होगा या नहीं क्या वकील को अपने साथ दो शाहिद रखना और उन गवाहों का औरत की इजाज़त सुनना ज़रूरी नहीं अगर वतरीक़ अव्वल निकाह हुआ तो सव गुनाहगार हुए या नहीं।

इरशाद : वकील के साथ शाहिदों की कुछ हाजत नहीं अगर वाक़े में औरत ने वकील को इज़्न दिया और उसने निकाह पढ़ा दिया, निकाह हो गया हाँ अगर औरत इंकार करेगी कि मैंने इज़्न न दिया था तो हाकिम के यहाँ गवाहों की हाजत होगी यह तो कोई ग़लती नहीं। हाँ यह ज़रूर ग़लती है कि वकील होता है कोई और निकाह पढ़ाता है दूसरा मज़हव सही व ज़ाहिर अर्रिवायह में वकील विन्निकाह दूसरे को वकील नहीं कर सकता इस में वहुत दिक़्क़तें हैं जिनकी तफ़्सील मेरे फतावे में है लिहाज़ा यह चाहिए कि जिस से निकाह पढ़वाना मन्ज़ूर हो। उसी के नाम की इजाज़त ली जाए या इज़्न मुतलक़ लिया जाए।

अर्ज़ : हुज़ूर नोशा का वक़्ते निकाह सहरा वांधा वाजे गाजे से जुलूस के साथ निकाह को जाना शरअन क्या हुक्म रखता है।

इरशाद : ख़ाली फूलों का सेहरा जाइज़ है और यह वाजे जो शादी में राइज व मामूल हैं सव नाजाइज़ व हराम हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर दलीमा का खाना शरीअत के किस हुक्म में दाख़िल है और उसका तारिक कैसा है।

इरशाद : वलीमा वाद ज़ुफ़ाफ़ सुन्नत और उस में सेग़ा अम्र भी वारिद है। अव्दुर्रहमान विन औफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फरमाया। *अवलम वलौ वेशाते* वलीमा करो अगरचे एक ही दुंवा या

अगरचे (१) एक दुंबा दोनों मानी मुहतमिल हैं और अव्वल अज़हर। (१. पहले माना एक दुंबा की क़िल्लत पर दलालत करते हैं यानी ज़्यादा न हो तो एक ही दुंबा सही दूसरे मानी उसकी कसरत पर यानी अगरचे पूरा दुंबा सर्फ़ करना पड़े। १२ मुदीर)

अर्ज़ : जिस शहर के लोगों में से एक भी वलीमा न करता हो बल्कि निकाह से पहले अव्वल रोज़ जैसा रियाज है खिला देता हो तो उन सबके लिए क्या हुक्म है।

इरशाद : तारिकाने सुन्नत हैं मगर यह सुनने मुस्तहिब्बा से है तारिक गुनहगार न होगा अगर उसे हक़ जाने।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर हिन्दा बवक़्त शीर ख़्वार्गी उमर व पिसर खुद बकर को मुद्दते रजाअत के अन्दर अपना दूध पिलाए उसके बाद हिन्दा के तीन लड़के सईद, फ़ाज़िल, सलीम पैदा हुए तो अब बकर की लड़की से सलीम का निकाह जो अमर का बिरादरे हक़ीक़ी है जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : बकर की लड़की हिन्दा की अगली पिछली सब औलाद हक़ीक़ी भतीजी है और बाहम मुनाकहत हराम क़तई।

अर्ज़ : ज़ैद व बकर आपस में चचा ज़ाद भाई भी हैं और रज़ाई भी ज़ैद के हक़ीक़ी छोटे भाई का बकर की हक़ीक़ी छोटी हमशरीरा से निकाह हो सकता है या नहीं।

इरशाद : जाइज़ है।

मुअल्लिफ़ : तोहफ़ा हन्फ़ीया की जिल्द पेशे नज़र थी उसमें यह मुकालमा मिला, ख़्याल हुआ कि उसे भी मल्फ़ूज़ात में शामिल कर लिया जाए कि निहायत मुफ़ीद और नाज़िरीन की दिलचस्पी का बाइस है। २५ जिमादिल-ऊला रोज़ पंजशंबा १२१६ हिज० को वक़्त चाश्त जनाब मौलवी सैयद मुहम्मद शाह साहब सदर दोम नदवा इब्ने मौलवी सैयद हसन शाह मुहद्दिस रामपूरी मआ गिरामी जनाब सैयद नोशा मियाँ साहब व जनाब मौलवी सैयद मुहम्मद नबी साहब मुख़्तार व जनाब तसद्दुक़ अली साहब वकील साहब हुज्जते क़ाहिरा मुजद्दिद मेअते हाज़िरा हामी अह्ले सुन्नत आला हज़रत क़िबला दामत बरकातुहुम के यहाँ आए और देर तक एक नफीस जल्सा दिलकशा मुज़ाकरा इल्मी का रहा।

मियाँ साहब : से मुराद जनाब सदर दोम नदवा हैं।

जो अल्फ़ाज़ दो ख़त हिलाली के अन्दर हों वह फ़क़ीर मुहर्रिर सुतूर

के हैं।

मियाँ साहब : (बाद सलाम व मुसाफ़हा व बाहमी गुफ़्तगूए मिज़ाज पुर्सी) में हसन शाह नियाज़ हासिल हुआ था।

मियाँ साहब : में बिल-क़स्द एक बात आप से गुज़ारिश करने को आया हूँ अगरचे आपकी तबीअत अलील है। (मसलेहात हो रहे हैं) आपको तक्लीफ़ ज़रूर होगी मगर बात ज़रूरी है और उसमें आपकी राय दरयाफ़्त करनी है।

इरशाद : मैं हाज़िर हूँ जो फहम क़ासिर में आए उसे गुज़ारिश भी करूंगा अगरचे *रायुल-अलीले अलीलुन*।

मियाँ साहब : मेरी राय यह है कि किसी को बुरा न कहना चाहिए इसलिए कि साइब ने कहा है -

दहन खुवेश बद शनाम म्याला साइब
कीं ज़ क़ल्ब बहर किस कि दही बाज़ दहह

(रिसाला सल अस्सुयूफ़ अल-हिन्दीया अला कुफ़्रियात बाबा अन्नज्दीया मियां साहब के पास पहुंच चुका था यह नसीहत इस बिना पर थी)

इरशाद : बहुत बजा फरमाया जहाँ इख़्तिलाफ़ाते फरईया हों जैसे बाहम हन्फ़ीया व शाफ़ईया वग़ैरहुमा फ़र्क़ अह्ले सुन्नत में वहाँ हरगिज़ एक दूसरे को बुरा कहना जाइज़ नहीं और फहश दशनाम जिस से दहन आलूदा हो किसी को भी न चाहिए।

मियाँ साहब : कुछ इख़्तिलाफ़ाते फुरूई की क़ैद नहीं ज़मान-ए-रिसालत में देखिए मुनाफ़िक़ लोग कैसे मुसलमानों में घुले मिले रहते थे नमाज़ें साथ पढ़ते मजालिस में पास बैठते शरीक रहते।

इरशाद : हाँ सदरे इस्लाम में ऐसा था मगर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने साफ़ इरशाद फरमा दिया था कि (नदवे का सा) यह घाल मेल जो हो रहा है अल्लाह तआला तुम्हें यूं रहने न देगा ज़रूर ख़बीसों को तबीबों से अलग कर देगा।

उसके बाद आपको मालूम है क्या हुआ भरी मस्जिद में ख़ास जुमे के दिन। *अला उरूशिल-अ ाहाद*। हुज़ूरे अक़्दस सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नाम बनाम एक-एक को फरमाया *अख़्रजा या फुलान फइन्नका मुनाफ़िक़*। ऐ फुलां निकल जा तू मुनाफ़िक़ है नमाज़ से पहले सबको निकाल दिया (यह हदीस तबरानी व इब्ने अबी

हातिम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत की) मुख़ालिफ़ीने दीन के साथ यह वर्ताव उनका है जिन्हें रब्बुल-इज़्ज़त अज़्ज़ा जलालुहू रहमतुल-लिल-आलमीन फरमाता है जिनकी रहमत रहमते इलाहिया के बाद तमाम जहान की रहमत से ज़्यादा है सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

मियाँ साहब : देखिए फिरऔन के पास जब मूसा (अला नबीयना व अलैहिस्सलाम) को भेजा तो अल्लाह (तआला) ने फरमा दिया। *कूला लहू क़ौला लैय्यिनन* उस से नर्म बात कहना।

इरशाद : मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इरशाद फ़रमाया।

तरजमा : ऐ नबी जिहाद कर काफिरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर शिद्दत व सख़्ती कर। यह उन्हें हुक्म देता है जिनकी निस्बत फरमाता है। *इन्नका लअला खुल्क़िन अज़ीम*। बेशक तू बड़े ख़ल्क़ पर है तो मालूम हुआ कि मुख़ालिफ़ाने दीन पर शिद्दत व ग़लज़त मुनाफ़ी अख़्लाक़ नहीं बल्कि यही ख़ल्के हसन है।

मियाँ साहब : मेरी मुराद काफिरों से नहीं (मुनाफ़िक़ीन और फिरऔन शायद मुसलमान होंगे।)

इरशाद : जी आपकी बहर कस तो सबको आम थी ख़ैर अब कोई दाइरा महदूद कीजिए।

मियाँ साहब : जो कलिम-ए-कुफ़्र कहे उसे इन लफ़्ज़ों से बयान कीजिए कि मेरे फुलां भाई ने जो बात कही है मेरे नज़्दीक यह कलिम-ए-कुफ़्र मालूम होती है।

इरशाद : कुफ़्रियात बकने वाला बहम्दु लिल्लाह मेरा भाई नहीं और जब उसका कलिम-ए-कुफ़्र होना साबित हो तो उन गिरे लफ़्ज़ों की क्या हाजत कि मेरे नज़्दीक ऐसा मालूम होता है जिस से अवाम समझें कि एहतमाली बात है शक है।

मियाँ साहब : मेरे नज़्दीक ज़रूर कहना चाहिए।

इरशाद : जब दलील शरई क़ायम हो ज़रूर साफ़ कहना चाहिए।

मियाँ साहब : ख़ैर यह कहो कि कलिम-ए-कुफ़्र कहा मगर गुमराह न कहो।

इरशाद : क्या ख़ूब गुमराही कुफ़्रियात बकने से भी किसी बदतर

चीज़ का नाम है।

मियाँ साहब : यूं तो दाढ़ी मुंडा फासिक़ भी गुमराह है मगर उर्फ़ भी गुमराह बहुत बुरा लक़ब है।

इरशाद : दाढ़ी मुंडाने वाला कि उसे फ़ेअ्ले हराम जाने फासिक़ है गुमराह नहीं (कि राहे सुन्नत जानता और उस पर एतक़ाद रखता है अगरचे शामते नफ़्स से अख़्तियार न की) मगर क़ाइले कुफ़्रियात ज़रूर गुमराह है।

मियाँ साहब : कोई क़ाइल कुफ़्रियात हो भी अब आपने इतने बड़े आलिम मुहद्दिस (इस्माईल देहलवी) को जिसकी उम्र ख़िदमते हदीस में कटी क़ाइल कुफ़्रियात बना दिया।

इरशाद : *सल अस्सुयूफ़* आपने मुलाहिज़ा फरमाई।

मियाँ साहब : हाँ।

इरशाद : मैंने उसमें काफिर लिखा है।

मियाँ साहब : नहीं काफिर नहीं लिखा (अल्हम्दु लिल्लाह यह भी ग़नीमत है वरना बहुत वहाबिया तो यही रो रहे हैं कि तक्फ़ीर कर दी)

इरशाद : तो जिस क़द्र मैंने लिखा है वह ज़रूर साबित और ख़िदमते हदीस मुसल्लम भी हो तो उस से इंतिफ़ाए ज़लालत लाज़िम नहीं *क़ालल्लाहु तआला, अज़ल्लल्लाहु अला इल्मिन*।

मियाँ साहब : अब आपने लिख दिया कि उन्होंने कहा है खुदा के सिवा किसी को न मानो।

इरशाद : जी छपी हुई किताब मौजूद है यही लफ़्ज़ जा बजा देख लीजिए।

मियाँ साहब : यह कौन कहेगा कि नबी का एतक़ाद न रखो।

इरशाद : हज़रत उर्दू ज़बान है आप ही फरमाइए कि मानने के मानी क्या हैं।

मियाँ साहब : भला हम नबी को न मानते तो मिडिल न पढ़ते कि नौकरी मिलती हदीस क्यों पढ़ते।

इरशाद : यह आप अपनी निस्बत कहिए उसके वक़्त में न मिडिल था न मिडिल की नौकरी।

मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ साहब : हज़रत पचीस बरस की उम्र के बाद नौकरी मिलती भी तो नहीं।

मियाँ साहव : भला कोई नवी की शान में गुस्ताख़ियां करेगा।

इरशाद : क्या मआज़ल्लाह मर कर मिट्टी में मिल जाना वताना गुस्ताख़ी नहीं।

मियाँ साहव : (इंकारी लहजे में) हों किस ने कहा है।

इरशाद : इस्माईल ने।

मियाँ साहव : कोई नहीं भला कोई रसूल को ऐसा कहे है।

इरशाद : तक़्वियतुल-ईमान छपी हुई मौजूद है देख लीजिए।

मियाँ साहव : भला कोई रसूल को ऐसा कहे है।

इरशाद : जी रसूल ही की शान में कहा है देख लीजिए ना।

सैयद मुख़्तार साहव : जनाव मियाँ साहव उसके कलिमात ज़रूर यहाँ ऐसे हैं जिन से दिल दुखता है यह (आला हज़रत क़िवला) उनके सवव जोश में हैं।

मियाँ साहव : मौलवी रूम ने मसनवी में लिखा है कि ऐ अल्लाह तू ज़ालिम है जितना चाहे मुझ पर जुल्म किए जा तेरा जुल्म मुझे औरों के इंसाफ़ से अच्छा लगता है।

इरशाद : मौलाना कुद्दिसा सिर्रुहू ने अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला से यूं अर्ज़ की है।

मियाँ साहव : जी मौलाना ने।

इरशाद : मसनवी शरीफ़ लाओ।

मौलवी मुहम्मद रज़ा ख़ाँ साहव : मसनवी शरीफ़ लाए जनाव मियाँ साहव के सामने रख दी। मियाँ साहव ने हाथ से हटा दी।

इरशाद : हज़रत वताइए कहाँ लिखा है।

मियाँ साहव : (मसनवी शरीफ़ और हटा कर) अव इसी में लिखा है।

गह शहीदे दीद-ए-अज़......ख़र-ख़र के साथ शहीद का लफ़्ज़ देखिए।

इरशाद : यह फ़िस्क़ पर इस्तेहज़ा है। (कुरआन मजीद में) फरमाया। *ज़ुक़ इन्नका अन्तल-अज़ीज़ुल-करीमु* इसी हिकायत की सुर्ख़ी में है जाने मन। रादीदी व कदूर अन्दीदी जनाव ने यह न देखा कि मौलाना का यह इरशाद तो हमारी दलील है जव एक फ़ासिक़ा की निस्वत अकाविरे दीन ऐसे कलिमात फरमाते हैं तो गुमराहाने वद दीन ज़्यादा मुस्तहिक़े तशनीअ् व तौहीन हैं।

मियाँ साहव : अव आप ही जो अपने आपको अब्दुल-मुस्तफ़ा लिखते हैं।

इरशाद : यह मुसलमान के साथ हुस्ने ज़न की ख़ूवी है रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू ने कुरआने अज़ीम में जो फरमाया। *वन्केहुल-अयामा मिन्कुम वस्सालेहीन मिन इवादिकुम व इमामिकुम*। उसे भी शिर्क कह दीजिए (हज़रत आलिम अह्ले सुन्नत ने अपने क़सीद-ए-अक्सीर आज़म (१३०२ हिज०) की शरह मुजीरे मुअ्ज़म में तहरीर फरमाया है शाह वलीयुल्लाह साहव ने इज़ालतुल-ख़फ़ा में हदीस नक़ल की है अमीरुल-मुमिनीन उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की निस्वत फरमाया *कुन्ता अब्दुहू व ख़ादिमुहू* में हुज़ूर का वन्दा और हुज़ूर का ख़ादिम था इस मस्अला की वहस काफी इसी किताव मुस्तताव में है।)

मियाँ साहव : ख़ैर भाई तुम्हें इख़्तियार है वुरा कहो वुरा सुनो।

इरशाद : काफिर को काफिर राफ़जी को राफ़ज़ी ख़ारजी को ख़ारजी वहावी को वहावी ज़रूर कहा जाएगा और वह हमें वुरा कहें तो उसकी क्या परवाह। हमारे पेशवाओं सिदीक़ व फ़ारूक़ को इंतिक़ाल फरमाए हुए तेरह (१३००) सौ वरस गुज़रे आज तक उन का वुरा कहना नहीं छूटता।

मियाँ साहव : ऐसे ही वह भी कहते हैं फिर उस से किया हासिल।

इरशाद : ज़रूर हासिल है हदीस में फरमाया -

क्या फाजिर को वुरा कहने से परहेज़ करते हो लोग उसे कव पहचानेंगे, फाजिर की वुराइयाँ वयान करो कि लोग उस से वचें (यह हदीस इमाम अवू वकर इब्ने अवी अद्दुनिया ने किताव ज़म्मुल-ग़ीवा और इमाम तिर्मिज़ी मुहम्मद विन अली ने नवादिरुल-उसूल और हाकिम ने कितावुल-कुना और शीराज़ी ने कितावुल-अलक़ाव और इब्ने अदी ने कामिल और तवरानी ने मुअ्जम कवीर और वैहक़ी ने सुनने कुवरा और ख़तीव ने तारीख़ में हज़रत माविया विन हीदा कुशैरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और ख़तीव ने रुवाते मालिक में हज़रत अवू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की)

मियाँ साहव : तो यह तो फासिक़ को कहा है।

इरशाद : फ़िस्क़ अक़ीदा फ़िस्क़े अमल से वदरजहा वदतर है।

मियाँ साहब : बेशक।

इरशाद : खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सब बद मज़हबों को जहन्नमी बताया। *कुल्लुहुम फ़िन्नार इल्ला वाहिदा* अब क्या न कहा जाएगा कि राफ़ज़ी गुमराह जहन्नमी हैं।

मियाँ साहब : राफ़ज़ी जहन्नमी नहीं।

इरशाद : हदीस का क्या जवाब।

मियाँ साहब : (सुकूत फरमाया)

इरशाद : क्या आप के नज़्दीक अबू बकर व उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा को काफिर कहने वाला जहन्नमी नहीं।

मियाँ साहब : कौन कहता है कोई नहीं।

इरशाद : राफ़ज़ी कहते हैं।

मियाँ साहब : कोई राफ़ज़ी ऐसा नहीं कहता।

मौलवी सैयद तसद्दुक़ अली साहब : छपी हुई किताबें तो मौजूद हैं और कोई कहता ही नहीं।

मियाँ साहब : मेरे दस (१०) बारह (१२) हज़ार मुलाक़ाती और अज़ीज़ राफ़ज़ी हैं किसी ने मेरे सामने इसका इक़रार नहीं किया कोई ऐसा नहीं कहता।

सैयद मुख़्तार साहब : हज़रत वह ज़रूर ऐसा कहते हैं आपके सामने तक़ीयतन कुछ और कह दिया होगा।

इरशाद : हज़रत अब वजह हिमायत मालूम हुई।

मियाँ साहब : फिर भाई तुम उन्हें बुरा कहो वह तुम्हें बुरा कहें।

इरशाद : उसकी परवाह नहीं अबू बकर व उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को जो अब तक कहा जाता है।

मियाँ साहब : ऐसी ही वह भी कहते हैं।

इरशाद : आपके नज़दीक यहूद व नसारा गुमराह हैं या नहीं।

मियाँ साहब : होंगे।

इरशाद : हैं या नहीं।

मियाँ साहब : होंगे (अल्लाह-अल्लाह ज़रूरियाते दीन में भी तअम्मुल)

सैयद मुख़्तार साहब : इस सवाल का मतलब यह है कि ऐसे ही वह भी आप को कहते हैं (तो अह्ले बातिल अगर अह्ले बातिल कहें उस से अह्ले हक़ उन्हें अह्ले बातिल कहने से बाज़ नहीं रह सकते।)

मियाँ साहब : तशद्दुद का नतीजा यह होता है कि अगले ज़माने में राफ़ज़ीयों ने सुन्नियों को क़त्ल किया सुन्नियों ने राफ़ज़ियों को मारा। हमारे नज़्दीक दोनों मरदूद (अल्लाह अल्लाह कुफ़्रियात बकने वाले को गुमराह न कहे। राफ़ज़ियों को जहन्नमी न बताए मगर सुनी ज़रूर मरदूद। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन*।)

इरशाद : आप ऐसा फरमाइए मगर अह्ले सुन्नत ऐसा हरगिज़ नहीं कह सकते।

मियाँ साहब : जब दोनों मुसलमान हैं और बाहम लड़े दोनों मरदूद हुए। (सुबहानल्लाह इसी दलील से ख़ारजियों ने मौला अली अह्ले जमल व अह्ले सिफ़्फ़ैन सब पर मआज़ल्लाह वह हुक्म नापाक लगाया था। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन*)

इरशाद : भला अमीरुल-मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहुल-करीम ने जो एक दिन में पाँच हज़ार कलिमा गो क़त्ल फरमाए जो न सिर्फ़ मुसलमान बल्कि कुर्रा व उलमा कहलाते उसकी निस्बत क्या इरशाद है।

सैयद मुख़्तार साहब : यह बहस ख़त्म न होगी अब तशरीफ़ ले चलिए और उस जल्सा को खुशी और खुश उस्लूबी पर ख़त्म कीजिए।

मियाँ साहब : (खड़े हो कर तशरीफ़ ले जाते वक़्त) अबू बकर सिद्दीक़ को किसी ने उनके सामने बुरा कहा लोगों ने उसे क़त्ल करना चाहा सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि क़त्ल मेरे बुरा कहने वाले के लिए नहीं है। (आगे तितिम्म- ए-हदीस यूं है कि जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी करे मियाँ साहब यहीं तक पहुंचे थे कि उसके लिए है कि आला हज़रत क़िबला ने सबक़त करके फरमाया) जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहे मआज़ल्लाह मर कर मिट्टी में मिल गये।

हाज़िरीन : सिवाए मियाँ साहब। सब हंसने लगे।

इरशाद : अल्हम्दुलिल्लाह हम अमीरुल-मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के ताबे हैं जिन्होंने ख़्वारिज को न गले लगाया न भाई बनाया बद मज़हबी के होते हुए कुछ पास न फरमाया।

मियाँ साहब : अस्सलामु अलैकुम। (जल्सा बिल-ख़ैर ख़तम व तमाम बल-हम्दुलिल्लाह)

मुअल्लिफ़ : हदीस में इरशाद फ़रमाया। इत्तक़ू *मवाज़िअत्तुहम*। बचो

तोहमत की जगहों से यह अम्र किसी के साथ ख़ास नहीं सब मुसलमानों को आम है वह आम हों या ख़ास और ज़ाहिर कि औलियाए किराम मुकल्लफ़ हैं तो वह भी मामूर हुए फिर उन्हें इस अम्र का ख़िलाफ़ क्योंकि कर जाइज़ होगा और फिर इस सूरत में सिर्फ़ तोहमत के मौक़ा से बचना ही नहीं बल्कि लोगों को बिला वजह बदगुमानी का मुर्तकिब करना भी है जो हराम है।

इरशाद : शरीअ़त में अहकाम इज़्तिरारे अहकाम इख़्तियार से जुदा हैं सब जानते हैं कि खुमर व ख़िंज़ीर हराम क़तई हैं मगर साथ ही इरशाद हुआ। *इल्ला मनिज़ तुर्रा फ़ी मख़्मसतिन*। भूख या प्यास से जान निकली जाती है और खाने या पीने को हराम के सिवा कुछ नहीं अब अगर तर्क करे तो गुनहगार होगा और हराम मौत मरेगा बल्कि फ़र्ज़ है कि जान बचाने की क़द्र इस्तेमाल करे। यूंही अगर निवाला अटका दम निकला जाता है और उतारने को सिवाए खुमर कुछ नहीं शरीअत का कुल्लिया क़ाइदा है। *अज़्ज़ुरूरातु तुबीहुल-महतूराते*। अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के साथ क़ल्ब की मुहाफ़िज़त अहम व आज़मे फ़राइज़ से है। जब बहालते ज़ुअ़फ़ व तंगी ज़रफ़ उसका हिफ़्ज़ बे ऐसे किसी इज़्हार के न बन पड़े तो यह वाजिब होगा। हक़ीक़ते फ़ेअ़ल से जाहिल उसे मुर्तकिब हराम जानेगा हालांकि वह एक मुबाह कर रहा है और फ़ेअ़ल से वाक़िफ़े हाल फाइल से ग़ाफ़िल उसे मौज़ा तोहमत में पड़ता लोगों को बदगुमानी में डालता यूं ख़िलाफ़े अमर करता गुमान करेगा हालांकि वह अदाए वाजिब आज़म कर रहा है क्या अपने किसी अज़्व का काट डालना हराम नहीं लेकिन मआज़ल्लाह आकिला हो जाए तो काट डाला जाएगा कि और बदन महफ़ूज़ रहे। सैयदना अबू बकर शिबली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को सौ अशरफ़ियाँ मिलीं किनारा दजला पर एक साहिब ख़त बनवा रहे थे उनको दीं क़बूल न कीं हज्जाम को दीं कहा मैंने उनका ख़त अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के लिए बनाना चाहा है इस पर एवज़ न लूंगा शिबली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उस माल से फरमाया कि तू ऐसी ही चीज़ है जिसे कोई क़बूल नहीं करता और दरिया में फेंक दें जाहिल गुमान करेगा कि तज़ैयुअ़ माल हुई हाशा बल्कि हिफ़्ज़े क़ल्ब, कि उस वक़्त यही उसका ज़रिया था दो साहब सामने थे किसी ने क़बूल न की अब उन को पास रखते और ऐसे फ़क़ीर की तलाश में निकलते

जो क़बूल कर लेता और मासियत में न उठाता इतनी देर तक की ज़िन्दगी पर तुम लोगों को इत्मीनान होता है वहाँ हर आन मौत पेशे नज़र है और डरते हैं कि इस वक़्त आ जाए और इस ग़ैरे ख़ुदा का ख़तरा क़ल्ब में हो जंगल में फेंक देते तो नफ़्स का का तअल्लुक़ क़तअ़ न होता कि अभी दस्ते रस रहती अब बताइए सिवा उसके उनके पास क्या चारा था कि उस से फ़ौरन-फ़ौरन इस तरह हाथ ख़ाली कर लें कि नफ़्स को पास हो जाए और उसके ख़्याल से बाज़ आए यह सिफ़ाए क़ल्ब व दफ़ा ख़तर-ए-ग़ैर की दौलत करोड़ों अशरफ़ियों बल्कि तमाम हफ़्त अक़्लीम की सलतनत से करोड़ों दरजा आला व अफ़ज़ल है क्या अगर सौ अशरफ़ियाँ ख़र्च करके सलतनत यह मिली कोई उसे तज़ैयुअ़ माल कह सकता है बल्कि बड़ी दौलत का बहुत अरज़ां हासिल करना, यही यहाँ है।

अर्ज़ : वहदतुल-वजूद के क्या मानी हैं।

इरशाद : वजूदे हस्ती बिज़्ज़ात वाजिब तआला के लिए है इसके सिवा जितनी मौजूदात हैं सब उसी की ज़िल्ल पर तो हैं, तो हक़ीक़तन वजूद एक ही ठहरा।

अर्ज़ : उसका समझना तो कुछ दुशवार नहीं फिर यह मसअला इस क़द्र क्यों मुश्किल मशहूर है।

इरशादात : इस में ग़ौर व तअम्मुल या मूजिबे हैरत है या बाइसे ज़लालत अगर इसकी थोड़ी भी तफ़सील करूं तो कुछ समझ में न आएगा बल्कि औहामे कसीरा पैदा हो जाएंगे उसके बाद कुछ मिसालें बयान फरमाईं। उनमें से एक याद रही। मसलन रौशनी बिज़्ज़ात आफ़ताब व चिराग़ में है ज़मीन व मकान अपनी ज़ात में बेनूर हैं मगर बिल-अर्ज़ आफताब की वजह से तमाम दुनिया मुनव्वर और चिराग़ से सारा घर रौशन होता है उनकी रौशनी उन्हीं की रौशनी है उनकी रौशनी उन से उठा ली जाए वह अभी तारीक महज रह जाएं।

अर्ज़ : यह क्यों कर होता है कि हर जगह साहिबे मरतबा को अल्लाह ही अल्लाह नज़र आता है।

इरशाद : इसकी मिसाल यूं समझिए कि जो शख़्स आईना ख़ाना में जाए वह हर तरह अपने आप ही को देखेगा इसलिए कि यही असल है और जितनी सूरतें हैं सब उसके ज़िल्ल हैं मगर यह सूरतें उनकी

सिफ़ात ज़ात के साथ मुत्तसिफ़ न होंगी मसलन सुनने वाली, देखने वाली वग़ैर वग़ैरह न होंगी। इसलिए कि यह सूरतें सिर्फ़ उसकी सतह ज़ाहिरी की ज़िल्ल हैं। ज़ात की नहीं और समअ व बसर ज़ात की सिफ़्तें हैं सतह ज़ाहिर की नहीं लिहाज़ा जो असर ज़ात का है वह उन ज़िलाल में पैदा न होगा बख़िलाफ़ हज़रत इंसान कि यह ज़िल्ल ज़ात बारी तआला है लिहाज़ा ज़िलाले सिफ़ात से भी हस्बे इस्तेअ्दाद बहरा वर है।

मुअल्लिफ़ : हुज़ूर यह अब भी समझ में नहीं आया कि वह हर जगह खुदा क्योंकर देखते हैं अगर इन ज़िलाल व उकूस को कहा जाए तो यह इत्तिहाद है वहदत नहीं और इत्तिहाद खुला इल्हाद व ज़िन्देक़ा है और अगर यह ज़िलाले उकूस को नहीं देखते बल्कि उन्हें अद्मे महज़ में सुलाते हैं एक अल्लाह का जल्वा नज़र आता है। तो यह खुद भी एक ज़िल्ल हैं यह भी मअ्दूम हुए तो न नाज़िर रहा न नज़र फिर यह कि अल्लाह तआला को देखने के क्या मानी वह इससे पाक है कि किसी की नज़र उसे एहाता करे वह सब को मुहीत है न कि मुहात यह मेरा ईमान है कि क़यामत में इन्शाअल्लाह तआला दीदारे इलाही से हम मुसलमान फ़ैज़याब होंगे मगर यह नहीं समझ सकता कि रूयत क्योंकर मुम्किन है जब कि एहाता नामुम्किन अगर यह कहा जाए कि मन्ज़ूर को नज़र का मुहीत हो जाना कुछ ज़रूर नहीं मसलन फलक है कि उसका एक हिस्सा इंसान की नज़र में समा सकता है जहाँ तक उसकी नज़र पहुंचती है तो यह तक़रीर वहाँ जारी नहीं कि वह तज्ज़ी से पाक है मैं अपना माफ़िज़्ज़मीर अच्छी तौर पर ज़ाहिर न कर सका मगर यह जानता हूँ कि हुज़ूर मेरे इन टूटे फूटे अल्फ़ाज़ से मेरा मतलब ख़्याल फरमा लेंगे।

इरशाद : ज़िलाल व उकूस मिरअत मुलाहिज़ा हैं मिरअते कामरई से मुत्तहिद होना क्या ज़रूर इल्म बिल-वजह में वजह मिरअत मुलाहिज़ा होती है हालांकि ज़ुल-वज्ह से मुत्तहिद नहीं बिला शुबह आईना में जो अपनी सूरत देखते हो क्या उस में कोई सूरत है। नहीं बल्कि शुआअ् बसरी आईना पर पड़ कर वापस आती है। और इस रुजूअ् में अपने आपको देखती है लिहाज़ा दाहिनी जानिब बाएं और बाएं दाहिनी मालूम होती है। तो आईना तुम्हारा ऐन नहीं मगर दिखाया उस ने तुम्हीं को ज़िलाल अपनी ज़ात में मअ्दूम हैं कि किसी की ज़ात मुक़्तज़ी वजूद

नहीं। *कुल्लु शैइन हालिकुन इल्ला वज्हहू* मगर वजूद अताई से ज़रूर मौजूद हैं इस्लाम का पहला अक़ीदा है कि *हक़ाइक़ुल-अशियाए साबितुहू* नज़र से साक़ित होना वाक़े से अदम नहीं कि न नाज़िर रहे न नज़र फ़िल-वाक़े इस मुशाहिदा में खुद अपनी ज़ात भी उनकी निगाह में नहीं होती अह्ले सुन्नत का ईमान है कि क़यामत व जन्नत में मुसलमान को दीदारे इलाही बे-कैफ़ बे-जेहत व बे-महाज़ात होगा क़ालल्लाहु तआला। *वुजूहुन यौमइज़िन नाज़िरतुन इला रब्बिहा नाज़िरतुन*। कुछ मुंह तरोताज़ा होंगे अपने रब को देखते हुए। कुफ़्फ़ार के हक़ में फरमाता है। *कल्ला अन्नहुम अन रब्बेहिम यौमइज़िन लमहजूबून*। बेशक वह उस दिन अपने रब से हिजाब में रहेंगे यह काफिरों पर अज़ाब बयान फरमाया गया है तो ज़रूर मुसलमान इससे महफ़ूज़ हैं। बसर एहात-ए-मरई नहीं चाहती आयते करीमा *ला तुदरिकुहुल-अबसारु वहुवा युदरिकुल-अबसार*। का यही मफ़ाद है कि वह अबसार व जुमला अशिया का मुहीत है उसे बसर और कोई शय मुहीत नहीं फलक वग़ैरह की मिसालें उसके बयान को हैं कि बसर को एहाता लाज़िम नहीं न यह कि वहाँ भी अद्मे एहाता मआज़ल्लाह इसी तरह का है वहाँ बमाना अद्म और इद्राक हक़ीक़त व कुनह है रहा यह कि "रूयत क्योंकर" यह कैफ़ से सवाल है वह और उसकी रूयते कैफ़ से पाक है फिर क्योंकर को क्या दाख़िल।

अर्ज़ : ज़ाते बारी के परतो तो सिर्फ़ हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं चुनांचे शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि मदारिजुन्नुबुव्वह जिल्द सानी के ख़ातमा में फरमाते हैं कि अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम मज़हरे सिफ़ाते इलाहिया हैं और आम्मा मख़्लूक़ मज़हर अस्माए इलाहिया है। व सैयद कुल मज़हरे ज़ाते हक़ अस्त व ज़ुहूरे हक़ दरवे बिज़्ज़ात अस्त तो तमाम मख़्लूक़ ज़िलाल ज़ात किस तरह होगी।

इरशाद : अस्मा मज़्हरे सिफ़ात हैं और सिफ़ाते मज़्हरे ज़ात और मज़्हर का मज़्हर मज़्हर है तो सब ख़ल्क़े मज़्हर ज़ात है अगरचे बवास्ता या बू बवसायत शैख़ का कलाम मज़्हरे ज़ात बिला वास्ता में है वह नहीं मगर हुज़ूर मज़्हरे अव्वल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उनके लफ़्ज़ देखिए कि ज़ुहूरे हक़ दरूए बिज़्ज़ात अस्त।

अर्ज़ : दो शख़्सों में कुछ रुपया का झगड़ा था चौधरी ने सुलह करा

दी और मुद्दई को मुद्दआ अलैहि से रुपये मिल गये और बिरादरी में यह दस्तूर है कि जब चौधरी तस्फ़िया कराता है तो अपना कुछ हक़ मुक़र्रर कर रखा है वह ले लेता है चुनांचे इस सुलह में भी चौधरी अपने हक़ का तालिब हुआ उस ने देने से इंकार किया जब उस ने इसरार किया तो उसने सब रुपये चौधरी को दे दिए चौधरी ने कहा कि मैं सिर्फ़ अपना हक़ लूंगा सब न लूंगा उस ने कहा मैं खुशी से देता हूं चौधरी ने वह सब रुपये ले लिए बाद में इस वाक़या के मुद्दई ने कचेहरी में नालिश दाइर की कि मुझे रुपये नहीं मिले और वह शख़्सों ने जो इस वाक़या में मौजूद थे और जिनके सामने रुपये दिए गये थे क़सम खा कर शहादत दी कि उसको रुपये नहीं मिले इन सब के लिए शरीअत का क्या हुक्म है।

इरशाद : मुद्दई से चौधरी को रुपया लेना हराम है हाँ अपनी खुशी से दे तो मुज़ाइक़ा नहीं और मुद्दई और गवाहों पर तौबा फ़र्ज़ है कि झूठा दावा क्या और झूठी गवाही दी और झूठी क़सम खाई।

मुअल्लिफ़ : रिश्वत भी अपनी खुशी से दी जाती है बल्कि चौधरी ने तो मांगा और मुद्दई ने इंकार किया फिर जब चौधरी का बहुत इसरार हुआ तो उस ने सब दे दिए जिस से मालूम हुआ कि वह नाखुश था और यह कि खुशी से देता हूँ झूठ था और रिशवत तो बेग़ैर तलब खुद दी जाती है फिर यह क्यों जाइज़ हुआ और वह तो हराम ही है और चौधरी को जो पहले लेना हराम था उसकी वजह भी नीयत रिश्वत होगी।

इरशाद : इंसानी ख़्वाहिश वहाँ तक मोतबर है जहाँ तक नही शरई न हो रिश्वत, शरअ् ने हराम फरमाई है वह किसी की खुशी से हलाल नहीं हो सकती सही हदीस में फ़रमाया। *अर्राशी वल-मुरतशी किलाहुमा फ़िन्नार*। रिश्वत देने वाला और लेने वाला दोनों जहन्नमी हैं चौधरी जो सुलह हो जाने पर सुलह कराने का मुआवज़ा लेते हैं वह रिश्वत नहीं है बल्कि एक नाजाइज़ उजरत है जाहिलाने बेख़िरद ऐसी जगह हक़ का लफ़्ज़ बोलते हैं यहाँ तक कि रिश्वत ख़्वार भी यही कहता है कि हमारा हक़ दिलवाइए यह कुफ़्र है कि हराम को हक़ कहा। बरअ् का मरतबा वही है जो तुमने कहा कि ज़ाहिर अन्दाज़ से मज़्नून होता है कि उसका यह देना हक़ीक़तन खुशी से न हुआ अगरचे बज़ाहिर साफ कह रहा है कि मैं खुशी से देता हूँ मगर शरीअते मुतह्हरा में जुबान मज़्हर

फ़िज़्ज़मीर मानी गई है वह जो कुछ है क़्यासी दलालत है और यह कि खुशी से देता हूँ सरीह तसरीह है और फतावा क़ाज़ी ख़ां वग़ैरह में मिसरह है। *अस्सरीहु यफ़ूक़ुद्दलाला* सरीह के आगे दलालत न ली जाएगी फ़िक़्ह में बहुत मसाइल इस पर मबनी हैं कि ख़ानिया व हिन्दीया व दुर्रे मुख़्तार में हैं और तमाम किताब हील की बिना ही इस पर है और न असल ग़रज़ क़लबी इस अक़्दस मल्फ़ूज़ के मुताबिक़ नहीं होती दरज़ी से कपड़ा सिलवाया और उजरत देने का कुछ ज़िक्र न आया उजरत वाजिब हो गई कि उसका पेशा ही दलील उजरत है लेकिन अगर उस ने कह दिया था कि मैं तुम से उजरत नहीं चाहता अब नहीं ले सकता अगरचे दोस्ताना में कहा हो अगरचे ऐसी सूरत में ग़ालिबन यह कहना दिल से नहीं होता बल्कि महज़ मुरव्वत व लिहाज़ हत्तल-इम्कान मुसलमान का हाल सलाह पर महमूल करना वाजिब है क़्यास से ठहरा लेना कि उस ने खुशी से देना झूठ कहा उसकी तरफ़ तीन कबीरों की निस्बत है एक तो झूठ दूसरे धोका दे-। कि दिया नाराज़ी से और उस पर रज़ा ज़ाहिर की। तीसरे हराम माल देना जिसका लेना हराम है देना भी हराम है लिहाज़ा इसका क़ौल वाक़ईयत पर महमूल करेंगे।

अर्ज़ : हुज़ूर क़सम का कफ़्फ़ारा कुछ नहीं।

इरशाद : इस सूरत में कफ़्फ़ारा कुछ नहीं तौबा है। कफ़्फ़ारा इस क़िस्म का होता है जो आइन्दा के लिए किसी काम के करने न करने पर खाई और उसके ख़िलाफ़ क्या गुज़िश्ता पर क़सम खाने से कफ़्फ़ारा नहीं।

मुअल्लिफ़ : शबे जुमा में आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू के छोटे भाई मौलाना मौलवी मुहम्मद रज़ा ख़ां साहब तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया कि आज एक अख़्बार से मालूम हुआ है कि सलतनत बुख़ारा शरीफ़ रूसियों से मुन्तक़िल हो कर सुल्तानुल-मुअ़ज़्म के ज़ेरे असर आ गई इस पर इरशाद हुआ कि यह एक क़दीमी इस्लामी सलतनत है जहाँ बड़े-बड़े अइम्मा व मुज्तहेदीन गुज़रे हैं। और जिनके बरकात उस वक़्त तक यह मौजूद हैं कि एक वक़्त में सब जगह अज़ान होती है और एक ही वक़्त में नमाज़ दुकानदार और कारोबारी लोग अपना-अपना काम फौरन छोड़ कर शामिले जमाअत हो जाते हैं फिर इसी तज़्किर-ए-सलतनते बुख़ारा में फ़रमाया कि मैं एक रोज़ हकीम वज़ीरे आला साहब के यहाँ क़रीब दस बजे दिन के जा रहा था मेरी उम्र उस वक़्त जीलानी (आला

हज़रत मद्दा ज़िल्लहू के पोते यानी वर खुरदार इब्राहीम रज़ा खां) के बरावर थी (दस साल) कि सामने से एक बुजुर्ग सफेद रेश निहायत शकील व वजीह तशरीफ़ लाए और मुझ से फरमाया। सुनता है वच्चे आजकल अब्दुल-अज़ीज़ है उसके बाद अब्दुल-हमीद और उसके वाद अब्दुर्रशीद होगा और फौरन नज़र से ग़ायव हो गये चुनांचे उस वक़्त तक उन बुजुर्ग का क़ौल बिल्कुल मुताविक़ हुआ ऐसे ही एक साहव मस्जिद के क़रीब मिले मेरे वचपन का ज़माना था मुझे वहुत देर तक ग़ौर से देखते रहे फिर फरमाया कि तू रज़ा अली ख़ां का कौन है मैंने कहा पोता फरमाया जभी। और फौरन तशरीफ़ ले गये।

अज़ : नमाज़ से क़वल की सुन्नतें न मिलने से क्या वह क़ज़ा हो जाती हैं।

इरशाद : अपने वक़्त से क़ज़ा समझी जाएगी न वक़्त नमाज़ से।

अर्ज़ : क्या अइम्मा मुज्तहेदीन में इख़्तिलाफ़ है जो हाथों के वांधने में इख़्तिलाफ़ है कि वाज़ सीना पर और वाज़ नाफ़ पर वांधते हैं।

इरशाद : ख़र वूज़ा खाइए फालीज़ से किया ग़रज़ उस में न पड़िए, जो कुछ अइम्मा ने फरमाया मुताविक़े शरअ् है हर एक को इमाम की तक़्लीद चाहिए।

अर्ज़ : हवीवे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत शरीफ़ा हासिल होने का तरीक़ा क्या है।

इरशाद : दरूद शरीफ़ की कसरत शव में और सोते वक़्त के अलावा हर वक़्त तक्सीर रखे विल-खुसूस इस दरूद शरीफ़ को वाद इशा सौ वार या जितनी वार पढ़ सके पढ़े।

हुज़ूले ज़्यारते अक़्दस के लिए इस से वेहतर सेग़ा नहीं मगर ख़ालिस ताज़ीम शाने अक़्दस के लिए पढ़े इस नीयत को भी जगह न दे कि मुझे ज़्यारत अता हो आगे उनका करम, वेहद व वेइंतिहा।

फिर एक मरअला मामूली पेश हुआ जिस के अख़ीर में लिखा था कि जवाव वहवाला कुतुवे अरक़ाम फरमाया जाए।

इरशाद : सहाव-ए-किराम रिज़्वानुल्लाह तआला अलैहिम अज्मईन के ज़माना में भी इस्तिफ़्ता पेश होते थे जिन के जवाव फरमा दिए जाते थे हवाला कुतुव वहाँ कहाँ था और आज कल मुदल्लल मुफ़स्सल सफ़: सतर दरयाफ़्त करते हैं हालांकि समझते कुछ भी न हों।

अर्ज़ : हुज़ूर एक इस्तिग़ासा पेश करना है उसके वास्ते कौन सा दिन मुनासिव है।

इरशाद : उसके लिए कोई ख़ास दिन मुक़र्रर नहीं अल्वत्ता हदीस शरीफ़ में इरशाद है कि जो शख़्स किसी हाजत को हफ़्ता के दिन सुवह के वक़्त क़वल तुलूअ्-ए-आफ़ताव अपने घर से निकले तो उसकी हाजत रवाई का मैं ज़ामिन हूँ।

अर्ज़ : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर हाजत के लिए इरशाद फरमाया है।

इरशाद : हाँ जाइज़ हाजत होना चाहिए।

अर्ज़ : अलम के पारे में एक जगह अज़ावे अज़ीम आया है अगर नमाज़ में अलीम पढ़ा हो जाएगी या नहीं।

इरशाद : हाँ हो जाएगी नमाज़ उस ग़लती से जाती है जिस से माना फासिद हो जाएं।

अर्ज़ : नमाज़ में अगर विस्मिल्लाह शरीफ़ विल-जेहर निकल जाए तो क्या हुक्म है।

इरशाद : विला क़स्द निकल जाए तो ख़ैर वरना क़सदन मक्रूह।

अर्ज़ : दो मस्जिदें क़रीव-क़रीव हैं अय्यामे वारिश में एक शहीद हो गई अव उसका सामान दूसरी मस्जिद मे कि वह भी शिकस्ता हालत में है लगा सकते हैं या नहीं।

इरशाद : नाजाइज़ है हत्ता कि एक मस्जिद का लोटा भी दूसरी मस्जिद में ले जाने की मुमानेअत है मुसलमानों पर दोनों का वनाना और आवाद करना फ़र्ज़ है और इस क़द्र क़रीव वनाने की ज़रूरत ही क्या।

अर्ज़ : हुज़ूर मस्जिद के नाम से चन्दा वसूल करके खुद खाए तो क्या हुक्म है।

इरशाद : जहन्नम का मुस्तहिक़ है।

अर्ज़ : अगर कोई शख़्स अपनी ज़िन्दगी में पुख़्ता क़ब्र वनवा कर तैयार करके रखे। यह जाइज़ है या नाजाइज़।

इरशाद : अल्लाह तआला फरमाता है। *वमा तदरी नफ़्सुन वेऐये अर्ज़िन तमूतु*। कोई नहीं जानता कि वह कहाँ मरेगा क़ब्र तैयार रखने का शरअन हुक्म नहीं अल्वत्ता कफ़न सिल्वा कर रख सकता है कि जहाँ कहीं जाए अपने साथ ले जाए और क़ब्र हमराह नहीं रह सकती।

अर्ज़ : जुमा व ईदैन का खुतवा मआ विस्मिल्लाह जाइज़ है।

इरशाद : आऊज़ुविल्लाह आहिस्ता पढ़े उसके वाद खुतवा पढ़े।

अर्ज़ : अगर नमाज़ के वक़्त अमामा वांध ले और सुन्नतों के वक़्त उतार ले कि दर्दे सर का गुमान है तो जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : ख़ैर! मगर औला यह है कि न उतारे एक जुमा अमामा के साथ सत्तर जुमा वेग़ैर अमामा के वरावर है। (इसी वयान में इरशाद हुआ कि) दर्दे सर और वुख़ार वह मुवारक अमराज़ हैं जो अंविया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को होते थे एक वली अल्लाह रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के दर्दे सर हुआ आपने इस शुक्रिया में तमाम रात नवाफ़िल में गुज़ार दी कि रव्वुल-इज़्ज़त तवारक व तआला ने मुझे वह मरज़ दिया जो अंविया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को होता था अल्लाहु अक्वर यहाँ यह हालत कि अगर वराए नाम दर्द मालूम हुआ तो यह ख़्याल होजा है कि जल्द नमाज़ पढ़ लें फिर फरमाया हर एक मरज़ या तक्लीफ़ जिस्म के मौज़ा पर होती है वह ज़्यादा कफ़्फ़ारा इसी मौक़ा का है कि जिसका तअल्लुक़ ख़ास उस से है लेकिन वुख़ार वह मरज़ है कि तमाम जिस्म में सरायत कर जाता है जिस से वेइज़्नेही तआला तमाम रग-रग के गुनाह निकाल लेता है अल्हम्दुलिल्लाह कि मुझे अक्सर हरारत व दर्दे सर रहता है।

अर्ज़ : हुज़ूर खुलफ़ाए राशिदीन के ज़माना में भी फ़िर्क़ा वहाविया था।

इरशाद : हाँ यही वह फ़िर्क़ा है जिसे अव्दुल्लाह विन अव्वास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुल-करीम से फ़हमाइश की इजाज़त चाही थी और वहुक्मे अमीरुल-मुमिनीन तशरीफ़ ले गये और उन से पूछा, क्या वात अमीरुल-मुमिनीन की तुम को नापसन्द आई उन्होंने कहा वाक़या सिफ़्फ़ीन में अवू मूसा अशअरी को हुक्म वनाया यह शिर्क हुआ कि अल्लाह तआला फ़रमाता है *इनिल-हुक्मु इल्लल्लाह* हुक्म नहीं मगर अल्लाह के लिए। इब्ने अव्वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया इसी कुरआने करीम में यह आयत भी तो है। *फ़वअसू हकमन मिन अहलेही व हकमन मिन अहलेहा।* ज़न व शौहर में खुसूसियत हो एक हुक्म उसकी तरफ़ से भेजो एक हुक्म उसकी तरफ़ से अगर वह दोनों इस्लाह चाहेंगे तो अल्लाह उनमें

मेल कर देगा। देखो वही तरीक़-ए-इस्तिदलाल है जो वहाविया का होता है कि इल्मे ग़ैव व इम्दाद व ग़ैरेहिमा में ज़ाती व अताई के फ़र्क़ से आंख वन्द और नफी की आयतों पर दाव-ए-ईमान और इस्वात की आयतों से कुफ़्र इस जवाव को सुन कर उन में से पाँच हज़ार ताइव हुए और पाँच हज़ार के सर पर मौत सवार थी वह अपनी शैतनत पर क़ायम रहे। अमीरुल-मुमिनीन ने उनके क़त्ल का हुक्म फरमाया। इमाम हसन व इमाम हुसैन और दीगर अकाविर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम को उनके क़त्ल में तअम्मुल हुआ कि यह क़ौम रात भर तहज्जुद और दिन भर तिलावत में वसर करती है हम क्योंकर उन पर तल्वार उठाएं मगर अमीरुल-मुमिनीन को तो हुज़ूरे आलिम माकाना वमा यकून सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़वर दे दी थी कि नमाज़ रोज़ा वग़ैरह ज़ाहिरी आमाल के वशिद्दत पावन्द होंगे वईं हमा दीन से ऐसा निकल जाएंगे जैसे तीर निशाना से कुरआन पढ़ेंगे मगर उनके गलों के नीचे नहीं उतरेगा अमीरुल-मुमिनीन के हुक्म से लश्कर के क़त्ल पर मज्वूर हुआ ऐन मअ्रका में ख़वर आई कि वह नहर के इस पार उतर गये। अमीरुल-मुमिनीन ने फरमाया वल्लाह उन में से दस उस पर न जाने पाएंगे सव उसी तरफ़ क़त्ल होंगे जव सव क़त्ल हो चुके अमीरुल-मुमिनीन ने लोगों के दिलों से उनके तक़्वे व तहारत व तहज्जुद व तिलावत का वह ख़दशा दफ़ा करने के लिए फरमाया तलाश करो अगर उनमें जुस्सदिया पाया जाए तो तुमने वदतरीन अह्ले ज़मीन को क़त्ल किया तलाश किया गया लाशों के नीचे निकला जिसका एक हाथ पिस्ताने ज़न के मुशावेह था अमीरुल-मुनिनीन ने तक्वीर कही और हम्दे इलाही वजा लाए और लश्कर के दिल को शुवह इस ग़ैव की ख़वर वताने और मुताविक़ आने से ज़ाइल हो गया किसी ने कहा हम्द है उसे जिस ने उनकी नजासत से ज़मीन को पाक किया। अमीरुल-मुमिनीन ने फरमाया किया समझते हो कि यह लोग ख़त्म हो गये हरगिज़ नहीं उनमें से कुछ मां के पेट में हैं कुछ वाप के पीठ में जव उन में से एक गरोह हलाक होगा दूसरा सर उठायेगा। *हत्ता यख़्रुजु आख़िरुहुम मअ़द्दज्जाल* यहाँ तक कि उन का पिछला गरोह दज्जाल के साथ निकलेगा यही वह फ़िर्क़ा है कि हर ज़माना में नए रंग नए नाम से ज़ाहिर होता रहा और अव अख़ीर वक़्त में वहाविया के नाम से पैदा हुआ उनकी जो जो

अलामतें सही हदीसों में इरशाद फरमाई हैं सब उनमें मौजूद हैं। *तुहक़्क़िरूना सलातकुम इन्दा सलातेहिम व सियामकुम इन्दा सियामेहिम व आमालकुम इन्दा आमालेहिम।* तुम उनकी नमाज़ के आगे अपनी नमाज़ को हक़ीर जानोगे और उनके रोज़ों के आगे अपने रोज़ों को और उनके आमाल के आगे अपने आमाल को *यक़्रऊनल-कुरआना ला युजावज़ु तराक़ीहिम।* कुरआन पढ़ेंगे उनके गलों से नीचे न उतरेगा। *यक़ूलून मिन क़ौले ख़ैरिल-वरीयते।* बज़ाहिर वह बात कहेंगे कि सबकी बातों से अच्छी मालूम हो। *या मिन क़ौले ख़ैरिल-वरीया।* बात-बात पर हदीस का नाम लेंगे और हाल यह होगा कि *यमरुक़ूना मिनद्दीना कमा यमरुक़ुस्सहमु मिनर्रमीयते।* दीन से निकल जाएंगे जैसे तीर निशाना से *सीमाहुमुत्तहलीक़ु* उनकी अलामत यह है कि उन में से अक्सर सर मूंडे *मु ग्म्मिरिल-उज़रे* घुटनी इज़ारों वाले उनके पेशवा इब्ने अब्दुल-वहाब नज्दी को सर मुंडाने में यहां तक गुलू था कि औरत उसके दीन नापाक में दाख़िल होती उसका सर भी मंडा देता कि यह ज़मान-ए-कुफ़्र के बाल हैं इन्हें दूर कर यहाँ तक कि एक औरत ने कहा जो जो मर्द तुम्हारे दीन में आते हैं उनकी दाढ़ियाँ मुंडवाया करो कि वह भी तो ज़माना कुफ़्र के बाल हैं उस वक़्त से बाज़ आया और अब वहाबिया को देखिए उनमें अक्सर वही सर मुंडाने और घुटने पाइचे वाले हैं (इसी सिलसिला में इरशाद फरमाया कि) ग़ज़वा हुनैन में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो ग़नाइम तक़्सीम फरमाए उस पर एक वहाबी ने कहा कि मैं इस तक़्सीम में अद्ल नहीं पाता क्योंकि किसी को ज़्यादा किसी को कम अता फरमाया उस पर फारूक़े आज़म ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह इजाज़त दीजिए कि मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूँ फरमाया कि उसे रहने दे कि उसकी नसल से ऐसे-ऐसे लोग पैदा होने वाले हैं (वहाबिया की तरफ़ इशारा फरमाया) उस से फरमाया अफसोस अगर मैं तुझ पर अद्ल न करूं तो कौन अद्ल करेगा और फरमाया अल्लाह रहम फरमाए मेरे भाई मूसा पर कि उस से ज़ाइद ईज़ा दिए गये उलमा फरमाते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की एक उस दिन की अता सख़ी बादशाहों की उम्र भर की दाद व दहिश से ज़ाइद थी जंग ग़नाइम से भरे हुए हैं और हुज़ूर अता फरमा रहे हैं और मांगने वाले हुजूम करते चले आ रहे हैं और हुज़ूर पीछे हटते

जाते हैं। यहाँ तक कि जब सब अमवाल तक़्सीम हो लिए एक आराबी ने रिदाए मुबारक बदने अक़्दस पर से खींच ली कि शाना व पुश्त मुबारक पर उसका निशान बन गया उस पर इतना फरमाया ऐ लोगो जल्दी न करो वल्लाह कि तुम मुझको किसी वक़्त बख़ील न पाओगे हक़ है ऐ मालिके अर्श के नाइबे अक्बर क़सम है उसकी जिस ने हुज़ूर को हक़ के साथ भेजा कि दोनों जहान की नेमतें हुज़ूर ही की अता हैं दोनों जहान हुज़ूर की अता से एक हिस्सा हैं।

बेशक दुनिया व आख़िरत हुज़ूर की बख़्शिश से एक हिस्सा हैं और लौह व क़लम के तमाम उलूम मा काना वमा यकून हुज़ूर के उलूम से एक टुकड़ा सल्लल्लाहु तआला अलैका व सल्लम व अला आलिका व सहबिका व बारिक व करम। एक रोज़ बारेगाहे रिसालत में सहाबा किराम हाज़िर हैं एक शख़्स आया और किनारा मजालिसे अक़्दस पर खड़े हो कर मस्जिद में चला गया इरशाद फरमाया कि कौन है कि उसे क़त्ल करे सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु उठे और जाकर देखा वह निहायत खुशूअ् व खुज़ूअ् से नमाज़ पढ़ रहा है सिद्दीक़े अकबर का हाथ न उठा कि ऐसे नमाज़ी को ऐन नमाज़ की हालत में क़त्ल करें वापस हाज़िर हुए और सब माजरा अर्ज़ किया इरशाद फरमाया कौन है कि उसे क़त्ल करे फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु उठे और उन्हें भी वही पेश आया हुज़ूर ने फिर इरशाद फरमाया। कौन है कि उसे क़त्ले करे मौला अली उठे और अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह मैं, फरमाया हां तुम। अगर तुम्हें मिले। मगर तुम उसे न पाओगे यही हुआ। मौला अली रज़ि अल्लाहु अन्हु जब तक जाएं वह नमाज़ पढ़ कर चलता हुआ। इरशाद फरमाया अगर तुम उसे क़त्ल कर देते तो उम्मत पर से बड़ा फित्ना उठ जाता यह था वहाबिया का बाप जिसकी ज़ाहिरी व मानवी नस्ल आज दुनिया को गन्दा कर रही है उसने मज्लिसे अक़्दस के किनारे पर खड़े हो एक निगाह सब पर की और दिल में यह कहता हुआ चला गया था कि मुझ जैसा उन में एक भी नहीं यह गुरूर था उस ख़बीस को, अपनी नमाज़ व तक़द्दुस पर, और न जाना कि नमाज़ हो या कोई अमले सालेह वह सब उस सरकार की गुलामी व बन्दगी की फ़रअ् है जब तक उनका गुलाम न हो ले कि कोई बन्दगी काम नहीं दे सकती। लिहाज़ा कुरआने अज़ीम में उनकी ताज़ीम को अपनी इबादत

से मुक़द्दम रखा कि फ़रमाया।

तरजमा : ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह व रसूल पर और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो यानी नमाज़ पढ़ो तो सब में मुक़द्दम ईमान है कि वे उसके ताज़ीमे रसूल मक़्बूल नहीं उसके बाद ताज़ीमे रसूल है कि वे उसके नमाज़ और कोई इबादत मक़्बूल नहीं यूं तो अब्दुल्लाह तमाम जहान है मगर सच्चा अब्दुल्लाह वह है जो अब्दे मुस्तफ़ा है वरना अब्दे शैतान होगा। वल-अयाज़ु बिल्लाहि तआला।

मुअल्लिफ़ : एक रोज़ मौलवी सईद अहमद इब्ने मौलवी फतह मुहम्मद साहब ताइब लखनवी आला हज़रत मद्दे ज़िल्लहु से आकर दस्त बोस हुए और कुरबानी की खाल के बारे में दरयाफ़्त किया कि मदारिस में दी जा सकती है या नहीं।

इरशाद : हुआ बिला शुबह उनका सिर्फ़ मदरसा में जाइज़ है मौलवी साहब ने मौलवी हिदाया का क़ौल नक़ल किया कि उनके नज़्दीक कुरबानी की खाल बेचने से उसकी क़ीमत का सदक़ा वाजिब हो जाता हैं और सदक़ाते वाजिबा का मुसरिफ़ मुसरिफ़े ज़कात है और मुसरिफ़े ज़कात में तम्लीक फुक़रा शर्त है उस पर इरशाद फरमाया कि यह इस सूरत में है कि फी सबीलिल्लाह मसारिफ़े ख़ैर में सर्फ़ के लिए बेचे कि यह भी कुर्बत है और यहाँ कुर्बत ही मक़्सूद है अलावा बरीं मदारिस में देना बेच कर ही ज़रूर नहीं अक्सर खालें मदारिस में भेज देते हैं और खाल तो ग़नी को भी दे सकता है फिर मदरसा दीनिया ने क्या कुसूर किया है। उस वक़्त मौलाना मौलवी हसनैन रज़ा ख़ाँ साहब भी हाज़िरे ख़िदमत थे उन्होंने अर्ज़ की कि जब सदक़ाते वाजिबा में तम्लीक शर्त है तो ज़कात और ऐसे सदक़ात मदारिस में क्योंकर सर्फ़ किए जा सकेंगे।

इरशाद : मुहतमिम को चाहिए कि ज़कात व सदक़ाते वाजिबा की रुक़ूम से ज़रूरत पर तलबा को किताबें ख़रीद दे और उन्हें मालिक बना दे या यह कि जो खाना तलबा को मदरसा से बतरीक़े इबाहत दिया जाता है तलबा को पहले रुपया दे कर मालिक बना दे फिर वह रुपया मुहतमिम को वापस करें और खाने में शरीक हो जाएं अलबत्ता मुदर्रेसीन की तन्ख़्वाह वग़ैरह में यह रुपया सर्फ़ करना जाइज़ नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर कुरआने अज़ीम सन्दूक़ में बन्द हो और रेल का

सफर या किसी दूसरी सवारी में सफर कर रहा है और तंगी जगह के बाइस मजबूर है तो ऐसी सूरत में सन्दूक़ नीचे रख सकता है या नहीं।

इरशाद : हरगिज़ न रखे इंसान खुद मज्बूरियाँ पैदा कर लेता है वरना कुछ दुश्वार नहीं जिस के दिल में कुरआने अज़ीम की अज़मत है वह हर तरह से उसकी ताज़ीम का ख़्याल रखेगा।

अर्ज़ : वक़्ते अस्र में कराहत किस वक़्त आती है।

इरशाद : गुरूबे आफताब से बीस मिनट क़बल तक कराहत नहीं यानी सलाम के बाद बीस मिनट गुरूब में बाक़ी रहें उसके बाद कराहत है कि उस वक़्त तख़्मीनी में आफ़ताब पर निगाह जमने लगती है।

अर्ज़ : एक शख़्स ने नमाज़ में सूरः ज़िलज़ाल व आदियात पढ़ीं और इस्क़ाल और तहदुस की स को सीन के मख़्रज से अदा किया और ऊही की ह को ह और ज़ब्हन के ज़ को द मुफ़ख़म भी नहीं पढ़ा बल्कि सरीह दबेहा पढ़ा और हसल के स को मुशाबेह स तो इस सूरत में एआदा नमाज़ का होगा या नहीं।

इरशाद : नमाज़ न हुई फिर पढ़े।

अर्ज़ : बाज़ हाज़िरीन ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर दुनियवी मक्रूहात ने ऐसा घेरा है कि रोज़ इरादा करता हूँ आज क़ज़ा नमाज़ें अदा करना शुरू कर दूँगा मगर नहीं होता क्या यूं अदा करूं कि पहले तमाम नमाज़ें फज्र की अदा कर लूं फिर जुहर की फिर और औक़ात की तो कोई हरज है मुझे यह भी याद नहीं कि कितनी नमाज़ें क़ज़ा हुई हैं ऐसी हालत में क्या करना चाहिए।

इरशाद : क़ज़ा नमाज़ें जल्द से जल्द अदा करना लाज़िम हैं न मालूम किस वक़्त मौत आ जाए क्या मुश्किल है एक दिन की बीस रकअत होती हैं (यानी फज्र के फर्ज़ों की दो रकअत और जुहर की चार रकअत और अस्र की चार रकअत और मग़्रिब की तीन और इशा की सात रकअत यानी चार फर्ज़ तीन वित्र) इन नमाज़ों को सिवाए तुलूअ् व गुरूब व ज़वाल के (कि इस वक़्त सज्दा हराम है) हर वक़्त अदा कर सकता है और अख़्तियार है कि पहले फज्र की सब नमाज़ें अदा कर ले फिर जुहर फिर अस्र फिर मग़्रिब फिर इशा की या सब नमाज़ें साथ-साथ अदा करता जाए और उनका ऐसा हिसाब लगाए कि तख़्मीना में बाक़ी न रह जाएं ज़्यादा हो जाएं तो हरज नहीं और यह सब बक़द्र

ताक़त रफ़्ता-रफ़्ता जल्द अदा कर ले काहिली न करे जब तक फ़र्ज़ ज़िम्मा पर बाक़ी रहता है कोई नफ़्ल कुबूल नहीं किया जाता। नीयत उन नमाज़ों की इस तरह हो मसलन सौ बार की फज्र क़ज़ा है तो हर बार यूं कहे कि सब से पहले जो फज्र मुझ से क़ज़ा हुई हर दफ़ा यही कहे यानी जब एक अदा हुई तो बाक़ियों में जो सब से पहली है इसी तरह ज़ुहर वग़ैरह हर नमाज़ में नीयत करे जिस पर बहुत सी नमाज़ें क़ज़ा हों उसके लिए सूरते तख़्फ़ीफ और जल्द अदा होने की यह है कि ख़ाली रकअतों में बजाए *अल्हम्दु शरीफ़* के तीन बार *सुब्हानल्लाह* कहे अगर एक बार भी कह लेगा तो फ़र्ज़ अदा हो जाएगा नीज़ तस्बीहात रुकूअ् व सुजूद में सिर्फ़ एक-एक बार *सुब्हाना रब्बियल-अज़ीम* और *सुब्हाना रब्बियल-आला* पढ़ लेना काफी है तशह्हुद के बाद दोनों दरूद शरीफ़ के बजाए *अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यिदना मुहम्मदिन व आलेही* वित्रों में बजाए दुआए कुनूत *रब्बिग़-फिरली* कहना काफी है तुलूअ् आफ़ताब के बीस मिनट बाद और गुरूब आफताब से बीस मिनट क़ब्ल नमाज़ अदा कर सकता है उस से पहले या उसके बाद नाजाइज़ है हर ऐसा शख़्स जिसके ज़िम्मा नमाज़ें बाक़ी हैं छुप कर पढ़े कि गुनाह का ऐलान जाइज़ नहीं (इसी सिलसिला में इरशाद फ़रमाया) अगर किसी शख़्स कि ज़िम्मा तीस या चालीस साल की नमाज़ें वाजिबुल-अदा हैं उसने अपने इन ज़रूरी कामों के अलावा जिनके बेग़ैर गुज़र नहीं कारोबार तर्क करके पढ़ना शुरू किया और पक्का इरादा कर लिया कि कल नमाज़ें अदा करके आराम लूंगा और फर्ज़ कीजिए इसी हालत में एक महीना या एक दिन ही के बाद उसका इंतिक़ाल हो जाए तो अल्लाह तआला अपनी रहमते कामिला से उसकी सब नमाज़ें अदा कर देगा।

तरजमा : जो अपने घर से अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करता हुआ निकले फिर उसे रास्ता में मौत आ जाए तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मा करम पर साबित हो चुका यहां मुतलक़ फरमाया घर से अगर एक ही क़दम निकाला और मौत ने आ लिया तो पूरा काम उसके नाम-ए-आमाल में लिखा जाएगा और कामिल सवाब पाएगा वहाँ नीयत देखते हैं सारा दारोमदार हुस्ने नीयत पर है।

अर्ज़ : हुज़ूर जब रुसुल व मलाइका मासूम हैं तो उनको अलैहिस्सलातु वस्सलाम कह कर ईसाले सवाब करने की क्या ज़रूरत है।

इरशाद : अव्वल तो अलैहिस्सलातु वस्सलाम ईसाले सवाब नहीं बल्कि इज़्हारे ताज़ीम है और उन पर नुज़ूल दुरूद व सलाम की दुआ और हो भी तो मलाइका व रुसुल ज़ियादते सवाब से मुस्तग़नी नहीं हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलातु वस्सलात गुस्ल फरमा रहे थे रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला ने सोने का मेंह उन पर बरसाया आप चादर मुबारक फैला कर सोना उठाने लगे निदा आई ऐ अय्यूब क्या हमने तुम्हें उस से ग़नी न किया अर्ज़ करते हैं बेशक तूने ग़नी किया है लेकिन तेरी बरकत से मुझे किसी वक़्त ग़िना नहीं (इसी तज़्किरे में फरमाया) कि एक साहिबे शाकी रहते एक मरतबा बहुत परेशान आए मैंने उन से दरयाफ़्त किया कि जिस औरत को बाप ने तलाक़ दे दी हो क्या वह बेटे को हलाल हो सकती है फरमाया नहीं मैंने कहा हज़रत अमीरुल-मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम ने जिनकी आप औलाद में हैं तन्हाई में अपने चेहर-ए-मुबारक पर हाथ फेर कर इरशाद फरमाया ऐ दुनिया किसी और को धोखा दे मैंने तुझे वह तलाक़ दी जिस में कभी रजअत नहीं फिर सादाते किराम का अफ़्लास क्या तअज्जुब की बात है सैयद साहब ने फ़रमाया वल्लाह मेरी तस्कीन हो गई वह अब ज़िन्दा मौजूद हैं उस रोज़ से कभी शाकी न हुए।

मौलवी अब्दुर्रहमान साहब बिहारी जयपुरी :

हुज़ूर हाजी अब्दुल-जब्बार साहब को अक्सर औक़ात परेशानी रहती है।

इरशाद : लाहौल शरीफ़ की कसरत करें यह 69 बलाओं को दफा करती है उन में सबसे आसान तर परेशानी है और 60 बार पढ़ कर पानी पर दम करके रोज़ पी लिया करें।

अर्ज़ : बरकते रिज़्क़ की कोई दुआ हुज़ूर इरशाद फरमाएं मैं आजकल बहुत परेशान हूँ।

इरशाद : एक सहाबी ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ की दुनिया ने मुझ से पीठ फेर ली फरमाया क्या वह तस्बीह तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह है मलाइका की और जिसकी बरकत से रोज़ी दी जाती है ख़ल्क़ दुनिया आएगी तेरे पास ज़लील व ख़्वार हो कर तुलूअ् फज्र के साथ सौ बार कहा कर *सुब्हानल्लाहि बेहम्देही सुब्हानल्लाहिल-अज़ीम। व बेहम्देही अस्तग़्फ़िरुल्लाह।* उन सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को

सात दिन गुज़रे थे कि ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अर्ज़ की हुज़ूर दुनिया मेरे पास इस कसरत से आई मैं हैरान हूं कहाँ उठाऊं कहाँ रखूं। इस तस्बीह का आप भी विर्द रखें हत्तल-इम्कान तुलूअ् सुबहे सादिक़ के साथ हो वरना सुबह से पहले जमाअत क़ाइम हो जाए तो उस में शरीक हो कर बाद को अदद पूरा कीजिए और जिस दिन क़ब्ल नमाज़ भी न हो सके तो ख़ैर तुलूअ् शम्स से पहले।

मुअल्लिफ़ : मिस्र के मीनारों का तज़्किरा हुआ उस पर फरमाया।

इरशाद : उनकी तामीर हज़रत आदम अला नबीयना अलैहिस्सलातु वस्सलाम से चौदह हज़ार बरस पहले हुई नूह अलैहिस्सलाम की उम्मत पर जिस रोज़ अज़ाबे तूफ़ान नाज़िल हुआ है पहली रजब थी बारिश भी हो रही थी और ज़मीन से भी पानी उबल रहा था बहुक्म रब्बुल-आलमीन नूह अलैहिस्सलाम ने एक कश्ती तैयार फरमाई जो 10 रजब को तैरने लगी उस कश्ती पर 80 आदमी सवार थे जिस में दो नबी थे (हज़रत आदम व हज़रत नूह अलैहिमुस्सलाम) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उस कश्ती पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ताबूत रख लिया और उसके एक जानिब मर्द और दूसरी जानिब औरतों को बिठाया था पानी उस पहाड़ से जो सबसे बुलन्द था, 30 हाथ ऊंचा हो गया था दसवीं मुहर्रम को 6 माह के बाद सफ़ीना मुबारका जूदी पहाड़ पर ठहरा सब लोग पहाड़ से उतरे और पहला शहर जो बसाया उसका सूक़ुस्समानीन नाम रखा यह बस्ती जबले निहावन्द के क़रीब मुत्तसिल मूसल वाक़े है इस तूफ़ान में दो इमारतें मिस्ल गुंबद व मनारा बाक़ी रह गईं थीं। जिन्हें कुछ नुक़सान न पहुंचा उस वक़्त रुए ज़मीन पर सिवाए उनके और इमारत न थी।

अमीरुल-मुमिनीन हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुल-करीम से उन्हीं इमारतों की निस्बत मन्क़ूल है यानी दोनों इमारतें उस वक़्त बनाई गईं जब सितारा नस्र ने बुरुज सरतान में तहवील की थी। नस्र दो सितारे हैं नस्र वाक़े व नस्र ताइर और जब मुतलक़ बोलते हैं तो उस से नस्र वाक़े मुराद होता है उनके दरवाज़ा पर एक गिध की तस्वीर है और उसके पंजा में गुनगुचा जिस से तारीख़ तामीर की तरफ़ इशारा है मतलब यह कि जब नस्र वाक़े बुरुज सरतान में आया उस वक़्त यह इमारत बनी जिसके हिसाब से बारह हज़ार छेः सौ चालीस साल साढ़े

आठ महीने होते हैं कि सितारा चौंसठ बरस क़मरी सात महीने सत्ताइस दिन में एक दरजा तय करता है और अब बुरुज जदी के सोलहवीं दरजा में है तो जब से छेः बुरुज बढ़े पन्द्रह दरजा से हज़ार तय कर गया तो आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तख़्लीक़ से भी तक़रीबन पौने छेः हज़ार बरस पहले के बने हुए हैं कि उनकी आफ़्रेंश को सात हज़ार बरस से कुछ ज़ाइद हुए ला जुर्म यह क़ौम जिनकी तामीर है कि पैदाइश आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पहले साठ हज़ार बरस ज़मीन पर रह चुकी थी।

अर्ज़ : हुज़ूर उन्हें 80 इंसानों की औलाद हो कर दुनिया बढ़ी।

इरशाद : पस्मांदगान तूफ़ान से किसी की नस्ल न बढ़ी सिर्फ़ नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल तमाम दुनिया में है क़ुरआने अज़ीम फरमाता है। वजअलना ज़ुर्रियतहू हुमुल-बाक़ीन। इसी लिए उन्हें आदम सानी कहते हैं।

अर्ज़ : क्या हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने दुनिया में एक हज़ार बरस क़याम फरमाया।

इरशाद : नहीं बल्कि तक़रीबन सौलह सौ बरस (1600) तक तशरीफ़ फरमा रहे।

अर्ज़ : हुज़ूर अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम पर भी हज फर्ज़ हुआ था।

इरशाद : उन पर फ़र्ज़ियत का हाल ख़ुदा जाने अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हज करते रहे हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का तख़्त हवा पर उड़ता जा रहा था जब काबा मुअज़्ज़मा से गुज़रा तो काबा रोया और बारगाहे अहदियत में अर्ज़ की कि एक नबी तेरे अंबिया से और एक लश्कर तेरे लश्करों से गुज़रा न मुझ में उतरा न नमाज़ पढ़ी उस पर इरशादे बारी तआला हुआ न रो मैं तेरा हज अपने बन्दों पर फर्ज़ कर दूँगा जो तेरे तरफ़ ऐसे टूटेंगे जैसे परिन्दा अपने घोंसले की तरफ़ और ऐसे रोते हुए दौड़ेंगे जिस तरह ऊंटनी अपने बच्चे के शौक़ में और तुझ में नबी आख़िरुज़्ज़मां को पैदा करूंगा जो मुझे सब अंबिया से ज़्यादा प्यारा है सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

अर्ज़ : गुरूर बिल-फतह और गुरुह बिज़्ज़म में क्या फ़र्क़ है।

इरशाद : गुरूर बिल-फतह फ़रेबी और बिज़्ज़म फरेब।

अर्ज़ : ज़ैद अपने अयाल व अतफाल को अपने भांजे या भतीजे की

निगरानी में छोड़ कर खुद बाहर चला गया उसके चले जाने के बाद औरत के बच्चा पैदा हुआ। उसकी इत्तिला ख़ाविन्द को दी गई उसने कुछ जवाब न दिया। यहाँ तक कि जब वापस आया तब भी महज ख़ामोश रहा, न कुछ कहा न सुना और फिर बाहर चला गया। फिर एक लड़की पैदा हुई उसकी ख़बर की इत्तिला देने पर उसने जवाब लिखा कि तुम मेरी औरत पर तोहमत लगाते हो, इस सूरत में औलाद हरामी होगी या नहीं।

इरशाद : ता वक़्त कि चार मर्द मुसलमान आज़ाद आदिल गवाहाने सुबूत इस तरह देखने की गवाही न दें जैसे सुर्मा दानी में सलाई उनकी शहादत शरीअते मुतह्हरा में क़ाबिले समाअत न होगी।

अर्ज़ : हुज़ूर अह्दे रिसालत में कोई ऐसा वाक़्या गुज़रा है या नहीं।

इरशाद : अह्दे रिसालते अक़्दस में ज़िना का सुबूत गवाहों से कभी नहीं हुआ। अल्बत्ता दो बार यह हुआ कि मुज्रिमों ने खुद इक़रार कर लिया पहला वाक़्या हज़रत माइज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का दूसरा एक सहाबिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा का दोनों मुज्रिम बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और शरई सज़ा के ख़्वास्तगार हुए कि हम पाक हो जाएं दोनों को संगसार किया गया जिस वक़्त हज़रत माइज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को संगसार किया आप भागे लेकिन संगसारियों ने पकड़ कर क़त्ल कर दिया और ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर कुल वाक़्या बयान किया फरमाया तुमने छोड़ क्यों नहीं दिया जब वह भागा था और फरमाया उसने ऐसी तौबा की कि अगर तमाम शहर पर तक़्सीम की जाए। सब को काफी हो सहाबा किराम में से एक साहब ने हज़रत माइज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की निस्बत कुछ बुरे अल्फ़ाज़ फरमाए उस पर इरशाद हुआ। बुरा न कहो मैं देखता हूं कि वह जन्नत की नहरों में ग़ोता लगा रहा है। इसी तरह सहाबिया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने अपने जुर्म का ख़िदमते अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम में हाज़िर हो कर इक़रार किया और सज़ा की ख़्वास्तगार हुईं। इरशाद फ़रमाया तेरे पेट में हमल है बाद वज़अ् हमल आना बाद फराग़ हमल बच्चा को लेकर हाज़िर हुईं और अर्ज़ की कि उस बच्चा को अब क्या करूं फरमाया उसको दूध पिलाओ। यह इरशाद आली सुन कर वह बी बी वापस गईं और बाद दो बरस बच्चा को लेकर

हाज़िर हुईं। बच्चा के हाथ में रोटी का टुकड़ा था अर्ज़ की हुज़ूर अब यह रोटी खुद खाता है बच्चा लेकर रज्म फरमाया।

अर्ज़ : क्या हुज़ूर हद्दे शरई से पाक हो जाता है।

इरशाद : हद से पाक हो जाता है और क़सास से नहीं होता ख़ून नाहक़ करने वाले पर तीन हक़ हैं एक मक़्तूल के अइज़्ज़ा का दूसरा मक़्तूल का तीसरा रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला का जिन में से अइज़्ज़ा का हक़ क़िसास लेने से अदा हो जाता है और दो हक़ बाक़ी रहते हैं।

अर्ज़ : उस शख़्स पर जो क़िसास में क़त्ल किया गया नमाज़ पढ़ी जाए।

इरशाद : हाँ जैसे खुद कशी करने वाले की अल्बत्ता अपने मां-बाप को क़त्ल करने वाले और बाग़ी डाकू को डाका में मारा गया उनके जनाज़ा की नमाज़ नहीं।

अर्ज़ : एक साहब ने एक वहाबी के जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी ऐसे शख़्स के लिए क्या हुक्म है।

इरशाद : वहाबी राफ़ज़ी क़ादयानी वग़ैरहुम कुफ़्फ़ार मुरतदीन के जनाज़ा की नमाज़ उन्हें ऐसा जानते हुए पढ़ना कुफ़्र है।

अर्ज़ : अगर इमाम मिंबर छोड़ कर खुतबा पढ़े और जब कहा जाए तो कहे कोई हरज नहीं इस सूरत में नमाज़ होगी या नहीं।

इरशाद : ख़िलाफ़े सुन्नत है इमाम को समझाना चाहिए नमाज़ हो गई हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़माने में बरसों के बाद मिंबर शरीफ़ बना इब्तिदा अक्सर सुतून के सहारे से हुज़ूर ने खुतबा फरमाया है।

अर्ज़ : हुज़ूर नमाज़ी के सामने से निकलने के लिए कितना फासिला दरकार है।

इरशाद : ख़ाशेईन की सी नमाज़ पढ़े कि क़याम में नज़र मौज़ा सुजूद पर जमाई तो नज़र का क़ायदा है जहाँ जमाई जाए उस से कुछ आगे बढ़ती है मेरे तजरबा में यह जगह तीन गज़ है यहां तक निकलना मुतलक़न जाइज़ नहीं उस से बाहर-बाहर सहरा और बड़ी मस्जिद में निकल सकता है मकान और छोटी मस्जिद में दीवार क़िबला तक सामने से नहीं जा सकता फ़ुक़हाए किराम ने जिसको बड़ी मस्जिद फरमाया है

यहां कोई नहीं सिवाए मस्जिद ख़्वारिज़्म के जिसका एक रुबुअ् चार हज़ार सुतून पर है बड़ी मस्जिद है या मस्जिद हराम शरीफ़ में नमाज़ी के सामने तवाफ़ जाइज़ है कि वह भी मिस्ल नमाज़ इबादत है (इसी सिलसिल-ए-बयान में फरमाया कि) अगर कोई शख़्स तन्हा अपने घर या मस्जिद में पढ़ रहा है और दूसरा शख़्स दस्तक दे या मस्जिद में नमाज़ी के सामने से निकलना चाहता हो तो नमाज़ी उसको आगाह करने की ग़रज़ से बिल-जेहर ला-इलाहा इल्लल्लाह कह दे और अगर नमाज़ में बच्चा सामने आ कर बैठ जाए तो उसको हटा दे और अगर तख़्त पर पढ़ रहा हो और बच्चा के गिर जाने का एहतमाल हो तो उसको गोद में उठा ले खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमा बिन्त ज़ैनब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को गोद में लेकर नमाज़ पढ़ी है अगर बच्चे के कपड़े या बदन में नजासत लगी है और वह इस क़ाबिल है कि गोद में खुद रुक सकता है तो नमाज़ जाइज़ है कि बच्चा हामिले नजासत है वरना नमाज़ न होगी कि अब यह खुद हामिले नजासत हुआ।

अर्ज़ : झूठे मुद्दई नुबुव्वत से मुअ्जिज़ा तलब किया जा सकता है।

इरशाद : अगर मुद्दई नुबुव्वत से इस ख़्याल से कि उसका इज्ज़ ज़ाहिर हो मोजिज़ा तलब करे तो हरज नहीं और अगर तहक़ीक़ के लिए मोजिज़ा तलब किया कि यह मोजिज़ा भी दिखा सकता है या नहीं तो फौर काफिर हो गया (इसी तज़्किरा में फ़रमाया कि) मुबाहिसा में लोग यह शर्त कर लेते हैं कि जो साकित हो जाएगा वह दूसरे का मज़्हब अख़्तियार कर लेगा यह सख़्त हराम और अशद हिमाक़त है हम अगर किसी से लाजवाब भी हो जाएं तो मज़्हब पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि हमारे मुक़द्दस मज़्हब का मदार हम पर नहीं हम इंसान हैं उस वक़्त जवाब ख़्याल में न आया।

मुअल्लिफ़ : उस वक़्त मौलाना मौलवी नईमुद्दीन साहब और मौलाना मौलवी ज़फ़रुद्दीन साहब और मौलवी अहमद मुख़्तार साहब मेरठी और मौलवी अहमद अली साहब व मौलाना मोलवी रहम इलाही साहब नाज़िमे अंजुमन अह्ले सुन्नत व मुदर्रिस मदरसा अह्ले सुन्नत व मौलाना मौलवी अमजद अली साहब मुदर्रिस मदरसा अह्ले सुन्नत व मुहतमिम मतबअ् अह्ले सुन्नत वग़ैरह हज़रात उलमाए किराम हाज़िरे ख़िदमत थे।

अंजुमन के आरिया, नारिया के मुक़ाबिल जल्से हो रहे थे यह सब हज़रात जल्सा मुनाज़रा से मुज़फ़्फ़र व मन्सूर वापस आए थे रामचन्द्र मुनाज़िर आरिया की चर्ब ज़बानी और बेहयाई का ज़िक्र हो रहा था कि बात समझने की लियाक़त नहीं रखता बेहयाई से कुछ न कुछ कहे ज़रूर जाता है उस पर इरशाद फ़रमाया सख़्त ग़लती है कि ऐसों से ज़बानी बात चीत हो उसका हासिल यही होता है कि वह कुछ न कुछ बिके जाएगा जिससे लोग जानें कि बड़ा मुक़र्रर है बराबर जवाब दे रहा है इंसान में यह कुव्वत नहीं कि ज़बान बन्द कर दे बेहया कुफ़्फ़ार अल्लाह व जल्ला के हुज़ूर न चूकेंगे वहां भी ज़बान चली ही जाएगी यहां तक कि मुँह पर मुहर फरमाई जाएगी और आज़ा को हुक्म होगा बोल चलो।

तो ऐसों से हमेशा तहरीरी गुफ़्तगू होना चाहिए कि फ़िक्र ने बदलने बचलने की गली न रहे बहुत धोका होता है कि वहाबिया वग़ैरह से फरई मसाइल में गुफ़्तगू कर बैठते हैं वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिद क़ादियानी वग़ैरह तो चाहते ही यह हैं कि उसूल छोड़ कर फरई मसाइल में गुफ़्तगू हो उन्हें हरगिज़ यह मौक़ा न दिया जाए उन से यही कहा जाए कि पहले तुम इस्लाम के दाइरा में आलू अपना मुसलमान होना तो साबित कर लो फिर फरई मसाइल में गुफ़्तगू का हक़ होगा।

अर्ज़ : मुसाफ़हा वापसी के वक़्त करने की मुमानेअत फरमाई गई है।

इरशाद : नहीं असहाबे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब आपस में मिलते मुसाफहा फरमाते और जब रुख़्सत होते मुआनक़ा करते।

अर्ज़ : मुआनक़ा एक जानिब या दोनों जानिब से करे।

इरशाद : एक तरफ़ से भी हो जाएगा लेकिन अरब शरीफ़ में दोनों तरफ़ से करते हैं।

अर्ज़ : नमाज़े जुमा या ईदैन या बाद सलात पंजगाना मुसाफ़हा करना कैसा है।

इरशाद : जाइज़ है *नसीमुर्रियाज़* में है अल-असह्हु इन्नहा बिदअतुन मुबाहतुन।

अर्ज़ : अज़ान में नामे अक़्दस लेते वक़्त रौज़-ए-मुनव्वरा की तरफ़ मुँह कर सकता है।

इरशाद : ख़िलाफ़े सुन्नत है सिवाए हय्या अलस्सलात और हय्या अलल-फलाह के और किसी कलिमा पर किसी तरफ़ मुँह नहीं फेर सकता या खुतवा में अज़्ज़ा जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कहे यह क़लबी मुहब्बत नहीं। क़लबी मुहब्बत वही है कि शरीअत के दाइरा में रहे उसमें अपनी इसलाह की मुदाख़लत न करे अल्बत्ता खुतवा में अगर कलिमा शरीफ़ ख़तीव पढ़े तो रफ़ा सब्बावा करने में कोई हरज नहीं।

अर्ज़ : गुनाहे सग़ीरा व कवीरा में क्या फ़र्क़ है।

इरशाद : गुनाहे कवीरा सात सौ हैं उनकी तफ़सील बहुत तवील है अल्लाह की मासियत जिस क़द्र है सव कवीरा है अगर सग़ीरा व कवीरा को इलाहिदा शुमार कराया जाए तो लोग सग़ाइर को हल्का समझेंगे वह कवीरा से भी वदतर हो जाएगा जिस गुनाह को हल्का जान कर करेगा वही कवीरा है उनके इम्तियाज़ के लिए सिर्फ़ इस क़द्र काफी है कि फर्ज़ का तर्क कवीरा है और वाजिव का सग़ीरा जो गुनाह वेवाकी और इसरार से किया जाए कवीरा है।

अर्ज़ : कौन-कौन औरतें ग़ैर महरिम के यहाँ जा सकती हैं।

इरशाद : मरीज़ा, ग़ासिला, क़ाविला, का ग़ैर महरिम के यहाँ जाना जाइज़ है।

अर्ज़ : ला मज़हव को मुसलमान करने का क्या तरीक़ा है।

इरशाद : *ला-इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम*। अल्लाह एक है आसमान से पानी उतारने वाला एक अल्लाह है ज़मीन से खेती उगाने वाला एक अल्लाह है जिलाने वाला एक अल्लाह है मारने वाला एक अल्लाह है रोज़ी देने वाला एक अल्लाह है एक अल्लाह की पूजा है अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं। लोग अल्लाह के सिवा जिन-जिन को पूजते हैं वह सब झूठे हैं अल्लाह ने अपने वन्दों को सच्चा रास्ता दिखाने के लिए अपने नेक वन्दे भेजे जिन्हें नवी और रसूल कहते हैं वह जो कुछ खुदा के पास से लाए वह सव हक़ हैं उन नवियों और कितावों पर ईमान लाया उन में सवसे वड़े और सवके सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं वह जो कुछ अल्लाह के पास से लाए सव सच है मेरा दीन मुसलमानों का दीन है मुसलमानों का दीन सच्चा है मुसलमानों के दीन के सिवा और दीन

जितने हैं वह सव झूठे हैं।

अर्ज़ : वसवसा के दफ़ा के लिए क्या पढ़े।

इरशाद : पढ़ने से फौरन वसवसे रफ़ा हो जाते हैं वल्कि सिर्फ़ *आमन्तु बिल्लाहि व रसूलेही* कहने से दूर हो जाते हैं।

अर्ज़ : अगर रिया के लिए नमाज़ रोज़ा रखा तो फ़र्ज़ अदा होगा या नहीं।

इरशाद : (मआज़ल्लाह) फ़िक़्ही नमाज़ रोज़ा हो जाएगा कि मुफ़्सिद न पाया गया सवाव न मिलेगा वल्कि अज़ावे नार का मुस्तहिक़ होगा रोज़े क़्यामत उस से कहा जाएगा ओ फाजिर ओ ग़ादिर ओ ख़ासिर ओ काफिर तेरा अमल हव्त हुआ अपना उज्र उस से मांग जिसके लिए करता था यही एक वुराई रिया की मज़म्मत को काफी है।

अर्ज़ : तवारक वाद मरने ही के हो सकता है या ज़िन्दगी में भी कर सकता है और मिक़्दार सो अमन सही है या नहीं।

इरशाद : हर साल करें या एक ही साल तवारक शरीफ़ से मक़सूद ईसाले सवाव है और शरीअत में उसकी कोई मिक़्दार मुक़र्रर नहीं जितना हो और जव हो पाक माल और ख़ालिस नीयत से अल्लाह के लिए हो मरने के वाद हो या ज़िन्दगी में हर साल करें कोई हरज नहीं वल्कि मुक़र्रर करके मौक़ूफ़ करना न चाहिए उसके फवाइद वेशुमार हैं उसमें सूरः तवारक शरीफ़ पढ़ी जाती है इस सूरः करीमा की वरावर अज़ावे क़ब्र से वचाने वाली और राहत पहुंचाने वाली कोई चीज़ नहीं अगर उसके पढ़ने वाले के पास मलाइका अज़ाव आना चाहते हैं तो उनको रोकती है वह दूसरी तरफ़ से आना चाहते हैं तो उधर हाइल होती है और फरमाती है कि उसके पास न आओ यह मुझे पढ़ता था फरिश्ते अर्ज़ करते हैं हम उसके हुक्म से आए हैं जिसका तू कलाम है तो फरमाती है कि ठहर जाओ जव तक मैं वापस न आऊं उसके पास न आना और वारगाहे इलाही में हाज़िर हो कर अपने पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत के लिए ऐसा झगड़ती है कि मख़्लूक़ को ऐसा झगड़ने की ताक़त नहीं इंतिहा यह कि अगर मग़्फ़िरत में ताख़ीर होती है अर्ज़ करती है वह मुझे पढ़ता था और तूने उसे न वख़्शा अगर मैं तेरा क़लाम नहीं तू मुझे अपनी किताव में से छील दे उस पर इरशादे वारी होता है जा हम ने उसे वख़्शा वह फौरन जन्नत में जाती है और वहाँ से रेशमी कपड़े

और आराम तकिए और फूल और खुशबुएं लेकर क़ब्र पर आती है और फरमाती है मुझे आने में देर हुई, तू घबराया तो न था फिर बिछौने बिछाती और तकिया लगाती है फ़रिश्ते बहुक्मे रब्बुल-आलमीन वापस जाते हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर एक शख़्स ने अपनी लड़की के इंतिक़ाल के बाद देखा कि वह अलील और बरहना है यह ख़्वाब चन्द बार देख चुका है।

इरशाद : कलिम-ए-तैयबा सत्तर हज़ार मरतबा मआ दरूद शरीफ़ पढ़ कर बख़्श दिया जाए इन्शाअल्लाह तआला पढ़ने वाले और जिसको बख़्शा है दोनों के लिए ज़रिय-ए-नजात होगा और पढ़ने वाले को दूना सवाब होगा और अगर दो को बख़्शेगा तो तिगुना इसी तरह करोड़ों बल्कि जमीअ् मुमिनीन मुमिनात को ईसाले सवाब कर सकता है इसी निस्बत से उस पढ़ने वाले को सवाब होगा हज़रत शैख़ अकबर मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाह तआला अलैहि एक जगह दावत में तशरीफ़ ले गये आपने देखा कि एक लड़का खाना खा रहा है खाना खाते हुए दफ़अतन रोने लगा वजह दरयाफ़्त करने पर कहा कि मेरी मां को जहन्नम का हुक्म है और फ़रिश्ते उसे ले जाते हैं (उस शहर में यह लड़का कश्फ़ में मशहूर था) हज़रत शैख़ अक्बर मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाह तआला अलैहि के पास यही कलिमा सत्तर हज़ार मरतबा पढ़ा हुआ महफ़ूज़ था आपने उसकी मां को दिल में ईसाले सवाब कर दिया फौरन वह लड़का हंसा आपने सबब हंसने का दरयाफ़्त फरमाया लड़के ने जवाब दिया कि हुज़ूर मैंने अभी देखा मेरी मां को फ़रिश्ते जन्नत की तरफ़ ले जा रहे हैं शैख़ इरशाद फरमाते हैं इस हदीस की तस्हीह मुझे उस लड़के के कश्फ़ से हुई और उसके कश्फ़ की तस्दीक़ इस हदीस से।

अर्ज़ : अज़ाब फ़क़त रूह पर होता है या जिस्म पर भी।

इरशाद : रूह व जिस्म दोनों पर यू हैं सवाब भी हदीस में है एक लुंझा किसी बाग़ के सामने पड़ा था और मेवे देख रहा था मगर उस तक जा न सकता था इत्तिफ़ाक़न एक अन्धे का उस तरफ़ से गुज़र हुआ कि बाग़ में जा सकता था मगर मेवे उसे नज़र न आते लुंझे ने अन्धे से कहा तो मुझे बाग़ में ले चल वहाँ जा कर हम और तुम दोनों मेवे खाएं अन्धा उसको अपनी गर्दन पर सवार करके बाग़ में ले गया लुंझे ने मेवे

तोड़े और दोनों ने खाए इस सूरत में कौन मुज्रिम होगा दोनों ही मुज्रिम हैं अन्धा जिस्म है और लुंझा रूह।

अर्ज़ : हर एक के साथ कितनी रूहें हैं।

इरशाद : सिर्फ़ एक रूह है अगर मुसलमान है तो इल्लीयीन में और काफिर सिज्जीन में जो शख़्स क़ब्र पर जाता है उसको बख़ूबी देखती है उसकी बात समझती है मरने का बाद रूह का इद्राक बेशुमार बढ़ जाता है ख़्वाह मुसलमान की हो या काफिर की शाह अब्दुल-अज़ीज़ साहब फरमाते हैं रूह को कुर्ब व बुअ्द मकानी यक्सां है रूह बसर को देखो कुएँ के अन्दर से सितारों को देखती है यानी निगाह उठते ही ज़मीन से। फलक सवावित तक पहुंचती है यहाँ से आठ हज़ार बरस की राह पर है हदीस में रूह ज़िन्दा व मुर्दा की मिसाल परिन्द की फरमाई कि जब तक पिंजरे में बन्द है उसी के लाइक़ पर खोल सकता है जब क़फस से निकाल दो फिर उसकी उड़ान देखो।

अर्ज़ : क़ब्र खोदी वहाँ मुर्दे की हड्डियाँ निकलीं तो क्या किया जाए।

इरशाद : अगर और जगह मिल सकती है तो हरगिज़ उसमें दफन न करें और उस क़ब्र को बदस्तूर दुरुस्त कर दें वरना उन हड्डियों को एक तरफ रख कर हाइल का फसल दे कर उसको दफन करें और अगर यह मालूम हो कि पहले यहाँ क़ब्र थी अगरचे अब यहाँ निशान बाक़ी न रहा तो इस सूरत में वहाँ क़ब्र खोदना जाइज़ नहीं हाँ अगर कोई जगह और न मिल सके और यह क़ब्र पुरानी हो चुकी तो मज्बूरन जाइज़ है।

अर्ज़ : दाढ़ी मुंडाना और कतरवाना गुनाहे सग़ीरा है या कबीरा।

इरशाद : कतरवाना मुंडाना एक दफ़ा का सग़ीरा गुनाह है और आदत से कबीरा जिस से फासिक़ मुअ्लिन हो जाएगा उसके पीछे नमाज़ मक्रूहे तहरीमी कि पढ़नी गुनाह और फेरनी वाजिब अगर एआदा न किया गुनहगार होगा एक रोज़ हज़रत मौलाना शाह सैयद अहमद अशरफ़ साहब कछौछवी तशरीफ़ लाए हुए थे रुख़्सत के वक़्त उन्होंने अर्ज़ किया मोलवी सैयद मुहम्मद साहब अशरफ़ी अपने भांजे को मैं चाहता हूं कि हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर कर दूं हुज़ूर जो मुनासिब ख़्याल फरमाएं उन से काम लें। इरशाद हुआ ज़रूर तशरीफ़ लाएं यहाँ फतवे लिखें और मदरसा में दर्स दें रद्दे वहाबिया और इफ़्ता यह दोनों

ऐसे फन हैं कि तवल की तरह यह भी सिर्फ़ पढ़ने से नहीं आते उनमें भी तवीव हाज़िक़ के मतव में बैठने की ज़रूरत है मैं भी एक हाज़िक़ तवीव के मतव में सात वरस बैठा मुझे वह वक़्त वह दिन वह जगह वह मसाइल और जहाँ से वह आए थे अच्छी तरह याद हैं। मैंने एक बार एक निहायत पेचीदा हुक्म वड़ी कोशिश व जांफशानी से निकाला और उसकी ताईदात मआ तन्क़ीह आठ वर्क़ में जमा कीं मगर जव हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहू के हुज़ूर में पेश किया तो उन्होंने एक जुमला ऐसा फरमाया कि उस से यह सव वर्क़ रद्द हो गये वही जुमले अव तक दिल में पड़े हुए हैं और क़ल्व में अव तक उनका असर वाक़ी है खुद सताई जाइज़ नहीं मगर वक़्त हाजत इज़्हारे हक़ीक़त, तहदीसे नेमत है सैयदना यूसुफ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने वादशाहे मिस्र से फरमाया। *इज्अलनी अला ख़ज़ाइनिल-अर्ज़े इन्नी हफ़ीज़ुन अलीम*। ज़मीन के ख़ज़ाने मेरे हाथ में दे दीजिए वेशक मैं हिफ़्ज़ वाला हूँ और इल्म वाला हूँ वफ़ज़्ल व रहमते इलाही फिर वेऔन व इनायत रिसालत पनाही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इफ़्ता और रद्दे वहाविया के दोनों कामिल फन, दोनों निहायत आली फन, उन्हें यहाँ से अच्छा इन्शाअल्लाह तआला हिन्दुस्तान में कहीं न पाइएगा ग़ैर ममालिक की वावत नहीं कहता मैं तो हर शख़्स को वतैयव ख़ातिर सिखाने को तैयार हूं सैयद मुहम्मद अशरफ़ी साहव तो मेरे शाहज़ादे हैं मेरे पास जो कुछ है वह उन्हीं के जददे अमजद (यानी हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) का सदक़ा व अतीया है आपके यहाँ मौजूदीन में तफ़ेक़ा जिसका नाम है वह मौलवी अमजद अली साहव में ज़्यादा पाइयगा इसकी वजह यही है कि वह इस्तिफ़्ता सुनाया करते हैं और जो मैं जवाव देता हूँ लिखते हैं तवीअत अख़ाज़ है तरज़ से वाक़फ़ीयत हो चली है इसी तरह इल्मे तौक़ियत भी एक ऐसा फन है कि उसके जानने वाले भी मअ्दूम हैं हालांकि अइम्म-ए-दीन ने उसे फर्ज़े किफाया वताया है उलमाए मौजूदीन में तो कोई इतना भी नहीं जानता कि फलां दिन आफताव कव तुलूअ् होगा और कव गुरूव वहुत सी उम्र गुज़र गई थोड़ी वाक़ी है जिस साहव को जो कुछ लेना हो वह हासिल कर लें। *सलूनी क़ब्ला अन तफ़्क़दूनी*। हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुल-करीम का इरशाद है और शैख़ सअ्दी अलैहिर्रहमा का क़ौल विल्कुल सही है।

क़द्र नेमत पस अज़ ज़वाल वूद। फिर लेने वाले को यह चाहिए कि जव किसी चीज़ के हासिल करने का इरादा करे तो अगरचे कमालात से भरा हुआ हो अपने तमाम कमालात को दरवाज़ा ही पर छोड़े और यह जाने कि मैं कुछ जानता ही नहीं ख़ाली हो कर आएगा तो कुछ पाएगा और जो अपने आपको भरा समझेगा, भरे वर्तन में और कोई चीज़ नहीं डाली जा सकती और आजकल तो हासिल करने वाले ऐसे हैं कि जव मैं हसन मियाँ मरहूम के मकान में रहता था उस में एक ज़ीना है जो वाहर से छत पर गया है उस ज़माना में एक मुदर्रिस साहव के हिदाया आख़िरीन सुपुर्द हुआ यह कोई आसान किताव नहीं जव उन्होंने काम चलता न देखा तो मुझ से पढ़ना चाहा मगर शर्त यह कि उस वाहर के ज़ीना से छत पर मुझे वुला लिया कीजिए और वहाँ तन्हाई में पढ़ा दिया कीजिए किसी को मालूम न हो मैंने कहा मौलाना हिदाया आख़िरीन का सावक़ कोई सिरक़ा नहीं जो लोगों से छुप कर हो मुझ से यह न होगा एक साहव यहीं की फतवा नवेसी करते थे और वह इस तरह लिखते थे कि वाहर से जवाव लिख कर भेज दिया मैंने इस्लाह देकर भेज दिया और एक रोज़ उन से कहा गया मौलाना यूं जवाव तो ठीक हो जाएगा मगर आपको यह न मालूम होगा कि आपकी लिखी हुई इवारत क्यों काटी गई और दूसरी इवारतें किस मस्लहत से वढ़ाई गईं मुनासिव यह है कि आप वाद नमाज़ अस्र अपने लिखे हुए फतवों पर इस्लाह ले लिया करें उन्होंने कहा कि इस वक़्त आपके पास वहुत से लोग जमा होते हैं इस मजमा में आप फरमाएंगे कि तुमने यह ग़लत लिखा वह ग़लत लिखा और मुझे इसमें निदामत होगी इस वन्द-ए-ख़ुदा के नाम से जवाव जाता तो लोग उन्हीं के नाम इस्तिफ़्ता भेजते उस ज़माने में मक्का मुअज़्ज़मा के एक आलिम जलील हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल हाफ़िज़ कुतुवे हरम रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़क़ीर के यहाँ तशरीफ़ लाए हुए थे मक्का मुअज़्ज़मा से सिर्फ़ मुलाक़ात फ़क़ीर के लिए करम फरमाया था उनके सामने उसका तज़्किरा हुआ फरमाया ऐसा शख़्स वरकते इल्म से महरूम रहता है यही हुआ कि वह साहव छोड़ कर वैठ रहे अव वी.ए. पास करने की फ़िक्र में हैं। हज़रत अब्दुल्लाह विन अब्वास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं जव मैं वग़र्ज़ तहसीले इल्म हज़रत ज़ैद विन सावित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु

के दरे दौलत पर जाता और वह बाहर तशरीफ़ न रखते होते तो बराहे अदब उनको आवाज़ न देता उनकी चौखट पर सर रख कर लेट रहता, हवा, ख़ाक और रेता उड़ा कर मुझ पर डालती फिर जब हज़रत ज़ैद काशानए अक्दस से तशरीफ़ लाते फरमाते ऐ इब्ने अम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम आपने मुझे इत्तिला क्यों न करा दी मैं अर्ज़ करता मुझे लाइक़ न था कि मैं आपको इत्तिला कराता यह वह अदब है जिसकी तालीम कुरआने अज़ीम ने फरमाई।

तरजमा : वह जो हुजरों के बाहर से तुम्हें आवाज़ देते हैं उनमें बहुत को अक़्ल नहीं और अगर वह सब्र करते यहाँ तक कि तुम बाहर तशरीफ़ लाओ तो उनके लिए बेहतर था और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

एक मरतबा हज़रत ज़ैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु घोड़ी पर सवार हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने रेकाब थामी हज़रत ज़ैद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि यह क्या है? इब्ने अम्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन्होंने कहा हमें यही तालीम दी गई है उलमा के साथ अदब करें उस पर हज़रत ज़ैद रज़ि अल्लाहु तआला तआला अन्हु घोड़े से उतरे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के हाथ पर बोसा दिया और फरमाया हमें यही हुक्म है कि अह्ले बैते अतहार के साथ ऐसा ही करें। हारून रशीद जैसे जब्बार बादशाह ने मामून रशीद की तालीम के लिए हज़रत इमाम कुसाई से (जो इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि के ख़ाला ज़ाद भाई और अजिल्ला उलमा व कुर्रा सबआ़ में से हैं) अर्ज़ किया फरमाया मैं यहाँ पढ़ाने न आऊंगा। शहज़ादा मेरे ही मकान पर आ जाया करे। हारून रशीद ने अर्ज़ की वह वहीं हाज़िर हो जाया करेगा मगर उसका सबक़ पहले हो फरमाया यह भी न होगा बल्कि जो पहले आएगा उसका सबक़ पहले होगा। ग़रज़ मामून रशीद ने पढ़ना शुरू किया इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ हारून रशीद का गुज़र हुआ। देखा कि इमाम कुसाई अपने पाँव धो रहे हैं और मामून रशीद पानी डालता है बादशाह ग़ज़बनाक हो कर उतरा और मामून रशीद को कोड़ा मारा और कहा ओ बेअदब खुदा ने दो हाथ किस लिए दिए हैं। एक हाथ से पानी डाल और दूसरे हाथ से उनका पाँव धो। एक मरतबा हारून रशीद ने अबू मुआविया ख़न्ज़ीर की दावत की वह आंखों से

माज़ूर थे जब आफताबा और चिलमची हाथ धोने के लिए लाई गई तो चिलमची ख़िदमतगार को दी और आफताबा खुद लेकर उनके हाथ धुलाए और कहा आपने जाना कौन आपके हाथों पर पानी डाल रहा है कहा नहीं कहा हारून कहा जैसी आपने इल्म की इज़्ज़त की ऐसी अल्लाह आपकी इज़्ज़त करे हारून रशीद ने कहा इसी दुआ के हासिल करने के लिए यह किया था।

हारून रशीद के दरबार में जब कोई आलिम तशरीफ़ लाते बादशाह उनकी ताज़ीम के लिए सर व क़द खड़ा हो जाता। एक बार दरबारियों ने अर्ज़ किया या अमीरुल-मुमिनीन रुअबे सलतनत जाता है जवाब दिया अगर उलमाए दीन की ताज़ीम से रुअबे सलतनत जाता है तो जाने ही के क़ाबिल है यही वजह थी कि इनका रुअब रूए ज़मीन के बादशाहों पर बदरज-ए-अतम था सलातीने नसारा उनका नाम लिए थर्राते थे तख़्ते कुस्तुनतुनिया पर एक ईसाइया औरत हुक्मरां थी और वह हर साल ख़िराज अदा करती जब वह मर गई तो उसका बेटा तख़्त पर बैठा और ख़िराज न हाज़िर किया उधर से ख़िराज का मुतालबा हुआ तो उसने हज़रत हारून रशीद की ख़िदमत में एक ऐल्ची के हाथ उस मज़्मून की तहरीर भेजी कि वह मर गई जो खुद प्यादा बनी थी और आपको रुख़ बनाया था यह तहरीर लेकर एल्ची जब हाज़िरे दरबार हुआ वज़ीर को हुक्म हुआ सुनाओ वज़ीर ने उसे देख कर अर्ज़ की हुज़ूर मुझ में ताब नहीं जो उसे सुना सकूं फरमाया मुझे दे और उस तहरीर को पढ़ा बादशाह को देखते ही ऐसा जलाल आया जिसे देख कर तमाम दरबार भाग गया सिर्फ़ वज़ीर और ऐल्ची रह गये वज़ीर को हुक्म हुआ कि जवाब लिख उसने इरादा लिखने का किया मगर रुअबे शाही इस क़द्र ग़ालिब था कि हाथ थर थराने लगा और क़लम न चला फिर फ़रमाया मुझे दे और यूं लिखा यह ख़त है खुदा के बन्दे अमीरुल-मुमिनीन हारून रशीद की तरफ़ से रूम के कुत्ते फ़लां को कि ओ काफिरा के जने जवाब वह नहीं जो तू सुने जवाब वह है जो तू देखेगा यह फ़रमाने ऐल्ची को दिया और फ़ौरन लश्कर को तैयारी का हुक्म दिया ऐल्ची के साथ लश्कर लेकर पहुंचे और जाते ही कुस्तुनतुनिया को फतह करके उस बादशाह ईसाई को गिरफ़्तार कर लिया उसने बहुत गिरिया ज़ारी की हाथ पाँव जोड़े ख़िराज देने का वादा किया छोड़ दिया और ताज बख़्शी

करके वापस आए अभी एक मंज़िल आए थे कि ख़बर पाई उसने फिर सरताबी की फौरन वापस गये और फिर फतह किया और फिर उसे गिरफ़्तार किया फिर उसने हाथ जोड़े और खुशामद की फिर छोड़ दिया ऐसे जब्बार बादशाह की उलमा के साथ यह तरज़ ताज़ीम थी रहमतुल्लाह तआला अलैहिम।

अर्ज़ : वन्दों को कुर्व इलल्लाह का मरतवा अलावा नमाज़ भी होता है।

इरशाद : हाँ हर सज्दा में रब के क़रीब होता है और सज्दा चार क़िस्म हैं।

(1) सज्दा नमाज़ (2) सज्द-ए-तिलावत (3) सज्द-ए-सह्व (4) सज्द-ए-शुक्र।

अर्ज़ : सज्दा शुक्र मस्नून है या मुस्तहब।

इरशाद : सुन्नते मुस्तहिब्बा है जिस वक़्त अबू जहल लईन का सर कट कर सरकार में आया सज्द-ए-शुक्र फरमाया।

अर्ज़ : इस लईन से भी क़ल्वे अक़्दस को बहुत तक्लीफ़ पहुंची।

इरशाद : यह उन वारा लईनों से था जो सबके सब तबाह व बरबाद हो गये किसी के सर पर बिजली गिरी किसी पर पत्थर वरसे ग़रज़ तरह-तरह के अज़ाबे इलाही उन खुबसा पर नाज़िल हुए एक मरतबा आस सफर को गया तकान के बाइस एक दरख़्त से तकिया लगा कर बैठ गया जिब्रीले अमीन बहुक्मे रब्बुल-आलमीन तशरीफ़ लाए और उसका सर पकड़ कर दरख़्त से टकराना शुरू किया वह चिल्लाता था कि अरे कौन मेरे सर को दरख़्त से टकरा रहा है उसके साथी कहते थे कि हमें कोई नज़र नहीं आता यहाँ तक कि जहन्नम वासिल हुआ। क़यामत के दिन उस जहन्नम की सबसे जुदा हालत होगी यह अपने आपको मआज़ल्लाह अज़ीम व करीम कहा करता यानी इज़्ज़त व करम वाला। दारोग़ा दोज़ख़ को हुक्म होगा कि उसके सर पर गुर्ज़ मारो जिसके लगते ही एक बड़ा खुला, सर में हो जाएगा और जिसकी उस्अत इतनी न होगी जितनी तुम ख़्याल करते हो बल्कि जिसकी एक दाढ़ कोहे उहुद की बराबर होगी उसके सर फटने से जो ख़ला होगा वह किस क़द्र वसीअ् होगा ग़रज़ इस ख़ला में जहन्नम का खौलता हुआ पानी भरा जाएगा और उस से कहा जाएगा। *ज़ुक़ इन्नक अन्तल-अज़ीज़ुल-*

करीम। चख तू इज़्ज़त करम वाला है और हर काफिर को यही पानी पिलाया जाएगा कि जब मुँह के क़रीब आएगा मुँह उसमें गल कर गिर पड़ेगा और जब पेट में उतरेगा आंतों के टुकड़े कर देगा और उसको पानी को ऐसा पियेंगे जैसे तूनस के मारे ऊंट भूख से बेताब होंगे तो ख़ार दार थूहड़ खौलता हुआ चर्ख़ दिए हुए तांवे की तरह उबलता हुआ खिलाएंगे जो पेट में जा कर खोलते हुए पानी की तरह जोश मारेगा और भूख को कुछ फाइदा न देगा अनवाअ्-अनवाअ् के अज़ाब होंगे हर तरफ़ से मौत आएगी और मरेंगे कभी नहीं न कभी उनके अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होगी यही हाल तमाम राफ़ज़ियों वहाबियों और क़ादियानियों, नेचरियों तमाम मुर्तदीन का है जिस ने किसी दूसरे के बहकाने से कुफ़्र किया होगा वह बारगाहे रब्बुल-इज़्ज़त में अर्ज़ करेगा उसने मुझे बहकाया उस पर दूना अज़ाब कर रब्बुल-इज़्ज़त फरमाएगा सब पर दूना है मगर तुम जानते नहीं और नारियों के जिस्म ऐसे बड़े-बड़े होंगे जिनकी एक-एक दाढ़ मिस्ल कोहे उहुद के।

अर्ज़ : मस्जिद में कपड़ा सीना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर उजरत पर सीता है तो नाजाइज़ वरना कोई हरज नहीं।

अर्ज़ : खाना खाने का मस्नून तरीक़ा क्या है।

इरशाद : दाहिना पाँव खड़ा हो और बायां बिछा और रोटी बाएं हाथ में लेकर दाहिने हाथ से तोड़ना चाहिए एक हाथ से तोड़ कर खाना और दूसरा हाथ न लगाना आदते मुतकब्बेरीन है।

अर्ज़ : फातिहा में अल्हम्दु शरीफ़ पढ़ने को वहाबिया मना करते हैं आया कुछ ज़्यादा सवाब है।

इरशाद : जो कुछ तीस पारों में है वह सिर्फ़ अल्हम्दु शरीफ़ है उसकी दावत हदीस शरीफ़ में इरशाद है कि रब अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है :

मैंने सूरः फातिहा को अपने और अपने वन्दे के दर्मियान निस्फ़-निस्फ़ तक़सीम फरमाया निस्फ़ अव्वल मेरे लिए और निस्फ़ आख़िर मेरे वन्दे के लिए है जब वन्दा पहले तीन आयतों को पढ़ता है तो इरशाद फरमाता है कि मेरे वन्दे ने मेरी तम्जीद की और जब बीच की आयत *इय्याका नअ्बुदु व इय्याका नस्तईन।* पढ़ता है इरशाद फरमाता है यह आधी मेरे

लिए और आधी मेरे बन्दे के लिए जब अख़ीर की तीन आयात पढ़ता है इरशाद फरमाता है *हाज़ा लेअब्दी मा सअला* यह मेरे बन्दे के लिए है और मेरे बन्दे के लिए है वह जो उसने मांगा यह इसलिए इरशाद हुआ कि पहली तीन आयतों में *मालिके यौमिद्दीन* तक मौला अज़्ज़ा व जल्ल की ख़ालिस हम्द व सना है और पिछली *इहदिना* से आख़िर सूरः तक अपने लिए दुआ है और बीच की आयत में ज़िक्रे इबादत और इस्तिआनत है इबादत मौला तआला के लिए है और इस्तिआनत बन्दा का नफ़अ् वहाबिया की बद अक़्ली को क्या कहिए कि ऐसी मुतबर्रक सूरत के पढ़ने से मना करते हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर ज़माना सहाबा में भी कुरआने अज़ीम के यह पारे हो गये थे।

इरशाद : इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने किताबुल-इत्कान में जिस क़द्र अहादीस व रिवायात व अक़्वाले कुरआने अज़ीम के ऐसे उमूर के मुतअल्लिक़ हैं जमा फरमा दिए हैं उसमें पारों का कहीं ज़िक्र नहीं जिस से ज़ाहिर होता है कि उनके वक़्त तक यह तक़सीम न थी हाँ रुकूअ् जारी हुए आठ सौ बरस हुए मशाइख़ किराम ने अल्हम्दु शरीफ़ के बाद पांच सौ चालीस रुकूअ् रखे कि तरावीह की हर रकअत में एक रुकूअ् पढ़े तो सत्ताईसवीं शब में कि शबे क़द्र है ख़त्म हो।

अर्ज़ : यह अहज़ाब वग़ैरह कैसे शुरू हुए।

इरशाद : अहज़ाब व एशार ज़माना मुबारक से हैं एशार दस-दस आयतों के मज्मूआ का नाम था यानी सहाबा किराम एक उश्र हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पढ़ते और उसके मुतअल्लिक़ उलूम व मआरिफ़ जो उनके लाइक़ होते उन सबको हासिल करने के बाद दूसरा उश्र शुरू करते सैयदना फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने आठ बरस में सूरः बक़रः शरीफ़ ख़त्म फरमाई और बाद इख़्तिताम एक ऊंट कुरबानी फरमाया सैयदना अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने सूरः बक़रः शरीफ़ बारह बरस में पढ़ी।

अर्ज़ : क्या यह रिवायत सही है कि हज़रत महबूबे इलाही रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु क़ब्र शरीफ़ में नंगे सर खड़े हुए गाने वालों पर लानत फ़रमा रहे थे।

इरशाद : यह वाक़या हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी

रहमतुल्लाह तआला अलैहि का है कि आपके मज़ार शरीफ़ पर मज्लिसे सिमा में क़व्वाली हो रही थी आजकल तो लोगों ने बहुत इख़्तिरा कर लिए हैं नाच वग़ैरह भी कराते हैं हालांकि उस वक़्त बारगाहों में मज़ामीर भी न थे हज़रत सैयद इब्राहीम ऐरजी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि जो हमारे पीरान। सिलसिला में से हैं बाहर मज्लिसे सिमा के तशरीफ़ फ़रमा थे एक साहिब सालेहीन से आपके पास आए और गुज़ारिश की मज्लिस में तशरीफ़ ले चलिए हज़रत सैयद इब्राहीम ऐरजी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फ़रमाया तुम जानने वाले हो मवाजा अक़्दस में हाज़िर हो मैं अभी चलता हूं उन्होंने मज़ारे अक़्दस पर मुराक़बा किया देखा कि हुज़ूर क़ब्र शरीफ़ में परेशान ख़ातिर हैं और उन क़व्वालों की तरफ़ इशारा करके फरमाते हैं, ईं बदबख़्तियाँ वक़्त मारा परेशान करदह अन्द। वह वापस आए और क़ब्ल इसके कि अर्ज़ करें फरमाया आपने देखा।

अर्ज़ : हुज़ूर काकी के क्या मानी हैं और उसकी वज्हे तस्मिया क्या है।

इरशाद : हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की ख़िदमत में चन्द मुसाफिर हाज़िर हुए हुज़ूर के यहाँ उस वक़्त कुछ सामान खुर्द व नोश मौजूद न था ग़ैब से काक (रोटियाँ) आईं जो सब को काफी व वाफी हो गईं जब से आप काकी मशहूर हो गये (इसी तज़्किरा में फरमाया) कि एक मरतबा मौलाना फ़ज़्ले रसूल रहमतुल्लाहि अलैहि जो मेरे पीर व मुर्शिद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के साथ हज़रत मौलाना नूर साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि से (जो मौलाना बहरुल-उलूम मलिकुल उलमा के शागिर्द थे) पढ़ते थे दिल्ली में थे जल्सा वहाबिया में तशरीफ़ ले गये वहाँ हाज़िरीन पर काक और छोहारे बरसा करते थे चुनांचे हस्बे दस्तूर आपके सामने भी बौछार हुई एक काक और एक छोहारा आपको भी मिला आपने छोहारा तोड़ा तो उस में से कीड़ा निकला और काक का किनारा जला हुआ यह देख कर तबस्सुम किया और बआवाज़ बुलन्द कहा साहिबो आज तक तो सुना करते थे कि फ़रिश्ते भूलते नहीं यह क़ैसा भूल गये कि रोटी भी जला दी और सुनते थे कि जन्नत का मेवा सड़ता गलता नहीं तअज्जुब है कि छोहारों में कीड़े पड़ गये उस पर बहुत शोर व गुल हुआ आपको गुस्सा आया पर्दा को हटा दिया जिसके पीछे से यह बारिश हो रही थी देखा

तो इस्माईल देहलवी का एक गुलाम जिसका नाम अब्दुल्लतीफ़ था एक झोली में काक और एक में छोहारे लिए बैठा है पर्दा हटते ही पर्दा फाश हो गया उसके बाद हज़रत मौलाना फ़ज़्ले रसूल साहब दिल्ली से लखनऊ हज़रत मौलाना नूर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुए अन्दर से ख़बर आई कि आने की मुमानेअ़त है आप चौखट पर बैठ गये और रोने लगे और अर्ज़ की कि मेरी क्या ख़ता है मालूम हुआ कि वह क़ाबिले मुआफ़ी भी है या नहीं जब बहुत देर गुज़र गई तो मौलाना नूर साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि बाहर तशरीफ़ लाए और फरमाया तुम्हें मैंने इसी लिए पढ़ाया था कि वहाबियों के जल्सों में जाओ आपने अर्ज़ की कि इतना तो मालूम हो गया कि मेरी ख़ता क़ाबिले मुआफ़ी है और फिर आपने सारा वाक़या इस्माईल देहलवी के मक्र व फ़रेब का अर्ज़ किया और कहा मैं उसका सिर्फ़ पर्दा फाश करने को गया था कि न मालूम कितने बन्दगाने ख़ुदा उसकी इस अय्यारी से गुमराह हो रहे थे आप सुन कर खुश हुए और राज़ी हो गये। यही मौलाना नूर साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि एक रोज़ रास्ते में तशरीफ़ लिए जा रहे थे सामने से अली बख़्श वज़ीर बादशाहे अवध जो उसकी नाक का बाल हो रहा था हाथी पर चला आ रहा था उसने हज़रत को देख कर अदब किया कि हाथी को बिठा दिया और उतर को क़रीब हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज़ किया आपने उसकी तरफ़ से मुँह फेर लिया और सलाम न लिया कि वह राफ़ज़ी था और दाढ़ी मुंडी हुई थी समझा कि शायद मुझे देखा नहीं दूसरी तरफ़ जा कर सलाम अर्ज़ किया आपने उधर से मुँह फेर लिया और सलाम कुबूल न फरमाया तीसरी दफा फिर सलाम किया आपने जवाब न दिया उस ख़बीस को गुस्सा आया और हाथी पर चढ़ कर यह कहता हुआ चला गया कि फिरंगी महल के मर्दों की दाढ़ी और औरतों का सर मुंडवाया तो अली बख़्श का वह फ़िक़रा अर्ज़ किया आप फौरन बाहर तशरीफ़ लाए आस्ताने पर उस वक़्त मेरे पीर व मुर्शिद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि और मौलाना फ़ज़्ले रसूल साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि हाज़िर थे अर्ज़ किया हुज़ूर कहाँ का क़स्द फरमाते हैं फरमाया बच्चो नूरा की हिमाक़त तो है (आपकी ज़बान तो पूर्बी थी) राफ़ज़ी आया था सलाम किया था जवाब दे दिया होता अब किसी की दाढ़ी मूंड़े हैं किसी का मूंड़े है नूरा की हिमाक़ते तो है और आप सीधे बादशाह के महल को तशरीफ़ ले चले कि उस से पेश्तर कभी न गये थे पीछे-पीछे यह दोनों हज़रात भी हो लिए उस दिन नौ रोज़ का दिन था उसके महल में जशन हो रहा था शराब व कबाब और गाने बजाने के सामान मौजूद थे जब दरबान ने आपको तशरीफ़ लाते देखा घबरा कर दौड़ता हुआ गया और बादशाह को ख़बर दी बादशाह सुन कर घबरा गया और हुक्म दिया कि फौरन तमाम मनहियाते शरअ़ उठा दिए जाएं और खुद दरवाज़ा तक इस्तिक़बाल करके हज़रत को अन्दर ले गया और बएज़ाज़ तमाम बिठाया अली बख़्श खड़ा हुआ यह वाक़या देख रहा है काटो तो बदन में ख़ून नहीं समझ रहा है कि अब यह शिकायत फरमाएंगे और ख़ुदा जाने बादशाह क्या कुछ करेगा मगर यह वसीअ़ ज़र्फ़ इस हल्के के क्यास से बराहें यह शिकायत फरमाने तशरीफ़ न ले गये बल्कि उसे अपनी अज़मत दिखाने को कि वह ईज़ा रसानी के ख़्याल से बाज़ रहे बादशाह ने अर्ज़ की हज़रत ने कैसी तक्लीफ़ फरमाई इरशाद फरमाया तेरी ज़मीन में रहत हैं हम ने कहा हो आएं बादशाह ने वह शीरीनी जो नौ रोज़ के लिए आई थी पेश की फरमाया हमारे दो बच्चे भी बाहर हैं चुनांचे उन हज़रात को भी बुला लिया गया थोड़ी देर तशरीफ़ रख कर वापस तशरीफ़ लाए यह दोनों हिकायतें मुझ से हज़रत मौलाना अब्दुल-क़ादिर साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने लखनऊ में बयान फरमाएं जब मैं और वह १३०६ हिज० में कुछ किताबें देखने लखनऊ गये थे।

एक रोज़ नवाब वज़ीर अहमद ख़ाँ साहब एक किताब जिस में उन्होंने तारीफ़ाते अशिया लिखीं थीं आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहु को बग़रज़ इस्लाह बाद ज़ुहर सुना रहे थे इल्मे जफर की तारीफ़ सुनाते वक़्त हुज़ूर ने इरशाद फरमाया आपने इल्मे ज़ायरजा की तारीफ़ न लिखी यह इल्मे जफर ही का एक शोबा है उस में जवाब मन्ज़ूम अरबी ज़बान बहरे तवील और हर्फ़ लाम की रवी से आता है और जब तक जवाब पूरा नहीं होता मक़्तअ़ नहीं आता जिसको साहिबे इल्म की इजाज़त नहीं होती नहीं आता मैंने इजाज़त हासिल करना चाही उसमें कुछ पढ़ा जाता है जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़्वाब में तशरीफ़ लाते हैं अगर इजाज़त अता हुई हुक्म मिल गया वरना नहीं मैंने तीन रोज़ पढ़ा तीसरे रोज़ ख़्वाब में देखा कि एक

वसीअ् मैदान है और उसमें एक बड़ा पुख़्ता कुवाँ है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फरमा हैं और चन्द सहावा किराम भी हाज़िर हैं जिनमें से मैंने हज़रत अवू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को पहचाना इस कुएँ में से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और सहावा किराम पानी भर रहे हैं इसमें से एक वड़ा तख़्ता निकला कि अर्ज़ में डेढ़ गज़ और तूल में दो गज़ होगा और उस पर सब्ज़ कपड़ा चढ़ा हुआ था जिसके वस्त में सफेद रौशन वहुत जली क़लम से अ ह ज इसी शक्ल में लिखे हुए थे। जिस से मैंने यह मतलब निकाला कि उसका हासिल करना हज़यान फरमाया जाता है इससे वाक़ायदा जफर इज़्न निकल सकता था ह को वतौर मुअख़्ख़र में रखा उसके अदद पाँच हैं अव वह अपनी पहली जगह से तरक़्की करके दूसरे मरतबा में आ गई और पाँच का दूसरा मरतबा पाँच दहाई है यानी पचास जिसका हर्फ़ नून है यूं इज़्न समझाता मगर मैंने उस तरफ़ इल्तिफ़ात न किया और लफ़्ज़ को ज़ाहिर रख कर उस फन को छोड़ दिया कि अहज़ के मानी हैं फ़ुज़ूल वक।

अर्ज़ : मुरीद को वाद वफ़ात शैख़, क़ब्र पर किस तरह अदव करना चाहिए।

इरशाद : चार हाथ के फासिला से खड़ा हो कर फातिहा पढ़े और उसके हयात में जैसा अदव करता था सामने से हाज़िर हो कि यालीं से हाज़िर होने में मुड़ कर देखना पड़ता है और उसमें तक्लीफ़ होती है (इसी सिलसिल-ए-वयान में यह हिकायत वयान फरमाई) एक वुजुर्ग का इंतिक़ाल हुआ उनकी साहवज़ादी रोज़ाना क़ब्र पर हाज़िर होतीं और तिलावते कुरआने अज़ीम किया करतीं कुछ मुद्दत गुज़रने के वाद यह जोश जाता रहा एक रोज़ हाज़िर हुई और तिलावते कुरआने अज़ीम किया करतीं कुछ मुद्दत गुज़रने के वाद वह जोश जाता रहा एक रोज़ हाज़िर न हुईं शव को ख़्वाव में तशरीफ़ लाए फरमाया ऐसा न करो आओ और मेरे मवाजा में खड़ी हो यहां तक कि तुम्हें जी भर के देख लूं फिर मेरे लिए दुआए रहमत करो और फिर चली जाओ रहमत आकर मुझ में और तुम में हिजाव हो जाएगी एक वीवी ने मरने के वाद ख़्वाव में अपने लड़के से फरमाया मेरा कफ़न ऐसा ख़राव है कि मुझे अपने साथियों में जाते शर्म आती है परसों फलां शख़्स आने वाला है उसके

कफ़न में अच्छे कपड़े का कफ़न रख देना सुबह को साहबज़ादा ने उठ कर उस शख़्स को दरयाफ़्त किया मालूम हुआ कि वह बिल्कुल तन्दुरुस्त है और कोई मरज़ नहीं तीसरे रोज़ ख़वर मिली उसका इंतिक़ाल हो गया है लड़के ने फौरन निहायत उम्दा कफ़न सिलवा कर उस के कफ़न में रख दिया और कहा यह मेरी मां को पहुंचा देना रात को वह सालेहा ख़्वाब में तशरीफ़ लाईं और बेटे से कहा ख़ुदा तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे तुमने वहुत अच्छा कफन भेजा। उहवान विन सैफी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सहावी हैं उनके कफ़न में एक तहवन्द ज़ाइद चला गया शव को अपने साहवज़ादे की ख़्वाव में तशरीफ़ लाए और फरमाया यह तहवन्द लो और अलगनी पर डाल दिया सुबह उनकी आंख खुली तो वहीं रखा मिला। एक शख़्स क़ब्रस्तान में एक क़ब्र के पास वैठ गया और थोड़ी देर में ग़ाफिल हो गया ख़्वाब में देखता है कि एक वीवी इस क़ब्र में फरमाती हैं ऐ ख़ुदा के वन्दे इस वला को मेरे पास से दूर कर कर जो थोड़ी देर में आने वाली है उसकी फौरन आंख खुल गई देखा कि एक क़ब्र वहीं खुद रही है और सामने से एक जनाज़ा जो किसी रईस का था चला आ रहा है उसने सव को मना किया कि यह जगह ठीक नहीं है ख़राव है ऐसी है वैसी है ग़रज़ वह लोग वाज़ रहे और दूसरी जगह उस मैयत को ले गये शव को उस शख़्स ने ख़्वाव में देखा कि वह वीवी फरमाती हैं कि ख़ुदा तुझे जज़ाए ख़ैर दे कि तूने आग को मेरे पास से दूर किया।

मुअल्लिफ़ : एक रोज़ मौलाना मोलवी अमजद अली साहव वाद अस्र वहारे शरीअत हिस्सा सोम वग़र्ज़े इस्लाह सुना रहे थे उस में एक मरअला इस वारे में था कि रव्वुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू की तरफ़ मुअन्नस का सेग़ा ज़वान से नमाज़ में निकल जाए तो नमाज़ वातिल हो जाएगी।

इरशाद : फ़रमाया सेग़ा हो या ज़मीर हज़रत अवू सईद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु दफ़अतन सोते-सोते उठ बैठे और वहुत रोये लोगों ने सवव दरयाफ़्त किया फरमाया मैंने देखा रव्वुल-इज़्ज़त को कि फरमाता है तो अशआर लैला व सलमा को मुझ पर महमूल करता है अगर मैं न जानता कि तू मुझ से मुहब्बत रखता है तो वह अज़ाब करता जो किसी पर न किया हो।

अर्ज़ : हुज़ूर दुआ के वक़्त अगर किसी शख़्स के हाथ सर्दी की

वजह से ढके रहें तो कैसा है।

इरशाद : एक बुजुर्ग शायद हज़रत जुन्नून मिसरी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने दुआ में सर्दी के सबब सिर्फ़ एक हाथ बाहर निकाला था इल्हाम हुआ एक हाथ उठाया हम ने उस में रख दिया जो रखना था दूसरा उठाता तो उसे भी भर देते।

अर्ज़ : दुआ हर वक़्त मक़्बूल होती है।

इरशाद : हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआला हया वाला करम वाला है उस से शर्म फरमाता है कि उसका बन्दा उसकी तरफ़ हाथ उठाए और उन्हें ख़ाली फेर दे और फरमाया जो दुआ न मांगे अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब फरमाता है।

अर्ज़ : क्या सफ़े अव्वल में नमाज़ पढ़ने का सवाब ज़्यादा है।

इरशाद : हदीस में फरमाया अगर लोगों को मालूम होता कि सफ़े अव्वल में नमाज़ पढ़ने का इस क़द्र सवाब है तो ज़रूर उस पर कुरआ अन्दाज़ी करते यानी हर एक सफ़े अव्वल में खड़ा होना चाहता और जगह की तंगी के सबब क़ुरआ बरदारी पर फ़ैसला होता सब से पहले इमाम पर रहमते इलाही नाज़िल होती है फिर सफ़े अव्वल में जो उसके महाज़ी खड़ा हो उस महाज़ी के दाहिनी जानिब फिर बाएं जानिब इसी तरह दूसरी सफ में पहले महाज़ी इमाम फिर बाएं पर यूंही आख़िर सुफ़ूफ़ तक।

मुअल्लिफ़ : बरकाते औलियाए किराम के ज़िक्र में फरमाया सैयदुत्ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि बीमार हुए आपका क़ारूरह एक तबीब नसरानी के पास गया बग़ौर देखता रहा फिर दफ़अतन कहा। *अशहदु अन ला-इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दहू व रसूलुहू।* सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम लोगों ने सबब पूछा कि मैं देखता हूं यह क़ारूरह ऐसे शख़्स का है जिसका जिगर इश्क़े इलाही ने कबाब कर दिया *अल्लाहु अक्बर* उन बुजुर्गों का बोल वह हिदायत करता है जो दूसरों का क़ौल नहीं करता। यमन के एक नसरानी ने यह सही हदीस सुनी कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। *इत्तक़ू फ़िरासतल-मुमिने फ़इन्नहू यंज़ुरू मिन नूरिल्लाह।* मुसलमान की फिरासत से डरो कि वह अल्लाह के नूर से देखता है उस नसरानी ने चाहा कि इम्तिहान करे उधर के

नसरा जुन्नार बांधते हैं उसने जुन्नार नीचे छुपाया और ऊपर मुसलमानी लिबास पहना अमामा बांधा और मुसलनान बन कर मशाइख़े किराम की मज्लिसों पर दौरा शुरू किया हर एक के पास जाता और हदीस के मानी पूछता वह कुछ फरमा देते यह दूसरे के पास हाज़िर होता यूं हैं बग़दाद शरीफ़ आया और हज़रत सैयदुत्ताइफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की मज्लिसे वअ्ज़ में हाज़िर हुआ अर्ज़ की या सैयदी इस हदीस के मानी क्या हैं। *इत्तक़ू फ़िरासतल-मुमिने फ़इन्नहू यंज़ुरू मिन नूरिल्लाहि।* फ़रमाया उसके मानी यह हैं कि जुन्नार तोड़ और नसरानियत छोड़ा सलाम ला वह यह सुनते ही बेताब हुआ और कलिम-ए-शहादत पढ़ा और कहा या सैयदी मैं इतने मशाइख़े किराम के पास गया और किसी ने मुझे न पहचाना फरमाया सब ने पहचाना मगर तुझ से तअर्रुज़ न किया कि तेरा इस्लाम मेरे हाथ पर लिखा हुआ है।

अर्ज़ : मुजाहिद के क्या मानी हैं।

इरशाद : सारा मुजाहिदा इस आयते करीमा में जमा फरमा दिया है। *व अम्मा मन ख़ाफ़ा मक़ामा रब्बेही व नहन्नफ़्सा अनिल-हवा फ़इन्नल-जन्नता हियल-मावा।* जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे और नफ़्स को ख़्वाहिशों से रोके बेशक तो जन्नत ही ठिकाना है यही जिहादे अक्बर है हदीस में है जिहाद कुफ़्फ़ार से वापस आते हुए फरमाया : रजअ्ना मिनल-जिहादिल-असग़रे इलल-जिहादिल-अकबर। हम अपने छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की तरफ़ फिरे। एक साहब को अनार की ख़्वाहिश में तीस बरस गुज़र गये और न खाया उसके बाद ख़्वाब में ज़्यारते अक़्दस हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशर्रफ़ हुए कि फरमाते हैं: *इन्ना लनफ़्सिका अलैका हक़्क़न।* तेरे नफ़्स का भी कुछ तुझ पर हक़ है सुबह उठे अनार खाया अब नफ़्स ने दूध की ख़्वाहिश की फरमाए तीस बरस ख़्वाहिश कर फिर शायद हुज़ूर तशरीफ़ लाएं और फरमाएं उस से यही बेहतर है कि सब्र कर फौरन ख़लिश दूर हो गई इस क़िस्म की ख़्वाहिश या तो नफ़्सानी हुआ करती है या शैतानी जिसके दो इम्तियाज़ सहल हैं एक यह कि शैतानी ख़्वाहिश में बहुत जल्द का तक़ाज़ा होता है कि अभी कर लो अल-उज्लतु मिनश्शैतान और नफ़्स को ऐसी जल्दी नहीं होती दूसरी यह कि नफ़्स अपनी ख़्वाहिश पर जमा रहता है जब तक पूरी न हो उसे बदलता नहीं

उसे वाक़ई उसी शय की ख़्वाहिश है अगर शैतानी है तो एक चीज़ की ख़्वाहिश हुई वह न मिली दूसरी चीज़ की हो गई वह न मिली तीसरी की हो गई इस वास्ते की उसका मक़्सद गुमराह करना है ख़्वाह किसी तौर पर हो एक साहब एक बुज़ुर्ग के यहाँ आए देखा कि पानी पीने का घड़ा धूप में रखा है उन्होंने कहा पानी धूप में रखा रह गया, गर्म हो गया होगा फरमाया सुवह तो साया ही था फिर धूप आ गई मैंने अल्लाह से शर्म की कि नफ़्स की ख़ातिर क़दम उठाऊं हज़रत सिर्री सक़्ती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का रोज़ा था ताक़ में पानी ठण्डा होने के लिए आवख़ोरा में रख दिया था अस्र के मुराक़वा में थे हूराने वहिशती ने यके वाद दीगरे सामने से गुज़रना शुरू किया जो सामने आती उस से दरयाफ़्त फरमाते तो किस कि लिए है वह एक वन्दा ख़ुदा का नाम लेती एक आई उस से पूछा उस ने कहा मैं उसके लिए हूं जो रोज़ा में पानी ठण्डा होने को न रखे फरमाया अगर तू सच कहती है तो उस कूज़ा को गिरा दे उसने गिरा दिया उसकी आवाज़ से आंख खुल गई देखा तो वह आवख़ूरा टूटा पड़ा है दो फरिश्ते आपस में मिले एक ने पूछा कहाँ जाते हो दूसरे ने कहा फलां आविद के हाथ में दूध का प्याला है और वह पीना चाहता है मुझे हुक्म है कि जा कर पर मारूं और गिरा दूं और तुम कहाँ जाते हो कहा एक फासिक़ देर से दरिया में पंछी डाले वैठा है और मछलियाँ नहीं फंसती मुझे हुक्म है जाऊं और फांस दूं (इसी तज़्किरा में इरशाद फरमाया) अगर चालीस दिन गुज़र जाएं कि कोई इल्लत या क़िल्लत या ज़िल्लत न हो तो ख़ौफ़ करे कि कहीं छोड़ न दिया गया हदीस में है जव कोई मक़वूल वन्दा रव अज़्ज़ा व जल्ला की तरफ़ अपनी किसी हाजत के लिए हाथ उठाता है और गिड़ गिड़ाता है जिव्रीले अमीन अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को इरशाद होता है ऐ जिव्रील उसकी हाजत रहने दे कि मुझे उसका गिड़गिड़ाना और मेरी तरफ़ मुँह उठाना अच्छा मालूम होता है और जव कोई फासिक़ अपनी हाजत के लिए हाथ उठाता है इरशाद होता है ऐ जिव्रील उसकी हाजत जल्द रवा कर दे कि मुझे अपने तरफ़ उसका मुंह उठाना अच्छा नहीं मालूम होता उस हदीस में एक वड़ा फाइदा यह भी है कि जिव्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम हाजत रवा हैं फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हाजत रवा व मुश्किल कुशा व दाफ़े-उल-वला मानने में किस

मुसलमान को तअम्मुल हो सकता है वह तो जिव्रील के भी हाजत रवा हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

एक रोज़ मौलवी अहमद मुख़्तार साहव मेरठ से आए और वाद नमाज़ इशा आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू से दस्त वोस हुए और यह मस्अला पूछा कि आया शरई इमामते कुवरा के लिए क़रशी होना शरअन ज़रूरी है कि वे उसकी शरई इमामते कुवरा न पाई जाएगी। अगरचे उरफी हो या यह कोई इस्तेहसानी शर्त है।

इरशाद : यह मज़हवी मस्अला है उसमें हमारा और रवाफ़िज़ व ख़्वारिज का ख़िलाफ़ है ख़्वारिज कुछ तख़्सीस नहीं करते और रवाफ़िज़ ने इस क़द्र तंगी की कि सिर्फ़ हाशमियों से ख़ास कर दी और यह भी मौला अली की ख़ातिर वरना वनी फ़ातिमा की तख़्सीस करते अह्ले सुन्नत सिराते मुस्तक़ीम व तरीक़े वस्त पर हैं हमारे तमाम कुतुव अक़ाइद में तस्रीह है कि अह्ले सुन्नत के नज़्दीक इमामते कुवरा के लिए ज़कूरत व हुर्रियत व क़रशीत लाज़िम है और तस्रीह फरमाते हैं कि उसका इश्तिरात क़तई यक़ीनी इज्माई है।

अर्ज़ : ख़िलाफ़ते राशिदा किसे कहते हैं और उसके मिस्दाक़ कौन-कौन हुए और अव कौन-कौन होंगे।

इरशाद : ख़िलाफ़ते राशिदा वह ख़िलाफ़त कि मिन्हाजे नुवुव्वत पर हो जैसे हज़रात ख़ुलफ़ाए अरवा व इमाम हसन मुज्तवा व अमीरुल-मुमिनीन उमर विन अव्दुल-अज़ीज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ने की और अव मेरे ख़्याल में ऐसी ख़िलाफ़ते राशिदा इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ही क़ायम करेंगे वल-ग़ैव इन्दल्लाह।

अर्ज़ : क़्यामत कव होगी और ज़ुहूर इमाम मेहदी कव।

इरशाद : क़्यामत कव होगी उसे अल्लाह जानता है और उसके वताए से उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क़्यामत ही का ज़िक्र करके इरशाद फरमाता है :

तरजमा : अल्लाह ग़ैव का जानने वाला है वह अपने ग़ैव पर किसी को मुसल्लत नहीं फ़रमाता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के इमाम क़स्तलानी वग़ैरह ने तस्रीह फरमाई कि उस ग़ैव से मुराद क़्यामत है जिसका ऊपर की मुत्तसिल आयत में ज़िक्र है इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि से पहले वाज़ उलमाए किराम ने वमुलाहिज़ा

अहादीस हिसाब लगाया कि यह उम्मत सन हज़ार हिजरी से आगे न बढ़ेगी इमाम सुयूती ने उसके इंकार में रिसाला लिखा *अल-क फु अन तजावुज़े हाज़ेहिल-उम्मते अल-अलिफ़*। इसमें सावित किया कि यह उम्मत १००० हिज० से ज़रूर आगे बढ़ेगी इमाम जलालुद्दीन की वफ़ात शरीफ़ ६११ हिज० में है और अपने हिसाब से यह ख़्याल फरमाया कि १३०० हिज० में ख़ातमा होगा वहम्दुलिल्लाह तआला उसे भी छब्बीस वरस गुज़र गये और हुनूज़े क़यामत तो क़यामत इशराते कुवरा में से कुछ न आया इमाम मेहदी के वारे में अहादीस वकसरत और मुतवातिर हैं मगर उन में किसी वक़्त का तऐयुन नहीं और वाज़ उलूम के ज़रिया से मुझे ऐसा ख़्याल गुज़रता है कि शायद १८३७ हिज० में कोई सलतनते इस्लामी वाक़ी न रहे और १६०० हिज० में हज़रत इमाम मेहदी जुहूर फरमाएं।

अर्ज़ : जव मैं मक्का नुअज़्ज़मा हज़रत मौलाना अब्दुल-हक़ साहव अलैहिर्रहमा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ क़ाज़ी रहमतुल्लाह वहावी को हाज़िरे ख़िदमत पाया और यह वह वक़्त था कि मौलाना उसको सनदे हदीस दे चुके थे मुझे यह निहायत ही गिरां गुज़रा मैंने मौलाना अब्दुल-हक़ साहव से अर्ज़ किया कि मैं भी आपकी गुलामी में हाज़िर हुआ हूं और यह भी आप से सनद हासिल कर चुके हैं तो यहां वह इख़्तिलाफ़ जो हम में उन में दोवारा मरअला इल्मे ग़ैव रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम है वआसानी तय हो सकता है इसमें मौलाना तीन दिन में एक रिसाला *वफ़राइदुरसुन्निया फ़िल-फ़वाइदिल-वहीयह*। तहरीर फरमा कर क़ाज़ी रहमतुल्लाह को दिया इस रिसाला में मौलाना ने आसारे क़यामत के मुतअल्लिक़ बहुत सी अहादीस जमा फरमाईं लेकिन उनमें भी तऐयुने वक़्त नहीं।

इरशाद : हदीस में है दुनिया की उम्र सात दिन है मैं उसके पिछले दिन में मवऊस हुआ दूसरी हदीस में है मैं उम्मीद करता हूं कि मेरी उम्मत को खुदाए तआला निस्फ़ दिन और इनायत फरमाए उन हदीसों से उम्मत की उम्र पन्द्रह सौ वरस सावित हुई। *इन्ना यौमन इन्दा रब्बिका कअल्फ़ा सनतिन मिम्मा तउद्दून*। तेरे रव के यहाँ एक दिन तुम्हारी गिनती के हज़ार वरस के वरावर है इन हदीसों से जो मुस्तफ़ाद हो, उसमें वह कैफ़ियत के मनाफ़ी नहीं जो इस इल्म से मेरे ख़्याल में आई है क्योंकि यहां हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

की तरफ़ से अपने रव अज़्ज़ा जलालुहू से इस्तिददुआ है आइन्दा इन्आमे इलाही वह जिस क़द्र ज़्यादा उम्र अता फरमाए जैसे जंगे वदर में हुज़ूर ने सहाव-ए-किराम को तीन हज़ार फरिश्ते मदद के लिए आने की उम्मीद दिलाई कि *अलन यक्फ़ीकुम अन युमिद्दुकुम रव्वुकुम वेसलासते आलाफ़िन मिनल-मलाइकते मुंज़ेलीना*। क्या तुम्हें यह काफी नहीं कि तुम्हारा रव तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद फ़रमाए उस पर हक़ सुवहानहू तआला ने फ़रिश्तों का इज़ाफ़ा फ़रमाया कि -

तरजमा : क्यों नहीं अगर तुम सब्र करो और तक़्वियत पर रहो और काफिर अभी के अभी तुम पर आएं तो तुम्हारा रव पाँच हज़ार निशान वाले फरिश्तों से तुम्हारी मदद फरमाएगा।

अर्ज़ : हुज़ूर ने जफ़्र से मालूम फरमाया।

इरशाद : हाँ (और फिर किसी क़द्र ज़वान दवा कर फरमाया) आम खाइए पेड़ न गिनिए (फिर खुद ही इरशाद हुआ) कि मैंने यह दोनों वक़्त (१८३७ हिज० में सलतनते इस्लामी का वढ़ना और १६०० हिज० में इमाम मेहदी का जुहूर फरमाना) सैयदुल-मुकाशेफ़ीन हज़रत शैख़ अक्वर मुहीयुद्दीन इब्ने अरवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के कलाम से अख़ज़ किए हैं अल्लाहु अकवर कैसा ज़वरदस्त वाज़ेह कश्फ़ था कि सलतनते तुर्की का वानी अव्वल उस्मान पाशा हज़रत के मुद्दतों वाद पैदा हुआ मगर हज़रत शैख़ अक्वर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने इतने ज़माने पहले उस्मान पाशा से लेकर क़रीब ज़माना आख़िर तक जितने वादशाह इस्लामी और उनके वज़रा होंगे रुमूज़ में सवका मुख़्तसर ज़िक्र फरमा दिया उनके ज़माने के अज़ीम वक़ाए की तरफ़ भी इशारे फरमा दिए किसी वादशाह से अपनी इसी तहरीर में वनर्मी ख़िताव फरमाते हैं और किसी पर हालते ग़ज़व का इज़हार होता है इसमें ख़त्मे सलतनत इस्लामी की निस्वत लफ़्ज़ ऐक़ज़ फरमाया और साफ़ तस्रीह फरमाई कि *ला अक़ूलु ऐक़ज़ुल-हिजरीया वल ऐक़्ज़ुल-जफ़रीयते* में इस ऐक़्ज़ जाफरी का जो हिसाव किया तो १८३७ हिज० आते हैं और उन्हीं के दूसरे कलाम से १६०० हिज० के जुहूर इमाम मेहदी के अख़ज़ किए हैं।

खुद अपनी क़व्र शरीफ़ की निस्वत भी फरमा दिया कि इतनी मुद्दत तक मेरी क़व्र लोगों की नज़रों से ग़ायव रहेगी मगर *इज़ा दख़लस्सीना फ़िश्शीन ज़हरा क़वरा मुहीयुद्दीन*। जब शीन में सीन दाख़िल होगा तो

मुहीयुद्दीन की क़ब्र ज़ाहिर होगी सुल्तान सलीम जब शाम में दाख़िल हुए तो उनको बशारत दी कि फ़लां मक़ाम पर हमारी क़ब्र है सुल्तान ने वहाँ एक कुब्बा बनवा दिया जो ज़्यारतगाह आम है (फिर फरमाया) चन्द जिल्द अव्वल २८-२८ ख़ानों की आपने तहरीर फरमा दी हैं जिन में एक-एक खाना लिखा और बाक़ी ख़ाली छोड़ दिए अब उसका हिसाब लगाते रहिए कि उस से क्या मतलब है।

अर्ज़ : काफ़िर जो होली दीवाली में मिठाई वग़ैरह बांटते हैं मुसलमानों को लेना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : उस रोज़ न ले हाँ अगर दूसरे रोज़ दे तो ले लें न यह समझ कर कि उन खुबसा के त्यौहार की मिठाई है बल्कि माल मूज़ी नसीब ग़ाज़ी समझे।

अर्ज़ : अगर नमाज़ में बलग़म आ जाए तो क्या करे।

इरशाद : दामन या आंचल में ले कर मल दे!

अर्ज़ : हुज़ूर हर साइल पर रहम खाना चाहिए ख़्वाह वह काफिर ही क्यों न हो कि कुरआने अज़ीम में *व अम्मस्साइला फला तन्हर* फरमाया।

इरशाद : फिर साइल भी तो हो वहरुर्राइक़ वग़ैरह में तस्रीह है कि काफ़िर हरबी पर कुछ तसद्दुक़ करना असलन जाइज़ नहीं, फरमाया यह भी इरशाद है अक़ेमिस्सलाता नमाज़ पढ़ो तो क्या इस से यह मतलब है ख़्वाह वुज़ू हो या न हो शर्त भी तो मौजूद होना चाहिए न कि मुतलक़, फ़ुक़हाए किराम फरमाते हैं अगर आदमी के पास एक प्यास का पानी हो और जंगल में एक कुत्ता और एक काफिर शिद्दते तिशनगी से जां बलब हो तो कुत्ते को पिला दे और काफिर को न दे हदीस शरीफ़ में है क़यामत के दिन एक शख़्स हिसाब के लिए बारगाहे रब्बुल-इज़्ज़त में लाया जाएगा और उस से सवाल होगा क्या लाया वह कहेगा मैंने इतनी नमाज़ें पढ़ीं अलावा फ़र्ज़ के इतने रोज़े रखे अलावा माहे रमज़ान के इस क़द्र ख़ैरात के अलावा ज़कात के और इस क़द्र हज के अलावा हज्जे फर्ज़ के वग़ैरा ज़ालिक इरशाद बारी होगा *हल वलैता ली वलीयन व आदैता ली अदवन* कभी मेरे मुहिब्बों से मुहब्बत और मेरे दुश्मनों से अदावत भी रखी तो उम्र भर की इबादत एक तरफ़ और खुदा रसूल की मुहब्बत एक तरफ़ अगर मुहब्बत नहीं सब इबादात और रियाज़ात बेकार। बर के काटने से एक ज़रा सी आपको तक्लीफ़ होती है अगर

कहीं उसे ज़मीन पर पड़ा देखें कि उसका एक पाँव या पर बेकार हो गया है और उसमें ताक़त परवाज़ नहीं है तो उस पर रहम किया जाता है कि पैर से मसल देते हैं तो खुदा व रसूल अज़्ज़ा जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ियाँ करें और उन से दुश्मनी व अदावत रखें वह क़ाबिले रहम हैं हरगिज़ नहीं अवाम की यह हालत है कि ज़रा किसी को नंगा मुहताज देखा समझे कि क़ाबिले रहम है ख़्वाह खुदा व रसूल का दुश्मन ही क्यों न हो हज़रत सैयदी अब्दुल-अज़ीज़ दबाग़ कुद्दिसा सिर्रुहू फरमाते हैं कि ज़रा सी एआनत काफिर की करना हत्ता कि अगर वह रास्ता पूछे और कोई मुसलमान बता दे इतनी बात अल्लाह तआला से उसका इलाक़ा मक़्बूलियत क़तअ् कर देती है हाँ ज़िम्मी मस्तामिन काफिरों के लिए शरअ् में रिआयत के ख़ास अहकाम हैं यह इसलिए कि इस्लाम अपने ज़िम्मा का पूरा है और अपने अहद का सच्चा।

अर्ज़ : हुज़ूर यह वाक़या किस किताब में है कि हज़रत सैयदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि ने या अल्लाह फरमाया और दरिया से उतर गये पूरा वाक़या याद नहीं।

इरशाद : ग़ालिबन हदीक़-ए-नदिया में है कि एक मरतबा हज़रत सैयदी जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि दजला पर तशरीफ़ लाए और या अल्लाह कहते हुए उस पर ज़मीन की मिस्ल चलने लगे बाद को एक शख़्स आया उसे भी पार जाने की ज़रूरत थी कोई कश्ती उस वक़्त मौजूद न थी जब उसने हज़रत को जाते देखा अर्ज़ की मैं किस तरह आऊं फरमाया। या जुनैद या जुनैद कहता चला आ उस ने यही कहा और दरिया पर ज़मीन की तरह चलने लगा जब बीच दरिया में पहुंचा शैताने लईन ने दिल में वसवसा डाला कि हज़रत खुद तो या अल्लाह कहें और मुझ से या जुनैद कहलवाते हैं मैं भी या अल्लाह क्यों न कहूं उसने या अल्लाह कहा और साथ ही ग़ोता खाया पुकारा हज़रत मैं चला फरमाया वही कह या जुनैद या जुनैद जब कहा दरिया से पार हुआ अर्ज़ की हज़रत यह क्या बात थी आप अल्लाह कहें तो पार हों और मैं कहूं तो ग़ोता खाऊं फरमाया अरे नादान अभी तू जुनैद तक तो पहुंचा नहीं अल्लाह तक रसाई की हवस है। अल्लाहु अक्बर दो साहिबे औलियाए किराम से एक दरिया के उस किनारे और दूसरे उस पार

रहते थे उन में से एक साहब ने अपने यहाँ खीर पकवाई और ख़ादिम से कहा थोड़ी हमारे दोस्त को भी दे आओ ख़ादिम ने अर्ज़ की हुज़ूर रास्ते में तो दरिया पड़ता है क्योंकर पार उतरूंगा कश्ती वग़ैरह का कोई सामान नहीं फ़रमाया दरिया के किनारे जा और कह कि मैं उसके पास से आया हूं जो आज तक अपनी औरत के पास नहीं गया ख़ादिम हैरान था कि यह क्या मुअम्मा है इस वास्ते कि हज़रत साहिबे औलाद थे बहरहाल तामीले हुक्म ज़रूर थी दरिया पर गया और वह पैग़ाम जो इरशाद फरमाया था कहा दरिया ने फौरन रास्ता दे दिया उसने पार पहुंच कर उन बुजुर्ग की ख़िदमत में खीर पेश की उन्होंने नोश जान फरमाई और फ़रमाया हमारा सलाम अपने आक़ा से कह देना ख़ादिम ने अर्ज़ की सलाम तो जभी कहूंगा जब दरिया से पार उतर जाऊं फरमाया दरिया पर जा कर कह मैं उसके पास से आता हूं जिसने तीस बरस से आज तक कुछ नहीं खाया ख़ादिम शश व पंज में था यह अजीब बात है अभी तो मेरे सामने खीर तनावल फरमाई और फरमाते हैं इतनी मुद्दत से कुछ नहीं खाया मगर बलिहाज़ अदब ख़ामोश दरिया पर आकर जैसा फरमाया था कह दिया दरिया ने फिर रास्ता दे दिया जब अपने आक़ा की ख़िदमत में पहुंचा तो उस से न रहा गया और अर्ज़ की हुज़ूर यह क्या मुआमला था फरमाया हमारा कोई फ़ेअ़ल अपने नफ़्स के लिए नहीं होता।

अर्ज़ : वहाबिया की जमाअत छोड़ कर अलग नमाज़ पढ़ सकता है।

इरशाद : न उनकी नमाज़ नमाज़ है न उनकी जमाअत जमाअत।

अर्ज़ : वहाबियों की बनवाई हुई मस्जिद मस्जिद है या नहीं।

इरशाद : कुफ़्फ़ार की मस्जिद मिस्ल घर के है।

अर्ज़ : वहाबी मुअज़्ज़िन की अज़ान का एआदा किया जाए या नहीं।

इरशाद : जिस तरह उनकी नमाज़ बातिल इसी तरह अज़ान भी हाँ ताज़ीमन अल्लाह के नाम पर जल्ला शानुहू और नामे अक़्दस पर दुरूद शरीफ़ पढ़े।

अर्ज़ : हुज़ूर यह रिवायत सही है कि एक मरतबा नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के काशान-ए-अक़्दस में एक काफिर मुसलमान हुआ और इस ख़्याल से कि अह्ले बैते अतहार भूखे रहें सब खाना खा गया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हुजरा शरीफ़

में ठहराया पिछली रात के वक़्त पेट में गिरानी मालूम हुई और थोड़ी-थोड़ी देर बाद इजाबत की ज़रूरत हुई शर्मिंदगी की वजह से कि कहीं कोई देख न ले हुजरा शरीफ़ में ग़लाज़त फ़ैलाई और तमाम बिस्तर वग़ैरह ख़राब कर दिया और सुबह होते ही वहाँ से चल दिया जब हुज़ूर हुजरा शरीफ़ में मेहमान की ख़ैरियत मालूम करने की ग़रज़ से तशरीफ़ लाए तो यह कैफ़ियत मुलाहिज़ा फरमाई आपने खुद नजासत को साफ किया सहाबा किराम को उसकी इस नाशाइस्ता हरकत पर सख़्त गुस्सा आया इत्तिफ़ाक़न उज्लत में वह अपनी तल्वार भूल गया और तल्वार बहुत अच्छी थी जिसके लिए उसे मज्बूरन फिर लौटना पड़ा यहाँ आकर देखा कि हुज़ूर अपने दस्ते अक़्दस से बिस्तर धो रहे हैं अमीरुल-मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने सज़ा देने का इरादा किया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया कि यह मेरा मेहमान है और उस से फरमाया तुम अपनी तल्वार भूल गये थे जहाँ रखी थी वहाँ से उठा लो वह हुज़ूर के इस ख़ल्क़े अज़ीम को देख कर फौरन मुशर्रफ़ बइस्लाम हो गया तो हुज़ूर इस रिवायत से ज़ाहिर होता है कि कुफ़्फ़ार पर भी नज़र इनायत करना चाहिए।

इरशाद : उसके क़रीब रिवायत मसनवी शरीफ़ में मज़्कूर है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन्हीं से ख़ल्क़ फरमाते जो रुजूअ़ लाने वाले होते जैसा कि इस रिवायत से ज़ाहिर है और कुफ़्फ़ार व मुर्तदीन के साथ हमेशा सख़्ती फरमाते उनकी आंखों में नील की सलाइयाँ फिरवाए हाथ काटे पाँव काटे पानी मांगा तो पानी तक न दिया यह सुलूक किस के साथ थे वह जो रुजूअ़ लाने वाले न थे, अमीरुल-मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़माना ख़िलाफ़त है आप मस्जिदे नबवी से नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ लिए जाते हैं एक मुसाफिर ने खाना मांगा अमीरुल-मुमिनीन उसे हमराह ले आए ख़ादिम बहुक्म अमीरुल-मुमिनीन खाना हाज़िर करता है इत्तिफ़ाक़न खाते-खाते उसकी ज़बान से एक बद मज़हबी का फ़िक़रा निकल जाता है जिस पर हुज़ूर फौरन उसके सामने से खाना उठवा लेते हैं और ख़ादिम को हुक्म देते कि उसे निकाल दे रब्बुल-इज़्ज़त की शान है कि बद मज़हब कैसा ही जाम-ए-अय्यारी पहन कर मेरे सामने आए खुद

वखुद दिल नफ़रत करने लगता है हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहू के ज़मान-ए-हयात में दिल्ली का एक वाइज़ हाज़िर हुआ और उस वक़्त मौलाना अब्दुल-क़ादिर साहब बदायूनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि भी तशरीफ़ रखते थे इस्माईल देहलवी और वहाविया पर वड़े शद व मद से देर तक लअ्न तअ्न की और उस ने अपने सुन्नी होने का पूरा-पूरा सुबूत दिया मेरे बचपन का ज़माना था जब वह चला गया तो मैंने अपना ख़्याल हज़रत की ख़िदमत में ज़ाहिर किया कि मुझे तो यह पक्का वहावी मालूम होता है मौलाना बदायूनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया अभी तो वह तुम्हारे सामने वहावियों व इस्माईल पर तवर्रा कह गया है मैंने अर्ज़ की मेरा क़ल्ब गवाही देता है कि यह सब तक़िया था उसे जामा मस्जिद में वअ्ज़ कहने की इजाज़त हमारे हज़रत से लेनी है कि वे हज़रत की इजाज़त के यहाँ कोई वअ्ज़ नहीं कह सकता इसलिए उस ने यह तम्हीद डाली दूसरे दिन शाम को फिर हाज़िर हुआ मैंने उसे मसाइले वहावियत में छेड़ा सावित हुआ कि पक्का वहावी है दफ़ा कर दिया गया अपना सा मुँह लेकर चला गया हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहुल-अज़ीज़ के वेसाल शरीफ़ के कुछ दिनों बाद जबकि अपने मंझले भाई मरहूम के मकान में रहता था बाहर तन्हा बैठा था सामने गली में से एक अरवी साहव आते नज़र आए जब क़रीब आए मैंने चाहा उनके लिए क़्याम करना कि अह्ले अरब के लिए क़्याम मेरी आदत थी मगर इस वार दिल कराहत करता है मैं उठना चाहता हूं और दिल अन्दर से दामन खींचता है आख़िर मैंने कहा कि यह तेरा तकव्वुर है जबरन क़हरन क़्याम किया वह आकर बैठे मैंने नाम पूछा कहा अब्दुल-वहाब, मक़ाम पूछा कहा नज्द अब तो मैं खटका और मैंने उस से मसाइले मुतअल्लेक़ा वहावियत पूछे इतना अशद वहावी निकला कि यहाँ के वहाविया उसकी शागिर्दी करें वार-वार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक लेना न अव्वल में कलिमा ताज़ीम न आख़िर में दुरूद, मैं उसे हर वार रोकता और कलिमाते ताज़ीम और दुरूद शरीफ़ की हिदायत करता और वह न मानता आख़िर मैंने सख़्ती के साथ उस से कहा तो मजबूर हो कर वोला *अक़ूलु लेक़ौलिका* सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मैं तुम्हारे कहने से कहता हूं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मैंने उसे दफ़ा किया अख़ीर फ़िक़रा

यह था कि हमारा रुख़्सताना दो मैंने शहर के दो एक वहावियों का पता बता दिया कि उनके पास जा यहां तेरे लिए कुछ नहीं बिल-आख़िर वह ख़ाइब व ख़ासिर दफ़ा हुआ मैंने अपने दिल को शावाशी दी कि तूने ही ठीक कहा था बेशक उस शैतान के लिए क़्याम ना जाइज़ था एक बार अलीगढ़ से एक शख़्स अपना बेग वग़ैरह ले आया उसकी सूरत देख कर मेरे क़ल्ब ने कहा यह राफ़ज़ी है दरयाफ़्त किए से मालूम हुआ कि वाक़ई राफ़ज़ी है कहा मैं अपने मकान को लखनऊ जाता था रास्ते में सिर्फ़ आपकी ज़्यारत के लिए उतर पड़ा हूं क्या आप अह्ले सुन्नत में ऐसे ही हैं जैसे हमारे यहाँ मुज्तहेदीन मैंने इल्तिफ़ात किया। ग़रज़ वह राफ़ज़ी अपनी तरफ़ मुझे मुख़ातब करता था और मैं दूसरी तरफ़ मुँह फेर लेता था आख़िर उठ कर चला गया उसके जाने के बाद एक साहब शाकी भी हुए वह इतनी मसाफ़त तय करके आया और आपने क़तई इल्तिफ़ात न फरमाया मैंने यही रिवायत (अमीरुल-मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की कि जिस वक्त आप को मालूम हुआ कि यह वद मज़हब है फ़ौरन खाना सामने से उठवा लिया और उसे निकलवा दिया) बयान की कि हमारे अइम्मा ने उन लोगों के साथ हमें यह तहज़ीब बताई है अब भला वह क्या कह सकते थे ख़ामोश हो गये मुसलमानो! ज़रा इधर ख़ुदा व रसूल की तरफ़ मुतवज्जोह हो कर ईमान के दिल पर हाथ रख कर देखो अगर कुछ लोग तुम्हारे माँ-बाप को रात दिन बिला वजह महज़ फ़हश मुग़ल्लज़ा गालियां देना अपना शेवा कर लें बल्कि अपना दीन ठेहरा ले क्या तुम उन से वकुशादा पेशानी मिलोगे हाशा हरगिज़ नहीं अगर तुम में नाम को ग़ैरत बाक़ी है अगर तुम में इंसानियत है अगर तुम अपनी मां को मां समझते हो अगर तुम अपने वाप से पैदा हो तो उन्हें देख कर तुम्हारे दिल भर जाएंगे तुम्हारी आंखों में ख़ून उतरेगा। तुम उनकी तरफ़ निगाह उठाना गवारा न करोगे लिल्लाह इंसाफ़, सिद्दीक़े अक्वर व फारूक़े आज़म ज़ाइद या तुम्हारे वाप, उम्मुल-मुमिनीन आइशा सिद्दीका ज़ाइद या तुम्हारी मां, हम सिद्दीक़ व फ़ारूक़ के अदना गुलाम हैं और अल्हम्दुलिल्लाह कि उम्मुल-मुमिनीन के वेटे कहलाते हैं उनको गालियां देने वालों से अगर यह बर्ताव न बरतें जो तुम अपनी मां बल्कि अपने आपको गालियां देने वालों से बरतते हो तो हम निहायत नमक हराम गुलाम और हद भर के बुरे ना ख़लफ़ बेटे

हैं ईमान का तक़ाज़ा यह है आगे तुम जानो और तुम्हारा काम नेचरी तहज़ीब के मुद्दईयों को हम ने देखा है कि ज़रा कोई कलिमा उनकी शान के ख़िलाफ़ कहा उनका थूक उड़ने लगता है आंखें लाल हो जाती हैं गर्दन की रगें फूल जाती हैं उस वक़्त वह मजनून तहज़ीब बिखरी फिरती है वजह क्या है कि अल्लाह व रसूल व मुअज़्ज़माने दीन से अपनी उव़अत दिल में ज़्यादा है ऐसी नापाक तहज़ीब उन्हीं को मुबारक फरज़न्दाने इस्लाम उस पर लानत भेजते हैं खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे नबवी से बद मज़हबों को नाम ले कर उठा दिया एक मरतबा फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़े जुमा में देर हो गई रास्ते में देखा कि चन्द लोग मस्जिद से लौटे हुए आ रहे हैं आप इस निदामत की वजह से कि अभी मैंने नमाज़ नहीं पढ़ी है छुप गये और उस ज़िल्लत की वजह से जो मस्जिद शरीफ़ से निकाल देने में हुई थी। अलग छुप कर निकल गये रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला इरशाद फरमाता है।

या ऐयुहन्नबीयु जाहिदिल-कुफ़्फ़ारा वल-मुनाफ़िक़ीना वग़्लुज़ अलैहिम।

ऐ नबी जिहाद फरमा और सख़्ती फरमा काफिरों और मुनाफ़िक़ों पर और फरमाता है।

तरजमा : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) और जो उनके साथी हैं कुफ़्फ़ार पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल और फरमाता है। जल्ला व उला *वल-यजेदू फ़ीकुम ग़िल्ज़तन।* लाज़िम कि कुफ़्फ़ार तुम में सख़्ती पाएं तो साबित हुआ कि काफिरों पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सख़्ती फरमाते थे।

अर्ज़ : अगर किसी शख़्स का सतर खुल जाए तो जिस ने देखा या जिसका सतर खुला वुज़ू रहेगा या नहीं।

इरशाद : वुज़ू किसी चीज़ के देखने या छूने से नहीं जाता (फिर फरमाया) तीस अज़्व औरत के औरत हैं और नौ मर्द के उन में से किसी अज़्व का चहारुम वक़्द्र रुक्न यानी तीन बार सुबहानल्लाह कहने तक बिला क़स्द खुला रहना मुफ़्सिद नमाज़ है और बिल-क़स्द तो अगर एक आन के लिए खोले जब भी नमाज़ जाती रहेगी।

अर्ज़ : हुज़ूर वहदतुल-वजूद किसे कहते हैं।

इरशाद : वजूद एक और मौजूद एक है बाक़ी सब के ज़िल्ल हैं।

अर्ज़ : इस्माईल देहलवी को कैसा समझना चाहिए।

इरशाद : मेरा मस्लक यह है कि वह यज़ीद की तरह है अगर कोई काफिर कहे हम मना न करेंगे और खुद कहेंगे (1) नहीं अल्बत्ता गुलाम अहमद सैयद अहमद ख़लील अहमद रशीद अहमद अशरफ़ अली के कुफ़्र में जो शक करे वह खुद काफिर *मन शक्का फ़ी कुफ़्रेही व अज़ाबेही फ़क़द कफरा।*

(1) यहाँ वहाबिया सख़्त धोखा देते हैं कि जब तन्क़ीस व तौहीन शाने रिसालत कुफ़्र है तो इस्माईल ने भी की है वजह क्या है कि अशरफ़ अली वग़ैरह तो ऐसे काफिर हों कि उनके कुफ़्र में शक करने वाला भी काफिर हो और इस्माईल ऐसा न हो मगर मुसलमान होशियार हों यहाँ ख़ुबसा का सख़्त धोखा है असल यह है कि इस्माईल और हाल के वहाबिया के अक़्वाल में फ़र्क़ है हम अह्ले सुन्नत मुतकल्लेमीन का मज़हब यह है कि जब तक किसी क़ौल में तावील की गुंजाइश होगी तक्फ़ीर से ज़बान रोकी जाएगी कि मुम्किन है कि उसने इस क़ौल से यही मानी मुराद लिए हों शरह फ़िक़्ह अकबर में फरमाया हाँ जब क़ौल ऐसा हो कि उस में असलन तावील की गुंजाइश न हो तो तक्फ़ीर से ज़बान रोकी जाएगी तो इस क़ौल के क़ाइल को जिस में तावील की गुंजाइश है अगर कोई काफिर कहे तो हम मना नहीं करते कि वह मानी ज़ाहिर के एतबार से ठीक कह रहा है और उसकी खुद तक्फ़ीर नहीं करते कि एहतियात इस में है और इस दूसरी सूरत के क़ाइल की तक्फ़ीर ज़रूर है कि इसमें जब असलन तावील नहीं तो तक्फ़ीर से ज़बान रोकने का हासिल खुद कुफ़्र और तुग़यान है उनके इस बेहूदा एतराज़ और ज़लील धोखे का जवाब इतना काफी है कि एक क़ौल पर फुक़्हा तक्फ़ीर फरमाते और मुतकल्लेमीन नहीं करते। अब कहें क्या कहते हैं क्या फुक़्हा के नज़्दीक मुतकल्लेमीन उसकी तक्फ़ीर न करके जिसकी तक्फ़ीर फुक़्हा ने की है मआज़ल्लाह फ़ुक़्हा के नज़्दीक काफिर ठहरेंगे या मुतकल्लेमीन फुक़्हा को काफिर कहेंगे इसलिए कि उन्होंने मुतकल्लेमीन के नज़्दीक जो काफिर न था उसकी तक्फ़ीर की *वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहुल-अलीयुल-अज़ीम।* इन ख़ुबुसा के अक़्वाल बदतर अज़ अबवाल ऐसे हैं जिन में नाम को भी तावील की गुंजाइश नहीं लिहाज़ उनके लिए यह हुक्म है कि जो उनके कुफ़्र में शक

करे खुद काफिर जो तफ़्सील चाहे वह रिसाला अल-मौतुल-अहमर मुताला करे। (12 मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू)

अर्ज़ : हर काफिर मल्ऊन है।

इरशाद : हाँ इन्दल्लाह जो काफिर है क़तअन मल्ऊन है किसी ख़ास का नाम लेकर पूछा जाएगा हम उसे मल्ऊन न कहेंगे मुम्किन है कि तौबा कर ले और अगर आम कुफ़्फ़ार की बाबत सवाल हुआ तो मल्ऊन कहेंगे।

अर्ज़ : खुदा और रसूल अज़्ज़ा जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत किस तरह दिल में पैदा हो।

इरशाद : तिलावते कुरआन मजीद और दुरूद शरीफ़ की कसरत और नअ्त शरीफ़ के सही अश्आर खुश इल्हानों से बकसरत सुने और अल्लाह व रसूल की नेमतों और रहमतों में जो उस पर हैं ग़ौर करे।

एक रोज़ बिरादरम मौलाना हसनैन रज़ा ख़ाँ साहब बराए जवाब कुछ इस्तिफ़्ता सुना रहे थे और जवाब लिख रहे थे एक कार्ड पर इस्मे जलालत लिख गया उस पर इरशाद फरमाया रखो में कभी तीन चीज़ें कार्ड पर नहीं लिखता इस्मे जलालत अल्लाह और मुहम्मद और अहमद और न कोई आयते करीमा मसलन अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम लिखना है तो यूं लिखता हूं हुज़ूरे अक़्दस अलैहि अफ़्ज़लुस्सलात वस्सलाम या इस्मे जलालत की जगह मौला तआला।

अर्ज़ : लफ़्ज़ शहर हर महीना के साथ बोला जाता है या नहीं यह कह सकते हैं शहर रजबुल-मुरज्जब।

इरशाद : नहीं। यह लफ़्ज़ इन तीन महीनों के लिए है शहर रबीउल-अव्वल, शहर रबीउल-आख़िर, शहर रमज़ानुल-मुबारक।

अर्ज़ : हुज़ूर अल्लाह मियाँ कहना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : ज़बान उर्दू में लफ़्ज़ मियाँ के तीन मानी हैं उन में से दो ऐसे हैं जिन से शाने उलूहियत पाक व मुनज़्ज़ह है और एक का सिद्क़ हो सकता है तो जब लफ़्ज़ दो ख़बीस मानों और एक अच्छे मानी में मुश्तरक ठहरा और शरअ् में वारिद नहीं तो ज़ाते बारी पर उसका इतलाक़ मम्नूअ् होगा उसके एक मानी मौला, अल्लाह तआला बेशक मौला है दूसरे मानी शौहर तीसरे मानी ज़िना का दलाल कि ज़ानी और ज़ानिया में मुतवस्सित हो।

अर्ज़ : मीलाद शरीफ़ में झाड़ फानूस फरोश वग़ैरह से ज़ेब व ज़ीनत इसराफ़ है या नहीं।

इरशाद : उलमा फरमाते हैं *ला ख़ैरा फ़िल-इसराफ़े वल-इसराफ़े फ़िल ख़ैरे*। जिस शय से ताज़ीमे ज़िक्र शरीफ़ मक़्सूद हो हरगिज़ मम्नूअ् नहीं हो सकती। इमाम ग़ज़ाली ने अहया-उल-उलूम शरीफ़ में सैयद अबू अली रूदबारी रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल किया कि एक बन्द-ए-सालेह ने मज्लिसे ज़िक्र शरीफ़ तरतीब दी और उस में एक हज़ार शमऐं रौशन की एक शख़्स ज़ाहिर में पहुंचे और यह कैफ़ियत देख कर वापस जाने लगे बानी मज्लिस ने हाथ पकड़ा और अन्दर लेजा कर फ़रमाया कि जो शमअ् मैंने ग़ैरे खुदा के लिए रौशन की हो वह बुझा दीजिए। कोशिशें की जाती थीं और कोई शमअ् ठण्डी न हुई।

अर्ज़ : तहयतुल-वुज़ू की क्या फ़ज़ीलत है।

इरशाद : एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फ़रमाया ऐ बिलाल क्या सबब है कि मैं जन्नत में तशरीफ़ ले गया तो तुम को आगे-आगे जाते देखा। अर्ज़ की या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) मैं जब वुज़ू करता हूँ दो रकअत नमाज़ नफ़्ल पढ़ लेता हूं। फ़रमाया यही सबब है।

अर्ज़ : हुज़ूर बाज़ लोगों की आदत है कि रुकूअ् के बाद पाईचे ऊपर को चढ़ा लेते हैं यह कैसा है।

इरशाद : मकरूह है और अगर दोनों हाथ से हो तो बाज़ उलमा के नज़्दीक मुफ़्सिदे सलात है।

ख़्वाब : एक मस्जिद मामूली उरअत की है और नमाज़ तैयार है एक शख़्स जिस को मैं जानता हूँ अक़ाइदे वहाबिया का पैरू अज़ान कहता है लेकिन नामे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तक फिर मुकब्बिर तक्बीर कहता है वह भी नाम नामी तक मैंने कहा यह अजब बेहूदों ने दस्तूर निकाला मैं अन्दर मस्जिद के उस वक़्त पहुंचा जब कि इमाम अपनी जगह पर पहुंच गया था और चाहता था कि तक्बीरे तहरीमा कहे मैंने बआवाज़ बुलन्द अस्सलामु अलैकुम कहा जिस से इमाम ने चौंक कर मेरी तरफ़ रुख़ किया और पीछे हट आया और मैं फौरन उसकी जगह खड़े हो कर इमामत करने लगा जब सलाम फेरा

फौरन आंख खुल गई देखा तो फ़ज्र का वक़्त था।

तावीर : इन्शाअल्लाह तआला वहाबिया की दावत वन्द होगी और अह्ले सुन्नत की तरक़्क़ी होगी।

अर्ज़ : नवाफिल में रुकूअ् किस तरह करना चाहिए अगर बैठ कर पढ़ रहा है।

इरशाद : इतना झुके कि सर घुटने के महाजी आ जाए और अगर खड़े हो कर पढ़े तो पिंडलियाँ मुक़ूस न हों और कफ़े दस्त घुटनों पर क़ाइम करके हाथों की उंगलियां एक दूसरे से इलाहिदा रहें एक साहव को मैंने देखा कि हालते रुकूअ् में पुश्त विल्कुल सीधी और मुँह उठाए थे जव वह नमाज़ से फारिग़ हुए पूछा गया यह आपने कैसा रुकूअ् किया हुक्म तो यह है कि गर्दन न इतनी झुकाओ जैसे भेड़ और न इतनी उठाओ जैसे ऊंट वह साहव कहने लगे कि मुँह इस वजह से उठा लिया था कि सिम्त क़िवला से न फिर जाए मैंने कहा तो आप सज्दा भी ठोरी पर करते होंगे उनकी समझ में वात आ गई और आइन्दा के लिए इस्लाह हो गई।

अर्ज़ : हुज़ूर एक वीवी तन्हा हज करना चाहती हैं और सफर ख़र्च क़लील और खुद अलील इस सूरत में क्या हुक्म है।

इरशाद : औरत को वग़ैर महरिम हज को जाना जाइज़ नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐ खुदा वन्द अरव कह कर निदा कर सकते हैं।

इरशाद : कर सकते हैं खुदा वन्दे अरव के माना मालिके अरव।

अर्ज़ : हुज़ूरे वाला अजम के मानी वेपढ़ी विलायतें।

इरशाद : गूंगी ज़वान और अरव के मानी तेज़ ज़वान।

अर्ज़ : हुज़ूर औलिया एक वक़्त में चन्द जगह हाजिर होने की कुव्वत रखते हैं।

इरशाद : अगर वह चाहें तो एक वक़्त में दस हज़ार शहरों में दस हज़ार जगह की दावत कुवूल कर सकते हैं।

अर्ज़े मुअल्लिफ़ : हुज़ूर उस से यह ख़्याल होता है कि आलमे मिसाल से अज्सामे मिसालिया औलिया के तावे हो जाते हैं इसलिए एक वक़्त में मुतअद्दद जगह एक ही साहव नज़र आते हैं अगर यह है तो उस पर शुवह होता है कि मिस्ल तो शय का ग़ैर होता है इम्साल का वजूद

शय का वजूद नहीं तो उन अज्साम का वजूद उस जिस्म का वजूद न ठहरेगा।

इरशाद : इम्साल अगर होंगे तो जिस्म के उनकी रूह पाक उन तमाम अज्साम से मुतअल्लिक़ हो कर तसर्रुफ़ फरमाएगी तो अज़रूए रूह व हक़ीक़त वही एक ज़ात हर जगह मौजूद है यह भी फहत ज़ाहिर में वरना सवअ् सनाविल शरीफ़ में हज़रत सैयदी फतह मुहम्मद कुद्दिसा सिरुहू अश्शरीफ़ का वक़्ते वाहिद में दस मज्लिसों में तशरीफ़ ले जाना तहरीर फरमाया और यह कि उस पर किसी ने अर्ज़ की हज़रत ने वक़्ते वाहिद में दस जगह तशरीफ़ ले जाने का वादा फरमा लिया है यह क्योंकर हो सकेगा। शैख़ ने फरमाया कृष्ण कन्हैया काफिर था और एक वक़्त में कई सौ जगह मौजूद हो गया फतह मुहम्मद अगर चन्द जगह एक वक़्त में हो क्या तअज्जुव है यह ज़िक्र करके फरमाया क्या यह गुमान करते हो कि शैख़ एक जगह मौजूद थे वाक़ी जगह मिसालें हाशा बल्कि शैख़ बज़ाते खुद हर जगह मौजूद थे असरारे वातिन फ़हम ज़ाहिर से वरा हैं ख़ोज़ व फ़िक्र वेजा है।

अर्ज़ : हुज़ूर हिन्दुस्तान में इस्लाम हज़रत ख़्वाजा ग़रीव नवाज़ के वक़्त से फैला।

इरशाद : हज़रत से कई सौ वरस पहले इस्लाम आ गया था मशहूर है कि सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के सत्तरह (17) हमले हिन्दुस्तान पर हुए।

अर्ज़ : इस शेअ्र का क्या मतलव है -

अह्ले नज़र ने ग़ौर से देखा तो यह खुला
काबा झुका हुआ था मदीने के सामने

इरशाद : शवे मीलाद काबा ने सज्दा किया और झुका मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ और कहा हम्द है उसके वज्हे करीम को जिस ने मुझे वुतों से पाक किया।

अर्ज़ : ग़ौस हर ज़माना में होता है।

इरशाद : बेग़ैर ग़ौस के ज़मीन व आसमान क़ायम नहीं रह सकते।

अर्ज़ : ग़ौस को मुराक़वे से हालात मुन्कशिफ़ होते हैं।

इरशाद : नहीं बल्कि उन्हें हर हाल यूंही मिस्ल आइना पेशे नज़र है। (उसके बाद इरशाद फरमाया) हर ग़ौस के दो वज़ीर होते हैं ग़ौस

का लक़ब अब्दुल्लाह होता है और वज़ीर दस्त रास्त अब्दुर्रब और वज़ीर दस्त चुप अब्दुल-मलिक इस सलतनत में वज़ीर दस्त चुप वज़ीर रास्त से आला होता है बख़िलाफ़े सलतनत दुनिया इसलिए कि यह सलतनते क़ल्ब है और दिल जानिबे चुप। ग़ौसे अक्बर व ग़ौसे हर ग़ौस हुज़ूर सैयद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं। सिद्दीक़े अकबर हुज़ूर के वज़ीरे दस्त चुप थे और फ़ारूक़े आजम वज़ीरे दस्त रास्त फिर उम्मत में सब से पहले दरज-ए-ग़ौसियत पर अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुम्ताज़ हुए और वज़ारत अमीरुल-मुमिनीन फारूक़े आज़म व उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को ग़ौसियत मरहमत हुई और उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु व मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुल-करीम वज़ीर हुए। फिर अमीरुल-मुमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ग़ौसियत इनायत हुई और मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हुल-करीम व इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु वज़ीर हुए। फिर मौला अली को और इमामैन मोहतरमैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा वज़ीर हुए फिर हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से दरजा बदरजा इमाम हसन अस्करी तक यह सब हज़रात मुस्तक़िल ग़ौस हुए। इमाम हसन अस्करी के बाद हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तक जितने हज़रात हुए सब उनके नाइब हुए उनके बाद सैयदना ग़ौसे आज़म मुस्तक़िल ग़ौस हुज़ूर तन्हा ग़ौसियते कुबरा के दर्जे पर फाइज़ हुए हुज़ूर ग़ौसे आज़म भी हैं और सैयदुल-अफराद भी। हुज़ूर के बाद जितने हुए और जितने अब होंगे हज़रत इमाम मेहदी तक सब नाइब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु होंगे फिर इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ग़ौसियते कुबरा अता होगी।

अर्ज़ : हुज़ूर अफ़राद कौन असहाब हैं।

इरशाद : अजिला औलियाए किराम से होते हैं विलायत के दरजात हैं ग़ौसियत के बाद फ़र्दीयत : एक साहबे अजिल्ला औलियाए किराम से किसी ने पूछा हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं फरमाया अभी-अभी मुझ से मुलाक़ात हुई थी फरमाते थे मैंने जंगल में टीले पर एक नूर देखा जब मैं क़रीब गया तो मा'लूम हुआ कि वह कम्बल का नूर है एक साहब उसे ओढ़े सो रहे हैं मैंने पाँव पकड़ कर हिलाया और जगा कर

कहा उठो मश्ग़ूल बखुदा हो कहा आप अपने काम में मश्ग़ूल रहें मुझे मेरी हालत पर रहने दीजिए मैंने कहा कि मैं मशहूर किए देता हूं यह वली अल्लाह है कहा मैं मशहूर कर दूंगा कि यह हज़रत ख़िज़्र हैं मैंने कहा मेरे लिए दुआ करो कहा दुआ आप ही का हक़ है मैंने कहा तुम्हें दुआ करनी होगी कहा *बफ़रल्लाहु हज़्ज़का मिन्हु* अल्लाह तआला अपनी ज़ात में आपका नसीबा ज़ाइद करे और कहा मैं अगर ग़ायब हो जाऊं तो मलामत न फरमाइएगा। और फौरन नज़र से ग़ायब हो गये हालांकि किसी वली की ताक़त न थी कि मेरी निगाह से ग़ायब हो सके।

वहाँ से आगे बढ़ा एक और इसी तरह का नूर देखा कि निगाह को ख़ीरा करता है क़रीब गया तो देखा टीले पर एक औरत कम्बल ओढ़े सो रही है और उसके कम्बल का नूर है मैंने पाँव हिला कर होशियार करना चाहा ग़ैब से निदा आई "ऐ ख़िज़्र एहतियात कीजिए" उस बीबी ने आंख खोली और कहा हज़रत न रुके यहाँ तक कि रोके गये मैंने कहा उठ मश्ग़ूल बखुदा हो कहा हज़रत अपने काम में मश्ग़ूल रहें मुझे अपनी हालत पर रहने दें मैंने कहा तो मैं मशहूर किए देता हूं यह वली अल्लाह है कहा मैं मशहूर कर दूंगी कि यह हज़रत ख़िज़्र हैं मैंने कहा मेरे लिए दुआ करो कहा दुआ तो आपका हक़ है मैंने कहा तुम्हें दुआ करनी होगी कहा *बफ़रल्लाहु हज़्ज़का मिन्हु।* अल्लाह अपनी ज़ात में आपका नसीबा ज़ाइद करे फिर कहा अगर मैं ग़ायब हो जाऊं तो मलामत न फरमाएगा।

मैंने देखा यह भी जाती है कहा यह तो बताए जा,क्या तू उसी मर्द की बीबी है कहा हाँ यहाँ एक बलीया का इंतिक़ाल हो गया था उसकी तज्हीज़ व तक्फीन का हमें हुक्म था यह कहा और मेरी निगाह से ग़ायब हो गई हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से पूछा यह कौन लोग हैं फरमाया यह लोग अफराद हैं मैं ने कहा वह भी कोई है जिसकी तरफ यह रुजूअ् लाते हैं फरमाया हाँ शैख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी।

अर्ज़ : ग़ौस के इतिक़ाल के बाद दरजा ग़ौसियत पर कौन मामूर होता है।

इरशाद : ग़ौस की जगह इमामैन से ग़ौस कर दिया जाता है और

इमामैन की जगह औतादे अरब से और औताद की जगह बदला से बदला की जगह पर अबदाले सबईन से और उनकी जगह तीन सौ नक़बा से फिर औलिया से और औलिया की जगह आम-ए-मुमिनीन से कर दिया जाता है कभी बिला लिहाज़ तरतीब काफिर को मुसलमान करके बदल कर देते हैं उनका मरतबा अबदाल से ज़्यादा है।

अर्ज़ : पानी में मसाम हैं या नहीं।

इरशाद : नहीं। कि पानी में बित्तवअ् ख़ला, भरने की कुव्वत रखी गई है ज़रूर है कि जो मसाम फर्ज़ किए जाएं वह पानी कि उन से ऊपर है उनकी तरफ उतरेगा और उन्हें भरेगा और मसाम होने पर फ़ल्सफ़-ए-जदीदा की यह दलील कि शकर डालने से पानी में हल हो जाती है और उसका हजम नहीं बढ़ता मक़्बूल नहीं जब ज़्यादते क़द्र अज्सास को पहुंचेगी ज़रूर हजम बढ़ना महसूस होगा मगर ऐसा इस्तिदलाल उस पर यह ख़्याल में आता है कि हौज़ के किनारे एक शख़्स खड़ा है दूसरा ग़ोता लगाए और बाहर वाला शख़्स बआवाज़ पुकारे अगर मसाम हैं तो ज़रूर सुनेगा और सुनता है तो मालूम हुआ कि मसाम हैं। बख़िलाफ़ उसके एक कमरा सिर्फ़ आईनों से फ़र्ज़ कीजिए जिसमें कहीं रोज़न न हों उसके अन्दर की आवाज़ बाहर न आएगी और बाहर की अन्दर न जाएगी अगरचे अन्दर बाहर दो शख़्स मुत्तसिल खड़े हो एक दूसरे को बआवाज़ बुलन्द पुकारे मगर यह इस्तिदलाल भी काफी नहीं आवाज़ पहुंचने के लिए मलए फासिल में तमूज चाहिए मसाम की क्या हाजत हां जहाँ तमूज न हो बजरिया मसाम पहुंचेगी आईने में न तमूज न मसाम लिहाज़ा न पहुंचेगी पुख़्ता व ख़ाम इमारात में तमूज नहीं मुनाफ़िज़ व मसाम हैं उन से पहुंचती है आब व हवा खुद अपने तमूज से पहुंचाते हैं और यही असल ज़रिया सौत है, हवा में तमूज ज़ाइद है कि पानी से अल्तफ़ है वह ज़्यादा पहुंचाती है और पानी कम, तालाब में दो शख़्स दोनों किनारों पर ग़ोता लगाएं और उन में से एक ईंट पर ईंट मारे दूसरे को आवाज़ पहुंचेगी मगर न इतनी कि हवा में।
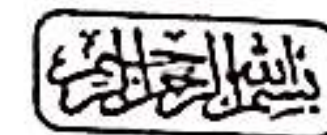
❖❖❖

بسم الله الرحمن الرحيم

मुसलमानाने आलम के लिए एक आला तरीन इस्लामी दस्तूरुल-अमल

यानी

मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत रज़ि अल्लाहु अन्हु

मुसम्मा बनाम तारीख़ी

अल-मल्फ़ूज़

1338 हिजरी

हिस्सा दोएम

लेखक

शहज़ादए आला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी कुद्देसे सिर्रुहू

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524

نحمده و نصلی
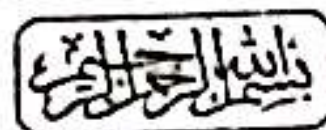
नहमदुहू वनुसल्ली अला रसूलेहिल-करीम।

मुअल्लिफ़ : हुज़ूर बाद नमाज़े अस्र सहन में तशरीफ़ फरमा हैं पुरीदीन व मोतक़ेदीन हाज़िरे ख़िदमत कि मोलवी रहमे इलाही साहिबे मुदर्रिस दोम मदरसा मन्ज़रुल-इस्लाम और तालिबे इल्म मोलवी नजीबुर्रहमान एक किताब हमराह लाए हुज़ूर ने दरयाफ़्त फरमाया क्या किताब है अर्ज़ किया हुज़ूर आमाले तस्ख़ीर में है एक इबारत का मतलब दरयाफ़्त करना था।

इरशाद : मेरे पास इन अमलियात के ज़ख़ाइर भरे हैं लेकिन बहम्दुलिल्लाह तआला आज तक कभी इस तरफ ख़्याल भी नहीं किया हमेशा इन दुआओं पर जो अहादीस में इरशाद हुई अमल किया मेरी तो तमाम मुश्किलात उन्हीं से हल होती रहती हैं। दूसरी बार जब काबा मुअज़्ज़मा हाज़िर हुआ यकायक जाना हो गया अपना पहले से कोई इरादा न था पहली बार की हाज़िरी हज़रात वालिदैन माजिदैन रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा के हमराह रेकाब थी उस वक़्त मुझे तेईसवां साल था। वापसी में तीन दिन तूफ़ान शदीद रहा था उसकी तफ़्सील में बहुत तूल है लोगों ने कफन पहन लिए थे हज़रत वालिदा माजिदा का इज़्तिराब देख कर उनकी तस्कीन के लिए बेसाख़्ता मेरी ज़बान से निकला कि आप इत्मीनान रखें। खुदा की क़सम यह जहाज़ न डूबेगा यह क़सम मैंने हदीस ही के इत्मीनान पर खाई थी जिसमें कश्ती पर सवार होते वक़्त ग़र्क़ से हिफ़ाज़त की दुआ इरशाद हुई है मैंने वह दुआ पढ़ ली थी लिहाज़ा हदीस के वाद-ए-सादेक़ा पर मुत्मइन था फिर भी क़सम के निकल जाने से खुद मुझे अन्देशा हुआ और मअन हदीस आई। *मन यतअल्ला अलल्लाहि युकज़्ज़िबुहू*। हज़रत इज़्ज़त की तरफ रुजूअ् की और सरकारे रिसालत से मदद मांगी अल्हम्दु लिल्लाह कि वह मुख़ालिफ़ हुआ कि तीन दिन से बशिद्दत चल रही थी दो घड़ी में बिल्कुल मौक़ूफ़ हो गई और जहाज़ ने नजात पाई मां की मुहब्बत वह तीन शबाना रोज़ की सख़्त तक्लीफ़ याद थी मकान में क़दम रखते ही पहला लफ़्ज़ मुझ से यह फ़रमाया कि हज फ़र्ज़ अल्लाह तआला ने अदा फ़रमा दिया अब मेरी ज़िन्दगी भर दोबारा इरादा न करना उनका यह फ़रमाना मुझे याद

था और मां-बाप की मुमानेअत के साथ हज्जे नफ़्ल जाइज़ नहीं यूं खुद अदा करने से मज्बूर था। यहां से नन्हें मियाँ (बरादरे खुर्द) और हामिद रज़ा खां (ख़ल्फ़े अकबर) मआ मुतअल्लेक़ीन बइरादा हज रवाना हुए लखनऊ तक उन लोगों को पहुंचा कर मैं वापस आ गया लेकिन तबीअत में एक क़िस्म का इंतिशार रहा एक हफ़्ता यहां रहा तबीअत सख़्त परेशान रही एक रोज़ अस्र के वक़्त ज़्यादा इज़्तिराब हुआ और दिल वहां की हाज़िरी के लिए ज़्यादा बेचैन हुआ बाद मग़्रिब मोलवी नज़ीर अहमद साहब को स्टेशन भेजा कि जा कर मुम्बई तक सेकण्ड क्लास रिज़र्व करा लें कि नमाज़ों का आरा रहे उन्होंने स्टेशन मास्टर से गाड़ी मांगी उस ने पूछा किस ट्रेन से इरादा है उन्होंने कहा इसी शब के दस बजे वाली से वह बोला यह गाड़ी नहीं मिल सकती अगर आप को उस से जाना था तो चौबीस घन्टे पेश्तर इत्तिला देते बेचारे मायूस हो कर लौटना चाहते थे कि एक (टिकट कलक्टर) जो क़रीब रहता था मिल गया उस ने कहा तुम घबराओ मत मैं चलता हूं और स्टेशन मास्टर से जा कर कहा कि यह तो मुझ से कल कह गये थे मैं आपसे कहना भूल गया उसने एक सौ त्रिसठ (163) रुपये पांच आने लेकर सेकण्ड क्लास का कमरा रिज़र्व कर दिया इशा की नमाज़ से अव्वले वक़्त फारिग़ हो लिया शुकरम भी आ गई सिर्फ़ वालिदा माजिदा से इजाज़त लेना बाक़ी रह गई जो निहायत अहम मस्अला था और गोया इसका यक़ीन था कि वह इजाज़त न देंगी किस तरह अर्ज़ करूं और बेग़ैर इजाज़त वालिदा हज्जे नफ़्ल को जाना हराम आख़िरकार अन्दर मकान में गया देखा कि हज़रत वालिदा माजिदा चादर ओढ़े आराम फरमाती हैं मैंने आंखें बन्द करके क़दमों पर सर रख दिया वह घबरा कर उठ बैठीं और फरमाया क्या है मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर मुझे हज की इजाज़त दे दीजिए पहला लफ़्ज़ जो फरमाया यह था कि खुदा हाफ़िज़, यह उन्हीं दुआओं का असर था। मैं उलटे पैरों बाहर आया और फौरन सवार हो कर स्टेशन पहुंचा वापसी के बाद मालूम हुआ कि मैं स्टेशन जा चुका था कौन बुलाता चलते वक़्त जिस लगन में मैंने वुज़ू किया था उसका पानी मेरी वापसी तक न फेंकने दिया कि उसके वुज़ू का पानी है बरैली के स्टेशन से मैंने एक तार अपनी रवानगी का मुम्बई रवाना किया वहाँ सबने यह ख़्याल किया कि शायद हसन मियाँ (आला हज़रत

मद्दा ज़िल्लहू के मंझले भाई) तशरीफ़ ला रहे हैं इस वास्ते कि उनका साल आइन्दा में इरादा था मेरा किसी को गुमान भी न था ग़रज़ दिन के दिन तक सबको तज़बजुब रहा उधर मुझे रास्ता में एक दिन की देर हो गई कि आगरा पर मेल निकल गया और हमारी गाड़ी ने पेसेन्जर का इंतज़ार किया मोलवी नज़ीर अहमद साहब ने स्टेशन मास्टर से पूछा कि हमारी गाड़ी काट कर क्यों जुदा कर ली कहा मेल रिज़र्व न था आपको पेसेन्जर में जाना होगा यहाँ तक कि वह दिन आ गया जिस रोज़ हुज्जाज मुम्बई के करनतीना में दाख़िल होने वाले थे और मैं उस वक़्त तक न पहुंच सका अब सख़्त मुश्किल का सामना था कि हमारे लोग क़रतीना में दाख़िल हो जाएंगे और मैं रह गया अब जाना क्योंकर होगा यह दिन पंजशंबा का है तार आ चुका था कि पंजशंबा को भपारा हो कर लोग क़रनतीना में दाख़िल हो जाएं। गाड़ी कट जाने ने यह ताख़ीर की कि मैं जुमा के दिन सुबह आठ बजे पहुंचा स्टेश पर देखा मुम्बई के अहबाब का हुजूम है हाजी क़ासिम वग़ैरह गाड़ियाँ लिए मौजूद हैं सलाम व मुसाफ़हा के बाद पहला लफ़्ज़ जो उन्होंने कहा यह था शहर को न चलिए सीधे क़रनतीना चलिए अभी आपके लोग दाख़िले नहीं हुए मैं शुक्रे इलाही बजा लाया और अपने लोगों के साथ दाख़िल क़रनतीना हुआ यह हदीस की उन्हीं दुआओं की बरकत थी कि गई हुई मुराद अता फरमाई मैंने वाक़या पूछा वहाँ के लोगों ने कहा अजब है और सख़्त अजब ऐसा कभी न हुआ था पंजशंबा को रोज़ मौऊद पर डॉक्टर आया और आधे लोगों को भपारा दिया कि दफ़अतन उसे सख़्त घबराहट पैदा हुई और कहा कि बाक़ी का भपारा कल होगा यूं तुम्हारे लोग बाक़ी रह गये अब एक और दिक़्क़त पेश आई कि उस जहाज़ का टिकट बिल्कुल तक़्सीम हो चुका था जिसमें हमारे लोग जाने वाले थे बमजबूरी दूसरे जहाज़ का टिकट ख़रीदा और वह भी तीसरे दर्जे का मिला जिसकी हिक्मत आगे ज़ाहिर होगी और हदीस की दुआएं पढ़ीं कि सरकार मुझे अपनों का साथ अता फरमाएं उन से छूट कर मैं तन्हा क्यों कर हाज़िर हूंगा तलाश की गई कि उस जहाज़ में कोई साहब ऐसे हैं जो अकेले जाने वाले हों जिन्हें यह और वह दोनों जहाज़ बराबर हों मौला तआला की रहमत कि एक बड़े मियाँ हमारे ही ज़िला बरैली मक़ाम बहेड़ी के साकिन मिल गये जिन्होंने बख़ुशी टिकट बदल लिया वह उस जहाज़ में

गये और मैं बफ़ज़्लेही तआला अपने साथियों के जहाज़ में रहा सरकार ने पहला टिकट तीसरे दर्जे का इसी लिए दिलवाया था कि बड़े मियाँ मिलने वाले थे जिनका टिकट तीसरे ही दर्जे का था उन से तब्दील में माली नुक़्सान न हो बाद क़रनतीना उस जहाज़ पर सवार हो कर सवा सौ रुपये दाख़िल करके अव्वल दर्जे का टिकट तब्दील करा लिया जब अद्‌न के क़रीब जहाज़ पहुंचा मैं नमाज़ अस्र पढ़ रहा था नमाज़ में एक अरबी साहब की आवाज़ मेरे कान में पहुंची कि सिम्त क़िबला यह नहीं है मैंने कुछ ख़्याल न किया इसलिए कि मैं मुबामरा हिन्दरिया से अद्‌न व कामरान की सिम्त क़िब्ला निकाल चुका था वह इतनी देर की मैंने नमाज़ पढ़ी बज़ीफ़ा पढ़ा बैठे रहे जब मैं फारिग़ हुआ तो उन से पूछा इस वक़्त बताइए सिम्त क़िब्ला किस तरफ है और पांच मिनट पहले किस तरफ़ थी और हिसाब लगा कर समझाया कि उस वक़्त सिम्त क़िब्ला ही पर नमाज़ हुई जिसको उन्होंने भी तस्लीम कर लिया जब कामरां आया क़रनतीने में दाख़िल हुए वहाँ दस रोज़ ठहरना हुआ अल्लाह तआला उन तुर्की कारकुनों को जज़ाए ख़ैर दे हुज्जाज को ऐसा आराम दिया कि लोगों को मैंने यह कहते सुना कि हज का वक़्त क़रीब है वरना कुछ दिनों बीमार रहते और यहाँ के आराम का लुत्फ़ उठाते मुम्बई में क्या मजाल थी कि कोई इस एहाता से बाहर क़दम रखता एहाता के अन्दर हर बात की रोक टोक थी हिन्दू सिपाही क़रदन हुज्जाज को तंग करते थे यहाँ मैंने सुना कि कामरां से कोई एक मील फासिला पर किसी बुज़ुर्ग का मज़ार है मैंने और मेरे साथियों ने हाज़िरी का इरादा किया तुर्की डॉक्टर से पूछा बकुशादा पेशानी इजाज़त दी और कहा आपके साथ के आदमी होंगे मैंने कहा दस बारा उन सबको भी इजाज़त दी और हम ज़्यारत से फारिग़ हो कर आए जहाज़ और कामरां में तक़रीबन रोज़ाना मेरे बयानात होते जिसमें अक्सर मनासिके हज की तालीम होती और वह जो हमेशा मेरे बयान का मक़्सूदे आज़म रहता है यानी ताज़ीमे शान हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक बहुत बड़ा रईस भी जहाज़ में था शरीके बअ्ज़ होता मसाइल सुना करता मगर ताज़ीमे शाने अक़्दस के ज़िक्र के वक़्त उसके चेहरा पर बशाशत की जगह कदूरत होती मैं समझा कि वहाबी है दरयाफ़्त करने से मालूम हुआ कि गंगोही साहब का मुरीद है उस

रोज़ मैंने रूए सुख़न रद्दे वहाबिया व गंगोही की तरफ़ फेरा जबरन क़हरन सुनता रहा मगर दूसरे दिन से बयान में न आया मैंने हम्द की जल्सा पाक हुआ अब यहाँ कामरां में नौ दिन हो चुके कल जहाज़ पर जाना है दफ़अतन रात को मेरे सब साथियों को दर्दे शिकम व इसहाल आरिज़ हुआ मेरे दर्द तो न था मगर पाँच बार इजाबत को मुझे जाना हुआ दिन चढ़ गया और डॉक्टर के आने का वक़्त हुआ बाहर तुर्की मर्द और अन्दर औरतों को तुर्किया औरत रोज़ाना आ कर देखा करते मेरे भाई नन्हें मियाँ सल्लमहु को अन्देशा हुआ और अज़्म कर लिया कि अपनी हालतों को डॉक्टर से कह दो मुझ से दरयाफ़्त किया मैंने कहा अगर बीमार समझ कर रोक लिए गये और हज का वक़्त क़रीब है मआज़ल्लाह वक़्त पर न पहुंच सके तो कैसा ख़सारा होगा अब डॉक्टर और डॉक्टरनी आते होंगे अगर उन्हें इत्तिला हुई तो हमारा न कहना इख़्फ़ा में ठेहरेगा मैंने कहा ज़रा ठेहरो मैं अपने हकीम से कह लूं। मकान से बाहर जंगल में आया और हदीस की दुआएं पढ़ीं और सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से इस्तिम्दाद की कि दफ़अतन सामने से हज़रत सैयद शाह गुलाम जीलानी साहब सज्जादा नशीन सरकार बांसा शरीफ़ कि औलादे अमजाद हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से थे और मुम्बई से हमारा उनका साथ हो गया था सामने से तशरीफ़ लाए उनकी तशरीफ़ आवरी फाले हसन थी मैंने उन से भी दुआ को कहा उन्होंने भी दुआ फरमाई मुझे मकान से बाहर आए शायद दस मिनट हुए होंगे अब जो मकान में जाकर देखा बहम्दुलिल्लाह सबको ऐसा तन्दुरुस्त पाया कि गोया मरज़ ही न था दर्द वग़ैरह कैसा उसका ज़ुअफ़ भी न रहा सब ढाई तीन मील प्यादा चल कर समुन्द्र के किनारे पहुंचे जद्दह शरीफ़ में जब जहाज़ पहुंचा हुज्जाज की बेहद कसरत और जाने का सिर्फ़ एक रास्ता जो दो तरफ़ा टीटों से बहुत दूर तक महदूद भला ऐसी हालत में किस तरह गुज़र हो ज़नानी सवारियां साथ, पाँच घन्टे इसी इंतज़ार में गुज़र गये कि ज़रा हुजूम कम हो तो सवारियो को ले चलें लेकिन उस वक़्त सिलसिला मुन्क़ता न होना था न हुआ यहाँ तक कि दोपहर क़रीब हो गया धूप और भूक और प्यास सब बातें जमा थीं कि नन्हें मियां और सब लोग निहायत परेशान जब बहुत देर हो गई तो नन्हें मियाँ और हामिद रज़ा ख़ां ने मुझ से आ कर

कहा यहाँ आख़िर कब तक भूखे प्यासे, धूप में खड़े रहेंगे मैंने कहा तुम्हें जल्दी है तो जाओ मैं ता वक़्त कि भीड़ कम न हो ज़नानी सवारियों को नहीं ले जाऊंगा अब किस की मजाल थी जो कुछ कहता मजबूरन ख़ामोश हो गये थोड़ी देर के बाद एक अरबी साहब जिनको उस से पहले कभी न देखा था मेरे पास तशरीफ़ लाए और बाद सलाम अलैका पहला लफ़्ज़ यह फरमाया *या शैख़ माली अराका हज़ीना* क्या सबब है कि मैं आपको परेशान देख रहा हूं मैंने अर्ज़ किया परेशानी ज़ाहिर है हमारे साथ में मस्तूरात हैं और मर्दों का यह कसीर हुजूम पाँच घन्टे यहीं खड़े हो गये फरमाया अपने मर्दों को हल्क़ा बनाकर औरतों को दरमियान में ले लो और मेरे पीछे पीछे चले आओ गरज़ हल्का में औरतों को लेकर उन अरबी साहब के पीछे हो लिए हम ने देखा कि रास्ता भर हमारे शाने से भी किसी ग़ैर शख़्स का शाना नहीं लगा जब रास्ता तय हुआ फौरन वह अरबी साहब नज़रों से ग़ायब हो गये जद्दह पहुंचते ही मुझे बुख़ार आ गया और मेरी आदत है कि बुख़ार में सर्दी बहुत मालूम होती है महाज़ात यलमलम से बहम्दुलिल्लाह तआला एहराम बंध चुका था उस सर्दी में रज़ाई गर्दन तक ऊपर से डाल लेता कि एहराम में चेहरा छुपाना मना है सो जाता आंख खुलती तो बहम्दुलिल्लाह तआला रज़ाई गर्दन से असलन न बढ़ी होतीं तीन रोज़ जद्दह में रहना हुआ और बुख़ार तरक़्क़ी पर है आज चल कर जद्दह के खुले मैदान में रात बसर करनी होगी बुख़ार में क्या हालत होगी सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ की बहम्दुल्लिाह तआला बुख़ार मअन जाता रहा और तेरहवीं तक ऊद न किया जब बेफ़ज़्लेही तआला तमाम मनासिके हज से फारिग़ हो लिए तेरहवीं तारीख़ बुख़ार ने ऊद किया मैंने कहा अब आया कीजिए हमारा काम रब्बुल-इज़्ज़त ने पूरा कर दिया बाद फरागे मनासिक कुतुब ख़ाना हरमे मोहतरम की हाज़िरी का शुग़ल रहा पहले रोज़ जो हाज़िर हुआ हामिद रज़ा खां साथ थे मुहाफ़िज़ कुतुबे हरम एक वजीह व जमील आलिमे नबील मौलाना सैयद इस्माईल थे यह पहला दिन उनकी ज़्यारत का था यह हज़रत मिस्ल दीगर अकाबिरे मक्का मुकर्रमा इस फ़क़ीर से ग़ायबाना ख़ुलूस ताम रखते थे जिसका सबब मेरा फतवा मुसम्मा बेही फतावा अल-हरमैन लेरज्फ़े नदवतुल-मीन था कि सात बरस पहले 1316 हिज० में रद्दे नदवा के लिए अट्ठाइस सवाल

व जवाब पर मुश्तमिल जिसे मैंने बीस घन्टे से कम में लिखा था और बज़रिया बाज़ हुज्जाज ख़ादिमाने दीन उन हज़रात के हुज़ूर पेश हुआ और उन्होंने अपनी गिरां बहा तक़रीज़ात से उसे मुज़ैयन फ़रमाया और फ़क़ीर को बेशुमार आला-आला दर्जे के कलिमाते दुआ व सना का शर्फ़ दिया और वह मअ़ तरजमा एक मब्सूत किताब हो कर मुम्बई १३१७ हिज० में तबअ़ हो कर शाए हो चुका था उस वक़्त से मौला अज़्ज़ा व जल्ल ने उस ज़र्रा बेमिक़्दार की कमाले मुहब्बत व उक़्अत उन जलील कुलूब में डाल दी थी मगर मुलाक़ात ज़ाहिरी न हुई थी हज़रत मौलाना मौसूफ़ से कुछ किताबें मुताला के लिए निकलवाई हाज़िरीन में से किसी ने इस मस्अला का ज़िक्र किया कि क़ब्ल ज़वाल रमी कैसी मौलाना ने फरमाया यहाँ के उलमा ने जवाज़ पर फतवा दिया है हामिद रज़ा ख़ां से इस बारे में गुफ़्तगू हो रही थी मुझ से इस्तिफ़्सार हुआ मैंने कहा ख़िलाफ़े मज़्हब है मौलाना सैयद साहब ने एक मुतदाविल किताब का नाम लिया कि उसमें जवाज़ को अलैहिल-फतवा लिखा है मैंने कहा मुम्किन कि रिवायत जवाज़ हो मगर अलैहिल-फतवा हरगिज़ न होगा वह किताब ले आए मस्अला निकला और इसी सूरत से निकला जो फ़क़ीर ने गुज़ारिश की थी यानी उसमें अलैहिल-फतवा का लफ़्ज़ न था हज़रत मौलाना ने हामिद रज़ा खां से कान में झुक कर मुझे पूछा कि यह कौन है और हामिद रज़ा ख़ां को भी न जानते थे मगर उस वक़्त गुफ़्तगू उन्हीं से हो रही थी लिहाज़ा उन से पूछा उन्होंने मेरा नाम लिया नाम सुनते ही हज़रत मौलाना वहाँ से उठ कर बेताबाना दौड़ते हुए आकर फ़क़ीर से लिपट गये फिर तो बहम्दुलिल्लाह तआला बेदाद ने कामिल तरक़्क़ी की इस बार सरकारे हरमे मोहतरम में मेरी हाज़िरी बे अपने इरादे के जिस ग़ैर मुतवक़्क़ा तौर पर ग़ैर मामूली तरीक़ों पर हुई उसका कुछ बयान ऊपर हो चुका है वह हिक्मते इलाहिया यहां आकर खुली सुनने में आया कि वहाबिया पहले से आए हुए हैं जिन में ख़लील अहमद अंबैठी और बाज़ वज़रा रियासत दीगर अह्ले सरवत भी हैं हज़रत शरीफ़ तक रसाई पैदा की है और मस्अला इल्मे ग़ैब छेड़ा है और उसके मुतअल्लिक़ कुछ सवाल आलम उलमाए मक्का हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल साबिक़ क़ाज़ी मक्का व मुफ़्ती हन्फ़ीया की ख़िदमत में पेश हुआ है मैं हज़रत मौसूफ़ की ख़िदमत में गया हज़रत मौलाना मोलवी बसी अहमद

साहब मुहद्दिस सूरती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के साहबज़ादे अज़ीज़ी मौलवी अब्दुल-अहद साहब भी हमराह थे मैंने बाद सलाम व मुसाफ़हा मस्अला इल्मे ग़ैब की तक़रीर शुरू की और दो घन्टे तक उसे आयात व अहादीस व अक़्वाले अइम्मा से साबित किया और मुख़ालिफ़ीन जो शुबहात किया करते हैं उनका रद्द किया इस दो घन्टे तक हज़रत मौसूफ़ महज़ सुकूत के साथ हमा तन गोश हो कर मेरा मुंह देखते रहे जब मैंने तक़रीर ख़त्म की चुपके से उठे हुए क़रीब अल्मारी रखी थी वहाँ तशरीफ़ ले गये और एक काग़ज़ निकाल लाए जिस पर मोलवी सलामतुल्लाह साहब रामपुरी के रिसाला आलामुल-अज़्किया के इस क़ौल के मुतअल्लिक़ कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को *हुवल-अव्वल वल-आख़िर वज़्ज़ाहिर वल-बातिन वहुवा बेकुल्लि शैइन अलीम*। लिखा चन्द सवाल थे और जवाब की चार सतरें ना तमाम उठा लाए मुझे दिखाया और फरमाया तेरा आना अल्लाह की रहमत था वरना मौलवी सलामतुल्लाह के कुफ़्र का फतवा यहां से जा चुकता मैं हम्दे इलाही बजा लाया और फिरोदगाह पर वापस आया मौलाना से मक़ामे क़्याम का कोई तज़्किरा न आया था अब वह फ़क़ीर के पास तशरीफ़ लाना चाहते हैं और हज का हंगामा और जाए क़्याम ना मालूम आख़िर ख़्याल फरमाया कि ज़रूर कुतुबख़ाना में आया करता होगा २५ जिल-हिज्जा १३२३ हिज० की तारीख़ है बाद नमाज़े अस्र मैं कुतुब ख़ाने के ज़ीने पर चढ़ रहा हूं पीछे से एक आहट मालूम हुई देखा तो हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल हैं बाद सलाम व मुसाफ़हा दफ़्तर कुतुब ख़ाना में जा कर बैठे वहाँ हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल और उनके नौजवान सईद रशीद भाई सैयद मुस्तफ़ा और उनके वालिद माजिद मौलाना सैयद ख़लील और बाज़ हज़रात भी कि उस वक़्त याद नहीं तशरीफ फरमा हैं हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल ने जेब से एक परचा निकाला जिस पर इल्मे ग़ैब के मुतअल्लिक़ पांच सवाल थे (यह वही सवाल हैं जिनका ऐसा जवाब मौलाना ने शुरू किया था और तक़रीर फ़क़ीर के बाद चाक फरमा दिया) मुझ से फरमाया यह सवाल वहाबिया ने हज़रत सैयदना के ज़रिया से पेश किए हैं और आपसे जवाब मक़्सूद है (सैयदना वहां शरीफ़े मक्का को कहते हैं कि उस वक़्त शरीफ़ अली पाशा थे) मैंने मौलाना सैयद मुस्तफ़ा से गुज़ारिश की कि क़लम

दवात दीजिए हज़रत मौलाना शैख़ कमाल व मौलाना सैयद इस्माईल व मौलाना सैयद ख़लील सब अकाबिर ने कि तशरीफ़ फरमा थे इरशाद फरमाया कि हम ऐसा फौरी जवाब नहीं चाहते बल्कि एक जवाब हो कि ख़बीसों के दांत खट्टे हों मैंने अर्ज़ की कि उसके लिए क़दरे मोहलत चाहिए दो घड़ी दिन बाक़ी है इसमें क्या हो सकता है हज़रत मौलाना सालेह कमाल ने फरमाया कल सेह शंबा परसों चहार शंबा है इन दो रोज़ में हो कर पंजशंबा को मुझे मिल जाए कि मैं शरीफ़ के सामने पेश कर दूं मैंने अपने रब अज़्ज़ा व जल्ल की इनायत और अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की इआनत पर भरोसा करके वादा कर लिया और शाने इलाही कि दूसरे ही दिन से बुख़ार ने फिर ऊद किया इसी हालते तप में रिसाला तस्नीफ़ करता और हामिद रज़ा ख़ां तबईज़ करते उसका शोहरा मक्का मुअज़्ज़मा में हुआ कि वहाबिया ने फलां की तरफ़ सवाल मुतवज्जोह किया है और बजह जवाब लिख रहा है मैंने उस रिसाला में गुयूबे ख़मसा की बहस न छेड़ी थी कि साइलों के सवाल में न थी और मुझे बुख़ार की हालत में बकमाल ताजील क़स्दे तक्मील आज ही कि मैं लिख रहा हूं हज़रत शैखुल-खुतबा कबीरुल-उलमा मौलाना शैख़ अहमद अबुल-ख़ैर मुरदाद का प्याम आया कि मैं पांव से माज़ूर हूं और तेरा रिसाला सुनना चाहता हूं मैं इसी हालत मे जितने औराक़ लिखे गये थे लेकर हाज़िर हुआ रिसाला की क़िस्म अव्वल ख़त्म हो चुकी थी जिसमें अपने मसलक का सुबूत है क़िस्म दोम लिखी जा रही थी जिस में वहाबिया का रद्द और उनके सवालों का जवाब है हज़रत शैखुल-खुतबा ने अव्वल ता आख़िर सुन कर फरमाया इसमें इल्मे ख़म्स की बहस न आई मैंने अर्ज़ की कि सवाल में न थी फरमाया मेरी ख़्वाहिश है कि ज़रूर ज़्यादा हो मैं ने कुबूल किया रुख़्सत होते वक़्त उनके ज़ानवए मुबारक को हाथ लगाया हज़रत मौसूफ़ ने बआं फ़ज़्ल व कमाल व बआं किब्र साल कि उमर शरीफ़ सतरह बरस से तजावुज़ थी यह लफ़्फ़ फरमाए कि *इन्ना अक़्बला अरजुलकुम इन्ना अक़्बला नआलकुम*। मैं तुम्हारे क़दमों को बोसा दूं मैं तुम्हारे जूतों को बोसा दूं यह मरे हबीब करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रहमत कि ऐसे अकाबिर के कुलूब में उस बे-उक़अत की यह उक़अत मैं वापस आया और शब ही में बहस खुम्स को बढ़ाया अब दूसरा दिन चहार शंबा का है सुबह की

नमाज़ पढ़ कर हरम शरीफ़ से आता हूं कि मौलाना सैयद अब्दुल-हई इब्ने मौलाना सैयद अब्दुल-कबीर मुहद्दिस मुल्क मग़्रिब (कि उस वक़्त तक उनकी चालीस किताबें उलूमे हदीसिया व दीनीया में मिस्र में छप चुक थीं उनका ख़ादिम प्याम लाया कि मौलाना तुझ से मिलना चाहते हैं मैंने ख़्याल किया कि वादे में आज ही का दिन बाक़ी है और अभी बहुत कुछ लिखना है उज़्र कर भेजा कि आज की मुआफ़ी दें कल मैं खुद हाज़िर होऊंगा फौरन ख़ादिम वापस आया कि मैं आज ही मदीना तैयबा जाता हूं तबरीज़ हो चुकी है यानी क़ाफ़िले के ऊंट बैरूने शहर जमा हो लिए हैं जुहर पढ़ कर सवार हो जाऊंगा अब मैं मज्बूर हुआ और मौलाना को तशरीफ़ आवरी की इजाज़त दी वह तशरीफ़ लाए और उलूमे हदीस की इजाज़तें फ़क़ीर से तलब फरमाई और लिखवाई और इल्मी मुज़ाकरात होते रहे यहां तक कि जुहर की अज़ान हुई वहाँ ज़वाल होते ही मअ़न अज़ान हो जाती है मैं और वह नमाज़ में हाज़िर हुए बाद नमाज़ वह आज़िम मदीना तैयबा हुए और मैं फरोदगाह पर आया आज के दिन का बड़ा हिस्सा यूं बिल्कुल ख़ाली गया और बुख़ार साथ है बक़िया दिन में और बाद इशा फ़ज़्ले इलाही और इनायते रिसालत पनाही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने किताब की तक्मील व तबईज़ सब पूरी करा दी। *अद्दौलतुल-मक्कीया बिल-माद्दतिल- ग़ैबीया)* उसका तारीख़ी नाम हुआ और पंजशंबा की सुबह ही को हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल की ख़िदमत में पहुंचा दी गई मौलाना ने दिन में उसे कामिल तौर पर मुताला फरमाया और शाम को शरीफ़ साहब के यहां लेकर तशरीफ़ ले गये इशा की नमाज़ वहां शुरू वक़्त पर हो जाती है उसके बाद निस्फ़ शब तक कि अरबी घड़ियों में छः बजे हैं शरीफ़ अली पाशा का दरबार होता था हज़रत मौलाना ने दरबार में किताब पेश की और अलल-एलान फरमाया उस शख़्स ने वह इल्म ज़ाहिर किया जिसके अनवार चमक उठे और जो हमारी ख़्वाब में न था। हज़रत शरीफ़ ने किताब पढ़ने का हुक्म दिया दरबार में दो वहाबी भी बैठे थे एक अहमद फ़कीहा कहलाता दूसरा अब्दुर्रहमान इस्कोबी उन्होंने मुक़द्दमा किताब की आमद ही सुन कर समझ लिया कि यह किताब रंग बदल देगी शरीफ़ ज़ी इल्म हैं मस्अला उन पर मुंकशिफ़ हो जाएगा लिहाज़ा चाहा कि सुनने न दें बहस में उलझा कर वक़्त गुज़ार दें किताब पर कुछ

एतराज़ किया हज़रत मौलाना शैख़ कमाल ने जवाब दिया आगे वढ़े उन्होंने फिर एक मुहमल एतेराज़ किया हज़रत मौलाना ने जवाव दिया और फरमाया किताव सुन लीजिए पूरी किताव सुनने से पहले एतेराज़ वेक़ायदा है मुम्किन है कि आपके शुकूक का जवाव किताव ही में आए और न हो तो मैं जवाव का ज़िम्मेदार हूं और मुझ से न हो सका तो मुसन्निफ़ मौजूद है यह फरमा कर आगे पढ़ना शुरू किया कुछ दूर पहुंचे थे उन्हें उल्झाना मक़्सूद था फिर मोतरिज़ हुए अव हज़रत मौलाना ने हज़रत शरीफ़ से कहा कि या सैयदना हज़रत का हुक्म है कि मैं किताव पढ़ कर सुनाऊं और यह जा वजा उलझते हैं हुक्म हो तो उनके एतराज़ों का जवाव दूं या हुक्म हो तो किताव सुनाऊं शरीफ़ ने फरमाया इक़रा आप पढ़िए अव उनकी हां को कौन ना कर सकता था मोतरिज़ों का मुंह मारा गया और मौलाना किताव सुनाते रहे उसके दलाइल क़ाहिरा सुन कर मौलाना शरीफ़ ने बआवाज़ बुलन्द फरमाया : *अल्लाहु युअ़्ती व हाउलाइ यमनऊन।* यानी अल्लाह तो अपने हवीव सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को इल्मे ग़ैव अता फरमाता है और यह वहाविया मना करते हैं यहाँ तक कि निस्फ़े शव तक निस्फ़े किताव सुनाई अव दरवार वर्ख़्वास्त होने का वक़्त आ गया शरीफ़ साहव ने हज़रत मौलाना से फरमाया यहां निशानी रख दो किताव वग़ल में लेकर वाला ख़ाना पर आराम के लिए तशरीफ़ ले गये वह किताव आज तक उन्हीं के पास है असल से मुतअ़द्दद नक़लें मक्का मुअज़्ज़मा के उलमाए किराम ने लीं और तमाम मक्का मुअज़्ज़मा में किताव का शोहरा हुआ वहाविया पर ओस पड़ गई वफ़ज़्लेही तआला सव लोहे ठण्डे हो गये गली कूचा में मक्का मुअज़्ज़मा के लड़के उन से तमस्खुर करते कि अव कुछ नहीं कहते अव वह जोश किया हुए अव वह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कि लिए उलूमे ग़ैव मानने वालों को काफिर कहना किधर गया तुम्हारा कुफ़्र व शिर्क तुम्हीं पर पलटा वहाविया कहते उस शख़्स ने किताव में मन्तेक़ी तक़रीरें भर कर शरीफ़ पर जादू कर दिया मौला अज़्ज़ा व जल्ल का फ़ज़्ले हवीवे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का करम कि उलमाए किराम ने किताव पर धूम धामी तक़्रीज़ें लिखनी शुरू कीं वहाविया का दिल जलता और वस न चलता आख़िर इस फ़िक्र में हुए कि किसी तरह फरेव करके तक़रीज़ात तल्फ़

कर दी जाएं एक जगह जमा हुए और हज़रत मौलाना शैख़ अवुल-ख़ैर मुरदाद से अर्ज़ की कि हम भी किताव पर तक़रीज़ें लिखना चाहते हैं किताव हमें मंगवा दीजिए वह सीधे मुक़द्दस वुज़ुर्ग उनके फ़रेवों को क्या जानें अपने साहवज़ादे मौलाना अब्दुल्लाह मुरदाद को मेरे पास भेजा यह साहव मस्जिदे हराम के इमाम हैं और उसी ज़माने में फ़क़ीर के हाथ पर वैअ़त फरमा चुके थे हज़रत मौलाना अवुल-ख़ैर का मंगाना और मौलाना अब्दुल्लाह मुरदाद का लेने को आना मुझे शुवह की कोई वजह न होती मगर मौला अज़्ज़ा व जल्ल की रहमत में उस वक़्त कुतुव ख़ाना हरम शरीफ़ में था हज़रत मौलाना इस्माईल को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल जिन्नाते आलिया में हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रिफ़ाक़त अता फरमाए क़ब्ल उसके कि मैं कुछ कहूं निहायत तुरशी और जलाले सियादत से फरमाया किताव हरगिज़ न दी जाएगी जो तक़रीज़ें लिखनी हों लिख कर भेज दो मैंने गुज़ारिश भी की कि हज़रत मौलाना अवुल-ख़ैर मंगाते हैं और उनके साहवज़ादे लेने आए हैं और उनका जो तअल्लुक़ फ़क़ीर से है आपको मालूम है फरमाया जो लोग वहां जमा हैं उनको मैं जानता हूं वह मुनाफ़ेक़ीन हैं मौलाना अवुल-ख़ैर को उन्होंने धोखा दिया है यूं उस आलमे नवील सैयद जलील की वरकत ने किताव वेहम्दुलिल्लाह तआला महफ़ूज़ रखी *व लिल्लाहिल-हम्द* जव वहाविया का यह मकर भी न चला और मौलाना शरीफ़ के यहां से वहम्देही तआला उनका मुंह काला हुआ एक नाख़्वान्दा जाहिल कि नाइवुल-हराम कहलाता (उसे किसी तरह अपने) मुवाफ़िक़ किया अहमद रातिव पाशा उस ज़माना में गवर्नर मक्का मुअज़्ज़मा थे आदमी नाख़्वानदा मगर दीनदार हर रोज़ वाद अस्र तवाफ़ करते ख़्याल किया कि शरीफ़ ज़ी इल्म थे किताब सुन कर मोतक़िद हो गये यह वेपढ़ा फौजी आदमी हमारे भड़काए से भड़क जाएगा एक रोज़ यह तवाफ़ से फारिग़ हुए हैं कि नाइवुल-हरम ने उन से गुज़ारिश की एक हिन्दी आलिम ने हिन्दुस्तान में वहुत लोगों के अक़ीदे विगाड़ दिए हैं और अव अह्ले मक्का के अक़ीदे ख़राव करने आया है और साथ ही दिल में सोचा कि यह क्योंकर जमेगी कि एक हिन्दी मक्कियों के अक़ीदे विगाड़ दे लिहाज़ा मजबूराना उसके साथ यह कहना पड़ा कि और अकाविर उलमाए मक्का निस्ल शैख़ुल-उलमा सैयद मुहम्मद सईद बा वसील व

मौलाना शैख़ सालेह कमाल व मौलाना अबुल-ख़ैर मुरदाद उसके साथ हो गये हैं मौला तआला की शान कि यह वाक़ई बात जो उस ने मजबूराना कही उस पर उलटी पड़ी पाशा ने बकमाल ग़ज़ब एक चपत उसकी गर्दन पर जमाई और कहा *या ख़बीस इब्नुल-ख़बीस या कलब इब्नुल-कलब इज़ा काना हाउलाए मअ़हू फ़हुवा युफ़्सिदु अम युस्लेह*। ऐ ख़बीस इब्ने ख़बीस ऐ कलब इब्ने कलब जब यह अकाबिर उनके साथ हैं तो वह ख़राबी डालेगा या इस्लाह करेगा उस रोज़ से मौलाना सैयद इस्माईल वग़ैरह उसे *नाहिबुल-हरम* कहते और अहमद फ़गिया को अहमक़ सफ़िया और एक और मुख़ालिफ़ को मग़सूम मौलाना शरीफ़ का दरबार मुहज़्ज़ब दरबार था वहाँ वहाबिया को मुहज़्ज़ब ज़िल्लत पहुंची यह एक जंगी फौजी तर्क का सामना था उसी तरीक़े की ज़िल्लत पाई दौलते मक्कीया के साथ-साथ बल्कि उस से कुछ पहले से बेफ़ज़्लेही तआला हुसामुल-हरमैन की कार्रवाई जारी की अकाबिर ने जो आलीशान तक़रीज़ात उस पर लिखीं आप हज़रात के पेशे नज़र हैं इब्तिदा ही में यह फतवे हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल के पास तक़रीज़ को गया था उधर हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल ने किताब सुनाने के ज़िम्न में हज़रत शरीफ़ से ख़लील अहमद के अक़ाइदे ज़ाल्ला और उसकी किताब बराहीने क़ातेआ का भी ज़िक्र कर दिया था अंबेठी साहब को ख़बर हुई मौलाना के पास कुछ अशरफ़ियां नज़राना लेकर पहुंचे और अर्ज़ की कि हज़रत मुझ पर क्यों नाराज़ हैं फरमाया क्या तुम ख़लील अहमद हो कहा हां मौलाना ने फरमाया तुझ पर अफसोस तूने बराहीने क़ातेआ में वह शनीअ़ बातें कैसे लिखीं मैं तो तुझे ज़िन्दीक़ लिख चुका हूं (उससे पहले मौलाना गुलाम दस्तगीर कुसूरी मरहूम किताब तक़्दीसुल-वकील अन तौहीनुर्रशीद वल-ख़लील लिख कर उलमाए मक्का से तक़रीज़ें ले चुके थे उस पर मौलाना शैख सालेह कमाल की भी तक़रीज़ है और उसमें अंबेठी साहब और उनके उस्ताद गंगोही साहब को ज़िन्दीक़ लिखा है) अंबेठी साहब ने कहा हज़रत जो बातें मेरी तरफ निस्बत की गई हैं इफ़्तरा हैं मेरी किताब में नहीं हैं फरमाया तुम्हारी किताब बराहीने क़ातेआ छप कर शाए हो चुकी है और मेरे पास मौजूद है। अंबेठी ने कहा हज़रत क्या कुफ़्र से तौबा कुबूल नहीं होती फरमाया होती है मौलाना ने चाहा किसी मुतर्जिम को बुलाए और बराहीने क़ातेआ

अंबेठी साहब को दिखा कर उन कलिमात का इक़रार करा कर तौबा लें मगर अंबेठी साहब रात ही में जद्दह को फरार हो गये हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल ने हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल को उस वाक़या की इत्तिला का ख़त भेजा और उन्होंने बेऐनेही अपने ख़त में रख कर मुझे भेज दिया वह अब तक मेरे पास महफ़ूज़ है।

तरजमा : बुजुर्गी और अख़्लाक़ और मुहब्बते जमीला वाले हज़रत सैयद इस्माईल आफ़न्दी हाफ़िज़ुल-कुतुब, आया हमारे पास आज से पहले एक शख़्स हिन्दी जिसको ख़लील अहमद कहा जाता है हमराही में बाज़ उलमाए हिन्द की जो मक्का में मुजावर हैं मेहरबान करना चाहता था हमारे दिल को अपने ऊपर इसलिए कि उसे ख़बर पहुंची कि मैं सख़्त नाराज़ हूं उस पर, पस ऐ मेरे सरदार मुझे ख़बर पहुंची है कि आप मुझ पर नाराज़ हैं यह आना उस का उस सबसे था कि जो कुछ उस से बराहीने क़ातेआ में वाक़े हुआ था उसको मैंने हज़रत अमीर हिफ़्ज़ुल्लाह से ज़िक्र कर दिया था पस मैंने उस से कहा शायद तू ख़लील अहमद अंबेठी है कहा हां मैंने कहा तुझ पर अफसोस है तू क्योंकर कहता है बराहीने क़ातेआ में यह गन्दी बातें और जाइज़ रखता है तू किज़्ब, अल्लाह जल्ला जलालुहू पर क्योंकर न नाराज़ हूं मैं तुझ पर और अलबत्ता तहक़ीक़ लिख चुका हूं मैं तुझ को उनके बराबर ज़िन्दीक़ और किस तरह उज़्र करता है और इंकार करता है हालांकि बराहीने क़ातेआ छप कर तेरी जानिब से शाए हो चुकी है पस कहा ऐ सरदार वह किताब तो मेरी है मगर उसमें इमकाने किज़्ब का मस्अला नहीं है और अगर है उसमें तो मैं तौबा करता हूं और उसमें जो कुछ मुख़ालिफ़त मज़हबे अह्ले सुन्नत वल-जमाअत है उस से रुजूअ़ करता हूं पस मैंने कहा बेशक अल्लाह तौबा करने वालों को दोस्त रखता है और बराहीन मेरे पास मौजूद है अभी निकालता हूं वह कि जिसका तूने इंकार किया है और जुरअत की तूने अल्लाह जल्ला शानुहू पर तू उज़्र व खुशामद करने लगा और बोला अगर वह बराहीने क़ातेआ में है तो मुझ पर इफ़्तरा है और मैं मुसलमान मूवंह्हिद सुन्नी हूं मैंने उस में यह कहा न कुछ और जो मुख़ालिफ़त मज़हब अह्ले सुन्नत है मुझे तअज्जुब हुआ क्योंकर इंकार करता है इस बात का जो छापी जा चुकी उसके रिसाला बराहीने क़ातेआ में कि ज़बान हिन्दी में तबअ़ हुई और मुझ पर

खुल गया कि वह यह बातें तक़िया से कहता है गोया वह मिस्ल रवाफ़िज़ के है जो तक़िया को वाजिब जानते हैं और मैंने इरादा किया कि बराहीने क़ातेआ लाऊं और उस शख़्स को बुलाऊं जो उस ज़बान को समझता है ताकि उस से इक़रार लूं उसका जो कुछ कि बराहीने क़ातेआ में है। और तौबा लूं लेकिन वह हमारे पास आने के दूसरे दिन जद्दह को भाग गया वलाहौला वला कुव्वता इल्लाह बिल्लाह हम ने दोस्त रखा, ख़बरदार करना उस वाक़या पर और आप हमेशा रहें। मुहम्मद सालेह कमाल 28 ज़िल-हिज्जा 1323 हिज०।

सुबह को हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल फ़क़ीर के पास तशरीफ़ लाए और खुद यह वाक़या बयान किया और फरमाया। मैंने सुना कि वह रात ही में भाग गया मैंने कहा मौलाना आपने भगा दिया फरमाया मैंने कहा हां आपने। फरमाया यह क्योंकर मैंने अर्ज़ किया जब उसने आपसे पूछा कि क्या काफिर की तौबा क़ुबूल नहीं होती आपने क्या फ़रमाया। फ़रमाया मैंने कहा होती है। मैंने कहा उसी ने उसे भगाया आपको यह फरमाना था कि जो रसूलुल्लाह सल्ल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तौहीन करे उसकी तोबा क़ुबूल नहीं। फ़रमाया वल्लाह यह मुझ से रह गई मैंने कहा तो आप ही ने भगाया ज़माना क़्याम में उलमा उज़्मा मक्का मुअज़्ज़मा ने बकसरत फ़क़ीर की दावतें बड़े एहतमाम से कीं हर दावत में उलमा का मज्मा होता मुज़ाकराते इल्मीया रहते शैख़ अब्दुल-क़ादिर कुरदी मौलाना शैख़ सालेह कमाल के शागिर्द थे मस्जिदुल-हराम शरीफ़ के एहाते ही में उनका मकान था उन्होंने तक़र्रुर दावत से पहले बाइसरार ताम पूछा कि तुझे किया चीज़ मरग़ूब है हर चन्द उज़्र किया न माना आख़िर गुज़ारिश की कि अल-हलवल-बारिदु शीरीं सर्द, उनके यहां दावत में अनवा अतइमा जैसे और जगह होते थे उन के अलावा एक अजीब नफीस चीज़ पाई कि इस अल-हलवल-बारिदु की पूरी मिस्दाक़ थी निहायत शीरीं व सर्द और खुश ज़ाइक़ा उन से पूछा कि उसका क्या नाम है कहा रज़ियल-वालिदैन और वज्हे तस्मिया यह बताई कि जिसके मां-बाप नाराज़ हों यह पका कर खिलाए राजी हो जाएंगे फ़क़ीर दावतों के अलावा चार जगह मिलने को जाता मौलाना शैख़ सालेह कमाल और शैखुल-उलमा मौलाना मुहम्मद सईद बा बसील और मौलाना अब्दुल-हक़ मुहाजिर इलाहाबादी और

कुतुबख़ाने में मौलाना सैयद इस्माईल के पास रहमतुल्लाहि अलैहिम अज्मईन यह हज़रात और बाक़ी तमाम हज़रात फिरोदगाह फ़क़ीर पर तशरीफ़ लाया करते सुबह से निस्फ़ शब के क़रीब तक मुलाक़ातों ही में वक़्त सर्फ़ होता मौलाना शैख़ सालेह कमाल की तशरीफ़ आवरी की तो गिनती नहीं और मौलाना सैयद इस्माईल इल्तिज़ामन रोज़ाना तशरीफ़ लाते खुसूसन अय्यामे अलालत में कि यकुम मुहर्रम १३२४ हिज० से सल्ख़ मुहर्रम तक मुसलसल रही दिन में दोबार भी तशरीफ़ लाते और एक बार का आना तो नाग़ा ही न होता आख़िर मुहर्रम में कि तबीअत बहुत रूबा सेहत हो गई थी एक ज़रूरत के सबब दो रोज़ तशरीफ़ लाना न हुआ इन दो रोज़ में मेरा उनकी तरफ़ इश्तियाक़ में ही जानता हूं मैंने उन से सैयद जलील को एक परचा पर यह तीन शेअ्र लिख भेजे।

तरजमा अशआर : (1) यह दो दिन हैं कि हमें दीदार न मिला और हम में ताक़त होती तो सर से आते (2) लोग कहते हैं लिक़ा ख़लील शिफ़ा अलील है यानी दोस्त का आना मरज़ का जाना है क्या आप हमारे मरज़ की शिफ़ा नहीं चाहते। (3) आपने हमें आदी कर दिया कि हर चाश्त को सूरज तुलअ् करे और आपने किसी करीम को सुना है कि करम क़तअ् करे।

इस रुक़्आ को देख कर सैयद मौसूफ़ की जो कैफ़ियत हुई हामिले रुक़्आ ने देखी फौरन उसके साथ ही तशरीफ़ ले आए और फिर रोज़े रुख़्सत तक कोई दिन ख़ाली जाना मुझे याद नहीं। हज़रत मौलाना अब्दुल-हक़ इलाहाबादी को चालीस साल से ज़ाइद मक्का मुअज़्ज़मा में गुज़रे थे कभी शरीफ़ के यहां भी तशरीफ़ न ले गये क़्यामगाह फ़क़ीर पर दोबार तशरीफ़ लाए मौलाना सैयद इस्माईल वग़ैरह उनके तलामिज़ा फरमाते थे कि यह महज़ ख़र्क़े आदत है मौलाना कादिम बसा ग़नीमत था हिन्दी थे मगर उनके अनवार मक्का में चमक रहे थे इल्तिज़ामन हर साल हज करते मौलाना सैयद इस्माईल फरमाते थे कि साल ज़माना हज में हज़रत मौलाना अब्दुल-हक़ साहब बहुत अलील और साहिबे फराश थे नवीं तारीख़ अपने तलामिज़ा से कहा मुझे हरम शरीफ़ में ले चलो कई आदमी उठा कर लाए काबा मुअज़्ज़मा के सामने बिठाया ज़मज़म शरीफ़ मंगा कर पिया और दुआ कि कि इलाही हज से महरूम न रख उसी वक़्त मौला तआला ने ऐसी कुव्वत अता फरमाई कि उठ कर अपने पाँव से अरफ़ात शरीफ़ गये और हज अदा किया मक्का

मुअज़्ज़मा में बनाम इल्म कोई साहब ऐसे न थे जो फ़क़ीर से मिलने न आए हों सिवा शैख़ अब्दुल्लाह बिन सिद्दीक़ बिन अब्बास के कि उस वक़्त मुफ़्ती हन्फ़ीया थे और वहां मुफ़्ती हन्फ़ीया का मन्सब शरीफ़ से दूसरे दर्जे में समझा जाता है अपने मन्सब की जलालते क़द्र ने उन्हें फ़क़ीर ग़रीबुल-वतन के पास आने से रोका अपने एक शागिर्द ख़ास को फ़क़ीर के पास भेजा कि हज़रत मुफ़्ती हन्फ़ीया ने बाद सलाम फरमाया है कि मैं आपकी ज़्यारत का बहुत मुश्ताक़ हूं मौलाना सैयद इस्माई उस वक़्त मेरे पास बैठे थे मैं चाहा कि हाज़िरी का वादा करूं मगर अल्लाह आलम हबीबे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के करम ने उन अकाबिर क दिल में ज़र्रह बेमिक़्दार की कैसी उक़अत डाली थी फौरन रोका और फरमाया वल्लाह यह न होगा तमाम उलमा मिलने आए हैं वह क्यों नहीं आते मैं उनकी क़सम के सबब मजबूर रहा मगर तक़्दीरे इलाही में उन से मिलना था और नई शान से था उसका ज़रिया यह हुआ कि उन्हीं दिनों में मौलाना अब्दुल्लाह मुरदाद मौलाना हामिद अहमद मुहम्मद जदावी ने नोट के बारे में फ़क़ीर से इस्तिफ़्ता किया था जिस में बारह सवाल थे और मैंने बकमाल इस्तेअ्जाल उसके जवाब में *रिसाला किफ़्लुल-फ़क़ीह अल-फ़ाहिम फ़ी अहकामे क़िरतासुद्दराहिम।* तस्नीफ़ किया था वह तबईज़ के लिए हरम शरीफ़ के कुतुब ख़ाने में सैयद मुस्तफ़ा बिरादरे खुर्द मौलाना सैयद इस्माईल के पास था कि निहायत जमीलुल-ख़त हैं ज़माना साबिक़ में जब मेरे उस्तादुल-उस्ताद हज़रत मौलाना जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर मक्की रहमतुल्लाह तआला अलैहि मुफ़्ती हन्फ़ीया थे उन से नोट के बारे में सवाल हुआ था और जवाब तहरीर फ़रमाया था कि इल्म गर्दनों उलमा में अमानत है मुझे उसके जुज़िए का कोई पता नहीं चलता कि कुछ हुक्म दूं एक दिन मैं कुतुब ख़ाना में जाता और एक शानदार साहब को बैठे देखता हूं कि मेरा रिसाला किफ़्लुल-फ़क़ीह मुताला कर रहे हैं जब उस मक़ाम पर पहुंचे जहाँ मैंने फतहुल-क़दीर से यह इबारत नक़ल की है अगर कोई शख़्स अपने एक काग़ज़ का टुकड़ा हज़ार रुपये को बेचे तो जाइज़ है मक्रूह नहीं भड़क उठे और अपनी रान पर हाथ मार कर बोले *ऐना जमाल इब्ने अब्दुल्लाह मिन हाज़न्नस्से अस्सरीह*। हज़रत जमाल बिन अब्दुल्लाह उस नस्से सरीह से कहां ग़ाफ़िल रहे फिर कोई मसअला

देखना था उसके लिए किताबें निकलवाएं उनकी इबारतें निकाल कर नक़ल करना चाहते थे और मैं रिसाला की नक़ल की तस्हीह कर रहा था उस वक़्त तक न उन्होंने मुझे जाना है न मैंने उन को इतने में उन्होंने दवात एक ऐसी किताब पर रख दी जिसे न देख रहे थे न उस से कुछ नक़ल कर रहे थे मैंने उन पर न एतराज़ किया बल्कि किताब की ताज़ीम के लिए उतार कर नीचे रख दी उन्होंने फिर उठा कर किताब पर रख दी और कहा बहरुर्राइक़ किताबुल-कराहियते में उसके जवाज़ की तस्रीह है मैं ने उन से यह तो न कहा कि बहरुर्राइक़ किताबुल-कराहियते तक कब पहुंची वह किताबुल-क़ज़ा ही में ख़त्म हो गई है हां यह कहा कि ऐसा नहीं बल्कि मुमानअत की तस्रीह फरमाई है मगर लिखते वक़्त बज़रूरत मसलन वर्क़ हवा से उड़ें नहीं। कहा कि मैं लिखना ही तो चाहता हूं मैंने कहा अभी लिखते तो नहीं हो वह ख़ामोश हो रहे और हज़रत सैयद इस्माईल से मुझे पूछा उन्होंने फरमाया कि यही इस रिसाला का मुसन्निफ़ है अब मिले मगर ख़जलत के साथ और उजलत के साथ उठ गये हज़रत सैयद इस्माईल ने फ़रमाया सुबहानल्लाह यह कैसा वाक़्या हुआ यह चहारुम सफर १३२४ हिज० थी इस से पहले मुहर्रम शरीफ़ में शदीद मदीद दौरा बुख़ार का रह चुका था दोबार मुसहल हुए एक बार एक हिन्दी की राय से और नफ़अ् न हुआ दोबारा एक तुर्की डॉक्टर रमज़ान आफ़न्दी ने बहुत क़लील मिक़्दार में एक नमक दिया कि आबे ज़मज़म शरीफ़ में मिला कर पी लो और प्यास बे प्यास ज़मज़म शरीफ़ की कसरत करो उस से वहम्दुलिल्लाह तआला बहुत नफ़ा हुआ और उन्होंने दवा वह बताई जो मुझे बित्तबअ् महबूब व मरग़ूब थी यानी ज़मज़म शरीफ़ कि मुझे हर मशरूब से ज़्यादा अज़ीज़ है मेरी आदत है कि बासी पानी कभी नहीं पीता और अगर पियूं तो बा आंकि मिज़ाज गर्म है फौरन ज़ुकाम हो जाता है मेरी पैदाइश से पहले हकीम सैयद वज़ीर अली मरहूम ने मेरे यहाँ बासी को मना कर दिया था जब से मामूल है कि रात के घड़े बिल्कुल ख़ाली करके पीने का पानी पिया जाता है तो मैंने दूध भी बासी पानी का न पिया न कभी नहार मुँह पानी पीता हूँ न कभी खाने के सिवा और वक़्त में गर्मियों की सेह पहर में जो प्यास होती है उसमें कुल्लिया करता हूं उस से तस्कीन होती है मगर ज़मज़म शरीफ़ की बरकत कि

सेहत में मरज़ में दिन में रात में ताज़ा बासी वकसरत पिया और नफ़ा है क्या ज़ूरक़ीं हर वक़्त भरी रखी रही थीं बुख़ार की शिद्दत में रात को जब आंख खुली कुल्ली करके ज़मज़म शरीफ़ पी ली सुवह वुज़ू से पहले पीता वुज़ू के बाद पीता बारह-बारह ज़ूरक़ीं एक दिन रात में सिर्फ़ मेरे सिर्फ़ में आतीं पौने तीन महीने के क़याम मक्का मुअज़्ज़मा में मैंने हिसाव किया तो तक़रीबन चार मन ज़मज़म शरीफ़ मेरे पीने में आया होगा हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल को अल्लाह तआला जन्नाते आलिया नसीव फरमाए मेरी वापसी हज के चन्द साल बाद जब १३२८ हिज० में मुझ से मिलने आए हैं और मेरे शौक़ ज़मज़म का ज़िक्र हुआ फरमाया था कि हर महीने इतने तुनक यानी पीपे भेज दिया करूंगा कि तुम्हारे एक महीने के सर्फ़ को काफी हूं मगर यहां से जाते ही उन्हें सफर बाबे आली की ज़रूरत हुई और मशीयते इलाही कि वहीं इंतिक़ाल फ़रमाया। *रहमतुल्लाहि अलैहि रहमतुन वासेअतुन।*

मुहर्रम शरीफ़ मुझे तक़रीबन बुख़ार ही में गुज़रा उसी हालत में उलमाए किराम को इजाज़ात लिखी जातीं और उसी हालत में किफ़्लुल-फ़क़ीह तस्नीफ़ हुआ वहां पलंग का भी रिवाज नहीं वालाख़ानों में ज़मीन पर फ़र्श हैं उस पर सोते हैं मगर हज़रत सैयद इस्माईल व हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल रहमहमल्लाहु तआला ने मेरे लिए एक उम्दा पलंग मंगवा दिया था अय्यामे मरज़ में उसी पर होता और उलमा उज़्मा अयादत को आते और फ़र्श पर तशरीफ़ रखते हैं उस से नादिम होता हर चन्द चाहता कि नीचे उतरूं मगर क़समों से मजबूर फरमाते इम्तिदादे मरज़ में मुझे ज़्यादा फ़िक्र हाज़िरी सरकारे आज़म की थी जव बुख़ार को इम्तिदाद देखा मैंने उसी हालत में क़स्दे हाज़िरी किया यह उलमा माने हुए अव्वल तो यह फरमाया कि हालत तुम्हारी यह है और सफर तवील मैंने अर्ज़ की अगर सच पूछिए तो हाज़िरी का असल मक़्सूद ज़्यारते तैबा है दोनों बार इसी नीयत से घर से चला मआज़ल्लाह अगर यह न हो तो हज का कुछ लुत्फ़ नहीं उन्होंने फिर इसरार और मेरी हालत का अशआर किया मैंने हदीस *मन हज्जा वलम यज़ुरनी फ़क़द जफ़ानी*। पढ़ी फरमाया तुम एक वार तो ज़्यारते शरीफ़ कर चुके हो मैंने कहा मेरे नज़्दीक हदीस का मतलव नहीं कि उमर में कितने ही हज करे ज़्यारत एक बार काफी है वल्कि हर हज के साथ

ज़्यारत ज़रूरी है अव आप दुआ फरमाइए कि मैं सरकार तक पहुंच लूं रौज़-ए-अक़्दस पर एक निगाह पड़ जाए अगरचे उसी वक़्त दम निकल जाए हज़रत मौलाना सालेह कमाल को अल्लाह तआला जन्नाते आलिया अता फरमाए वआन फज़्ल व कमाल कि मेरे नज़्दीक मक्का मुअज़्ज़मा में उनके पाए का दूसरा आलिम न था इस फ़क़ीर हक़ीर के साथ ग़ायत एज़ाज़ वल्कि अदव का वर्ताव रखते वार-वार के इसरार के साथ मुझ से इजाज़त नामा लिखवाया जिसे मैं ने अदवन कई रोज़ टाला जव मज्बूर फरमाया लिख दिया तीन-तीन पहर मेरी उनकी मजालिसत होती और उसमें सिवा मुज़ाकराते इल्मीया के कुछ न होता जिस ज़माना में क़ाज़ी मुअज़्ज़मा रहे थे उस वक़्त के अपने फ़ैसलों के मस्अले दरयाफ़्त फरमाते हक़ीर जो वयान करता अगर उनके फ़ैसला के मुवाफ़िक़ होता वशाशत व खुशी का असर चेहरा मुवारक पर ज़ाहिर होता और मुख़ालिफ़ होता तो मलाल व कवीदगी और यह समझते कि मुझ से हुक्म में लग़्ज़िश हुई मुझे भी उन दोनों साहिवों के करम के सवव उन से कमाल वेतकल्लुफ़ी, हर क़िस्म की वात गुज़ारिश कर देता एक वार कहा मुअज़्ज़िनों ने जो अज़ान व इक़ामत व तक्वीरात इंतिक़ाल में नग़मात ईजाद किए हैं आप हज़रात उन से मना नहीं फरमाते फतहुल-क़दीर में मुवल्लिग़ (यानी मुकब्बिर) के नग़मों को मुफ़्सिदे नमाज़ लिखा है और यह कि उसकी तक्वीरात पर जो मुक़्तदी रुकूअ् व सुजूद वग़ैरह अफ़्आले नमाज़ करेगा उसकी नमाज़ न होगी फ़रमाया हुक्म यही है मगर उन पर उलमा का वस नहीं यह जानिव सलतनत से हैं एक जुमा में ख़तीव के क़रीव था उसने खुतवा में पढ़ा। *व अरज़ा अन आमाम नवीयेका इल्ला ताइव हमज़ा वल-अब्वास व अवी तालिव*। यह विदअत ताज़ा ईजाद हुई पहली वार की हाज़िरी में न थी और यह विदाहतन जानिवे हुकमत से थी उसे सुनते ही फौरन मेरी ज़वान से वआवाज़ वुलन्द निकला *अल्लाहुम्मा* हाज़ा मुंकर कि नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है : *मन रआ मिनकुम मुंकरन फल- युग़ैयरहू वेयदेही फइन लम यस्ततअ् फ़वेलसानेही फइन लम यस्ततीअ् फ़वेक़ल्वेही व ज़ालिका अज़अफ़ुल-ईमान।* फ़क़ीर वेतौफ़ीक़ रव्वे करीम यह हुक्म अहकम वरूजा औसत बजा लाया और मौला तआला की रहमत कि किसी को तअर्रुज़ की जुरअत न हुई फ़र्ज़ों के

Scanned by CamScanner

वाद एक आरावी ने मेरी तरफ़ मुतवज्जोह हो कर कहा रऐतु तुमने देखा मैंने कहा रऐतु हां देखा कहा : *ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल-अलीयिल- अज़ीम।* और तशरीफ़ ले गये उन दोनों अकाविर उलमा ने हमारी मज्लिसे ख़लवत में उसकी मुवारकवाद दी कि उस रद्दे मुंकर पर कोई मोतरिज़ न हुआ और साथ ही फरमाया कि ऐसे उमूर में कि जानिवे हुकूमत से हैं सुकूत शायां है।

इसी वाक़या मुफ़्ती हन्फ़ीया के वक़्त मैंने जनाव सैयद मुस्तफ़ा ख़लील विरादर हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल से कहा : *हल इन्दकुम शैयुन मिन हज़मुहू जिब्रील।* आपके पास सैयदना जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ठोकर का कुछ वक़िया है सैयद ज़ादे ने फरमाया नेअम और कटोरे में ज़मज़म शरीफ़ लाए मैं उसे ज़ुअफ के सवव वैठा ही हुआ पी रहा था आंखें नीची थीं जव नज़र उठाई देखा तो वह सैयद जलील मुअद्दव हाथ वांधे खड़े हैं यहां तक कि कटोरा मैंने उन्हें दिया यह हाल उन मुअज़्ज़म व मुअज़्ज़ज़ वन्दगाने खुदा के अदव व इजलाल का था वई हमा शिद्दते मरज़ व शौक़ मदीना तैयवा में जव वह जुमला मैंने कहा कि रौज़-ए-अनवर पर एक निगाह पड़ जाए फिर दम निकल जाए दोनों उलमाए किराम का गुस्सा से रंग मुतग़ैयर हो गया और हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल ने फरमाया हरगिज़ नहीं वल्कि *तऊदु सुम्मा तऊदु सुम्मा तऊदु सुम्मा यकूनु* तो रौज़-ए-अनवर पर अव हाज़िर हो फिर हाज़िर हो फिर हाज़िर हो फिर हाज़िर हो फिर मदीना तैयवा में वफ़ात नसीव हो मौला तआला उनकी दुआ कुवूल फरमाए उनकी इस ग़ायते मुहब्वत के गुस्सा ने मुझे वह हालत याद दिलाई जो इस हज से तेरह चौदह वरस पहले मैंने ख़्वाव में अपने हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसल्लाहु सिर्रुहुल-अज़ीज़ से देखी थी मैं उस ज़माना में वशिद्दते दर्द कमर और सीना में मुवतला था उसे वहुत इम्तिदाद व इश्तिदाद हुआ था एक रोज़ देखा कि मेरे पीर भाई और हज़रत के शागिर्द वरकात अहमद साहव मरहूम कि मेरे पीर भाई और हज़रत पीर मुर्शिदे वरहक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के फिदाई थे कम ऐसा हुआ होगा कि हज़रत पीर मुर्शिद का नामे पाक लेते और उनके आंसू रवां न होते जव उनका इंतिक़ाल हुआ और मैं दफन के वक़्त उनकी क़ब्र में उतरा मुझे विला मुवालग़ा वह खुशवू महसूस हुई जो पहली वार रौज़-ए-अनवर के क़रीव पाई थी

उनके इंतिक़ाल के दिन मोलवी सैयद अमीर अहमद साहब मरहूम ख़्वाब में ज़्यारते अक़्दस हुज़ूर सैयद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशर्रफ़ हुए कि घोड़े पर तशरीफ़ लिए जाते हैं अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हुज़ूर कहां तशरीफ़ लिए जाते हैं फरमाया वरकात अहमद के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने अल्हम्दुलिल्लाह यह जनाज़ा मुवारका मैंने पढ़ाया और यह वही वरकात अहमद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम थीं कि मुहब्वत पीर व मुर्शिद के सवव उन्हें हासिल हुई। *ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मन यशाओ वल्लाहु ज़ुल-फ़ज़लिल-अज़ीम।* हां तो इस ख़्वाव में देखा कि मोलवी वरकात अहमद साहव भी हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहुल-अज़ीज़ के हमराह मेरी अयादत को तशरीफ़ लाए हैं दोनों हज़रात ने मिज़ाज पुर्सी फरमाई मैं शिद्दते मरज़ से तंग आ चुका था ज़वान से निकला कि हज़रत दुआ फरमाएं कि अव ख़ातमा ईमान पर हो जाए यह सुनते ही हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहू अश्शरीफ़ का रंग मुवारक सुर्ख़ हो गया और फरमाया अभी तो वावन वरस मदीना शरीफ़ में वल्लाहु आलम इस इरशाद के क्या मानी थे मगर उसके वाद जो दोवारा हाज़िरी मदीना तैयवा हुई है उस वक़्त मुझे वावन वां ही साल था यानी इक्कावन वरस पाँच महीने की उम्र थी यह चौदह वरस की पेश गोई हज़रत ने फरमाई अल्लाह तआला अपने मक़वूल वन्दों को कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के गुलामाने गुलाम के कफ़्श वरदार हैं। उलूमे ग़ैव देता है और वहाविया को जनाव सरकार से इंकार है अभी चन्द साल हुए माहे रजव में हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहू अश्शरीफ़ ख़्वाव में तशरीफ़ लाए और मुझ से फरमाया अव की रमज़ान में मरज़ शदीद होगा रोज़ा न छोड़ना वैसा ही हुआ और हर चन्द तवीव वग़ैरह ने कहा मैंने वहम्दुलिल्लाह तआला रोज़ा न छोड़ा और उसी की वरकत ने वफ़ज़्लेही तआला शिफ़ा दी कि हदीस में इरशाद हुआ है। *सूमू तुहसू* रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे वह हज़रात उलमा वहुत उसके मुतमन्नी रहते कि किसी तरह मेरा वहाँ क़याम ज़ाइद हो हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल ने फरमाया। यहाँ की शिद्दते गर्मी तुम्हारे लिए वाइस तप है तायफ़ शरीफ़ में मौसम निहायत मोतदिल और वहाँ मेरा मकान वहुत पुरफ़िज़ा है चलिए गर्मी का मौसम वहाँ गुज़ारें मैंने गुज़ारिश की कि इस हालते

मरज़ में क़ाबलीयत सफर हो तो सरकारे आज़म ही की हाज़िरी हो हंस कर फरमाया। मेरा मक़सूद यह था कि चन्द महीने वहाँ तन्हाई में रह कर तुम से कुछ पढ़ते कि यहाँ तो आमद व शद के हुजूम से तुम्हें फुर्सत नहीं मौलाना शेख़ सालेह कमाल ने फरमाया इजाज़त हो तो हम यहां तुम्हारी शादी की तज्वीज़ करें मैंने कहा वह कनीज़ बारगाहे इलाही जिस मैं उसके वदरवार में लाया और उस ने मनासिके हज अदा किए। क्या उसका वदला यही है कि मैं उसे यूं मग़मूम करूं फरमाया हमारा ख़्याल यह था कि यूं यहाँ तुम्हारे क़याम का सामान हो जाता इस तूल मरज़ में कई हफ़्ता हाज़िरी मस्जिदे अक़्दस से महरूम रहा कि मैं जिस वालाख़ाने पर था वालीस ज़ीने का था उस से उतरना और चढ़ना मक़्दूर था मस्जिदुल-हराम शरीफ़ में कोई ना आशना सा बुज़ुर्ग मेरे भाई मौलवी मुहम्मद रज़ा ख़ाँ को मिले तो फरमाया कई दिन से तुम्हारे भाई को न देखा उन्होंने अर्ज़ किया अलील हैं पानी दम फरमा कर दिया कि यह पिलाओ अगर बुख़ार बाक़ी है तो मैं दस बजे दिन के तुम को यहीं मिलूंगा दस बजे दिन के न बुख़ार रहा न वह मिले और अब मैं मस्जिद शरीफ़ और कुतुबख़ाना हरम शरीफ़ में हाज़िर होने लगा जिस में चौथी सफर का वह वाक़्या था जो मुफ़्ती हन्फ़ीया के साथ पेश आया नमाज़ सुबह के सिवा कि हमारे नज़्दीक उस में अस्फ़ार यानी वक़्त ख़ूब रौशन करके पढ़ना अफ़ज़ल है और शाफ़ईया के नज़्दीक *तग़लीस* यानी ख़ूब अन्धेरे से पढ़ना तीनों मुसल्लों पर नमाज़ पहले हो जाती है और मुसल्लाए हन्फ़ी पर सबके बाद बाक़ी चारों नमाज़ें सब से पहले मुसल्लाए हन्फ़ी पर होती हैं हमारे इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक वक़्ते असर दो मिस्ल साया गुज़र कर है उसके बाद नमाज़ हन्फ़ी होती उसके बाद बाक़ी तीनों मुसल्लों पर वह लोग अपने लिए उसे बहुत ताख़ीर समझते आख़िर कोशिशें करके हन्फ़ीया से यह करा लिया कि तमाम अस्र मुताबिक़ क़ौले साहिबीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा मिस्ल दोम के शुरू में पढ़ लें उस बार की हाज़िरी में यह जदीद बात देखी अगरचे कुतुबे हन्फ़ीया में यहाँ क़ौले साहिबैन पर भी बाज़ ने फतवे दिया मगर असह व अहवत व अक़्दम क़ौल सैयदना इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु है और फ़क़ीर का मामूल है कि किसी मअस्ला में बेख़ास मजबूरी के क़ौल इमाम से अदूल गवार नहीं

करता जिसकी तफ़्सील जलील मेरे रिसाला *अजलल-ऐलाम बेअन्नल-फ़तवा मुतलक़न अला क़ौलल-इमाम* में है।

हम हन्फ़ी हैं न कि यूसुफ़ी या शैबानी मैं इस बार जमाअत अस्र में बनीयत नफ़्ल शरीक हो जाता और फ़र्ज़ अस्र मिस्ल दोम के बाद मैं और हज़रत मौलाना शेख़ सालेह कमाल हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल व दीगर बाज़ मुहताती ने हन्फ़ीया अपनी जमाअत से पढ़ते जिस में वह हज़रात इमामत पर इस फ़क़ीर को मजबूर फ़रमाते पहले *शेख़ उमर सबही* का मकान किराया पर लिया था फिर सैयद उमर रशीदी इब्ने सैयद अबू बकर रशीदी अपने मकान पर ले गये वालाख़ाने के दर बस्तानी पर मेरी नशिस्त थी दरवाज़ों पर जो ताक़ थे बाएं जानिब के ताक़ में वहशी कबूतरों का एक जोड़ा रहता वह तिनके लाते और गिराया करते उस तरफ़ के बैठने वालों पर गिरते जब अलालत में मेरे लिए पलंग लाया गया वह उस दर के सामने बिछाया गया कि तशरीफ़ लाने वालों के लिए जगह वसीअ् रहे उस वक़्त से कबूतरों ने वह ताक़ छोड़ कर दरवाज़ा बस्तानी के ताक़ में बैठना शुरू किया कि अब जो वहाँ बैठते उन पर तिनके गिरते हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल ने फरमाया वहशी कबूतर भी तेरा लिहाज़ करते हैं मैंने अर्ज़ की *सालेहनाहुम फ़सालेहूना।* हम ने उन से सुलह की तो उन्होंने भी हम से सुलह की उस पर बाज़ उलमा-ए-हाज़िरीन ने फरमाया कि हम पर क्यों तिनके फेकते हैं हम ने उन से कौन सी जंग की है मैं ने कहा मैं यहां लोगों को देखता हूं कि यह जहां आ कर बैठते हैं उन्हें उड़ाते हैं कंकरियां मारते हैं सलामियों की तोपें जब छूटती हैं यह ख़ौफ़ से थर थरा थर थरा कर रह जाते हैं यह सब मेरा मुशाहिदा है हालांकि यह हरमे मोहतरम के वहशी हैं उन्हें उड़ाना या डराना मना है पेड़ के साया में हरम का हिरन बैठता हो आदमी को इजाज़त नहीं कि उसे उठा कर खुद बैठे उन आलिम ने फरमाया यह कबूतर ईज़ा देते हैं ऊपर से कंकरियां फेकते हैं लैम्प की चिमनी तोड़ देते हैं मैंने कहा क्या यह इब्तिदा बिल-ईज़ा करते हैं कहा हां मैंने कहा तो फ़ासिक़ हुए और कबूतर बिल-इज्मा फासिक़ नहीं चील कव्वे फ़ासिक़ हैं वह साकित हो गये शरीअत में वह जानवर फासिक़ है जो बेग़ैर अपने नफ़ा के बिल-क़स्द इब्तिदाअन ईज़ा पहुंचाए ऐसे जानवर का क़त्ल हरम शरीफ़ में भी जाइज़ है जैसे चील कव्वा

बन्दर चूहा चील कव्वे ज़ेवर उठा कर ले जाते हैं, बन्दर कपड़े फाड़ डालते हैं चूहे किताबें कतरते हैं जिसमें उनका कोई नफ़ा नहीं महज़ बराहे शरारत ईज़ा देते हैं लिहाज़ा फासिक़ हैं बख़िलाफ़ बिल्ली के कि अगरचे मुर्ग़ी पकड़ती कबूतर तोड़ती है मगर अपनी ग़िज़ा के लिए न तुम्हारी ईज़ा के लिए कंकरियां अगर ताक़ में हों कबूतर के चलने फिरने से गिरेंगी न यह कि चिमनी पर कंकरी मारना उन्हें मक़सूद हो इस किस्म के वक़ाए बहुत थे कि याद नहीं अगर उसी वक़्त मज्बूत कर लिए जाते महफ़ूज़ रहते मगर उसका हमारे साथियों में से किसी को एहसास भी न था जब अवाख़िरे मुहर्रम में बफ़ज़्लेही तआला सेहत हुई वहां एक सुल्तानी हम्माम है मैं उसमें नहाया बाहर निकला हूं कि अब्र देखा हरम शरीफ़ पहुंचते-पहुंचते बरसना शुरू हुआ मुझे हदीस याद आई कि जो मेंह बरसते में तवाफ़ करे वह रहमते इलाही में तैरता है फ़ौरन संगे असवद का बोसा लेकर बारिश ही में सात फेरे तवाफ़ किया बुख़ार फिर ऊद कर आया मौलाना सैयद इस्माईल ने फ़रमाया एक ज़ईफ़ हदीस के लिए तुम ने अपने बदन की यह बेएहतियाती की मैंने कहा हदीस ज़ईफ़ है मगर उम्मीद बहम्दुलिल्लाह तआला क़वी है यह तवाफ़ बेहम्देही तआला बहुत मज़े का था बारिश के सबब ताएफ़ीन की वह कसरत न थी और उस से भी ज़्यादा लुत्फ़ का तवाफ़ बेफ़ज़्लेही अज़्ज़ा व जल ग्यारहवीं ज़िल-हिज्जा को नसीब हुआ था तवाफ़े ज़ियारत के लिए कि बाद वकूफ़े अरफ़ा फ़र्ज़ है आम हुज्जाज दसवीं ही को, मिना से मक्का मुअज़्ज़मा जाते हैं मेरे साथ मस्तूरात थीं और खुद भी बुख़ार उठाए हुए था ग्यारहवीं को बाद ज़वाल रमी जिमार करके ऊंटों पर मआ मस्तूरात रवाना हुआ हरम शरीफ़ में नमाज़े अस्र अदा की आज तमाम हुज्जाज मिना मे थे हरम शरीफ़ में सिर्फ़ पचीस तीस आदमी, यह तवाफ़ निहायत इत्मीनान से हुआ हर बार जी भर कर संगे असवद शरीफ़ पर मुंह मलना और बोसा लेना नसीब होता एक अरबी साहब को जिन्हें पहचानता नहीं मौला तआला ने वे कहे मेहरबान फरमा दिया कि हर फेरे के ख़त्म पर चन्द आदमी जो तवाफ कर रहे थे उन्हें रोक कर खड़े हो जाते कि बहनों को संगे असवद शरीफ़ का बोसा लेने दूं यूं हर फेरे पर मेरे साथ की मस्तूरात भी मुशर्रफ़ बा बोस-ए-संगे अक़्दस हुईं। *वल-हम्दुलिल्लाह व तक़ब्बल अल्लाह* बाद ख़त्म तवाफ़, मैं दीवारे काबा

मुअज़्ज़मा से लिपटा और ग़िलाफ़े मुबारक हाथ में लेकर यह दुआ अर्ज़ करनी शुरू की। *या वाजिदु या माजिदु ला तज़िल अन्नी नेअ्मतन अनअमतहा अलैया।* और बहुत पुर कैफ़ रिक़्क़त तारी हुई कि आज़ादी और यक्सूई थी मगर थोड़ी देर के बाद एक अरबी साहब मेरे बराबर आकर खड़े हुए और बआवाज़ चिल्ला कर रोना शुरू किया उन के चिल्लाने से कुछ तबीअ़त बटी फिर ख़्याल आया मुम्किन कि यह मक़्बूलाने बारगाह से हों और उनके क़ुर्ब का फ़ैज़ मुझ पर तजल्ली डाले इस तसव्वुर से फिर इत्मीनान हो गया मग़्रिब पढ़ कर मिना को वापस आए इस तक़रीबन तीन महीने के क़्याम में, मैं ने ख़्याल किया कि हदीस में किसी की सनद मेरी सनद से आली हो तो मैं उन से सनद लेकर उलू हासिल करूं मगर बफ़ज़्लेही तआला तमाम उलमा से मेरी ही सनद आली थी यह भी ख़्याल किया कि यह शहर करीम तमाम जहान का मरज्जा व मल्जा है अह्ले मग़्रिब भी यहां आते हैं मुम्किन कि कोई साहब जफ़रदाँ मिल जाएं कि उन से इस फन की तक्मील की जाए एक साहब मालूम हुए कि जफर में मशहूर हैं नाम पूछा मालूम हआ मौलाना अब्दुर्रहमान दह्हान हज़रत मौलाना अहमद सहान मक्की के छोटे साहबज़ादे मैं नाम सुन कर इसलिए खुश हुआ कि यह और उनके बड़े भाई साहब मौलाना असअद दह्हान कि अब क़ाज़ी मक्का मुअज़्ज़मा है मुझ से सनद हदीस ले चुके थे मैंने मौलाना अब्दुर्रहमान को बुलाया वह तशरीफ़ लाए कई घन्टे ख़ल्वत रही जिसका नतीजा यह हुआ कि क़ायदा जो उनके पास नाक़िस था क़दरे उसकी तक्मील हो गई उसी के क़रीब सरकार मदीना तैयबा में वाक़े हुआ वहां भी एक साहब अब्दुर्रहमान नाम ही के मिले यह अब्दुर्रहमान दह्हान अरबी मक्की हैं और वह अब्दुर्रहमान आफ़न्दी तुर्की शामी, कई रोज़ मुत्तसिल तशरीफ़ लाते और देर तक बैठ कर चले जाते हुजूम हज़रात अह्ले इल्म व मुअज़्ज़ेज़ीन के सबब उन्हें बात का मौक़ा न मिलता एक दिन मैंने उन से ग़रज़ पूछी कहा तन्हाई में कहूंगा दूसरे दिन उनके लिए वक़्त निकाला कहा मैं जफर में कुछ बातें करना चाहता हूं उसका नतीजा यह हुआ कि उन्होंने फरमाया यहां न मेरा अब ज़्यादा क़्याम है न तेरा मैं ख़ास उसकी तहसील को तेरे पास हिन्दुस्तान में आऊंगा वह तो न आए मगर मौलाना सैयद हुसैन मदनी साहबज़ादे हज़रत मौलाना सैयद

अब्दुल-क़ादिर शामी मदनी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तशरीफ़ लाए और चौदह महीने फ़क़ीर ख़ाने पर क़याम फरमाया और यह इल्म और इल्मे औफ़ाक़ व तक्सीर सीखे उन्हीं के लिए मैंने अपना रिसाला *अताइबुल-अक्सीर फ़ी इल्मित्तक्सीर* जुबाने अरवी में इमला किया यानी मैं इवारत ज़वानी वोलता और वह लिखते जाते और उसी लिखने में उसे समझते जाते इल्मे जफर में इतनी दस्तगाह हो गई थी कि पांच सवालों में दो का जवाव सही निकाल लेते कि उनके लिए मैंने इस इल्म से इजाज़त तालीम का सवाल पहले कर लिया था और जवाव मिला कि ज़रूर वताओ कि यह उसी के वास्ते इतनी दूर से सफर करके आए हैं अगर चन्द महीने और रहते तो उम्मीद थी कि सब जवाव सही निकालने लगते मैंने जो जदावले कसीरह इस फन की तक्मीले जलील के लिए अपनी तवग़राद, ईजाद की थीं रुख़्सत के वक़्त उन्हें नज़ कर दीं कि इस फन के तर्क का क़स्द कर लिया था जिस वजह से सवालों की कसरत से लोगों का परेशान करना था और विल-खुसूस यह अजीव वाक़या कि एक अमीर कवीर की वेगम वीमार हुई जिनका मज़हव सुन्नी न था उन्होंने मेरे आक़ा ज़ादे हज़रत सैयदना सैयद शाह मेहदी हसन मियाँ साहव दामत वरकातुहुम के ज़रिया से सवाल कराया जवाव निकला सुन्नियत अख़्तियार करें वरना शिफ़ा नहीं और इस फन का हुक्म है कि जो जवाव निकले विला रू रिआयत साफ़ कह दिया जाए मैंने यही लिख भेजा यह मन्ज़ूर न हुआ और मरज़ वढ़ता गया अव हज़रत ही के ज़रिया से यह सवाल आया कि मौत कव और कहाँ होगी अपने शहर में या नैनी ताल पर कि उस वक़्त तब्दील आव व हवा के लिए मरीज़ा का वहीं क़याम था यह सवाल ८ शव्वालुल-मुकर्रम १३२८ हिज० को हुआ जो जवाव निकला मुहर्रम मुहर्रम यानी माहे मुहर्रम में मौत होगी और कहां होगी उसके जवाव में, मैंने उनके शहर के नाम का पहला हरफ़ और उसके वाद क़ और उसके वाद दो का हिन्दसा और आगे लफ़्ज़ खुवेश लिख दिया वहां के जफार वुलाए गये कि इस मुअम्मे को हल करें उन्होंने हरफ़ नाम शहर से तो शहर मुराद लिया और क़ाफ़ से क़िला और आगे नहीं चलता हालांकि उस हरफ़ से शहर मुराद था और क़ाफ़ से क़रीव और दो से हरफ़ व कि अव्वल लफ़्ज़ वैत है यानी मौत नैनी ताल में न होगी वल्कि अपने शहर में मगर न अपने महल में

वल्कि क़रीव वैते खुवेश दूसरी जगह में ऐसा ही वाक़े हुआ तो १७ मुहर्रम को अपने शहर के एक वाग़ में मौत वाक़े हुई जव इस जवाव का शहरा हुआ अतराफ़ से जिल्द वाज़ों के ख़त ज़ीक़अ़दा ही से आने लगे तुम ने तो मौत की ख़वर दी थी और अभी न हुई मैंने कहा भाईयो अगर मुहर्रम से पहले मौत वाक़े हो तो जवाव ग़लत हो जाएगा न कि उसकी सेहत के लिए तुम अभी मौत तलाश करते हो और इस क़िस्म के तूफ़ान वेतमीज़ी के सवव मैंने यह क़स्द कर लिया कि अगर यह जवाव ग़लत गया तो इस फन पर इतनी मेहनत करूंगा कि वेइज़्नेही तआला फिर ग़लती न हो यह इल्म तमाम उलूम से मुश्किल तर और सिखाने वाले मफ़्क़ूद और अकाविरे मुसन्नेफ़ीन को कमाले इख़्फ़ा मक़्सूद जो उलूमे ज़ाहिर हैं और मुसन्नेफ़ीन व मुअल्लेमीन उनका ऐलान चाहते हैं उनकी तो यह हालत है क़ि किताव कुछ कहती है और नाज़िर कुछ समझता है तो उस इल्म में नाज़िर की ग़लत फ़हमी क्या तअज्जुव है और वह भी मुझ जैसे के लिए जिसने न किसी से सीखा न कोई मशवरा व मुज़ाकरा करने वाला सिर्फ़ एक क़ायदा वदूह यलन कि मज़्दूजात से है वाला हज़रत अज़ीमुल-वरकत हज़रत सैयदना शाह अवुल-हुसैन अहमद नूरी मियाँ साहव कुद्दिसा सिर्रहुल-अज़ीज़ ने १२६४ हिज० में तज़्किरतन तालीम फ़रमाया था उसके वाद जो किताबें इस फन के नाम से मशहूर व राइज हैं उनकी, निस्वत इसी फन से सवाल किया उसने उन पर निहायत तशनीअ् की और कहा कि यह सब मुहमल व वातिल और जलाने के क़ाविल हैं सिर्फ़ दो किताबों की मदह की जो उन सव राइज किताबों से जुदा हैं जिन में एक हज़रत शैख़ अकवर मुहीयुद्दीन इब्ने अरवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तस्नीफ़ है वह दोनों किताबें मौला अज़्ज़ा व जल्ला ने मुझे वहम करा दीं उन्हें मुताला किया जहां तक वज़ोर मुताला इंकिशाफ़ हुआ हो और जहां मतलव हज़रत मुसन्नेफ़ीन ने ज़हन में रखा था उसकी निस्वत जितना क़ायदा मालूम हो लिया था उस से सवाल किए उस ने मतलव वताया एक क़ायदा और हल हुआ अव जो आगे उल्झा उस से पूछा उसने वताया और हल हुआ इस तौर पर उस फन की क़दरे अवजद मालूम हुई मेरी किताव *सिफ़रुस्सफ़र अनिल-ज़फर वल-जफर* उन्हें मुवाहिस में है जिसमें साठ सवाल जवाव हैं यानी जफर से जफर को वाज़ेह करने की किताव उस ने एक दूसरे

इल्म ज़ायरजा के एक अज़ीम सर मक्तूम को भी वाज़ेह किया जिसकी निस्वत हज़रत शैख़ अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के रिसाला ज़ायरजा में है कि ज़माना सैयदना शीस अलैहिस्सलातु वस्सलाम से इस ज़ार के इख़्फ़ा का हलफ़ी अहद है रसाइल फन में निहायत ग़ामिज़ चीस्तान की तरह उसके बारह (१२) पते दिए गये हैं अज़ां जुमला यह कि ख़ातमे आदम में है मैंने उसकी निस्वत भी उस पहले क़ायदा जफर से सवाल किया उस ने रौशन तौर पर बता दिया अब जा इन बारह पहेलियों को देखूं तो सब खुद बखुद मुंकशिफ़ हो गईं मेरे जी में आया कि कुछ इस फन की तरफ़ भी तवज्जोह करूं कि उसका राज़ पिनहां तो खुल ही गया है उस पर इक़्दाम का अइम्म-ए-फन ने यह तरीक़ा रखा है चन्द रोज़ कुछ अस्माए इलाहिया तिलावत किए जाते हैं मुद्दत मौऊद में खुश नसीब बन्दा बकरम अल्लाह तआला ज़ियारत जमाल जहां आराए हुज़ूर अनवर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशर्रफ़ होता है अगर सरकारे अक़्दस से इस फन में इश्तिग़ाल का इज़्न मिले मशग़ूल हो वरना छोड़ दे मैंने वह अस्माए तैयबा तिलावत किए पहले ही हफ़्ता में सरकार का करम हुआ जिसे मैं पहले शायद ज़िक्र भी कर चुका हूं उस से इज़्न का इस्तिंबात हो सकता था मगर मैंने ज़ाहिर पर महमूल करके तर्क कर दिया ग़रज़ जफर से जवाब जो कुछ निकलेगा ज़रूर हक़ होगा कि इल्म औलियाए किराम का है अह्ले बैते इज़ाम का है अमीरुल-मुमिनीन अली मुर्तज़ा का है रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन मगर अपनी ग़लत फ़हमी कुछ अचंबा नहीं तो अगर यह जवाब ग़लत गया काफी मेहनत करूंगा और सही उतरा तो इस फन का इश्तिग़ाल छोड़ दूंगा कि आए दिन सवालों की मेहनत और उलटे एतराज़ों की दिक़्क़त कौन सहे जवाब बहम्दुलिल्लाह तआला पूरा सही उतरा और मैंने इतिग़ाल छोड़ दिया वह तबगज़ाद जदावल कि तदक़ीक़ ताम से बनाई थीं और जिन्होंने इस फन के बहुत आमाले मुश्किला को आसान कर दिया था चलते वक़्त हज़रत सैयद साहब मौसूफ़ के नज़ कर दी उन से पहले मौलाना अब्दुल-ग़फ़्फ़ार साहब बुख़ारी इसी फन के सीखने को तशरीफ़ लाए थे उन्होंने हैदराबाद से हज़रत मियाँ साहब क़िबला कुद्दिसा सिर्रहू की ख़िदमत में अरीज़ा लिखा हज़रत ने इरशाद फ़रमाया कि यह काम ख़ुतूत से नहीं हो सकता खुद आइए वह मारहरा

शरीफ़ आए इतने में हज़रत बरेली तशरीफ़ ले आए थे मेरे छोटे भाई मौलवी मुहम्मद रज़ा खां सल्लमहू के यहाँ रौनक़ अफरोज़ हैं कि अस्र के वक़्त मौलवी साहब तशरीफ़ लाए माशाअल्लाह कमाल मुत्तक़ी व सालेह व आलिम थे वह जहां हों अल्लाह तआला उन्हें ख़ैर व ख़ूबी से रखे हज़रत कुद्दिसा सिर्रहू ने फ़क़ीर से इरशाद फरमाया कि यह जो कुछ सीखें उनको बताओ मैं इरशाद हज़रत के सबब हस्बे क़ायदा इस फन से इजाज़त तलब न कर सका कि अगर मुमानअत हुई तो हुक्म हज़रत का ख़िलाफ़ क्योंकर करूंगा आठ महीने तक उन्हें सिखाया अय्यामे सरमा में बाज़ दफा रात के दो दो बज जाते वह आलिम पूरे थे क़वाइद ख़ूब मुंज़बित कर लिए आठ पहर में एक सवाल निहायत उजला बाज़ाबता मुरत्तब फरमा लेते और जवाब तलाश करते न मिलता मुझे दिखाते मैं गुज़ारिश करता देखिए यह जवाब रखा है अपनी रान पर हाथ मारते कि हमें क्यों नहीं नज़र आता मैं गुज़ारिश करता कि जितनी बात अलीम के मुतअल्लिक़ थी वह आपको पूरी आ गई रहा जवाब वह इल्क़ा मुल्क है अगर इल्क़ा न हुआ अपना किया अख़्तियार यह उसका नतीजा था कि उस इल्म से बेइजाज़त लिए उन्हें सिखाया आठ महीने रहे और चलते वक़्त फरमा गये कि मैं जैसा आया था वैसा ही जाता हूं उनकी मुहब्बत व सलाह व तक़्वे के सबब अक्सर उनकी याद आती है जज़ीर-ए-सिंगापुर से एक ख़त उनका आया था उसके बाद से कुछ पता मालूम नहीं सैयद हुसैन मदनी साहब सा कोई सैर चश्म व बेतमअ् अरबी मैंने उन अरब से आने वालों में न देखा उनकी ख़ूबियां दिल पर नक़्श हैं मैं हज़रत सैयद इस्माईल मक्की का तज़्किरा अक्सर उनके सामने करता तो फरमाते ज़हे सआदत उनकी कि उनकी कितनी याद है यहां से मुल्क चीन को तशरीफ़ ले गये फिर उनका कोई ख़त भी न आया न मुद्दतों तक मदीना तैयबा उनका कोई ख़त गया उनके छोटे भाई सैयद इब्राहीम मदनी उन से पहले यहां तशरीफ़ लाए थे वह उस ज़माने में क़ाज़ान को गये हुए थे कि मुल्क रूस में है और बड़े भाई सैयद अहमद ख़तीब मदनी के ख़ुतूत आते कि वालिदा बहुत परेशान हैं सैयद हुसैन कहां हैं यहां किसे पता मालूम था अब सुना गया है कि शायद मदीना तैयबा पहुंच गये यह सैयद साहब मुहम्मद मदनी का बयान है जो पार साल तशरीफ़ लाए थे वल्लाहु तआला आलम।

ख़ैर यह तो जुमला मुअ्तरेज़ा था सफर के पहले अशरह में अज़्म हाज़िरी सरकारे आज़म मुसम्मम हो गया ऊंट किराया कर लिए सव अशरफ़ियां पेशगी दे दीं आज सव अकाविर उलमा से रुख़्सत होने को मिला वहां पान की जगह चाए की तवाजु है और इंकार से वुरा मानते हैं हर जगह चाए पीनी हुई जिसका शुमार नव (९) फिन्जान तक पहुंचा और वहां वेदूध की चाय पीते हैं जिसका मैं आदी नहीं और चाय गुर्दे को मुज़िर है और मेरे गुर्दे ज़ईफ़ रात को मआज़ल्लाह वशिद्दत हवाली गुर्दा का दर्द हुआ सारी शव जागते कटी सुवह ही सफर का क़सद था कि मज्वूराना मुल्तवी रहा जम्मालूं से कह दिया गया कि ता शिफ़ा नहीं जा सकते वह चले गये और अशरफ़ियां भी उन्हीं के साथ गई तुर्की डॉक्टर रमज़ान आफ़न्दी ने पलास्तर लगाए दो हफ़्ते से ज़ाइद तक मुआलजे किए वहम्दुलिल्लाह तआला शिफ़ा हुई मगर अव भी दिन में पांच छेः वार चमक हो जाती थी इसी हालत में दोवारा ऊंट किराया किए सव ने कहा कि ऊंट की सवारी में हाल वहुत होगी और हाल यह है मगर मैंने न माना और *तवक्कुलन अलल्लाह तआला* चौवीस २४ सफर १३२४ हिज० को कावा तन से कावा जान की तरफ़ रवाना हुआ वराहे वशरीयत मुझे भी ख़्याल आता था कि ऊंट की हाल से किया हाले होगा व लिहाज़ा इस वार सुल्तानी रास्ता अख़्तियार न क्या कि वारह मंज़िलें ऊंट पर होंगी वल्कि जद्दह से वराहे कश्ती रावेग़ जाने का क़स्द किया मगर उनके करम के सदक़े उन से इस्तिआनत अर्ज़ की और उनका नाम पाक लेकर ऊंट पर सवार हुआ हाल का ज़रर पहुंचना दर कनार वह चमक कि रोज़ाना पांच छेः वार हो जाती थी दफ़्अतन दफ़ा हो गई वह दिन और आज का दिन एक क़रन से ज़्यादा गुज़रा कि वफ़ज़्लेही तआला अव तक न हुई यह है उनकी रहमत यह है उन से इस्तिआनत की वरकत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल और वाज़ दीगर हज़रात शहर मुवारक से दूर तक वरस्म नशाइयत तशरीफ़ लाए मुझ नें ववज्हे ज़ुअ़फ़ मरज़ प्यादह चलने की ताक़त न थी फिर भी उनकी ताज़ीम के लिए हर चन्द उतरना चाहा मगर उन हज़रात ने मज्वूर किया पहली रात कि जंगल में आई सुवह के मिस्ल रौशन मालूम होती थी जिसका इशारा मैंने अपने क़सीदा हुज़ूर जान नूर में किया जो हाज़िरी दरवारे मुअल्ला में लिखा गया था।

वह देखो जगमगाती है शव और क़मर अभी

पहरों नहीं कि वस्त व चहारुम सफर की है

जद्दह से कश्ती में सवार हुए कोई तीस चालीस आदमी और होंगे कश्ती वहुत वड़ी थी जिसे साइया कहते हैं उस में जहाज़ का सा मस्तूल था हवा के लिए पर्दे हस्वे हाजत मुख़्तलिफ़ जिहात पर वदले जाते हवशी मल्लाह कि उस काम पर मुक़र्रर थे उनके खोलने वांधने के वक़्त अकाविर औलियाए किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम को अजव अच्छे लेहजे से निदा करते जाते एक हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को तो दूसरा हज़रत सैयदी अहमद कवीर। तीसरा हज़रत सैयदी अहमद रिफ़ाई को चौथा हज़रत सैयदी अहदल को अली हाज़ल-क्यास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हर कशिश पर उनकी यह आवाज़ें अजव दिलकश लहजे से होतीं और वहुत खुश आतीं एक वसरी साहव ने अपनी हाजत से वहुत ज़्यादा जगह पर क़व्ज़ा कर रखा था उन से कहा गया न माने मालूम हुआ कि उन पर असर उन दूसरे वसरी शैख़ उस्मान का है मैंने उन से कहा या शैख़ उन्होंने कहा अश्शैख़ अव्दुल-क़ादिर अल-जीलानी शैख़ तो हज़रत अव्दुल-क़ादिर जीलानी हैं उनके इस कहने की लज़्ज़त आज तक मेरे क़ल्व में है उन्होंने उन पहले वुज़ुर्ग को समझा दिया उसके वाद जव उनको कुछ हालात मालूम हुए फिर तो वह निहायत मुख़्लिस वल्कि कमाल मुतीअ् थे तीन रोज़ में कशी रावेग़ पहुंची यहां के सरदार शैख़ हुसैन थे टीटों के मकान क़्याम के लिए थे जव उन में उतरना हुआ अल्लाहु आलम लोगों को किस ने इत्तिला दी उनके भाई इव्राहीम मआ अपने अइज़्ज़ा की एक जमाअत के तशरीफ़ लाए और अपने यहां का एक नज़ाई मुक़द्दमा कि मुद्दत से ना फ़ैसल पड़ा था पेश किया मैंने हुक्म शरई अर्ज़ किया वहम्देही तआला वातों ही वातों में वाहम फ़ैसला हो गया रवीउल-अव्वल शरीफ़ का हिलाल हम को यहीं हुआ यहां से ऊंट किराया किए गये नमाज़े अस्र पढ़ कर सवार होना हुआ तमाम अस्वावे क़िला के सामने सड़क पर निकाल कर रखा था गिनती के ऊंटों का क़ाफ़िला था हम लोग सवार हो गये और यह ख़्याल किया कि हाजी साहव अस्वावे वार करा देंगे हाजी साहव भी सवार हो गये और अस्वाव वहीं सड़क पर पड़ा रह गया जव मंज़िल पर पहुंचे अव न कपड़े हैं न वर्तन हैं न घी है। *वला हौला वला कुव्वता इल्ला विल्लाहुल-अलीयुल-अज़ीम*। यह पांच मंज़िलें साथियों के

बर्तनों और मनाज़िल पर वक़्तन फ़वक़्तन ख़रीद जवाइज से गुज़री छठे दिन वहम्दुलिल्लाह तआला ख़ाक वोस आस्तान जन्नत निशान हुए। *अल्हम्दुलिल्लाह रब्बिल-आलमीन* राह में जव वीर शैख़ पर पहुंचे हैं मंज़िल चन्द मील वाक़ी थी और वक़्त फज्र थोड़ा जम्मालूं ने मंज़िल ही पर रुकना चाहा और जव तक वक़्त नमाज़ न रहता मैं और मेरे रुफ़क़ा उतर पड़े क़ाफ़िला चला गया करमच का डोल पास था रस्सी नहीं और कुवां गहरा अमाम वंध कर पानी भरा वुज़ू किया वहम्दुलिल्लाह तआला नमाज़ हो गई अव यह फ़िक्र लाहिक़ हुई कि तूल मरज़ से ज़ुअ़फ़ शदीद है इतने मील प्यादा क्योंकर चलना होगा मुँह फेर कर देखा तो एक जम्माल महज़ अजनवी अपना ऊंट लिए मेरे इंतिज़ार में खड़ा है हम्दे इलाही वजा लाया उस पर सवार हुआ उस से लोगों ने पूछा कि तुम यह ऊंट कैसा लाए कहा हमें शैख़ हुसैन ने ताकीद कर दी थी शैख़ की ख़िदमत में कमी न करना कुछ दूर आगे चले थे कि मेरा अमना जम्माल अपना ऊंट लिए खड़ा है उस से पूछा कहा जव क़ाफ़िले के जुम्माल न ठहरे मैंने कहा शैख़ को तक्लीफ़ होगी क़ाफ़िला में से ऊंट खोल कर वापस लाया यह सव मेरी सरकार करम की वसीयतें थीं। *सल्लल्लाहु तआला व वारिक व सल्लिम अलैहि व अला अतरतहू क़दरा राफ़तहू व रहमतहू* वरना कहां यह फ़क़ीर और कहां सरदार रावेग़ शैख़ हुसैन जिन से जान न पहचान और कहां वहशी मिज़ाज जुम्माल और उनकी यह ख़ारिक़ुल-आदात रविशे सरकारे आज़म में हाज़िरी के दिन वदन के कपड़े मैले हो गये थे और कपड़े रावेग़ में छूट गये थे और एक या दो मंज़िल पहले शव को एक जूता कहीं रास्ता में निकल गया यहां अरवी वज़अ का लिवास और जूता ख़रीद कर पहना और यूं मवाजेह अक़्दस की हाज़िरी नसीव हुई यह भी सरकार ही की तरफ़ से था कि इस लिवास में बुलाना चाहा दूसरे दिन रावेग़ से एक वदवी पहुंचा ऊंट पर सवार और हमारा तमाम अस्वाव कि चलते वक़्त क़िला के सामने छूट गया था उस पर वार उस ने शैख़ हुसैन का रुक़आ ला कर दिया कि आपका यह अस्वाव रह गया था रवाना करता हूं मैं हर चन्द उन वदवी साहव को आते जाते दस मंज़िलों की मेहनत का नज़्राना देता रहा मगर उन्होंने न लिया और कहा हमें शैख़ हुसैन ने ताकीद फ़रमा दी है कि शैख़ से कुछ न लेना यहां कि हज़राते किराम को हज़रात मक्का

मुअज़्ज़मा से ज़्यादा अपने ऊपर मेहरवान पाया वहम्दुलिल्लाह तआला इक्तीस (३१) रोज़ हाज़िरी नसीव हुई वारहवीं शरीफ़ की मज्लिस मुवारक यहीं हुई सुवह से इशा तक इसी तरह उलमाए उज़मा का हुजूम रहता वैरूने वाव मजीदी मौलाना करीमुल्लाह अलैहि रहमतुल्लाहि तल्मीज़ हज़रत मौलाना अब्दुल-हक़ मुहाजिर इलाहावादी रहते थे उनके ख़ुलूस की तो कोई हद ही नहीं हुसामुल-हरमैन व दौलतुल-मक्कीया पर तक़रीज़ात में उन्होंने वड़ी सई जमील फरमाई। *जज़ाहल्लाहु ख़ैरन कसीरन* यहां भी अह्ले इल्म ने दौलतुल-मक्कीया की नक़्लें लीं। एक नक़ल विल-ख़ुसूस मौलाना करीमुल्लाह ने मज़ीद तक़रीज़ात के लिए अपने पास रखी मेरे चले आने के वाद भी मिस्र व शाम व वग़दादे मुक़द्दस वग़ैरहा के उलमा जो मौसम में ख़ाक वोस आस्ताना अक़्दस होते जिनका ज़रा भी ज़्यादा क़्याम देखते और मौक़ा पाते उनके सामने किताव पेश करते और तक़रीज़ें लेते और वेसेग़ा रेजिस्टरी मुझे भेजते रहते। *रहमतुल्लाहि तआला अलैहि रहमतुन वासेअतुन* उलमाए किराम ने यहां भी फ़क़ीर से सनदें और इजाज़तें लीं ख़ुसूसन शैख़ुद्दलाइल हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद सईद मग़रवी के अल्ताफ़ की तो हद ही न थी उस फ़क़ीर से ख़िताव में या सैयदी फरमाते मैं शर्मिन्दा होता एक वार मैंने अर्ज़ की हज़रत सैयद तो आप हैं फरमाया तुम सैयद हो मैंने अर्ज़ की मैं सैयदों का गुलाम हूं फ़रमाया तो यूं भी सैयद हुए नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। *मौलल-क़ौमु मिन्हुम* क़ौम का गुलाम आज़ाद शुदह उन्हीं में से है अल्लाह तआला सादाते किराम की सच्ची गुलामी और उनके सदक़े में आफ़ाते दुनिया व अज़ावे हश्र से कामिल आज़ादी अता फरमाए आमीन यूं ही मौलाना हज़रत सैयद अव्वास रिज़वान व मौलाना सैयद मामून वर्री व मौलाना सैयद अहमद जज़ाइरी व मौलाना शैख़ इब्राहीम ख़रवूती व मुफ़्ती हन्फ़ीया मौलाना ताजुद्दीन इल्यास व मुफ़्ती हन्फ़ीया सावेक़न मौलाना उस्मान विन अब्दुस्सलाम दाग़िस्तानी वग़ैरहुम हज़रात के करम भूलने के नहीं उन मौलाना दाग़िस्तानी से क़ुवा शरीफ़ में मुलाक़ात हुई थी कि वहीं उठ गये थे मक्का मुअज़्ज़मा की तरह ज़्यादा अहम हुसामुल-हरमैन की तस्दीक़ात थीं जो वहम्दुलिल्लाह तआला वहुत ख़ैर व ख़ूवी के साथ हुई ज़्यादा ज़माना क़्याम उन्हीं में गुज़र गया कि हर साहव पूरी किताव मआ

तक़रीज़ात मक्का मुअज़्ज़मा देखते और कई-कई रोज़ में तक़रीज़ात लिख कर देते मुफ़्ती शाफ़ईया हज़रत सैयद अहमद वरज़ंजी ने हिसामुल-हरमैन पर चन्द वर्क़ की तक़रीज़ लिखी और फरमाया इस किताब की ताईद में उसे हमारा मुस्तक़िल रिसाला करके शाए करना ऐसा ही किया गया हुसामुल-हरमैन का काम पूरा होने के बाद दौलतुल-मक्कीया पर तक़रीज़ात का ख़्याल हुआ दोनों हज़रात मुफ़्ती हन्फ़ीया ने मदीना तैयबा और कुवा शरीफ़ में तक़रीज़ें तहरीर फरमाएं। तीसरी बारी मुफ़्ती शाफ़ईया की आई यह आंखों से माज़ूर हो गये थे यह ठहरी कि उन के दामाद सैयद अब्दुल्लाह साहब के मकान पर इस किताब के सुनने की मज्लिस हो इशा कि वहां अव्वल वक़्त होती है पढ़ कर बैठे। मैंने किताब सुनानी शुरू की बाज़ जगह मुफ़्ती साहब को शुकूक हुए मेरी ग़लती कि मैंने हस्बे आदत जुरअत के साथ मस्कत जवाब दिए जो मुफ़्ती साहब को अपनी अज़्मते शान के सबब नागवार हुए जाबजा उनका ज़िक्र मैंने *अल-फ़ुयूज़ुल-मक्कीया हाशिया दौलतुल-मक्कीया* में कर दिया है बारह बजे जल्सा ख़त्म हुआ और मुफ़्ती साहब के क़ल्ब में उन जवाबों का गुबार रहा मुझे बाद को मालूम हुआ उस वक़्त अगर इत्तेला होती मैं माज़रत कर लेता एक रात उनके शागिर्द शैख़ अब्दुल-क़ादिर तराबुलसी शिबली कि मुदर्रिस हैं फ़क़ीर के पास आए और बाज़ मसाइल में कुछ उलझने लगे हामिद रज़ा खां ने उन्हें जवाब दिए जिनका जवाब वह न दे सके और वह भी सीना में गुबार लेकर उठे उनका गुबार मुझे मालूम हो गया था जिसकी मैंने परवाह न की इंसाफ पसन्द तो उसके मम्नून होते हैं जो उन्हें सवाब की तरफ़ राह बताए न यह कि बात समझ लें जवाब न दे सकें और बताने से रंजीदा हों और फ़क़ीर को मुतवातिर नासाज़ियों के बाद मक्का मुअज़्ज़मा में जो कई महीने गुज़रे वल्लाहु आलम वह क्या बात थी जिस ने हज़राते किराम मदीना तैयबा को इस ज़र्रा बेमिक़्दार का मुश्ताक़ कर रखा था यहां तक कि मौलाना करीमुल्लाह साहब फरमाते थे कि उलमा तो उलमा अह्ले बाज़ार तक को तेरा इश्तियाक़ था और यह जुमला फरमाया कि हम सालेहा साल से सरकार में मुक़ीम हैं अतराफ़ व आफ़ाक़ से उलमा आते हैं वल्लाह यह लफ़्ज़ था कि जूतियां चटख़ाते चले जाते हैं कोई बात नहीं पूछता और तुम्हारे पास उलमा का यह हुजूम है मैंने अर्ज़ की मेरे सरकार का करम सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व सल्लम।

अय्यामे इक़ामत सरकारे आज़म में सिर्फ़ एक बार मस्जिदे कुबा शरीफ़ को गया और एक बार ज़ियारत हज़रत सैयदुश्शुहदा हमज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु को हाज़िर हुआ बाक़ी सरकारे अक़्दस ही की हाज़िरी रखी सरकारे करीम हैं, अपने करम से क़ुबूल फरमाएं और ख़ैरियत ज़ाहिर व बातिन के साथ फिर बुलाएं -

हम को मुश्किल है उन्हें आसान है

रुख़्सत के वक़्त क़ाफ़िले के ऊंट आ लिए हैं पा बारिकाब हूं उस वक़्त तक उलमा को इजाज़त नामे लिख कर दिए वह सब तो *अल-इजाज़ातुल-मतीना* में तबअ् हो गये और यहां आने के बाद दोनों हरम मोहतरम से दर्ख़्वास्तें आया कीं और इजाज़त नामे लिख कर गये यह दर्ज रिसाला नहीं चलते वक़्त हज़रात मदीना करीमा ने बैरून शहर दूर तक मशाइयत फरमाई अब मुझ में ताक़त थी उनकी मुआवदत तक मैं भी प्यादा ही रहा त ऊंट जद्दह के लिए किए गये थे अब मौसम सख़्त गर्मी का आ गया था। और बारह मंज़िलें मंज़िल पर ज़ुहर की नमाज़ कि ठीक ज़वाल हाते ही पढ़ता था और मअन क़ाफ़िला रवाना होता था सर पर आफ़ताब और पांव नीचे गरम रेत या पत्थर अल्लाह तआला मौलवी नज़ीर अहमद साहब का भला करे फ़र्ज़ों में तो मज्बूर थे कि ख़ुद भी शरीके जमाअत होते मगर जब मैं सुन्नतों की नीयत बांधता छतरी लेकर साया करते जब पहली रकअत के सज्दे में जाता पांव के नीचे अपना अमामा रख देते कि बाक़ी रकअतों में पांव न जलें इब्तिदा से यूं न कर सकते थे मैं अमामा रखना दर कनार नमाज़ में छतरी लगाने पर भी हरगिज़ राज़ी न होता उन्होंने और हाजी किफायतुल्लाह साहब ने इस सफरे मुबारक में बिला तमअ् बिला मुआवज़ा महज़ अल्लाह व रसूल के लिए जैसे आराम दिए अल्लाह तआला उनका अजरे अज़ीम दुनिया व आख़िरत में उन साहिबों को अता फरमाए आमीन जद्दह पहुंच कर जहाज़ तैयार मिला बम्बई के टिकट बट रहे थे ख़रीदे और रवाना हुए जब अदन पहुंचे मालूम हुआ कि जहाज़ वाले ने कि राफ़ज़ी था धोखा दिया अदन पहुच कर एलान किया कि जहाज़ कराची जाएगा हम लोगों ने क़स्द किया कि उतर लें और बम्बई जाने वाले जहाज़ में सवार हों इतने में अंग्रेज़ डॉक्टर आया और उस ने कहा बम्बई जाने वालों को

क़रनतीना में रहना होगा हम ने कहा इस मुसीबत को कौन झेले उस से कराची ही भली रास्ता में तूफ़ान आया और ऐसा सख़्त कि जहाज़ का लंगर टूट गया सख़्त हौलनाक आवाज़ पैदा हुई मगर दुआओं की बरकत कि मौला तआला ने हर तरह अमां रखी जब कराची पहुंचे हैं हमारे पास सिर्फ़ दो रुपये बाक़ी थे और उस ज़माने तक वहां किसी से तआरुफ़ न था जहाज़ किनारे के क़रीब ही लगा और ऐन साहिल पर चुंगी की चौकी जिस पर अंग्रेज़ या कोई गोरा नौकर, अस्बाबे कसीर यहां महसूल तक देने को नहीं हर चीज़ की तालीम व इरशाद फरमाने वाले पर बेशुमार दरूद व सलाम उनकी इरशाद फरमाई हुई दुआ पढ़ी और गोरा आया और अस्बाब देखकर बारह आने महसूल कहा कि हम ने शुक्रे इलाही किया और बारह आने दे दिए चन्द मिनट बाद वह फिर वापस आया और कहा नहीं नहीं अस्बाब दिखाओ सब सन्दूक़ वग़ैरह देखे और फिर बारह आने कह कर चला गया फिर वापस आया और सब सन्दूक़ खुलवा कर अन्दर से देखे और फिर बाहर ही आने कहे और रसीद देकर चला गया और सवा रुपया बाक़ी रहा उस में से मंझले भाई मरहूम मौलवी हसन रज़ा खां को तार दिया कि दो सौ रुपया भेजो यहां वह तार मुश्तबह ठहरा कि मुम्बई से आता कराची से कैसा आया। बारह रुपये पहुंच गये। मुम्बई के अहबाब वहां ले जाने पर मिस्र हुए वहां जाना पड़ा मौलवी हकीम अब्दुर्रहीम साहब वग़ैरह अहबाब अहमदाबाद को इत्तिला हुई आदमी भेजे बइसरार अहमदाबाद ले गये सवारियों को मुम्बई से मुहम्मद रज़ा ख़ां व हामिद रज़ा खां के साथ रवाना कर दिया था मैं हिन्दुस्तान में उतरने से एक महीने बाद मकान पर पहुंचा वहाबिया खुज़ लहुम अल्लाह तआला को बफ़ज़्लेही तआला जब शदीद ज़िल्लतें और नाकामियां हुईं *अल-मरजफ़ूना फ़िल-मदीनते* की विरासत से यहां यह उड़ा रखी थी कि मआज़ल्लाह फलां क़ैद हो गया मुम्बई आ कर यह खबर सुनी अहबाब ने मज्लिस बयान मुनाक़िद की और चाहा कि उसकी निस्बत कुछ कह दिया जाए वाहिदे क़हहार ने उनका किज़्ब खुद ही सब पर रौशन फरमा दिया था मुझे कहने की क्या ज़रूरत थी हां इतना हुआ कि आयते करीमा *इन्ना फ़तहना लका फतहन मुबीना*। का बयान किया और उस में फतहे मक्का मुकर्रमा और उस से पहले सुलह हुदैबिया की हदीस ज़िक्र की उसमें कहा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि

व सल्लम ने हुदैबिया में क़याम फरमा कर अमीरुल-मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को मक्का मुअज़्ज़मा भेजा यहां उन्हें देर लगी काफिरों ने उड़ा दिया कि वह मक्का में क़ैद कर लिए गये मेरे आने से पहले ही अतराफ़ से लोगों ने मौलाना अब्दुल-हक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि को इस्तिफ़सार वाक़ेआत के खुतूत लिखे जिसके जवाब उन्होंने वह दिए कि सुन्नियों का दिल बाग़-बाग़ हो गया और वहाबियों का कलीजा दाग़-दाग़ अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल-आलमीन उन में से बाज़ जवाब मेरे देखने में आए जिनमें फरमाया है कि यह ख़बीस कज़्ज़ाबों का किज़्ब ख़बीस है उसको तो मक्का मुअज़्ज़मा में वह एज़ाज़ मिला जो किसी को नसीब नहीं होता। वहाबिया की तो क्या शिकायत कि वह पूरे आदा हैं और क्यों न मेरे दुश्मन हों कि मेरे मालिक व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दुश्मन हैं उनके इफ़्तराओं ने बाज़ जाहिल कच्चे सुन्नियों को भी मेरा मुख़ालिफ़ कर दिया था यह बुहतान लगा कर यह मआज़ल्लाह हज़रत शैख़ मुजद्दिद को काफिर कहता है और जब मक्का मुअज़्ज़मा में इल्मे ग़ैब का मस्अला बेफ़ज़्लेही तआला बअहसन वजूह रौशन हो गया इल्मे इलाही और इल्मे नबवी का ग़ैर मुतनाही फ़र्क़ मैंने ज़ाहिर कर दिया तो अब यह जोड़ी, कि अयाज़न बिल्लाह यह कुदरते नबवी को कुदरते इलाही के बराबर कहता है कच्चे नासमझ लोग, करीमा *या ऐयुहल्लज़ीना आमनू इन जाअकुम फ़ासिकुन बेनबइन फ़तबैय्यनू इन तुसीबू क़ौमन बेजहालतिन फ़तुस्बेहू अला मा फ़अलतुम नादेमीन*। पर अमल न करने वाले उनके दावं में आ गये मदीना तैयबा में एक हिन्दी साहब शैख़ुल-हरम उस्मान पाशा के यहां कुछ दख़ील थे एक मदरसा के नाम से हिन्दुस्तान वग़ैरह से चन्दा मंगाते यह भी उन्हीं कज़्ज़ाबों की बातों से मुतअस्सिर हुए मैं अभी मक्का मुअज़्ज़मा ही में था यहां जो फतह व ज़फर मौला तआला ने मुझे अता फरमाई और फिर मेरे अज़्म हाज़िरी सरकारे आज़म की ख़बर मदीना तैयबा पहुंची उन साहब ने अपने ज़अम पर कि मजाज़ी हाकिम शहर के यहां रसाई है यह लफ़्ज़ फरमाए कि वहां तो उस ने अपना सिक्का जमा लिया आने तो दो यहां आते ही क़ैद करा दूंगा मौला अज़्ज़ा व जल्ल की शान मेरी सरकार से उनको यह जवाब मिला कि मैं अभी मक्का मुअज़्ज़मा ही में हूं उनकी निस्बत धोखे से चन्दे मंगाने का दावा हुआ और जेलख़ाने भेज दिए गये

जब मैं हाज़िर हुआ हूं वह मीआद का टक्कर आ चुके थे मस्जिद करीम में मुझ से मिले और फरमाया मैं तन्हाई में मिलना चाहता हूं मैंने कहा उलमा उज़मा की तशरीफ़ आवरी का हुजूम आप देखते हैं मुझे तन्हाई निस्फ़ शव को मिलती है कहा मैं उसी वक़्त आऊंगा मैंने कहा उस वक़्त वन्दिश होती है कहा मेरी वन्दिश न होगी। तशरीफ़ लाए और कलिमात इस्तिमालत व इस्तेअ्फ़ा के फरमाए मैंने मुआफ़ किया और मेरे दिल में वेहम्देही तआला उसका कुछ गुवार भी न था हिन्दुस्तान तशरीफ़ ला कर भी मुझ से मिले इज़्हार नाम की ज़रूरत नहीं।

यह तमाम वक़ाए ऐसे न थे कि उन को मैं अपनी ज़बान से कहता हम्राहियों को तौफ़ीक़ होती और आते और जाते और अय्यामे क़्याम हर दो सरकार के वाक़ेआत रोज़ाना तारीख़ वार क़लमवन्द करते तो अल्लाह व रसूल की वेशुमार नेमतों की उम्दा यादगार होती उन से रह गया और मुझे वहुत कुछ सहू हो गया जो याद आया वयान किया नीयत को अल्लाह अज़्ज़ा जानता है। *क़ाला तवारका व तआला व अम्मा वेनिअ्मते रब्बिका फ़हदिदस*। अपने रव की नेमतों का ख़ूव चर्चा कर यह वरकात हैं उन दुआओं की कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तालीम फरमाई। *वल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल-आलमीन वस्सलातु वस्सलाम अला अल-हवीबिल-करीम व आलेही व सहवेही अज्मईन।*

मुअल्लिफ़ : एक साहव शाह नियाज़ अहमद साहव रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के उर्स में वरैली तशरीफ़ लाए थे आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुलहू की ख़िदमत में भी हाज़िर हुए और कुछ अशआर नअ्त शरीफ़ सुनाने की दर्ख़्वास्त की इस्तिफ़सार फरमाया किस का कलाम है उन्होंने वताया उस पर इरशाद फरमाया सवा दो, के कलाम के किसी का कलाम क़स्दन नहीं सुनता मौलाना काफी और हसन मियां मरहूम का कलामे अव्वल से आख़िर तक शरीअत के दाइरा में है मौलाना काफी के यहां लफ़्ज़ रअ्ना का इत्लाक़ जा वजा है और यह शरअन महज़ नारवा व वेजा है मौलाना को उस पर इत्तिला न हुई वरना ज़रूर एहतराज़ फरमाते हसन मियां मरहूम के यहां वेफ़ज़्लेही तआला यह भी नहीं उनको मैंने नअ्त गोई के उसूल वता दिए थे उनकी तवीअत में उनका ऐसा रंग रचा कि हमेशा कलाम उसी मेअ्यार ऐतदाल पर सादिर

होता है जहां शुवह होता मुझसे दरयाफ़्त कर लिए एक ग़ज़ल में यह शेअ्र ख़्याल में आया।

खुदा करना होता जो तहते मशीयत
खुदा हो के आता यह वन्दा ख़ुदा का

मैं कहा ठीक है यह शरतीया है जिसके लिए मुक़द्दम और ताली का इम्कान ज़रूर नहीं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है। *कुल इन काना लिर्रहमाने वलदुन फ़अना अव्वलुल-आवेदीन*। एक महवूव तुम फरमा दो कि अगर रहमान के लिए कोई वच्चा होता तो उसे सवसे पहले मैं पूजता हां शर्त व जज़ा में इलाक़ा चाहिए वह आयते करीमा की तरह यहां भी वर वज्हे हसन हासिल है विला शुवह जितने फ़ज़ाइल व कमालात ख़ज़ाना कुदरत में हैं सव हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अता फरमाए गये अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला फरमाता है *व युतिम्मा नेअ्मतहू अलैका* अल्लाह अपनी तमाम नेअ्मतें तुम पर पूरी करेगा शैख़ अव्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि मदारिजुन्नुवुव्वह में फरमाते हैं।

हर नेअ्मत कि दाश्त खुदा शुद वर औ तमाम

मेरे एक वअ्ज़ में एक नफीस नुक्ता मुझ पर इल्क़ा हुआ था उसे याद रखो कि जुमला फ़ज़ाइल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए मेअ्यार कामिल है वह यह कि किसी मुनइम का दूसरे को कोई नेअ्मत न देना, चार ही तौर पर होता है या तो देने वाले को उस नेअ्मत पर दस्तर्स नहीं या दे सकता है मगर वुख़्ल माने है या जिसे न दी वह उसका अह्ल न था या वह अह्ल भी है मगर उस से ज़ाइद उसे कोई और महवूव है उसके लिए वचा रखी उलूहियत ही वह कमाल है कि ज़ेरे कुदरत रव्वानी नहीं वाक़ी तमाम कमालात तहते कुदरत इलाही हैं और अल्लाह तआला अकरमुल-अकरमीन हर जूद से वढ़ कर जव्वाद और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हर फ़ज़्ल व कमाल के अह्ल और हुज़ूर से ज़ाइद अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को कोई महवूव नहीं लाज़िम है कि उलूहियत के नीचे जितने फ़ज़ाइल जिस क़द्र कमालात जितनी नेअ्मतें जिस क़द्र वरकात हैं मौला अज़्ज़ा व जल्ला ने सव आला वज्हे कमाल पर हुज़ूर को अता फरमाएं अगर उलूहियत अता फरमाना भी ज़ेरे कुदरत होता ज़रूर यह

भी अता फरमाता जैसे इरशाद हुआ। *लौ अरदना अन नत्तख़ेज़ा लह्वन लत्तख़ज़नाहु मिन लदुन्ना इन कुन्ना फ़ाइलीन।* अगर हम बेटा चाहते तो ज़रूर अपने पास से अगर हमें करना होता गोया इरशाद होता है ऐ नसरानियो तुम मसीह को और यहूदियो तुम अज़ीज़ को और अरब के मुश्रिको तुम मलाइका को हमारी औलाद ठहराते हो हमें अगर अपने लिए बेटा बनाना होता तो उन्हीं को न बनाते जो सबसे ज़्यादा हमारे मुक़र्रब हैं यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, मेरी इजाज़त के बाद हसन मियां मरहूम ने यह शेअ्र दाख़िले ग़ज़ल किया और मक्तअ् में उसकी तरफ इशारा किया कि -

भला है हसन का जनाबे रज़ा से
भला हो इलाही जनाबे रज़ा का

ग़रज़ हिन्दी नअ्त गोयों में उन दो का कलाम ऐसा है बाक़ी अक्सर देखा गया कि क़दम डगमगा जाता है और हक़ीक़तन नअ्त शरीफ़ लिखना निहायत मुश्किल है जिसको लोग आसान समझते हैं उसमें तल्वार की धार पर चलना है अगर बढ़ता है तो उलूहियत में पहुंचा जाता है और कमी करता है तो तन्क़ीस होती है अल्बत्ता हम्द आसान है कि उसमें रास्ता साफ़ है जितना चाहे बढ़ सकता है। ग़रज़ हम्द में एक जानिब असलन हद नहीं और नअ्त शरीफ़ में दोनों जानिब सख़्त हद बन्दी है (फिर फरमाया) मौलाना काफी अलैहिर्रहमा की ज़ियारत आठ बरस की उम्र में मुझे ख़्वाब में हुई मेरी पैदाइश के ग्यारह महीने बाद मौलाना को फांसी हुई पिछली ग़ज़ल में एक मिसरा यह भी लिखा था -

बुलबुलें उड़ जाएंगी सूना चमन रह जाएगा

मैंने अपने मंझले भाई हसन मियां मरहूम को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा कि अपनी मस्जिद को फ़सील शुमाली पर मस्जिद में पांव लटकाए बैठा हूं और यह मस्जिद की मुन्तहाए हद जुनूबी से मेरी तरफ़ खुश-खुश आ रहे हैं हाथ में एक बहुत तवील काग़ज़ है वह मुझे दिखाने लाए और कहते हैं नौ बातें बहुत ही आला दरजा पर कुबूल हुईं तफ़्सील न मालूम हुई थी कि आंख खुल गई।

अर्ज़ : हुज़ूर तलब और बैअ्त में क्या फ़र्क़ है।

इरशाद : तालिब होने में सिर्फ़ तलब फ़ैज़ हैं और बैअ्त के माना पूरे तौर से बकना बैअ्त उसी शख़्स से करना चाहिए जिस में यह चार बातें

हों वरना बैअत जाइज़ न होगी अव्वलन : सुन्नी सहीहुल-अक़ीदा हो। सानियन : कम अज़ कम इतना इल्म ज़रूरी है कि बिला किसी की इम्दाद के अपनी ज़रूरत के मसाइल किताब से खुद निकाल सके। सालिसन : उसका सिलसिला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक मुत्तसिल हो कहीं मुन्क़ता न हो। राबिअन : फ़ासिक़ मुअ्लिन न हो। (इसी सिलसिला में इरशाद हुआ कि) लोग बैअ्त बतौर रस्म होते हैं बैअत के मानी नहीं जानते बैअत उसे कहते हैं कि हज़रत यहिया मुनीरी के एक मुरीद दरिया में डूब रहे थे हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम ज़ाहिर हुए और फरमाया अपना हाथ मुझे दे कि तुझे निकाल लूं उन मुरीद ने अर्ज़ की यह हाथ हज़रत यहिया मुनीरी के हाथ में दे चुका हूं अब दूसरे को न दूंगा हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ग़ायब हो गये और हज़रत यहिया मुनीरी ज़ाहिर हुए और उनको निकाल लिया।

अर्ज़ : हुज़ूर के ज़माना में भी तज्दीदे बैअ्त होती थी।

इरशाद : खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सलमा बिन अकवा से एक जल्सा में तीन बार बैअत ली जिहाद को जा रहे थे पहली बार फरमाया सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने बैअत की थोड़ी देर बाद हुज़ूर ने फरमाया सलमा तुम बैअत न करोगे अर्ज़ की हुज़ूर अभी कर चुका हूं फरमाया ऐज़न फिर भी उन्होंने फिर बैअत की अख़ीर में जब सब हज़रात बैअ्त से फ़ारिग़ हुए फिर इरशाद हुआ सलमा तुम बैअत न करोगे अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मैं दो बार बैअत कर चुका फरमाया ऐज़न फिर भी ग़रज़ एक जल्सा में सलमा से तीन बार बैअत ली उन पर ताकीद बैअ्त में राज़ यह था कि वह हमेशा प्यादा जिहाद फरमाया करते थे और मज्मा कुफ़्फ़ार का तन्हा मुक़ाबला करना उनके नज़्दीक कुछ न था एक बार अब्दुर्रहमान क़ारी कि काफिर था अपने हमराहियों के साथ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ऊंटों पर आ पड़ा चराने वाले को क़त्ल किया और ऊंट ले गया उसे क़िरअत से क़ारी न समझ लें बल्कि क़बीला बनी क़ारा से था सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ख़बर हुई पहाड़ पर जा कर एक आवाज़ तो दी कि *या सबा हाह* यानी दुश्मन है मगर उसका इंतिज़ार न किया कि किसी ने सुनी या नहीं कोई आता है या नहीं तन्हा उन काफिरों का तआकुब किया वह चार सौ थे और यह अकेले वह सवार

थे और यह प्यादा मगर नबवी मदद उनके साथ इस मुहम्मदी शेर के सामने से उन्हें भागते ही बनी अब यह तआकुब में हैं अपना रज्ज़ पढ़ते जाते हैं। *इन्ना सलमता इब्नुल-अकवा वल-यौम यौमर्रज़ा*। मैं सलमा बिन अकवा हूं और तुम्हारी ज़िल्लत व ख़्वारी का दिन है एक हाथ घोड़े की कूंचों पर मारते हैं वह गिरता है सवार ज़मीन पर आता है दूसरा हाथ उस पर पड़ता है वह जहन्नम जाता है यहां तक कि काफ़िरों को भागना दुशवार हो गया घोड़ों पर से अपने हिजाब फेंकने लगे कि हल्के हो कर ज़्यादा भागें यह अस्बाब सब एक जगह जमा फरमाते और फिर वही रज्ज़ पढ़ते हुए उनका तआकुब करते और उन्हें जहन्नम पहुंचाते यहां तक कि शाम हो गई काफ़िर एक पहाड़ी पर ठहरे उसके क़रीब दूसरी पहाड़ी पर उन्होंने आराम फरमाया दिन होने पर वह उतर कर चले वह उसी तरह उनके पीछे और वही रज्ज़ वही क़त्ल यहां तक कि गर्द उठी यह क़त्ल व तआकुब करते-करते थक गये थे अन्देशा हुआ कि मुबादा कुफ़्फ़ार की मदद आई हो जब दामने गर्द फटा तक्बीरों की आवाज़ें आई और देखा कि हज़रत अबू क़तादा मआ बाज़ दीगर सहाबा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम घोड़ों पर तशरीफ़ ला रहे हैं अब क्या था कुफ़्फ़ार को घेर लिया अबू क़तादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को *फारस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम* कहा जाता था यानी लश्कर हुज़ूर के सवार जिस तरह सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को *राजल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम* यानी लश्करे अक़्दस के प्यादे अबू क़तादा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने खुद बारगाहे रिसालत में *असद मिन असदिल्लाहि व रसूलेही*। फरमाया अल्लाह व रसूल के शेरों में से एक शेर उनको इस जिहाद की ख़बर उनके घोड़े ने दी थान पर बंधा हुआ चमका उन्होंने चमकारा फिर चमका फरमाया वल्लाह कहीं जिहाद है घोड़ा कस कर सवार हुए अब यह तो मालूम नहीं कि किधर जाएं बाग छोड़ दी और कहा जिधर तू जानता है चल घोड़ा उड़ा और यहां ले आया उस अब्दुर्रहमान क़ारी से पहले किसी लड़ाई में उन से वादा जंग हो लिया था यह वक़्त उसके उस पूरा होने का आया वह पहलवान था उसने कुश्ती मांगी उन्होंने कुबूल फरमाई उस मुहम्मदी शेर ने ख़ूक शैतान को दे मारा ख़ंजर लेकर उसके सीने पर सवार हुए उसने कहा

मेरी बीवी के लिए कौन होगा फरमाया नार और उसका गला काट दिया सरकारी ऊंट और तमाम ग़नीमतें और वह अस्बाब कि जाबजा कुफ़्फ़ार फेंकते और सलमा रज़ि० अल्लाहु तआला अन्हु रास्ते में जमा फरमाते गये थे सब ला कर हाज़िर बारगाहे अनवर किया।

अर्ज़ : मज्लिसे सिमा में अगर मज़ामीर न हों सिमा जाइज़ हो तो वज्द वालों का रक़्स जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर वज्दे सादिक़ है और हाल ग़ालिब और अक़्ल मस्तूर और उस आलम से दूर तो उस पर तो क़लम ही जारी नहीं - कि सुल्तान नगीर व खराज अज़ ख़राब। और अगर बतकल्लुफ़ वज्द करता है तो मुस्तस्ना और तकस्सर यानी लचके तोड़े के साथ हराम है और बेग़ैर उसके अगर रिया व इज़्हार के लिए है तो जहन्नम का मुस्तहिक़ है और अगर सादिक़ीन के साथ तशब्बुह बनीयते ख़ालिसा मक़्सूद है कि बनते बनते भी हक़ीक़त बन जाती है तो हसन व महमूद है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। *मन तशब्बहा बेक़ौमिन फ़हुवा मिन्हुम*। जो किसी का मुशाबेह बने वह उन्हीं में से -

अर्ज़ : अगर कोई तन्हा खुशूअ् के लिए नमाज़ पढ़े और आदत डाले ताकि सबके सामने भी खुशूअ् हो तो यह रिया है या क्या।

इरशाद : यह भी रिया है कि दिल में नीयत ग़ैरे खुदा है यहां मैं एक हदीस बहाबी कश बयान करता हूं कि इस मस्अला से मुतअल्लिक़ है आदते करीमा थी कि कभी शब में अपने अस्हाबे किराम का तफ़क़्क़ुद अहवाल फरमाते मसलन एक शब नमाज़े तहज्जुद में सिद्दीक़े अकबर पर गुज़र फरमाया सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को देखा कि बहुत आहिस्ता पढ़ रहे हैं फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तरफ तशरीफ़ ले गये मुलाहिज़ा फरमाया कि बहुत बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ तशरीफ़ ले गये उन्हें देखा कि जाबजा से मुतफ़र्रिक़ आयतें पढ़ रहे हैं सुबह हर एक से उसके तरीक़े का सबब दरयाफ़्त फरमाया सिद्दीक़ ने अर्ज़ की *या रसूलुल्लाह असमेअ्ता मिन अनाजीहे* में जिस से मुनाजात करता हूं उसे सुना लेता हूं यानी औरों से किया काम कि आवाज़ बुलन्द करूं फारूक़ ने अर्ज़ की। *या रसूलुल्लाह अतरद शैतानु व ऊक़िज़ल-वस्नानु* मैं शैतान को भगाता और सोतों को जगाता हूं यानी जहां तक आवाज़ पहुंचेगी

भागेगा और तहज्जुद वालों में जिसकी आंख न खुली वह जाग कर पढ़ेगा इसलिए इस क़द्र ज़ोर से पढ़ता हूं हज़रत विलाल ने अर्ज़ की। या रसूलुल्लाह कलामुन तैयबुन यज्मअल्लाहु वअ्ज़ेही मआ वअ्ज़िन। पाकीज़ा कलाम है कि अल्लाह उसके बाज़ को बाज़ से मिलाता है उसका मतलब फ़क़ीर की समझ में यह है गोया अर्ज़ करते हैं कि कुरआने अज़ीम एक लहलहाता बाग़ है जिस में रंग-रंग के फूल क़िस्म-क़िस्म के मेवे दुर्रे मन्सूर की तरह मुतफ़र्रिक़ फैले हुए कहीं हम्द है कहीं सना कहीं ज़िक्र कहीं दुआ कहीं ख़ौफ़ कहीं रजा कहीं नअ्ते हबीबे खुदा वग़ैरहा मतालिब जुदा-जुदा जानिये इलाही से जिस वक़्त जिस तरह की तजल्ली बारिद होती है उसी के मुनासिब आयात मुतफ़र्रिक़ मक़ामात से जमा करके पढ़ता हूं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कुल्लुकुम क़द असाया तुम सब ठीक पर हो मगर ऐ सिद्दीक़ तुम क़दरे आवाज़ बुलन्द करो और ऐ फ़ारूक़ तुम क़दरे पस्त और ऐ बिलाल तुम सूरत ख़त्म करके दूसरी सूरः की तरफ़ चलो इसी तरह एक शब तहज्जुद में अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का पढ़ना सुना उनकी आवाज़ निहायत दिलकश उनका लिहज़ा कमाल दिलकुशा था इरशाद हुआ उन्हें दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इल्हानों से एक इल्हान मिला है सुबह उनके पढ़ने की तारीफ फरमाई उन्होंने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह अगर मुझे मालूम होता कि सुन रहे हैं तो और ज़्यादा वह बना कर पढ़ता मैं कहता हूं यह जगह है कि वहाबियत का ज़ोहरा शक़ हो जाए रिया हराम है बल्कि उसे शिर्क फरमाया -

और रिया नहीं मगर ग़ैरे खुदा के लिए तसन्नुअ् यहां यह सहाबी खुद हुज़ूर में अर्ज़ कर रहे हैं कि मैं हुज़ूर के लिए और ज़्यादा बना कर पढ़ता और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इंकार नहीं फरमाते तो साबित हुआ कि हुज़ूर के लिए बनाना ग़ैरे खुदा के लिए बनाना नहीं खुदा ही के लिए है कि हुज़ूर का मुआमला अल्लाह ही का मुआमला है कअब बिन मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अर्ज़ करते हैं। *या रसूलुल्लाह अन मन तमाम तौबती अन इंख़लआ मिन माली सदक़तुन इलल्लाहि व रसूलहू।* या रसूलुल्लाह मेरी तौबा की तमामी यह है कि अपने माल से बाहर आऊं सब अल्लाह व रसूल के नाम पर

तसद्दुक़ कर दूं। उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा अर्ज़ करती हैं। *या रसूलुल्लाह तुबतु इलल्लाहि व रसूलेही।* या रसूलुल्लाह मैं अल्लाह व रसूल की तरफ़ तौबा करती हूं इस क़िस्म की बहुत आयात व अहादीस मेरी किताब *अल-अमनु वल-उला* में मिलेंगी जिन से साबित होगा कि हबीब का मुआमला ग़ैरे खुदा का मुआमला नहीं अल्लाह ही का मुआमला है मगर वहाबिया को अक़्ल व ईमान नहीं बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस मज़्कूर से पंज आयत का भी जवाज़ साबित हुआ कि वह मुतफ़र्रिक़ मक़ाम से आयात पढ़ते थे और इरशाद हुआ तुम सब ठीक पर हो और आगे जो उन्हें तालीम फरमाई उस से इतना साबित हुआ कि नमाज़ में औला यूं है।

अर्ज़ : हुज़ूर फना फ़िश्शैख़ का मरतबा किस तरह हासिल होता है।

इरशाद : यह ख़्याल रखे कि मेरा शैख़ मेरे सामने है और अपने क़ल्ब को उसके क़ल्ब के नीचे तसव्वुर करके इस तरह समझे कि सरकारे रिसालत से फ़ुयूज़ व अनवारे क़ल्बे शैख़ पर फाइज़ होते और उस से छलक कर मेरे दिल में आ रहे हैं फिर कुछ अरसा के बाद यह हालत हो जाएगी कि शजर व हजर व दरो दीवार पर शैख़ की सूरत साफ़ नज़र आएगी यहां तक कि नमाज़ में भी जुदा न होगी और फिर हर हाल अपने साथ में पाओगे हाफ़िज़ुल-हदीस *सैयदी अहमद सजिलमासी* कहीं तशरीफ़ लिए जाते थे राह में इत्तिफ़ाक़न आपकी नज़र एक निहायत हसीना औरत पर पड़ गई यह नज़र अव्वल थी बिला क़स्द थी दोबारा फिर आपकी नज़र उठ गई अब देखा कि पहलू में हज़रत सैयदी ग़ौसुल-वक़्त अब्दुल-अज़ीज़ दबाग़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु आपके पीर व मुर्शिद तशरीफ़ फरमा हैं और फरमाते हैं अहमद आलिम हो कर उन्हें सैयदी अहमद सजिलमासी के दो बीवियां थीं सैयदी अब्दुल-अज़ीज़ दबाग़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि रात को तुमने एक बीवी के जागते हुए दूसरे से हम बिस्तरी की यह नहीं चाहिए अर्ज़ किया हुज़ूर वह उस वक़्त सोती थी फरमाया सोती न थी सोते में जान डाल ली थी अर्ज़ किया हुज़ूर को किस तरह इल्म हुआ फरमाया जहां वह सो रही थी कोई और पलंग भी था अर्ज़ किया हां एक पलंग ख़ाली था फरमाया उस पर मैं था तो किसी वक़्त शैख़ मुरीद से जुदा नहीं हर आन साथ है।

अर्ज़ : बच्चों की बैअ़त किस उम्र में हो सकती है।

इरशाद : अगर एक दिन का बच्चा हो वली की इजाज़त से बैअ़त हो सकता है।

अर्ज़ : इस्बाते हिलाल में तार पर एतमाद होगा या नहीं।

इरशाद : मेरा रिसाला *अज़कल-हिलाल* मुलाहिज़ा फरमाइए जिस में बदर की तरह रौशन किया है कि रूयते हिलाल में तार और ख़त की ख़बर मोतबर नहीं। लेकिन गंगोही साहब ने मोतबर मानी और अपने इल्म व फहम की बांगी दिखाने को उस पर यह इस्तिदलाल मज़्हेका अतफ़ाल तराशा कि तहरीर मोतबर है और तहरीरे क़लम से हो या तवील बांस से हर तरह तहरीर है तो गोया उन बुजुर्गों के नज़्दीक तार भेजने वाला इतने लम्बे बांस से कुछ लिख दिया करता है वला हौला वला कुव्वता इल्लाह बिल्लाहिल-अलीयुल-अज़ीम उनका यह फतवा हमारे पास मौजूद है और अक़्लन व नक़्लन बातिल व मरदूद है अव्वल तो यहां तहरीर ही कहां दोम ख़त खुद कब मोतबर तमाम किताबों में तस्रीह है कि *अल-ख़त्तु युश्बेहुल-ख़त* और *अल-ख़त्तु ला यामलु बेही* सोम आपके लिखे उस सैकड़ों मील के तवील बांस से वह ख़बर भेजने वाला नहीं लिखता कि उसका ख़त आपके नज़्दीक मोतबर हो बल्कि यह शैतान की आंत बांस तार बाबू के हाथ में है जो महज़ मज्हूल और अक्सर कुफ़्फ़ार।

अर्ज़ : हुज़ूर कुतुब की तरफ़ पाँव करने की क्या मुमानअत फरमाई गई है।

इरशाद : यह मस्अला जुहला में बहुत मशहूर है कुतबे अवाम में एक सितारे का नाम है कि कुतबे शुमाली के क़रीब है तो तारे तो चारों तरफ़ हैं किसी तरफ़ पांव न करे (इसी तज़्किरा में फरमाया) हज़रत सैयदी इब्राहीम अदहम मस्जिद में पांव फैलाए बैठे थे ग़ैब से निदा आई "इब्राहीम क्या बादशाहों के हज़ूर यूं ही बैठते हैं" उस वक़्त से जो पांव समेटे तो तख़्ते ही पर फले कभी सोते में भी न फैलाए।

अर्ज़ : दस्तर्ख़्वान पर अगर अश्आर वग़ैरह लिखे हों तो उस पर खाना जाइज़ है।

इरशाद : नाजाइज़ है।

अर्ज़ : अगर बर्तन में आयात वग़ैरह लिखी हों तो उस में खाना कैसा

है।

इरशाद : अगर बग़रज़ इस्तिशफ़ा है तो हरज नहीं लेकिन बा वुज़ू वरना इजाज़त नहीं।

अर्ज़ : अगर मोतकिफ़ किसी माकूल वजह से मस्जिद ही में वुज़ू करे तो उसे इजाज़त होगी।

इरशाद : नहीं मगर जब कि वह बएहतियात इस तरह वुज़ू करे कि उसके वुज़ू की छींट मस्जिद में न गिरे कि उसकी सख़्त मुमानअत है अक्सर देखा गया कि फसील पर वुज़ू किया और वैसे ही हाथ झटकते फ़र्श मस्जिद में पहुंच गये यह नाजाइज़ है मैंने एक बार बेग़ैर बर्तन के ख़ास मस्जिद में वुज़ू जाइज़ तौर पर किया वह यूं कि पानी मूसला धार पड़ रहा था और मैं मोतकिफ़ जाड़ों के दिन थे मैंने तोशक बिछा कर और उस पर लिहाफ़ डाल कर वुज़ू कर लिया इस सूरत में एक छींट भी मस्जिद के फ़र्श पर न पड़ी पानी जितना वुज़ू का था तोशक व लिहाफ़ ने जज़्ब कर लिया।

अर्ज़ : हुज़ूर मदीना तैयबा में एक नमाज़ पचास हज़ार का सवाब रखती है और मक्का मुअज़्ज़मा में एक लाख का इससे मक्का मुअज़्ज़मा का अफ़ज़ल होना समझा जाता है।

इरशाद : जम्हूर हन्फ़ीया का यही मसलक है और इमाम मालिक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक मदीना तैयबा अफ़ज़ल है और यही मज़्हब अमीरुल-मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का है एक सहाबी ने कहा मक्का मुअज़्ज़मा अफ़ज़ल है फ़रमाया क्या तुम कहते हो कि मक्का मदीना से अफ़ज़ल है उन्होंने कहा वल्लाह बैतुल्लाह व हरमुल्लाह फ़रमाया मैं बैतुल्लाह और हरमुल्लाह में कुछ नहीं कहता क्या तुम कहते हो कि मक्का मदीना से अफ़ज़ल है उन्होंने कहा बखुदा ख़ान-ए-खुदा व हरमे खुदा फरमाया मैं ख़ान-ए-खुदा व हरमे खुदा में कुछ नहीं कहता किया तुम कहते हो कि मक्का मदीना से अफ़ज़ल है वह वही कहते रहे और अमीरुल-मुमिनीन यही फरमाते रहे और यही मेरा मसलक है सही हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : *अल-मदीनतु ख़ैरुन लहुम लौ कानू यामलून*; मदीना उनके लिए बेहतर है अगर वह जानें दूसरी हदीस नस्से सरीह है कि फरमाया *अल-मदीनतु अफ़ज़लु मिन मक्कते* मदीना

मक्का से अफ़ज़ल है और तफ़ावते सवाब का जवाब बासवाब शैख़ मुहक़्क़िक़ अब्दुल-हक़ देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने क्या ख़ूब दिया कि मक्का में कमीयत ज़्यादा है और मदीना में कैफ़ियत यानी वहां मिक़्दार ज़्यादा है और यहां क़द्र अफ़्ज़ूं जिसे यूं समझिये कि लाख रुपया ज़्यादा कि पचास हज़ार अशरफ़ियां गिनती में वह दूने हैं और मालियत में यह दस गुनी मक्का मुअज़्ज़मा में जिस तरह एक नेकी लाख नेकियां हैं यूं ही एक गुनाह लाख गुनाह हैं और वहां गुनाह के इरादे पर भी गिरिफ़्त है जिस तरह नेकी के इरादे पर सवाब मदीना तैयबा में नेकी के इरादे पर सवाब और गुनाह के इरादे पर कुछ नहीं और गुनाह करे तो एक ही गुनाह और नेकी करे तो पचास हज़ार नेकियां अजब नहीं कि हदीस में ख़ैरुन लहुम का इशारा उसी तरफ़ हो कि उनके हक़ में मदीना ही बेहतर है।

मुअल्लिफ़ : हज़रत मुहद्दिस सूरती रहमतुल्लाहि तआला अलैह के विसाल शरीफ़ का ज़िक्र था उनके महासिन का ज़िक्र फरमाते हुए इरशाद फरमाया क़्यामत क़रीब है अच्छे लोग उठते जाते हैं जो जाता है अपना नाइब नहीं छोड़ता (फिर फरमाया) इमाम बुख़ारी ने इंतिक़ाल फरमाया ६० हज़ार शागिर्द मुहद्दिस छोड़े सैयदना इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने इंतिक़ाल फरमाया और एक हज़ार मुज्तहेदीन अपने शागिर्द छोड़े मुहद्दिस होना इल्म का पहला ज़ीना है और मुज्तहिद होना आख़िरी मंज़िल और अब हज़ार मरते हैं और एक भी नहीं छोड़ते इमाम बुख़ारी ने एक मरतबा ख़्वाब देखा कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मगस रानी कर रहा हूं ख़्वाब देख कर परेशान हुए कि मक्खी तो जिस्मे अक़्दस पर बैठती न थी उलमा ने ताबीर फरमाया बशारत हो तुम्हें कि अहादीस में जो ख़लत हो गया है तुम उसे पाक व साफ़ करोगे।

अर्ज़ : हुज़ूर अहादीस में ख़लत किस ने कर दिया उसकी क्या वजह हुई।

इरशाद : ख़ुदाना तरसों ने अक्सर अहादीस में कुछ का कुछ कर दिया है एक मरतबा एक शख़्स ने मज्लिसे वअ़ज़ में बड़ी लम्बी चौड़ी हदीस पढ़ी जिसकी शुरू सनद में था हद्दसना *अहमद बिन हंबल व यहिया बिन मईन,* अहमद बिन हंबल व यहिया बिन मुईन ने हम से हदीस बयान की इत्तिफ़ाक़ की बात कि यह दोनों हज़रात उस वक़्त वहां तशरीफ़ फरमा थे बाहम एक दूसरे को देख-देख कर रह जाते जब वह ख़त्म कर चुका यहिया बिन-मईन ने इशारा से अपने पास बुलाया और फरमाया अहमद यह हैं और यहिया मैं हम ने ख़्वाब में भी यह हदीस जो तुम ने पढ़ी, नहीं बयान की बोला मैं सुना करता था कि इब्ने हंबल व इब्ने मुईन कम अक़्ल हैं आज मुझे उसका यक़ीन हुआ, साठ अहमद बिन हंबल व यहिया बिन मुईन हैं जिन से मैं हदीस रिवायत करता हूं यह तमस्खुर करता हुआ चला गया (इसी सिलसिले में फरमाया कि) पहली मरतबा की हाज़िरी हरमैन तैयबैन में एक कट्टर वहाबी ने ख़ास काबा मुअज़्ज़मा में मुझ से आ कर कहा कि आप मीलाद शरीफ़ में क़्याम करने के लिए बहुत ज़ोर देते थे और कहते थे कि अरब शरीफ़ में आम तौर से क़्याम करने के लिए बहुत ज़ोर देते थे और कहते थे कि अरब शरीफ़ में आम तौर से क़्याम होता है यहां शैखुल-उलमा अहम ज़ीन दहलान क़्याम को मना करते हैं मैंने कहा शैखुल-उलमा का दौलत क़दह यहां से चन्द क़दम है अभी चलो हम दरयाफ़्त करा दें हर चन्द इसरार किया ज़मीन पकड़ गया मुफ़्तरियों की यह जुरअत होती है मैंने कहा काश मक्का मुअज़्ज़मा से बाहर जाकर बल्कि जहाज़ में सवार हो कर यह इफ़्तरा किया होता कि तस्दीक़ के लिए वापस आना दुशवार होता शैखुल-उलमा के ज़ेर दीवार बैठ कर ऐसा जीता इफ़्तरा मगर इस हयादार को कुछ असर न हुआ उठ कर चला गया मुझे मालूम था कि हज़रत शैखुल-उलमा खुद क़्याम फरमाते हैं इस्तेहसाने क़्याम में उनके मुतअद्दद फतवे हैं फतावे के अलावा उनकी किताब मुस्तताब *अद्दुर्रुस्सनीया फ़ी रद्दे अलल-वहाबिया।* में उसकी जलील तशरीह है और सीरते नबवीया में उस से भी रौशन तर।

यानी आदत जारी हो गई है कि लोग जब ज़िक्रे विलादत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सुनते हैं तो हुज़ूरे अकरम व आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम के लिए खड़े हो जाते हैं और क़्याम बहुत बेहतर और मुस्तहसन है क्योंकि उस में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ताज़ीम है और बेशक उम्मत के बड़े उलमा ने ऐसा किया जिनकी पैरवी की जाती है।

अर्ज़ : वाक़ई अगर मुंह बन्द हुआ है तो हुज़ूर ही की ज़ाते बाबरकात

से दिल में न मालूम क्या क्या कहते होंगे।

इरशाद : उसका क्या खौफ़। दिल में क्या वरमला फहश गालियां देते हैं वाज़ खुवसा तो मुग़ल्लज़ात से भरे हुए वैरंग खुतूत भेजते हैं फिर एक नहीं अल्लाहु आलम कितने आते हैं मुझे उसकी परवा नहीं उस से ज़्यादा मेरी ज़ात पर हमले करें मैं तो शुक्र करता हूं कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने मुझे दीने हक़ की सिपर वनाया कि जितनी देर वह मुझे कोस्ते गालियां देते वुरा भला कहते हैं उतनी देर अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तौहीन व तन्क़ीस से वाज़ रहते हैं। उधर से कभी उसके जवाव का वहम भी नहीं होता और न कुछ वुरा मालूम होता है कि हमारी इज़्ज़त उनकी इज़्ज़त पर निसार ही होने के लिए है वल्कि उन पर निसार होना ही इज़्ज़त है क़ुरआने अज़ीम में इरशाद फरमाया। *वल-तस्मउन्ना मिनल्लज़ीना अ ारकू वल्लज़ीना ऊतुल-किताव मिन क़वलेकुम अज़न कसीरा।* अल्वत्ता तुम मुश्रिकों और अगले कितावियों से वहुत कुछ वुरा सुनोगे। वड़े-वड़े अइम्मा व मुज्तहेदीन व सहावा व तावईन तो मुख़ालेफ़ीन के सव व शितम से वचे नहीं यह दरकनार जव अल्लाह वाहिदे क़हहार और उसके प्यारे हवीव व महवूव अहमद मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान घटाना चाही उन्हें ऐव लगाए तो और कोई किस गिनती में।

एक साहिवे विलायत ने हज़रत महवूवे इलाही क़ुद्दिसा सिर्रहुल-अज़ीज़ की वारगाह में हाज़िरी का, मंज़िले दूर दराज़ से क़स्द फ़रमाया राह में जिस से हज़रत महवूवे इलाही साहव का हाल दरयाफ़्त फरमाते लोग तारीफ़ ही करते उन्होंने अपने दिल में कहा मेरी मेहनत ज़ाए हुई कि यह अगर हक़ गो होते लोग ज़रूर उनके वदगो होते जव दिल्ली क़रीव रही उन्होंने लोगों से पूछा अव मज़म्मतें सुन कोई कहता वह दिल्ली का मक्कार है कोई कुछ कहता कोई कुछ कहता उन्होंने कहा अल्हम्दुलिल्लाह मेरी मेहनत वसूल हुई।

हज़रत यहिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने वारगाहे रव्वुल-इज़्ज़त में अर्ज़ की इलाही मुझे ऐसा कर कि मुझे कोई वुरा न कहे इरशादे वारी हुआ ऐ यहिया यह मैंने अपने लिए तो किया नहीं कोई मेरा शरीक वनाता है कोई फरिश्तों को मेरी वेटियां वताता है कोई मेरे लिए वेटे

ठहराता है लेकिन नवी की दुआ ख़ाली नहीं जाती आज आप देखते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम व ईसा अलैहिस्सलाम को अक्सर वुरा कहने वाले मौजूद हैं लेकिन हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम का एक भी वुरा कहने वाला नहीं। क़ादियानी से वद जुवान को देखो सैयद ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की कैसी तौहीनें करता है यहां तक कि उन्हें और उनकी मां सिद्दीक़ा वतूल ताहिरा को फहश गालियां तक देता है चार सौ अंविया को साफ झूठा लिखा हत्ता कि दोवारा हुदैविया ख़ुद शाने अक़्दस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर नापाक हमला किया मगर यहिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तारीफ़ ही की (यह फरमा कर इरशाद फरमाया कि) उस पर भी वाज़ अहमक़ सख़्ती का इल्ज़ाम देते हैं अल्लाह व रसूल को गालियां देना तो कोई वात ही न हुआ न वह सख़्ती है न वेतहज़ीवी न कोई वुरी वात इधर से उनकी इस नापाक हरकत पर काफिर कहा और वस सख़्ती व वेतहज़ीवी सव कुछ हो गई हां-हां अल्लाह व रसूल की शान में जो गुस्ताख़ी करेगा उसे ज़रूर काफिर कहा जाएगा कसे वाशद और वल्लाह की यह मैं अपनी तरफ़ से नहीं कहता वल्कि अल्लाह व रसूल जल्ला व उला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहकाम वयान करता हूं मैं तो उनका चपरासी हूं चपरासी का काम ही सरकारी हुक्म नामा पहुंचाना है न कि अपनी तरफ़ से कोई हुक्म लगाना अल्लाह के करम से उम्मीद की वह क़ुवूल फरमाए। आमीन

अर्ज़ : *हुज़ूर अलमा मा काना वमा यकून*। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हासिल है मगर वाज़ लोग एतराज़ करते हैं कि *वमा अल्लमनाहु शेअ्रा वमा यंवग़ी* लहू फ़रमाया गया तो शेअ्र का इल्म न हुआ।

इरशाद : इल्म किसी फन की तरफ़ निस्वत किया जाए तो उसके मानी दानिस्तन नहीं होते वल्कि मलिका व इक़्तिदार जैसे कहा जाता है कि फुलां घोड़े पर चढ़ना जानता है उसके यह मानी नहीं कि उसका जो मफ़्हूम है वह उसके ज़हन में है वल्कि यह कि क़ुदरत रखता है या यह कि घोड़े पर चढ़ना नहीं जानता तो यह मतलव नहीं कि जो उसका मफ़्हूम है वह उसके ज़हन में नहीं कि ग़ैर को घोड़े पर सवार देखा तो उसका मफ़्हूम इसलिए ज़रूर जाना वाक़ी क़ुदरत नहीं रखता हदीस में

इरशाद हुआ। *अलेमू बैनकुम अर्रमी वस्सबाहते* अपने बेटों को तीर अन्दाज़ी और तैरना सिखाओ क्या उसके यह मानी हैं कि उनके मफ़्हूमों का उनको तसव्वुर करा दो बल्कि यह कि उन फुनून को उनके क़ाबू में कर दो कि तीर निशाने पर लगा सकें और दरिया तैर सकें तो आयते करीमा के यह मानी नहीं कि औरों के अश्आर हुज़ूर के इल्म में नहीं बल्कि यह मानी कि हुज़ूर को हम ने शेअ्र गोई पर कुदरत नहीं दी और न यह हुज़ूर के लाइक़।

सहाबा क़साइद अर्ज़ करते क्या उनके अशआर हमारे हुज़ूर के इल्म में न आते बल्कि बाज़ बाज़ मवाक़े पर इस्लाह फरमाई है कअब बिन जुबैर अस्लमी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने क़सीद-ए-नअ्तिया में अर्ज़ किया-

इरशाद हुआ नार की जगह नूर कर और सुयूफुल-हिन्द की जगह सुयूफुल्लाह जब बाज़ अश्आर दीगरां इल्मे अक़्दस में आना मनाफ़ी करीमा *वमा अल्लमनाहु शेअ्रा* न हुआ तो जमीअ् अशआर अव्वलीन व आख़िरीन मक्तूबाते लौहे मुबीन को इल्मे अक़्दस का मुहीत होना क्या मनाफ़ी हो सकता है जो ईजाबे जुज़ई किसी सलबे कुल्ली का नक़ीज़ नहीं उसका ईजाबे कुल्ली भी यक़ीनन मनाफ़ी नहीं अल्बत्ता मलक-ए-शेअ्र गोई हुज़ूर को अता न हुआ और उस पर भी रब्बुल-इज़्ज़त ने दफा वहम फरमा दिया कि यह कोई ख़ूबी न थी जो हम ने उनको न दी बल्कि *वमा यंबग़ी लहू* यह उनकी शाने रफ़ीअ् के लाइक़ ही नहीं तो उनके हक़ में मनक़सत थी और वह जमीअ् नक़ाइस से मुनज़्ज़ह हैं सल्ललल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बल्कि शेअ्र गोई बालाए ताक़ अगर नादिरन कभी दूसरे का शेअ्र पढ़ते तो उसे वज़न से साक़ित फरमा देते।

का मिसरा दोम यूं पढ़ते *व यातीका मन लम तुज़व्विद बिल-अख़्बारे*। इस पर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को शेअ्र से मुनज़्ज़ह फरमाया है शायर ने यूं कहा है :

व यातीका बिल-अख़्बारे मन लम तुज़व्विद

अर्ज़ : फ़लासफ़ा कहते हैं कि जुज़ ला यतजज़्ज़ा बातिल है अगर बातिल माना जाए और ह्यूला और सूरत की क़दामत बातिल कर दी जाए तो इस्लाम के नज़्दीक इसमें क्या बुराई।

इरशाद : अगर जुज़ ला यतजज़्ज़ा न माना जाए तो ह्यूला और

सूरत के क़दम का रास्ता खुलेगा इन दलाइले फ़लासफ़ा का उठाना फ़िर तवील व अरीज़ मुबाहिस चाहेगा इसलिए हमारे उलमा ने उसे सिरे ही से रद्द फरमा दिया गरचा कशतन रोज़े अव्वल बायद दीने इस्लाम में ज़ात व सिफ़ाते इलाही के सिवा कोई शय क़दीम नहीं रब्बुल-इज़्ज़त फरमाता है *बदीउस्समावाते वल-अर्ज़* नया पैदा फरमाने वाला आसमानों और ज़मीन का और हदीस में है। *कानल्लाहु वलम यकुन मअ़हू शैयुन अज़ल* में अल्लाह था और उसके साथ कुछ न था ग़ैरे ख़ुदा किसी शय को क़दीम मानना बिल-इज्मा कुफ़्र है।

अर्ज़ : बारी तआला का इल्म क़ब्ले मख़्लूक़ात फ़ेअ्ली था वह किस सूरत से था।

इरशाद : यह लफ़्ज़ आपने फलासफ़ा का कहा वह इल्मे इलाही को फ़ेअ्ल व इंफ़ेआल की तरफ़ मुनक़सिम करते हैं और मुसलमानों के नज़्दीक अल्लाह इंफ़ेआल से पाक है और इल्मे इलाही सूरत से मुनज़्ज़ह जैसे उसकी ज़ात की कुनह कोई नहीं जान सकता यूंही उसकी सिफ़ात की।

फलासफ़ा ने जो कहा कि इल्म नाम सूरत हासिला इन्दल-अक़्ल का है ग़लत है उन सुफ़हा ने असल व फरअ् में फ़र्क़ न किया इल्म से हमारे ज़हन में मालूम की सूरत हासिल होती है ल कि हुसूले सूरत से इल्म। इल्म वह नूर है कि जो शय उसके दाइरे में आ गई मुंकशिफ़ हो गई और जिस से मुतअल्लिक़ हो गया उसकी सूरत हमारे ज़हन में मुरतसिम हो गई जब फलासफ़ा अपने इल्म को न पहचान सके इल्मे इलाही को क्या पहचानेंगे हक़ सुबहानहू तआला ज़हन व सूरत व इर्तिसाम व नूर अर्ज़ी सब से मुनज़्ज़ह है न उसका इल्म. हुज़ूर मालूम का मुहताज उसका इल्म हुज़ूर व हुसूली दोनों से मुनज़्ज़ह है उसका इल्म उसकी सिफ़ते क़दीमा क़ाइमा बिज़्ज़ात लाज़िम नफ़्स ज़ात है और कैफ़ से मुनज़्ज़ह वहां चून व चगूं व चुरा व चिरां का दख़ल नहीं हम न उसकी ज़ात से बहरा कर सकते हैं न उसकी किसी सिफ़त से हदीस में इरशाद फरमाया। *तुफ़क्किरू फ़ी-आलाइल्लाहि वला तफ़क्किरू फ़ी जातिल्लाह फतुहलिकू।* अल्लाह की नेमतों में फ़िक्र करो और उसकी ज़ात में फ़िक्र न करो कि हलाक हो जाओगे उसकी सिफ़ात में फ़िक्र ज़ात ही में फ़िक्र है इद्राक कुनह सिफ़ात बेइद्राक कुनह ज़ात मुम्किन नहीं कि उसकी सिफ़ात को किसी मूतिन में ज़ात से जुदाई मुहाल इसी लिए उन्हें ला

ऐन वला ग़ैर कहा जाता है और कुनह ज़ात का इद्राक मख़्लूक़ को मुहाल कि वह *बिकुल्लि शैइन मुहीत* है कोई उसे मुहीत नहीं हो सकता *ला जरुम कुनह* सिफ़ात का भी इद्राक मुहाल हक़ यह है *व इन इफ़्ताकल-मफ़्तून* अपनी हक़ीक़त तो जानते नहीं अल्लाह तआला की कुनह में कलाम करेंगे इंसान की उस वक़्त तक हक़ीक़ते फलासफ़ा तो जानते नहीं अल्लाह तआला की कुनह में कलाम करेंगे इंसान की उस वक़्त तक हक़ीक़ते फलासफ़ा को मालूम नहीं। इंसान की क्या तारीफ करते हैं हैवाने नातिक़ हैवान की तारीफ़ करते हैं जिस्म नामी हस्सास मुतहर्रिक बिल-इरादा और नातिक़ की मदरिके कुल्लियात व जुज़इयात अगरचे यह भी उनके मुतअख़्ख़ेरीन की रफ़ूगरी है इन सुफहा ने तो आवाज़ों पर हुदूद रखी थीं घोड़ा हैवाने साहिल हिनहिनाने वाला जानवर गधा हैवान नातिक रेंगने वाला जानवर इंसान हैवाने नातिक़ कलाम करने वाला जानवर उन्होंने नातिक़ के मानी गढ़े मदारिके कुल्लियात व जुज़्इयात जिसे असलन ज़ुबाने अरब मुसाइद नहीं ख़ैर यूं ही सही इंसान नाम बदन का है या नफ़्स नातेक़ा या दोनों के मजमूअ़ का अव्वल नातिक़ नहीं कि इद्राके कुल्लियात शाने नफ़्स है न कारे बदन दोम हैवान नहीं कि नफ़्से नातिक़ा न जिस्म है न नामी न उनके नज़्दीक मुतहर्रिक सोम न हैवान है न नातिक़ कि हैवान वला हैवान का मज्मूआ ला हैवान होगा और नातिक़ वला नातिक़ का, ला नातिक़ ग़रज़ वाक़े में कोई शय ऐसी नहीं जिस पर हैवान व नातिक बमानी मज़्कूर दोनों सादिक़ हों यह है उनका ख़ुद अपनी हक़ीक़त के इद्राक से।

फिर कुनह ज़ात व सिफ़ात में कलाम कैसा जुहल शदीद व ज़लाल ताम है हक़ यह है कि इंसान रूह मुअल्लिक़ बिल-बदन का नाम है और रूह अमर रब से है उसकी मारिफ़त बेमारिफ़त रब नहीं हो सकती इसीलिए औलिया फरमाते हैं मन अरफ़ा नफ़्सेही फ़क़द अरफ़ा रब्बहू जिस ने अपने नफ़्स को पहचाना उसने ज़रूर अपने रब को पहचान लिया यानी मारिफ़ते नफ़्स उसी वक़्त हासिल होगी जब पहले मारिफ़त रब हो ले ज़िन्दीक़ लोग उसे उस पर हमल करते हैं कि नफ़्स ही रब है और यह कुफ़्र ख़ालिस है *कुलिर्रूहु मन अमरे रब्बी न कि मआज़ल्लाहु रब्बी।*

अर्ज़ : हाशिया ख़्याली पर मौलवी अब्दुल-हकीम ने लिखा रूह और जिस्म में इत्तिहाद ज़ाती और तग़ायर एतबारी है।

इरशाद : यह कोई आक़िल नहीं कह सकता रूह यानी नफ़्से नातेक़ा को माद्दे से मुजर्रद मानते हैं या नहीं और जिस्म माद्दी है तो कैसे इत्तिहाद हो जाएगा मुहाल है न शरअन सही न *अक़्लन फइज़ा सवैतुहू व नफ़ख़त फीहे मिन रूही* फ़रमाया तो मालूम हुआ कि बदन और रूह और है।

अर्ज : तो हलूल हुआ।

इरशाद : हां मुतकल्लेमीन बदन में रूह का हलूल मानते हैं।

अर्ज : रूह आलमे अम्र से है।

इरशाद : हां। आलमे अम्र और आलमे ख़ल्क़ में फ़र्क़ है। (1) आलमे ख़ल्क माद्दे से बतदरीज पैदा फरमाया जाता है और आलिम (2) अमर नरे कुन से *लहुल-ख़ल्कु वल-अमरु तबारकल्लाहु रब्बुल-आलमीन।* रूह आलमे अम्र से है महज़ कुन से बनी और जिस्म आलम ख़ल्क़ से कि नुत्फ़ा फिर अल्क़ा फिर मुज़्ग़ा ग़ैर मुख़्लक़ा फिर मुख़्लक़ा होता है। *ख़लक़कुम अतवारा।*

अर्ज : इस मसअला पर *जुज़ ला यतजज़्ज़ा में* इमाम राज़ी और उलमा ने भी तवक़्क़ुफ़ किया है और दलाइले फ़लासफ़ा उसके इबताल पर क़वी मालूम होते हैं।

इरशाद : सदर अर्मी बहुत हुज्जतें लिखीं जिनमें नफ़्स जुज़ को कोई बातिल नहीं करती इत्तिसाल जुज़्ईन बातिल करती हैं इत्तिसाल को हम भी बातिल मानते हैं जैसे फलासफ़ा नुक़्ता का वजूद मानते हैं और तताली नक़्ततें मुहाल जानते हैं। अक़्लीदस ने जो उसूल मौज़ूआ माने हैं उनमें यह भी है कि नुक़्ता व ख़त व सतह मौजूद हैं और असीर अबहरी ने अपनी बाज़ कुतुब में उस पर बुरहान क़ायम की है जो शरह हिक्मतुल-ऐन में मज़्कूर है और यही उनके यहां मज़्हब मुहक़्क़ेक़ीन व जम्हूर है बस तू इसी तरह से इत्तिसाल का इबताल लाज़िम है न कि नफ़्स जुज़ का।

अर्ज़ : शैख़ शहाबुद्दीन मक़्तूल के मज़्हब का क्या हाल है।

इरशाद : फल्सफ़ी ख़्यालाते बातिला उसकी तरफ़ निस्बत किए गये हैं जिस पर उसे क़त्ल किया गया वह अपनी किताब हिक्मतुल-इशराक़ में अगरचे मशाईन के ख़िलाफ़ चला मगर फलासफ़ा इशराक़ीन का मुत्तबा हुआ कहते हैं सीमिया जो एक निहायत नापाक इल्म है उसे आत

था कस्साव से दुंवा ख़रीदा दुंवा लेकर चला और क़ीमत न दी कस्साव पीछे हो लिया वह मांगता है यह चुप चाप जाता है क़स्साव ने उसके कन्धे पर हाथ रखा था कि हाथ उखड़ आया वह वेचारा डरा कि कहीं गिरफ़्तार न हो जाए छोड़ कर चला गया और वह दरहक़ीक़त हाथ न था वल्कि आस्तीन थी उसे यह फन आता था उसे लिख कर हज़रत जामी कुद्दिसा सिर्रुहू अस्सामी फरमाते हैं। वद उकसाने कि चुनीं कारहा कुनद दो वदा इल्मी कि वा व ई कारहा आमोज़न्द।

अर्ज़ : वाज़ मुतसव्वफ़ा ने उसकी तारीफ़ की।

इरशाद : हज़रत शैख़ शहावुद्दीन सहरवरदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ़ की है और वह वेशक इमामुल-अइम्मा हैं यह भी सहरवर्दी था ज़माना भी हज़रत से क़रीव है निस्वत भी एक है लक़व भी एक है इसलिए लोगों को धोखा होता है उसकी किसी वात में वरकत न दी गई ३४-३५ वरस की उम्र में मारा गया।

अर्ज़ : मअ़कूलियों ने उसकी वड़ी तारीफ़ की है।

इरशाद : हां इब्ने सैना को शैखुर्रईस और उसे शैखुल-इशराक़ कहते हैं (इसी सिलसिला में इरशाद फ़रमाया) मअ़कूलियों ने अपने वस्फ़ में से (फ़) घटा दिया वे वास्ता अल्लाह तक वसूल मुहाल है सिवाए एक *मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम* की ज़ात के नफ़्हातुल-उन्स शरीफ़ में है एक साहव ने ज़ियारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हो कर अर्ज़ की ग़ज़ाली कैसे हैं फरमाया : *फाज़ मक़्दुहू* अपनी मुराद को पहुंच गये अर्ज़ की फ़ख़रुद्दीन राज़ी कैसे हैं फरमाया *रजुलुन मआतिव* उन पर एताव है मआज़ल्लाह उक़ाव न फरमाया एक़ाव सज़ा है और एताव हिस्सा अहिव्वा है। अर्ज़ की इब्ने सीना फ़रमाया वे मेरे वास्ते के अल्लाह तक पहुंचना चाहता था मैंने एक धूल लगाई कि तहतुस्सरा को चला गया यह वाज़ सालेहीन का ख़्वाव है और इमाम याफ़ई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने मिरअतुल-जनान में एक रिवायत यह तहरीर फरमाई कि इब्ने सैना आख़िर उमर में ताइव हो गया था मौत से कुछ मुद्दत पहले अफ़्यून खाना छोड़ दिया वांदी गुलाम सव आज़ाद कर दिए रात दिन नमाज़ व तिलावते क़ुरआन में मशग़ूल रहता था।

रहमत वेसवव को मुतवज्जोह होते देर नहीं लगती अस्सी (८०) वरस के वुत परस्त को एक आन में मुसलमान वल्कि क़ुतवे शहर वल्कि

अवदाल से भी आला वदलाए सवआ से कर लेते हैं अगर ऐसा है तो रहमतुल्लाहि तआला अलैहि मगर उम्मत में वड़ा फित्ना छोड़ गया। *व हस्वुनल्लाहु व नेअ़मल-वकील।*

अर्ज़ : वहाविया तो यह कहते हैं कि जव मारिफ़त हासिल हो गई तो वास्ता की हाजत न रही तक़्वियते ईमान में भी एक आध जगह ऐसा याद होता है।

इरशाद : एक जगह नहीं तक़्वियतुल-ईमान में चार जगह यह लिखा अल्लाह पर इफ़्तरा अल्लाह के रसूलों पर इफ़्तरा और रिसालत का इंकार *वला हौला वला कुव्वता इल्ला विल्लाहुल-अलीयुल-अज़ीम।* वह वास्ता के माना ऐल्ची समझे हैं ऐल्वी ही मानते हैं वस ऐल्ची से जव प्याम सुन लिया अव क्या काम रहा।

अर्ज़ : अह्ले फ़ितरत को वास्ता कहां नसीव हुआ।

इरशाद : तो आपका मक़्सूद क्या है उन्हें वसूल तो नहीं हुआ वे नवी के वास्ते के कभी वसूल मुम्किन नहीं यह दूसरी वात है कि अज़ाव हो या न हो यह मुख़्तलिफ़ फ़ीह है क़स विन साइदा वासेलीन और अह्ले फ़ितरत से हैं लेकिन यह भी विला ज़रिया नहीं नसरानियत मह्व हो चुकी थी और इस्लाम अभी आया न था वह जो मुश्रेकीन थे उन के सामने वअ़ज़ कहते उस में तौहीद वयान करते और हश्र वग़ैरह का वयान करते आख़िर में कहते अगर तुम मेरी नहीं मानते तो अनक़रीव हुज़ूर तशरीफ़ लाते हैं जो ला इलाहा इल्लल्लाह रौशन फरमाएंगे तो वेवास्ता अल्लाह तक पहुंचने वाले सिर्फ़ मुहम्मद रसूलुल्लाह हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यही सवव है कि रोज़े क़यामत तमाम अंविया औलिया व उलमा अलैहिमुस्सलातु वस्सना कि शफ़ाअत फरमायेंगे उनकी शफ़ाअत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वारगाह में होगी वारगाहे इज़्ज़त में शफ़ाअत फरमाने वाले सिर्फ़ हुज़ूर हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व लिहाज़ा जामे तिर्मिज़ी की हदीस में इरशाद हुआ। *इन्ना साहिवा शफ़ाअतुहुम वला फ़ख़रा* शफ़ाअते अंविया का साहव मैं हूं और यह कुछ वराहे फख़्र नहीं फरमाता इसी तरफ़ यह आयते करीमा इरशाद फरमाती है। *व यहदीका सिरातन मुस्तक़ीमा।* हमें भी हुक्म हुआ कि अर्ज़ करो। *इहदिनस्सिरातल- मुस्तक़ीमा।* हमें सीधी राह दिखा और हुज़ूर को भी फरमाया। *व यहदीका सिरातन*

मुस्तक़ीमा। ऐ महबूब हम ने तुम्हारे लिए फतह मुबीन इसलिए की है कि तुम्हें सीधी राह बताएं सिराते मुस्तक़ीम दो तरह की होती है एक तो यह कि सीधी चली गई है जिसमें पेच व ख़म नहीं मगर वास्ता की ज़रूरत है कि बेग़ैर वास्ता नहीं पहुंच सकता और दूसरी यह कि उठा और सीधा मक़्सूद तक पहुंचा पहली और अंबिया और दूसरी सिर्फ़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए है मतलब यह कि ऐ महबूब बस उठो और मुझ तक चले आओ तुम्हें किसी तवस्सुल की हाजत नहीं सब के लिए वसीला तुम हो तुम्हारे लिए कौन वसीला हो फलिहाज़ा हुज़ूरे अक़्दस के अस्मा तैयबा से है साहिबुल-वसीला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वास्ता अगर हुज़ूर के लिए भी माना जाए तो दूर लाज़िम आए इसलिए कि जो वास्ता होगा कामिल होगा नाक़िस न होगा और जब कामिल होगा तो कमाल व वजूद पर मुतफ़र्रअ़ है और वजूदे आलम हुज़ूर के वजूदे अक़्दस पर मौक़ूफ़ तो खुलासा-ए-एतक़ाद शाने रिसालत में यह है कि मरतबा व वजूद में सिर्फ़ अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल है बाक़ी सब ज़िलाल और मरतब- ए-ईजाद में सिर्फ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं बाकी सब अक्स व परतौ, तौहीदें दो हैं एक तौहीदे इलाही कि अल्लाह एक है ज़ात व सिफ़ात व अस्मा व अफ़्आल व अहकाम व सलतनत किसी बात में उसका कोई शरीक नहीं।

इतनी बात तो छोड़ दे जो नसारा ने अपने नबी के बारे में इददिया किया (यानी खुदा और खुदा का बेटा) उसे छोड़ बाक़ी हुज़ूर की मदह में जो कुछ तेरे जी में आए कह और मज़्बूती से हुक्म लगा तू उनकी ज़ात पाक की तरफ जितना शर्फ़ चाहे मन्सूब कर और उनके मरतबा करीमा की तरफ़ जितनी अज़्मत चाहे साबित कर इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फ़ज़्ल की कोई इंतिहा ही नहीं कि बयान करने वाला कैसा ही गोवैया हो उसे बयान कर सके बफ़र्ज़े मुहाल अगर आलमे नासूत में कोई सूरते उलूहियत फर्ज़ की जाती तो वह न होती मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

अर्ज़ : सहाबा अशहद अन्ना मुहम्मदन सुल्तानुहू व रसूलुन कहते थे।

इरशाद : इस आन से पहले कभी नहीं सुना महज़ इफ़्तरा और महज़ बेबुनियाद है।

अर्ज़ : सिकन्दर नामा के इस शेअ्र का क्या मतलब है।

इरशाद : बादशाहे दो आलम हैं तमाम जहां मुल्क है मगर कंबल ओढ़ते और मताए दुनिया से ख़ाली हाथ रखते हैं एक बार नमाज़ की इक़ामत हो गई तक्बीरे तहरीमा फरमाना चाहते हैं कि दफ़्अतन सहाबा को इरशाद हुआ अला रुसेलुकुम अपनी जगह ठहरे रहो काशानए अक़्दस में तशरीफ़ ले गये फिर बरआमद हुए और इरशाद फ़रमाया मुझे याद आया कि आज तीन दीनार बाक़ी हैं मैं डरा कि रात गुज़रे और वह बाक़ी रहें लिहाज़ा जा कर उन्हें तसद्दुक़ फरमा आया बन्दा बारगाह अर्ज़ करता है -

कल जहां मुल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम

नीज़ अर्ज़ रसा है :

मालिके कौनेन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दोजहां की नेमतें हैं उनके ख़ाली हाथ में

लोगों से गुलामी मांगते उसके एवज सुल्तानी अता फरमाते जो उनका बन्द-ए-दर हो गया मुल्के अवद का ताज वर हो गया अल्लाह तआला फरमाता है। *कुल इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्लाहा फत्तबेऊनी युहबिबकुमुल्लाहु*। ऐ महबूब तुम फरमा दो कि मेरे गुलाम हो जाओ अल्लाह तुम्हें महबूब बना लेगा यानी बन्दों को मुहिब्बे इलाही बनने की चाह है सरकारी गुलामी वह है कि हर बन्द-ए-दर महबूबे इलाह है।

मुअल्लिफ़ : एक रोज़ हाजी किफ़ायतुल्लाह साहब बहालते नमाज़ मगस रानी करने लगे सलाम फेरने के बाद इरशाद फरमाया नमाज़ की हालत में कोई ख़िदमत न करना चाहिए वह हालते अब्दीयत है न मख़्दूमियत।

अर्ज़ : आमदनी की क़िल्लत और अह्ल व अयाल की कसरत सख़्त कुल्फ़त है।

इरशाद : या मुसब्बबुल-अस्बाब ५०० बार अव्वल व आख़िर ११-११ बार दरूद शरीफ़ बाद नमाज़े इशा क़िबला रू बावुज़ू नंगे सर ऐसी जगह कि जहां सर और आसमान के दर्मियान कोई चीज़ हाइल न हो यहां तक कि सर पर टोपी भी न हो पढ़ा करो।

मुअल्लिफ़ : हाज़िरीन में वहाबिया मुलाइना के तक़िया का ज़िक्र था

कि उन खुवसा ने तो रवाफ़िज़ को भी मात कर दिया वह भी उनसे तक़िया करना सीखें झूठ फरेव से वैरूपिए वन कर अपना मतलव निकालते हैं।

इरशाद : यहां का एक सख़्त वहावी शख़्स गया और मदरसा वहाविया के लिए चन्दा मांगा उन साहव ने उसका नाम पूछा। वताया। उन्होंने ने फरमाया कि मैंने सुना है तू अहमद रज़ा का मुख़ालिफ़ है मैं तुझे चन्दा न दूंगा उसने कहा कि हज़रत मैं तो उनके दर का कुत्ता हूं ग़रज़ कुत्ता वन कर पांच सौ रुपया मार लाया (इसी सिलसिला में फरमाया कि) हज़रत आलम गीर रहमतुल्लाह तआला अलैहि को एक वैरूपिये ने धोखा देना चाहा वादशाह ने फरमाया अगर धोखा दे दिया तो जो मांगेगा पाएगा उस ने वहुत कोशिश की लेकिन हज़रत आलमगीर ने जव देखा पहचान लिया आख़िर मुद्दत मदीद का भलावा दे के सूफ़ी ज़ाहिद आविद वन कर एक पहाड़ की खो में जा वैठा रात दिन इवादते इलाही में मशग़ूल रहता पहले दिहातियों का हुजूम हुआ फिर शहरियों फिर उमरा, वज़रा सव आते और यह किसी तरफ़ इल्तिफ़ात न करता शुदह शुदह वादशाह तक ख़वर पहुंची सुल्तान को अह्लुल्लाह से ख़ास मुहब्वत थी खुद तशरीफ़ ले गये वैरूपिये ने दूर से देखा कि वादशाह की सवारी आ रही है गर्दन झुका ली और मुराक़वा में मशग़ूल हो गया सुल्तान मुंतज़िर रहे देर के वाद नज़र उठाई और वैठने का इशारा किया सुल्तान मुअद्दव वैठ गये उनका मुअद्दव वैठना कि वैरूपिया उठा और झुक कर सलाम किया कि जहां पनाह मैं फलां वैरूपिया हूं वादशाह खजल हुए और फरमाया वाक़ई इस वार मैंने न पहचाना अव मांग जो मांगता है उस ने कहा अव मैं आप से किया मांगूं मैंने उसका नाम झूठे तौर पर लिया उसका तो यह असर हुआ कि आप जैसा जलीलुल-क़द्र वादशाह मेरे दरवाज़े पर वाअदव हाज़िर हुआ अव सच्चे तौर पर उसका नाम ले देखूं यह कहा और कपड़े फाड़े जंगल को चला गया।

अर्ज़ : हज़रत इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुज्तहिद हैं।

इरशाद : हां मगर शैख़ अकवर मुहीयुद्दीन इब्ने अरवी फरमाते हैं कि उन्हें इज्तिहाद की इजाज़त न होगी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से तल्क़ी जुमला अहकाम करेंगे और उन पर अमल फरमाएंगे।

अर्ज़ : नमाज़ किस तरीक़ा पर पढ़ेंगे।

इरशाद : तरीक़ा हन्फ़ीया के मुताविक़ न यूं कि मुक़ल्लिद हन्फ़ी होंगे वल्कि यूं कि सैयद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इसी तरह फरमाएंगे उस दिन खुल जाएगा कि अल्लाह व रसूल को सव से ज़्यादा पसन्द, मज़्हवे हन्फ़ी है अगर वह मुज्तहिद हैं तो जुमला मसाइल में उनका इज्तिहाद वरना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इरशाद मुताविक़ मज़्हवे इमाम आज़म होगा इसी ख़्याल से वाज़ अकाविर के क़लम से निकला कि वह हन्फ़ियुल-मज़्हव होंगे वल्कि यहीं लफ़्ज़ मआज़ल्लाह सैयदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की निस्वत सादिर हो गया हाशा कि नवी अल्लाह किसी इमाम की तक़्लीद फ़रमाए वल्कि वही है कि उनके अमल मुताविक़ अमले मज़्हव हन्फ़ी होंगे उस से मज़्हवे हन्फ़ी की सव से कामिल तर तस्वीव सावित होगी ग़रज़ उनके ज़माने में तमाम मज़ाहिव मुन्क़तआ हो जाएंगे और सिर्फ़ मसाइले मज़्हवे हन्फ़ी वाक़ी रहेंगे व लिहाज़ा अकाविर अइम्मा कश्फ़ ने फरमाया है कि चशमा शरीअ़ते कुवरा से वहुत नहरें निकलीं और थोड़ी-थोड़ी दूर जा कर खुश्क हो गईं मगर मज़ाहिवे अरवा की चारों नहरें जोश व आव व ताव के साथ वहुत दूर तक वहीं आख़िर में जा कर वह तीन नहरें भी थम गईं और सिर्फ़ मज़्हवे हन्फ़ी की नहर अख़ीर तक जारी रही यह कश्फ़े अकाविर अइम्मा शाफ़ईया का वयान है। रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन।

अर्ज़ : मुअज़्ज़िन अज़ान कहने के वाद वाहर मस्जिद के जा सकता है या नहीं।

इरशाद : अगर कोई ज़रूरत दर पेश हो और जमाअत में देर हो तो हरज नहीं वरना विला ज़रूरत इजाज़त नहीं और मुअज़्ज़िन ही नहीं हर उस शख़्स के लिए यही हुक्म है जिस ने अभी उस वक़्त की नमाज़ न पढ़ी जिसकी यह अज़ान हुई और अज़ान होने ही की खुसूसियत नहीं वल्कि मुराद दुख़ूले वक़्त है जो मस्जिद में हो और किसी नमाज़ का वक़्त शुरू हो जाए और दूसरी मस्जिद का मुक़ीम जमाअत न हो उसे नमाज़ वेग़ैर पढ़े मस्जिद से वाहर जाना जाइज़ नहीं मगर यह कि किसी हाजत से निकले और क़व्ल जमाअत वापसी का इरादा रखे वरना हदीस में फरमाया वह मुनाफ़िक़ है।

मुअल्लिफ़ : यहां कुछ अज़ान रवाफ़िज़ का ज़िक्र हुआ फरमाया

अज़ान में *अ हदु अन्ना अलीया वली अल्लाह* उनका इल्हाद है और खुद उनकी मोतवर किताबों में तररीह है कि अली ज़रूर वली अल्लाह हैं मगर अज़ान में यह मुस्तज़ाद है नीज़ तस्रीह है कि *हय्युन अला ख़ैरिल-अमले मुफ़ौव्वज़हू लअनहुमुल्लाहु* की ईजाद है यह सव उनकी कुतुवे मोतवरा में है न कि तवर्रा कि वाज़ मुलाइना इज़ाफ़ा करते हैं।

(इसी तज़्किरा में फरमाया) यहां का एक हिकायत अजवी सुनी गई राफ़ज़ीयों में एक मुअज़्ज़िन अन्धेरे से जा कर अज़ान कहता और हज़रत अवू वकर सिद्दीके अकवर व उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की शान में गुस्ताख़ी किया करता मुहल्ला में कुछ ग़रीव सुन्नी रहते थे कि ख़ूने जिगर पीते और कुछ वस न चलता एक रोज़ चार जवान हरचे वा अवाद कह कर मस्जिद के अन्दर पहले से जा वैठे हस्वे दसतूर वह ख़वीस अपने वक़्त पर आया और अजान में सिद्दीके अकवर की निस्वत कुछ वकना शुरू किया कि चारों में से एक साहव वरामद हुए और मार कर गिरा दिया कि ख़वीस तू हमें वुरा कहता है उस ने घवरा कर कहा हज़रत मैं तो उमर को कहता था। दूसरे जवान वरामद हुए और मार कर वेदम कर दिया कि मरदूद तू मुझे वुरा कहेगा उसने सरा सीमा हो कर कहा हज़रत मैं तो उस्मान को कहता था। तीसरे साहव तशरीफ़ लाए और जितना मारा गया मारा कि नापाक तू मुझे वुरा कहेगा आख़िर जव वुड्ढे ख़वीस को कुछ न वनी चिल्लाया कि मौला मदद कीजिए दुश्मन मुझे मारे डालते हैं उस पर चौथे साहव हाथ में उस्तुरा लिए वरामद हुए और जड़ से उसकी नाक पोछ ली कि शैतान तू हमारे अकाविर को वुरा कहेगा अव यह चारों साहव तो चल दिए मुज्तहिद साहव दर्द के मारे नाक पर रूमाल रखे मस्जिद के एक अन्दरूनी गोशा में जा छुपे जव वक़्त ज़्यादा हुआ और रवाफ़िज़ नमाज़ के लिए आए एक दूसरे से कहता है आज जनाव क़िवला तशरीफ़ नहीं लाए आज अज़ान नहीं फरमाई जव कुछ रोशनी हुई देखा जनाव क़िवला एक गोशा में सिमटे पड़े हैं कहा हज़रत ख़ैर है क़िवला ख़ैर है कहा ख़ैर क्या है आज वह तीनों दुशमन आ पड़े और मारते-मारते मोंझ कर दिया कहा फिर आपने हज़रत मौला को याद न किया वह चुप हो रहा जव वार-वार यही कहे गये उस ने झुंझला कर नाक पर से रूमाल फेंक दिया कि वह तीनों तो मार ही कर छोड़ गये थे मौला ने आकर

जड़ से पोछ ली -

अर्ज़ : हुज़ूर अगर नमाज़ फासिद हो जाए तो सलाम फेरना चाहिए।

इरशाद : कोई ज़रूरत नहीं सलाम नमाज़ पूरी करने के लिए होता है जव नमाज़ ही फासिद हो गई तो सलाम कैसा।

अर्ज़ : वैअत के क्या माना हैं ?

इरशाद : वैअ़त के माना विक जाना सवअ़ सनाविल शरीफ़ में है एक साहव को सज़ाए मौत का हुक्म वादशाह ने दिया। जल्लाद ने तल्वार खींची यह अपने शैख़ के मज़ार की तरफ़ रुख़ करके खड़े हो गये जल्लाद ने कहा उस वक़्त क़िव्ला को मुँह करते हैं फरमाया तू अपना काम कर मैंने क़िव्ला को मुंह कर लिया है और है भी यही वात कि कावा क़िव्ला है जिस्म का और शैख़ क़िव्ला है रूह का उसका नाम इरादत है अगर इस तरह सिद्क़ अक़ीदत के साथ एक दरवाज़ा पकड़ ले तो उसको फ़ैज़ ज़रूर आएगा अगर उसका शैख़ ख़ाली है तो शैख़ का शैख़ तो ख़ाली न होगा और विलफ़र्ज़ वह भी न सही तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तो मअ़दने फ़ैज व मंवअ़े अनवार हैं उन से फ़ैज़ आएगा। सिलसिला सही मुत्तसिल होना चाहिए। एक फ़क़ीर मांगने वाला एक दुकान पर खड़ा कह रहा था। एक रुपया दे वह न देता था। फ़क़ीर ने कहा रुपया देता है तो दे वरना तेरी सारी दुकान उलट दूंगा। इस थोड़ी देर में वहुत लोग जमा हो गये इत्तिफ़ाक़न एक साहिवे दिल का गुज़र हुआ जिनके सव लोग मोतक़िद थे उन्होंने दुकानदार से फ़रमाया जल्द रुपया उसे दे वरना दुकान लूट जाएगी लोगों ने अर्ज़ की हज़रत यह वेशरअ़ जाहिल क्या कर सकता है फरमाया मैंने उस फ़क़ीर के वातिन पर नज़र डाली कि कुछ है भी मालूम हुआ विल्कुल ख़ाली है फिर उसके शैख़ को देखा उसे भी ख़ाली पाया उसके शैख़ के शैख़ को देखा उन्हें अह्लुल्लाह से पाया और देखा कि वह मुंतज़िर खड़े हैं कि कव उसकी ज़बान से निकले और मैं दुकान उलट दूं। तो वात क्या थी कि शैख़ का दामन कुव्वत के साथ पकड़े हुए था अइम्म-ए-दीन फरमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दफ़्तर में क़्यामत तक के मुरीदीन के नाम दर्ज हैं। जिस क़द्र गुलामी में हैं या आने वाले हैं हुज़ूर पुर नूर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं रव अज़्ज़ा व जल्ला ने मुझे एक दफ़्तर अता फरमाया कि

मुन्तहाए नज़र तक वसीअ् था और उस में क़यामत तक के मेरे मुरीदीन के नाम थे और मुझ से फरमाया व हवतहुम लका मैंने यह सब तुम्हें वख़्श दिए।

अर्ज़ : हुज़ूर यह तो जवरन रुपया लेना हुआ उन वली अल्लाह ने अगर उसकी दुकान वचाने को देने की ताकीद फरमाई मुम्किन था जैसे दफ़ा जुल्म के लिए रिशवत देना मगर उस फ़क़ीर के दादा पीर ने कि अह्लुल्लाह से थे उस जुल्म की ताईद क्योंकर रवा रखी।

इरशाद : शरीअ़ते मुतह्हरा के दो हुक्म हैं ज़ाहिर व वातिन क़ाज़ी व आम्मा नास उनकी रसाई ज़ाहिर अहवाल ही तक है उन पर उसकी पावन्दी लाज़िम अगरचे वाक़िफ़े हक़ीक़ते हालत के नज़्दीक हुक्म विल-अक्स हो उसकी नज़ीर ज़माना सैयदना दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम में वाक़े हो चुकी एक फ़क़ीर मुफ़्लिस वैनवा, नान शवीना को मुहताज शव को दुआ किया कर ताकि इलाही रिज़्क़े हलाल अता फरमा इत्तिफ़ाक़न किसी शव एक गाय उसके घर में घुस आई यह समझा कि मेरी दुआ कुवूल हुई यह रिज़्क़ हलाल ग़ैव से मुझे अता हुआ है गाय पछाड़ कर ज़िवह की उसका गोश्त पकाया और खाया सुवह मालिक को ख़वर हुई वह सरकारे नुवुव्वत में नालशी हुआ सैयदना दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया जाने दे तू मालदार है उस मुहताज ने एक गाय ज़िवह कर ली तो क्या हुआ वह विगड़ा और कहा या नवी अल्लाह मैं हक़ चाहता हूं फरमाया अगर हक़ चाहता है तो गाय उसी की थी वह और वरहम हुआ फरमाया, न सिर्फ़ गाय जितना माल तेरे पास है सब उसी का है वह और ज़्यादा फ़रयादी हुआ फरमाया तू भी उसी की मिल्क और उसी का गुलाम है अव तो उसकी वेतावी की हद न थी फरमाया अगर तस्दीक़ चाहता है अभी हमारे साथ चल उस फ़क़ीर और उस गाय वाले को हमराह रेकाव लेकर जंगल को तशरीफ़ ले गये वाक़या अजीव था ख़ल्क़ का हुजूम साथ हो लिया एक दरख़्त के नीचे हुक्म दिया कि यहां खोद व खोदने से इंसान का सर और एक ख़ंजर जिस पर मक़्तूल का नाम कुन्दह था वरामद हुआ नवी अल्लाह ने उस दरख़्त से इरशाद फ़रमाया शहादत अदा कर तूने क्या देखा पेड़ ने अर्ज़ की या नवी अल्लाह यह उस फ़क़ीर के वाप का सर है यह गाय वाला उसका गुलाम था उस ने मौक़ा पा कर मेरे नीचे अपने आक़ा को उसी ख़ंजर से ज़वह किया और

ज़मीन में मआ ख़ंजर दवा दिया और उसके तमाम अमवाल पर क़ाविज़ हो गया उसका यह वेटा वहुत सग़ीर सिन था उस ने होश संभाला तो अपने आपको वेकस व वेज़र ही पाया और यह भी न जाना कि उसका वाप कौन था और उसका कुछ माल भी था या नहीं हुक्मे वातिन सावित हुआ गुलाम गर्दन मारा गया और वह तमाम अमवाल वरासतन फ़क़ीर को मिले वही यहां भी मुम्किन कि दुकानदार उस फ़क़ीर के मूरिस का मदयून हो अगरचे वह फ़क़ीर भी उस से वाक़िफ़ न हो न यह दुकानदार उसे पहचानता हो तो यह जवरन दिलाना जव्र नहीं वल्कि हक़ वहक़ दार रसानीदन।

अर्ज़ : किसी शैख़ से वैअ़त करके दूसरे से रुजूअ् कर सकता है या नहीं।

इरशाद : अगर पहले में कुछ नुक़्सान हो तो वैअत हो सकती है वरना नहीं। अल्वत्ता तज्दीद कर सकता है अर्दी विन मुसाफिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं किसी सिलसिले का आए उस से वैअ़त ले लता हूं सिवाए गुलामाने क़ादरी के कि वहर को छोड़ कर नहर की तरफ़ कोई नहीं आता।

मुअल्लिफ़ : एक शव मस्जिद की घड़ी कोई साहव चुरा कर ले गये अह्ले मुहल्ला ने पुलिस में रिपोर्ट वग़ैरह की उस पर इरशाद फरमाया एक साल सुल्तान की तरफ़ से कावा मुअज़्ज़मा में निहायत वेश क़ीमत सोने की क़नादील लगाने के लिए आएं उन में से एक क़िन्दील ग़ायव हो गई शरीफ़े मक्का ने तहक़ीक़ात की पता चला कि ख़ुद्दामे कावा के सरदार ने ली है शरीफ़ के सामने पेशी हुई उन से पूछा गया वह साहव वोले कावा ग़नी है उसे हाजत नहीं मुझे हाजत थी मैंने ले ली शरीफ़ ने दरगुज़र फरमाई (फिर फरमाया) मस्जिद की कोई शय लाख रुपये की चुरा ले शरीअत हाथ न काटेगी वल्कि सज़ाए ताज़ियाना का हुक्म है।

मुअल्लिफ़ : जवल पुर जाने के चार रोज़ वाक़ी और हज़रत मद्दा ज़िल्लहू अल-अक़्दस के वास्ते कपड़े सिलवाना थे सुल्तान हैदर ख़ां ने अर्ज़ की दर्ज़ी को दे दिए जाएं।

मुसलमानाने जवल पुर काठनियावार वंगाल एक मुद्दत से आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू की ख़िदमत में अराइज़ पेश करते रहे कि हुज़ूरे वाला हमारे तेरह, तार विलाद को अपने क़ुदूमे वाला से मुनव्वर फरमाएं। आला हज़रत क़िवला ने हमेशा अद्मे फुरसत और ज़ुअ़फ़ व

अलालत को पेशे नज़र रखते हुए उज़्र फरमा दिया मगर इस मरतबा हज़रत हामी सुन्नत माही बिदअत जनाब मुरततव मौलाना मौलवी मुहम्मद अब्दुस्सलाम साहब जबल पूरी के (जो आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुल-अक़्दस के ख़लीफ़-ए-अरशद और इस क़तर में दीन व सुन्नत के कुतुब उहुद हैं) इंतिहाई इसरार से वादा फरमा लिया जिस वक़्त अरीज़ा मौलाना मौसूफ़ का हाज़िर हुआ काशानए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए और फरमाया मौलाना के बेहद कलिमात तवाजु ने पहलू उज़्र का छोड़ा ही नहीं अगर बिल-फ़र्ज़ किसी के लबों पर भी दम हो वह भी इंकार नहीं कर सकता इन कलिमात को सुन कर यही कहेगा कि मैं हाज़िर हूं अल-ग़रज़ १६ जिमादिल-आख़िर १३३७ हिज० रोज़ शंबा ५ बजे सुबह के मेल से आज़िमे जबल पुर हुए बावजूद उसके कि रवानगी आख़िर शब में थी उस पर भी बरैली के स्टेशन पर मुतवस्सेलीन व मोतक़ेदीन का काफी इज्तिमा था एक साहब दाख़िले सिलसिला भी हुए। मेल लखनऊ पहुंचा वहां के लोगों को पहले से इत्तिला न थी उस पर भी बाज़ हज़रात जिन्हें किसी जरिया से इल्म हो चुका था हाज़िरे ख़िदमत हो कर हल्क़ा बगोश हुए फिर मेल प्रतापगढ़ पहुंचा यहां हमारा सेकेण्ड क्लास मेल से काट कर इलाहाबाद आने वाली रेल में लगा दिया गया रेल साढ़े तीन बजे इलाहाबाद पहुंची वहां चूंकि काफी वक़्त मिला बाज़ हमराहियों का इरादा हुआ कि अपने शहरी अहबाब से मिल आएं उनके शहर में पहुंचने से साकिनाने शहर को आला हज़रत अज़ीमुल-बरकत की तशरीफ़ आवरी की इत्तिला हो गई और मुसलमानों के गरोह जूक़ दर जूक़ आए और दस्त बोस होने लगे इलाहाबाद के स्टेशन पर नमाज़े मग़्रिब की ग़रज़ से आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू अक़्दस प्लेटफार्म पर उतरे मुश्ताक़ाने दीदार ने हर चहार जानिब से हुजूम किया और नए आने वालों ने परवाना वार गिरना शुरू किया इस खुशनुमा मन्ज़र को एक यूरोपियन खड़ा देख रहा था उस ने भी मौक़ा पा कर क़दम बोसी की इज़्ज़त हासिल की और अदब के साथ सलाम करके रुख़्सत हुआ। सूलते हक़ उसे कहते हैं कि जज़्बे कुलूब के लिए किसी तुज़्क व एहतशाम और ज़ाहिरी धूम धाम की ज़रूरत ही न हो इलाहाबाद में बाज़ सेठों ने एक मोटर कार और एक आला दरजा की विलायती लैंड व तफ़्रीह के लिए हाज़िर की साढ़े सात बजे रेल

इलाहाबाद से रवाना हुई आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुल-अक़्दस ने मआ ख़ुद्दाम यहां से भी रिज़र्व सिकण्ड क्लास में सफर किया साढ़े चार बजे रेल कटनी पहुंची यहां जनाब मौलवी हाजी अब्दुर्रज़्ज़ाक़ साहब कटनी के, गरोह कसीर के साथ मौजूद थे जो जबल पुर तक हमरेकाब हो लिए और खुद जबल पुर से हामी सुन्नत मौलाना मौलवी अब्दुस्सलाम साहब दामत बरकातुहुम एक बड़ी इस्तिक़्बाली जमाअत को लिए हुए कटनी स्टेशन पर तशरीफ़ फरमा थे जैसे ही गाड़ी कटनी पर रुकी। ज़ारेईन ने गाड़ी को घेर लिया जब तक गाड़ी खड़ी रही लोग क़दम बोस होते रहे। कटनी से हमारे हमराहियों में बहुत इज़ाफ़ा हो गया साढ़े सात बजे के क़रीब जबल पुर की इमारतें नज़र आने लगीं हमारे साथो उसके कुसूर व मनाज़िल को देख-देख कर खुश हो रहे थे और उनकी नज़रें इंतिहाई शौक़ के साथ स्टेशन की इमारत को ढूंढ रही थीं कि यकायक स्टेशन जबल पुर की इमारत भी एक गुमशुदह महबूब की तरह सामने आ ही गई फिर क्या था। अब तो स्टेशन जितना क़रीब होता गया जोशे मुसर्रत बढ़ता गया रेल जब प्लेटफार्म में दाख़िल हुई तो यहां अजीब व ग़रीब समां नज़र आया रेलवे स्टेशन, पुरजोश मुसलमानों से बिल्कुल भरा हुआ था। जब गाड़ी रुकी तो बिला तशबीह उस मुहिब्ब की तरह (जिसके इंतिज़ार की घड़ियां ख़त्म हो चुकी हों और महबूब की दिल्कश सूरत सामने आ गई हो) दीवाना वार गाड़ी पर झुक पड़े और उस गुले गुलज़ारे क़ादरीयत पर दिल खोल कर फूलों की निछावर की। जोश का यह आलम था कि कान पड़ी आवाज़ न सुनाई देती थी लोग वफ़ूरे जोश में ज़बान से अस्सलामु अलैकुम या इमाम अह्लुस्सुन्नह अस्सलामु अलैकुम या मुजद्दिद अल-मिअतुल-हाज़िरा के नारे मार रहे थे और उनकी ज़बाने हाल कह रही थी -

रवाक़े मंज़रे चश्म मन आशियाना तस्त
करम नुमा व फरवदा कि ख़ाना ख़ान-ए-तस्त

तमाम मज्मा अपनी-अपनी इन मुसर्रतों में सरशार था और यहां एक और मंज़र था जिस पर अवाम को तनब्बेह न हुआ यह मौक़ा वह था कि कोई शोहरत पसन्द जाह दोस्त होता तो फूला न समाता बाछें खुली होतीं गर्दन बुलन्द होती आंखें अपनी ताज़ीम के नज़ारे से मस्त होतीं यहां उसके बरअक्स उस मंज़रे जलील को देख कर नज़र झुका ली

गर्दन नीची कर ली। आंखों में आंसू डुबडुबाने लगे इस लतीफ़ मंज़र पर हाजी अब्दुर्रज़्ज़ाक़ साहब की नज़र गई उन्हीं इद्राक हुआ और उनका जी भर आया यह उस शान का परतौ था कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मक्का मुअज़्ज़मा फतह फरमाया इस शान से उसमें दाख़िल हुए कि सरे अक़्दस अपने रब के लिए तवाज़ु में सवारी अनवर पर क़रीब सुजूद पहुंचा था सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कसरते हुजूम के ख़्याल से गाड़ी पर फौरन चन्द आदमी बग़रज़ तहफ़्फ़ुज़ खड़े हो गये कि मज्मा इधर का रुख़ न करे और बाज़ नौजवान पुलिस की शिर्कत में आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुल-अक़्दस के गुज़रने के लिए रास्ता बनाने में मस्रूफ़ हुए हर चन्द कोशिश की गई मगर इस मक़्सद में नाकामी हुई नाचार चन्द अक़ीदत केश हल्क़ा बांध कर खड़े हुए इस तरह वह सुवादे हिन्द का माह कामिल हाला में आ गया उस वक़्त का नज़्ज़ारा कुछ ऐसा दिलकश था कि स्टेशन स्टॉफ़ और पुलिस वग़ैरह अपने फराइज़े मनसबी को छोड़ कर उसके देखने में मसरूफ़ था मुसाफ़िरों को जब इस दिलकश नज़्ज़ारा के देखने का कोई मौक़ा न मिला तो पुल पर चढ़ गये और वहां से देखा किए यहां से आला हज़रत अज़ीमुल-बरकत की गाड़ी तक जाना बहुत दुशवारी से हुआ खुदा जज़ाए ख़ैर दे इन बाहिम्मत हज़रात को जिन्होंने अपने बाजुओं पर उस मज्मा का सारा ज़ोर, रोका और ख़ैर व ख़ूबी के साथ अपने पेशवा को ले जा कर एक पुर तकल्लुफ़ गाड़ी में बिठाया यहां आम मुसलमानों को दस्त बोसी का मौक़ा दिया गया। बहुत देर तक लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सच्चे आशिक़ की ज़ियारत से दारैन की सआदत हासिल करते रहे फिर यह मज्मा बड़े जोश व मुसर्रत के साथ उस क़ादरी, बज़्म के दूल्हा को अपने झुरमुट में लिए हुए शहर की जानिब रवाना हुआ जहां तक सूल आबादी है वहां तक अंग्रेज़ और उनकी औरतें बच्चे अपने-अपने बंगलों के सामने आ खड़े हुए मज्मा को उमूमन और आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुल-अक़्दस को खुसूसन टकटकी बांधे देखते रहे। फिर जब यह मज्मा शहर में दाख़िल हुआ तो शहर के बाशिन्दे अपने दरवाज़ों दुकानों और छतों से उस दिलकश मंज़र को देखते रहे और आला हज़रत क़िबला की ख़िदमत में बाअदब सलाम अर्ज़ करते रहे सकाने शहर की

मज्मूई हालत कह रही थी कि-

ऐ आमद नत बाइस आबादी मा

स्टेशन से आहिस्ता-आहिस्ता चल कर यह मज्मा तक़रीबन दो घन्टे में हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुस्सलाम साहब मद्दा ज़िल्लहू के दौलत कदह के क़रीब पहुंचा यहां कूचा के मोड़ पर एक आलीशान दरवाज़ा लगाया गया था। यह दरवाज़ा अलावा और ज़ेबाइश के बकसरत कतबों से मुरस्सा था जो मेज़ बानों की इंतिहाई अक़ीदत और मुअज़्ज़ज़ मेहमान की शिर्कत व हशमत का इज़्हार कर रहा था और उस कूचा की मोड़ से हज़रत मौलाना के मकान तक दो, रवैया केले के बड़े-बड़े दरख़्त और तीन-तीन क़तारों में क़िन्दीलें नसब की गई थीं जिन पर मनक़बत आमेज़ मिसरे लिखे गये थे फिर जब उस मकान में दाख़िला हुआ (जो शहनशाहे मुअज़्ज़म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सच्चे नाइब के क़याम के लिए सजाया गया था) तो मालूम हुआ कि उलमाए किराम की क़द्र व क़ीमत वही लोग ख़ूब जानते हैं जिनको खुद भी इल्म की ख़िदमत करने का काफी मौक़ा मिला है मकान की ज़ेब व ज़ीनत और आईना बन्दी क़ाबिले तारीफ़ थी। हर चीज़ निहायत मौज़ूनियत के साथ अपनी जगह पर रखी गई थी। मकान के तमाम अन्दरूनी व बैरूनी हिस्सों में तुर्की क़ालीनों और खुशनुमा सोज़ीनों का फ़र्श था और दीवार व सक़फ़ व ज़मीन सब बेश क़ीमत कपड़ों से दुल्हन बने हुए थे। आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू के तशरीफ़ रखते ही सब लोग बैठ गये तमाम हाज़िरीन साकित थे मगर हर शख़्स के चेहरा से बेइंतिहा मुसर्रत के आसार नुमायां थे जो मुसलमानों की गई सतवत की याद दहानी कर रहे थे और अकाबिरे अइम्म-ए-दीन के दरबारे आम का पूरा नक़्शा खिंच गया था मख़्दूमिना व मौलाना हज़रत मौलवी मुहम्मद अब्दुस्सलाम साहब दामत बरकातुहुम की मुसर्रतों का तो कोई अन्दाज़ा ही न था वह साकित मगर ज़बाने हाल दर फ़शां

वह खुद तशरीफ़ फरमा हैं मेरे घर
बता ऐ खुश नसीबी क्या करूं मैं

कुछ देर सुकूत का आलम रहा उसके बाद जनाब हकीन मौलवी अब्दुर्रहीम साहब मज़ाक़ खड़े हुए और दस्त बस्ता सलाम अर्ज़ करके यह नज़्म पढ़ी :

कोई ताज वाले हों या राज वाले

हैं उस दर के मुहताज हर काज वाले
है सरकारे आलम के मुहताज का दर
यहां भीख लेते हैं खुद राज वाले
यह वह दर है दौलत है जिस दर की लौंडी
झिड़कते हैं शाहों को मुहताज वाले
यहां की फ़क़ीरी है रश्क अमीरी
यहीं आ के घुसते हैं सरताज वाले
तअल्ली पे हैं सारे मुहताज उनके
कि आख़िर तू हामी हैं मेअ्राज वाले
यही हैं वह दामन कि जिस में छुपेंगे
क़्यामत के मैदान में लाज वाले
खुदंग नज़र का कोई वार इधर भी
हैं मुद्दत से मुश्ताक़ आमाज वाले
मैं कुछ भी सही सिलसिला मेरा देखो
मैं जिनका हूं उनके हैं मेअ्राज वाले
मज़ाक़ अब मुझे फ़िक्र फरदा से मतलब
बना लेंगे सब काम कल आज वाले

इस नज़्म के बाद यके बाद दीगरे छेः नज़्में और छेः साहिबों ने पढ़ीं जो बख़्याल तवालत छोड़ी जाती हैं उसके बाद आला हज़रत क़िबला की ख़िदमते वाला में कुल्फ़त सफर के लिहाज़ से अर्ज़ की गई कि हुज़ूरे वाला अब आराम फरमाएं और सब लोग नियाज़ मन्दाना सलाम अर्ज़ करते हुए रुख़्सत हुए शहनशाहे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नायब का पहला इज्लास यूं ख़त्म हुआ साकिनाने जबल पुर को दिन ईद रात शबे बरात थी कि बारह बरस के बाद यह नेअमते उज़्मा नसीब हुई थी मुलाक़ात के वक़्त मुक़र्रर थे सुबह आठ बजे से ग्यारह बजे तक और सह पहर को बाद नमाज़े ज़ुहर से अस्र तक और फिर बाद इशा काफी वक़्त दिया जाता था अस्र से बाद मग़्रिब तक तफ़रीह का वक़्त था गो हुज़ूर का कभी तफ़रीह की जानिब मैलान तबअ् न हुआ लेकिन साकिनाने जबल पुर की दिलशिकनी का ख़्याल फरमाते हुए उनके इसरार से मन्ज़ूर फरमा लिया था बाद अस्र मस्जिद के दरवाज़ा पर मोटर और गाड़ियों का रोज़ाना इंतिज़ाम रहता। एक माह

कामिल, जबल पुर क़्याम रहा इस दौरान में अक्सर मुक़द्दमात का जो बाहमी खाना जंगियों के बाइस अरसा से पड़े हुए थे ऐसा तस्फ़िया फ़रमाया कि जिनका सलाम व कलाम क़तअन बन्द था मौत, ज़ीस्त छूट चुकी थी बाहम शेर व शकर हो गये एक रोज़ सुबह के जल्से में बमअ्रूज मुन्शी अब्दुल-ग़फ़्फ़ार साहब दो साहब मास्टर मुहम्मद हैदर व मुहम्मद इद्रीस साहिबान (जिनका अरसा से निज़ा था और दोनों हल्क़ा बगोशाने आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू थे) पेश हुए अव्वलन मास्टर मुहम्मद हैदर साहब का बयान हुआ फिर मुहम्मद इद्रीस साहब का बयान समाअत फरमा कर इरशादे आली हुआ आप साहिबान का कोई मज़्हबी तख़ालिफ़ है कुछ नहीं। आप दोनों साहब आपस में पीर भाई हैं नस्ली रिश्ता छूट सकता है लेकिन इस्लाम व सुन्नत और अकाबिर सिलसिला से अक़ीदत बाक़ी है तो यह रिश्ता नहीं टूट सकता। दोनों हक़ीक़ी भाई और एक घर के तुम्हारा मज़्हब एक रिश्ता एक आप दोनों साहब एक हो कर काम कीजिए कि मुख़ालिफ़ीन को दस्त अन्दाज़ी का मौक़ा न मिले ख़ूब समझ लीजिए आप दोनों साहिबों में जो सबक़त मिलने में करेगा जन्नत की तरफ़ सबक़त करेगा यह फरमाना था कि दोनों के कुलूब पर एक बर्क़ी असर हुआ और बेताबाना एक दूसरे के क़दमों पर गिर पड़े और आपस में निहायत साफ़ दिली के साथ लिपट गये जोशे मुहब्बत की यह हालत हुई कि अगर हाज़िरीन में से संभाल न लेते तो दोनों हज़रात मुआनक़ा क़ल्बी में गिर पड़ते वाक़ई मुक़द्दस हज़रात की मुट्ठी में कुलूब होते हैं जिस तरफ चाहें रुजूअ् कर दें। मुझे उस वक़्त हुज़ूर पर नूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का वाक़या याद आ गया जो आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहुल-अक़्दस की ज़बाने फ़ैज़े तरजुमान से सुना था कि एक मरतबा हुज़ूर मस्जिद जामे में तशरीफ़ लाए ख़ादिम जो हमराह थे उन्होंने देखा कि आज ख़िलाफ़े मअ्मूल अह्ले मस्जिद हुज़ूर को देख रहे हैं लेकिन न कोई सलाम करता है न क़्याम हालांकि हमेशा तशरीफ़ लाते ही तमाम जमाअत हुज़ूर की तरफ़ आती और दस्त बोसी व क़दम बोसी से मुशर्रफ़ होती उनके दिल में यह ख़तरा आना था कि चारों तरफ़ से लोगों का इस क़द्र हुजूम हुआ कि हुज़ूर से बहुत पीछे रह गये उन्हें ख़्याल हुआ कि उस से तो वही हालत बेहतर थी मैं हुज़ूर के क़रीब तो था उनके दिल में यह ख़तरा

आते ही हुज़ूर ने उनकी तरफ़ रूए अनवर किया और फरमाया यह तुम्हीं ने तो चाहा क्या तुम्हें मालूम नहीं रब अज़्ज़ा व जल्ला ने कुलूब हमारे हाथ में रखे हैं जब चाहें फेर दें और जब चाहें अपनी तरफ़ कर लें उसी तरफ़ आला हज़रत अज़ीमुल-बरकत ने क़सीदा ज़रिया क़ादरीया शरीफ़ में इशारा फरमाया है -

ग़रज़ आक़ा से करूं अर्ज़ कि तेरी ही पनाह
बन्दा मज्बूर है ख़ातिर पे है क़ब्ज़ा तेरा
हुक्म नाफ़िज़ है तेरा ख़ामा तेरा सैफ तेरी
दम में जो चाहे करे दूर है शाहा तेरा
जिसको लल्कार दे आता हो तो उल्टा फिर जाए
जिसको चुमकार ले हर फिर के वह तेरा तेरा
कुंजियां दिल की खुदा ने तुझे दीं ऐसी कर
कि यह सीना हो मुहब्बत का ख़ज़ीना तेरा
दिल पे कुन्दह हो तेरा नाम तो वह दज़्द रजीम
उलटे ही पांव फिरे देख के तुग़रा तेरा

ख़ाकसार मुदीर : हाशिया ख़त्म

इरशाद : आज मंगल का दिन है जिसकी निस्बत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम का इरशाद है जो कि कपड़ा मंगल के दिन क़तअ् हो वह जलेगा या डूबेगा या चोरी जाएगा।

अर्ज़ : क़ब्रिस्तान में जूता पहन कर जाने का क्या हुक्म है।

इरशाद : हदीस में फ़रमाया तलवार की धार पर पाँव रखना मुझे उस से आसान है कि मुसलमान की क़ब्र पर पांव रखूं दूसरी हदीस में फरमाया अगर मैं अंगारे पर पांव रखूं यहां तक वह जूते का तल्ला तोड़ कर मेरे तल्वे तक पहुंच जाए तो यह मुझे उस से ज़्यादा पसन्द है कि किसी मुसलमान की क़ब्र पर पांव रखूं यह वह फरमा रहे हैं कि वल्लाह अगर मुसलमान के सर और सीने और आंखों पर क़दमे अक़्दस रख दें तो उसे दोनों जहां का चैन बख़्श दें सल्लल्लाहु ताआला अलैहि व सल्लम फ़तहुल-क़दीर और तहतावी और रद्दुल-मुख़्तार में है। *अल-मरूरु फ़ी सिक्कते हादिसतुन फ़िल-मक़ाबिरे हरामुन*। क़ब्रिस्तान में जो नया रास्ता निकला हो उसमें चलना हराम है कि वह ज़रूर क़ब्रों पर होगा बख़िलाफ़ राहे क़दीम के कि क़ब्रें उसे छोड़ कर बनाई जाती हैं हुज़ूरे

अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने एक साहब क़ब्रिस्तान में जूता पहने निकले फरमाया।

ऐ बाल साफ किए हुए जूते वाले अपने जूते को फेंक न तो साहिबे क़ब्र को सता न वह तुझे सताए।

एक शख़्स को दफन करके लोग चले गये मुंकर नकीर ने सवाल शुरू किया एक शख़्स जूता पहने उस तरफ़ से निकला उसके जूते की आवाज़ सुन कर मुर्दा उस तरफ़ मुतवज्जोह हुआ और क़रीब था कि जो सवाल मुंकर नकीर कर रहे थे उसके जवाब से क़ासिर रहता मरने के बाद ज़िन्दगी से कहीं ज़ाइद इद्राक हो जाता है ग़ज़्व-ए-बदर शरीफ़ में मुसलमानों के लिए कुफ़्फ़ार की नअ्शें जमा करके एक कुएं में पाट दीं हुज़ूर की आदत करीमा थी जब किसी मक़ाम को फतह फरमाते तो वहां तीन दिन क़्याम फरमाते थे यहां से तशरीफ़ ले जाते वक़्त उस कुएं पर तशरीफ़ ले गये जिसमें काफिरों की लाशें पड़ी थीं और उन्हें नाम बनाम आवाज़ देकर फरमाया हमने तो पा लिया जो हम से हमारे रब ने सच्चा वादा (यानी नुसरत का) फ़रमाया था क्यों तुमने भी पाया जो सच्चा वादा (यानी नार का) तुम से तुम्हारे रब ने किया था अमीरुल-मुमिनीन फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की। *या रसूलुल्लाह अज्सादुल ला अरवाहुन फीहा* या रसूलुल्लाह क्या हुज़ूर बेजान जुस्सों से कलाम फरमाते हैं फरमाया। *मा अन्तुम बेअस्मा मिन्हुम*। तुम कुछ उन से ज़्यादा नहीं सुनते मगर उन्हें ताक़त नहीं कि मुझे लौट कर जवाब दें तो काफिर तक सुनते हैं मोमिन तो मोमिन हैं और फिर औलिया की शान तो अरफ़ा व आला है (फिर फरमाया) रूह एक परिन्द है और जिस्म पिंजरा परिन्द जिस वक़्त तक पिंजरा में है उसकी परवाज़ उसी क़द्र है जब पिंजरा से निकल जाए उस वक़्त उसकी परवाज़ देखिए (फरमाया) अपने मुर्दों को बुज़ुर्गों के पास दफन करो कि उनकी बरकत के सबब उन पर अज़ाब नहीं किया जाता। *हुमुल-क़ौमु ला य श्क़ी बेहिम जलीसहुम*। वो वह लोग हैं कि उनके सबब उनका हम नशीं भी बदबख़्त नहीं होता लिहाज़ा हदीस में फरमाया : *दफ़नू मौताकुम वसत क़ौमुन सालेहीन*। अपने मुर्दों को नेकों के दर्मियान दफन करो मैंने हज़रत मियाँ साहब क़िबला कुद्दिसा सिर्रहू को फरमाते सुना। एक जगह कोई क़ब्र खुल गई और मुर्दा नज़र आने लगा देखा कि गुलाब की दो शाख़ें

उसकी बदन से लिपटी हैं और गुलाब के दो फूल उसके नथुनों पर रखे हैं उसके अज़ीज़ों ने इस ख़्याल से कि यहां क़ब्र पानी के सदमा से खुल गई दूसरी जगह क़ब्र खोद कर उस में रखें अब जो देखें तो दो अज़्दहे उसके बदन से लिपटे अपने फनों से उसका मुंह भमोड़ रहे हैं हैरान हुए किसी साहिबे दिल से यह वाक़्या बयान किया उन्होंने फरमाया वहां भी यह अज़्दहा ही थे मगर एक वली अल्लाह के मज़ार का कुर्ब था उसकी बरकत से वह अज़ाबे रहमत हो गया था वह अज़्दहे दरख़्त गुल की शक्ल हो गये थे और उनके फ़न्ने गुलाब के फूल उसकी ख़ैरियत चाहो तो वहीं लेजा कर दफन करो, वहीं ले जा कर रखा फिर वही दरख़्त गुल थे और वही गुलाब के फूल एक बार हज़रत सैयदी इस्माईल हज़रमी कुद्दिसा सिर्रहुल-अज़ीज़ कि अजिल्ला औलियाए किराम से हैं एक क़ब्रिस्तान से गुज़रे इमाम मुहिब्बुद्दीन तबरी कि अकाबिर मुहद्देसीन से हैं हमराह रेकाब थे हज़रत सैयदी इस्माईल ने उन से फरमाया *अतुमिनु बेकलामिल-मौता* किया उस पर आप ईमान लाते हैं कि मुर्दे ज़िन्दों से कलाम करते हैं अर्ज़ की हां फरमाया उस क़ब्र वाला मुझ से कह रहा है *इन्ना मिन हश्विल-जन्नते* में जन्नत की भर्ती में से हों आगे चले वहां चालीस क़ब्रें थीं आप बहुत देर तक रोते रहे यहां तक कि धूप चढ़ गई उसके बाद आप हंसे और फरमाया तू भी उन्हीं में से है लोगों ने यह कैफ़ियत देख कर अर्ज़ की हज़रत यह क्या राज़ है हमारी समझ में कुछ न आया फरमाया इन कुबूर पर अज़ाब हो रहा था जिसे देख कर मैं रोता रहा और हज़रत इज़्ज़त में मैंने उनकी शफ़ाअत की मौला तआला ने मेरी शफ़ाअत कुबूल फरमाई और उन से अज़ाब उठा लिया एक क़बर गोशे में थी जिसकी तरफ़ मेरा ख़्याल न गया था उस में से आवाज़ आई *या सैय्यदी अना मिन्हुम अना फुलानतुल-मुग़नीयह* ऐ मेरे आक़ा मैं भी तो उन्हीं में हूं मैं फुलां डूमनी हूं मुझे उस के कहने पर हंसी आ गई और मैंने कहा *अन्ता मिन्हुम* तू भी उन्हीं में है उस पर से भी अज़ाब उठा लिया गया तो यह हज़रात सरापा रहमत हैं जिस तरफ गुज़र हो रहमत साथ है।

अर्ज़ : नदवह के मुतअल्लिक़ मुसलमानों का क्या ख़्याल होना चाहिए और नदवियों को कैसा समझना चाहिए।

इरशाद : नदवा खिचड़ी है पहले वाज़ अह्ले सुन्नत भी धोखे से

उसमें शामिल हो गये थे जैसे मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब इलाहाबादी और मौलवी अहमद हुसैन साहब कानपूरी और मौलवी अब्दुल-वहाब साहब लखनवी उसकी शनाअतों पर इत्तिला पा कर यह लोग एलाहिदा हो गये मौलाना अहमद हसन साहब मरहूम नदवा अज़ीमाबाद के बाद बरैली तशरीफ़ लाए रमज़ान का अख़ीर अशरा था मैं अपनी मस्जिद में मोतकिफ़ था मैंने ख़बर सुन कर उनको ख़त लिखा जिस में अल्क़ाब यह थे।

उस में अहमद हसन उनका नाम भी निकला और मानी यह हुए कि आपकी ख़स्लत महमूद और तीनते मस्ऊद मगर नदवा तबाह कुन की शिर्कत मरदूद। मेरी उनकी दोस्ती थी उन अल्क़ाब को देख कर बहुत हंसे और मेरे पास तशरीफ़ लाए और फरमाया मैंने उस से तौबा कर ली है और ऐन जल्सा में मौलवी मुहम्मद अली नाज़िम से यह कह कर उठा हूं कि मौलवी साहब आप इस मज्मा को देखते हैं यह सब जहन्नम में जाएगा और उनके आगे मैं और आप होंगे यह नहीं जानता कि पहले आप जाएंगे कि पहले मैं लखनऊ के जलसा में इब्राहीम आरी ने अपने लेक्चर में सिर्फ़ *ला इलाहा इल्लल्लाह* पर मदारे नजात रखा मौलवी अब्दुल-वहाब (यह साहब मौलवी अब्दुल-बारी फिरंगी महल्ली के वालिद हैं उन्होंने नदवा से गुरेज़ की उसमें तो कलमा गो की शर्त भी थी और यह सौराज कमेटी में हमातन मस्रूफ़ जिसमें एक तो मुश्रेकीन से इत्तिहाद शर्त और एक बड़े मुश्रिक की सरदारी है। १२) साहिबे लखनवी मआ हमराहियां यह फरमा कर उठ आए कि यहां तो रिसालत भी तशरीफ़ ले गई इसी तरह सुन्नियों में से जो मुत्तलअ् होता गया जुदा होता गया यहां तक कि उस में बद मज़्हब रह गये या तो खुले मुरतदीन जैसे राफ़ज़ी वहाबी वग़ैरहुम या वह नाम के सुन्नी जो उनको अराकीने दीन बनाते हैं और उन से इत्तिहाद मनाते हैं।

नदवा का अक़ीदा यह है कि नेचरी वहाबी क़ादयानी राफ़ज़ी सब अह्ले क़िबला हैं लिहाज़ा सब मुसलमान हैं अह्ले क़िबला की तक्फीर जाइज़ नहीं खुदा सब को एक नज़र से देखता है जैसे ब्रिटिश गवर्नमेंट कि उसे उसकी रईयत के सब मज़्हब वाले एक से हम ऐसे अक़ीदा बाहिया से अल्लाह की पनाह मांगते हैं कोई मुसलमान ऐसा नहीं कह सकता कुरआने अज़ीम फरमाता है। *अफनज्अलुल-मुस्लेमीना कल-मुज्रेमीन। मा लकुम कैफ़ा तहकुमून।* क्या हम मुतीओं को मुज्रिमों के

मिस्ल कर दें तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो और फरमाता है *अफ़नज्अलुल-मुत्तक़ीना कल-फुज्जार* क्या हम परहेज़गारों को बदकारों की मानिन्द कर दें और फरमाता है। *लैसू अस्वाआ* सब एक से नहीं और फरमाता है *हल यस्तवी* क्या वह सब बराबर हैं और फरमाता है। *ला यस्तवी अस्हाबन्नारे व अस्हाबल-जन्नते अस्हाबल-जन्नते हुमुल-फ़ाइज़ून।* दोज़ख वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं जन्नत वाले ही कामयाब होंगे कुरआने अज़ीम में इस मज़्मून की बकसरत आयात हैं सिद्दीक़े अकबर व फारूके आज़म पर राफ़ज़ी तबर्रा बकते हैं। नदवी कहते हैं सुन्नी और शीआ का क़तईयात में इत्तिफ़ाक़ है सिर्फ़ ज़न्नियात में इख़्तिलाफ़ है ज़रा-ज़रा सी बात, पहाड़ बना कर कहां तक नौबत पहुंचाई है तो अब न सिद्दीक़ की सहाबियत क़तई ठहरी न सिद्दीक़ व फारूक़ की खिलाफ़ते राशिदा क़तई हुई न सिद्दीक़ व फारूक़ का जन्नती होना क़तई रहा सब ज़न्नियात हो गये रवाफ़िज़ का तबर्रा बकना सिद्दीक़ व फारूक़ को गालियां देना एक ज़रा सी बात हुई। *वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल-अलीयिल-अज़ीम।*

अर्ज़ : जन्नत की भर्ती क्या माना?

इरशाद : जन्नत बहुत वसीअ् मकान है *अरज़ुहस्समावाते वल-अर्ज़* सातों आसमान और सातों ज़मीन उसकी चौड़ान में आ जाएं उसकी उरअत अल्लाह व रसूल ही जानते हैं उस में पहले अरबाबे इस्तेहक़ाक़ भेजे जाएंगे जिन्होंने आमाले सालेहा किए और अपनी हसनात के सबब मुस्तहिक़े जन्नत हुए यानी इस्तेहक़ाक़ तफ़ज़्ज़ुली न वजूदी कि किसी को नहीं मौला तआला अपने बन्दों को आमाले सालेहा की तौफ़ीक़ देता है फिर उन में आमाले सालेहा पैदा फरमाता है फिर अपने करम से उन्हें कुबूल फरमाता है फिर अपनी रहमत से उनके एवज़ जन्नत देगा यह सब उसका फ़ज़ल ही फ़ज़ल है जब यह लोग अपने-अपने महलों में आराम कर लेंगे जन्नत बहुत ज़्यादा ख़ाली रहेगी तो बे-इस्तेहक़ाक़ वालों को अपने महज़ करम से उस में भरेगा यह जन्नत की भर्ती है और अब भी बहुत जगह ख़ाली रहेगी तो रब अज़्ज़ा व जल्ल उन रूहों को दुनिया में न भेजी गई जिस्म अता फरमा कर उन मकानों में बसाएगा यह बहुत आराम से रहे न दुनिया की सूरत देखी न कोई तकलीफ़ सही न मौत चखी न कोई अमल किया फ़क़त अल्लाह व रसूल पर ईमान और हमेशा

के लिए दारुल-जनान *फ़सुबहाना वासेउर्रहमते।*

अर्ज़ : नेचरी उस पर बहुत ज़ोर देते हैं डिप्टी नज़ीर अहमद ने तो साफ़ लिख दिया है कि नजात के लिए सिर्फ़ *ला इलाहा इल्लल्लाह* काफी है मुहम्मद रसूलुल्लाह की कुछ हाजत नहीं और उस पर हदीस *मन क़ाला ला इलाहा इल्लल्लाहु दख़लल-जन्नह* से सनद लाते हैं हदीस का क्या मतलब है।

इरशाद : हदीस हक़ है और ज़अम ख़बीस कुफ़्र। *ला इलाहा इल्लल्लाह* कलिमा तैयबा का इल्म है जिससे पूरा कलिमा मुराद है अगर कहे *अल्हम्दु* सात बार कहो *या कुल हुवल्लाह* ग्यारह बार कहो क्या इससे सिर्फ़ लफ़्ज़ *अल्हम्दु* या लफ़्ज़ *कुल हुवल्लाह* मुराद होंगी हरगिज़ नहीं बल्कि पूरी सूरतें कि इख़्तिसारन जिनके यह नाम हैं। कलिमा तैयबा का इख़्तिसार *ला इलाहा* नहीं हो सकता था कि नफी महज़ बिला इस्तिस्ना तो मआज़ल्लाह कलिमा कुफ़्र है ला जुर्म निस्फ़ कलिमा उसका इख़्तिसार हुआ यह एक ज़ाहिर जवाब है और मेरे नज़्दीक तो हक़ीक़त अम्र यह है कि बेशक सिर्फ़ *ला इलाहा इल्लल्लाह* नजात का ज़ामिन है और उसी से वह मल्ऊन क़ौल कि *मुहम्मद रसूलुल्लाह* की मआज़ अल्लाह हाजत नहीं कुफ़्र ख़ालिस है *ला इलाहा इल्लल्लाह* से फ़क़त अल्फाज़ मुराद नहीं बल्कि उसके मानी की तस्दीक़ सच्चे दिल से ईमान लाना कि जिस ज़ात जामे जमीअ् कमालाते मुनज़्ज़ह अज़ जमीअ् उयूब व नक़ाइस का इल्म पाक बाके में। अल्लाह है जिसने सच्ची किताबें उतारीं सच्चे रसूल भेजे *मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम* को अफ़ज़लुर्रुसुल व ख़ातमुन्नबीयीन किया वह जिसके कलाम का एक-एक हरफ़ यक़ीनी क़तई हक़ है जिसमें किज़्ब या सह्व या ख़ता का असलन किसी तरह इम्कान नहीं जिसने अल्लाह को इस तरह पहचाना उसी ने अल्लाह को जाना उसी ने *ला इलाहा इल्लल्लाह* माना और जिसे ज़रूरियाते दीन से किसी बात में शक व शुबह है उस ने न हरगिज़ अल्लाह को जाना न *ला इलाहा इल्लल्लाह* माना मसलन जो शख़्स *ला इलाहा इल्लल्लाह* पर ईमान का दावा रखे और मुहम्मद *रसूलुल्लाह* सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को न माने वह ऐसे की तौहीद की गवाही देता है ऐसे को अल्लाह समझा है जिसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को न भेजा और वह

हरगिज़ अल्लाह नहीं उसने अपने ख़्याल में एक बातिल तसव्वुर जमा कर उसका नाम अल्लाह रख लिया है यह अल्लाह पर मोमिन नहीं बल्कि अल्लाह के साथ मुश्रिक है अल्लाह यक़ीनन वह जिस ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ भेजा तो अल्लाह पर ईमान वही लायेगा जो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान रखता है उस पर तमाम ज़रूरियाते दीन को क़्यास कर लो मसलन जो अल्लाह का मुक़िर और क़्यामत का मुंकिर है यक़ीनन अल्लाह का मुंकिर और उस इक़रार में मुश्रिक है तो ऐसे को अल्लाह ठहराया जो क़्यामत न लाएगा हालांकि अल्लाह वह है कि क़्यामत जिसका सच्चा वादा है व अला हाज़ल-क़्यास अब बेफ़ज़्लेही तआला मानी बेतकल्लुफ़ सही हो गये लिहाज़ा अपने रिसाला बाबुल-अक़ाइद वल-कलाम में साबित किया है कि कुफ़्र सिर्फ़ जहल बिल्लाह का नाम है जो अल्लाह को सही तौर पर जानता मानता है काफिर नहीं हो सकता और जो काफिर है अल्लाह को हरगिज़ नहीं जान सकता अगरचे कितना ही बड़ा दावा, इल्म व मारिफ़त का करे जैसे देवबन्दिया वहाबिया व मिर्ज़ाइया *व अम्सालहुम खुज़ लहुम अल्लाहु तआला*।

अर्ज़ : उन लोगों की निस्बत कि अगर बद मज़्हब आलिम से मिलने को मना किया जाए तो कहीं आलमे आलिम सब एक हैं।

इरशाद : उनका शुमार भी उन्हीं में से है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है *व मन यतवल्लहू मिन्कुम फ़इन्नहू मिन्हुम*। तुम में जो उन से दोस्ती रखेगा वह बेशक उन्हीं में से है। अमीरुल-मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम फरमाते हैं : *अल-आदाओ सलासहू अदुव्वका व अदुव्वुन सदीकुका व सिद्दीके अदुव्वुका*। दुश्मन तीन हैं एक तेरा दुश्मन एक तेरे दोस्त का दुश्मन और एक तेरे दुश्मन का दोस्त यूं ही अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के दुश्मन तीनों क़िस्म के हैं एक तो इब्तिदाअन उसके दुश्मन वह काफिरान असली हैं। *फ़इन्नल्लाहा अदुव्वुन लिल-काफ़िरीन* दूसरे वह कि महबूबाने खुदा के दुश्मन हैं जैसे देवबन्दिया मिर्ज़ाइया वहाबिया रवाफ़िज़ तीसरे वह कि उन दुश्मनों में किसी के दोस्त हैं यह सब आदा अल्लाह हैं। वल-अयाज़ु बिल्लाहि तआला।

अर्ज़ : हुज़ूर हम लोगों को भी चाहिए कि उनको अपना दुश्मन जानें।

इरशाद : हर मुसलमान पर फ़र्ज़ आज़म है कि अल्लाह के सब

दोस्तों से मुहब्बत रखे और उसके सब दुश्मनों से अदावत रखे यह हमारा ऐने ईमान है।

(इसी तज़्किरा में फरमाया) बेहम्दुलिल्लाहि तआला मैंने जब से होश संभाला अल्लाह के राब दुश्मनों से दिल में सख़्त नफ़रत ही पाई एक बार अपने दिहात को गया था कोई देही मुक़द्दमा पेश आया जिसमें चौपाल के तमाम मुलाज़िमों को बदायूं जाना पड़ा मैं तन्हा रहा उस ज़माना में मआज़ल्लाह दर्द क़ौलंज के दौरे हुआ करते थे उस दिन जुहर के वक़्त से दर्द शुरू हुआ उसी हालत में जिस तरह बना वुज़ू किया अब नमाज़ को नहीं खड़ा हुआ जाता रब अज़्ज़ा व जल्ल से दुआ की और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मदद मांगी मौला अज़्ज़ा व जल्ल मुज़्तर की पुकार सुनता है मैंने सुन्नतों की नीयत बांधी दर्द बिल्कुल न था जब सलाम फेरा उसी शिद्दत से था फ़ौरन उठ कर फ़र्ज़ों की नीयत बांधी दर्द जाता रहा जब सलाम फेरा वही हालत थी बाद की सुन्नतें पढ़ीं दर्द मौक़ूफ़ और सलाम के बाद फिर बदस्तूर मैंने कहा अब अस्र तक होता रह पलंग पर लेटा करवटें ले रहा था कि दर्द से किसी पहलू क़रार न था इतने में सामने से उसी गांव का एक बरहमन कि (ख़बीस बज़अमे खुद क़रीब-क़रीब तौहीद का क़ाइल और बराहे मक्र व फ़रेब मेरे खुश करने के लिए मुसलमानों की तरफ़ माइल बनता था) गुज़रा फाटक खुला हुआ था मुझे देख कर अन्दर आया और मेरे पेट पर हाथ रख कर पूछा क्या यहां दर्द है मुझे उसका नजिस हाथ बदन को लगने से इतनी कराहत व नफरत पैदा हुई कि दर्द को भूल गया और यह तक्लीफ़ उस से बढ़ कर मालूम हुई कि एक काफिर का हाथ मेरे पेट पर है ऐसी अदावत रखना चाहिए।

अर्ज़ : अक्सर लोग बद मज़्हबों के पास जान बूझ कर बैठते हैं उनके लिए क्या हुक्म है।

इरशाद : हराम है और बद मज़्हब हो जाने का अन्देशा कामिल और दोस्ताना हो तो दीन के लिए ज़हर क़ातिल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। *इय्याकुम व इय्याहुम ला युज़िल्लूनकुम वला यफ़्तिनूनकुम*। उन्हें अपने दोस्तों से दूर करो और उन से दूर भागो वह तुम्हें गुमराह न कर दें कहीं वह तुम्हें फ़ित्ने में न डालें और अपने नफ़्स पर एतमाद करने वाला बड़े कज़्ज़ाब पर एतमाद करता है। *इन्नहा*

अक्ज़बुन शैयुन इज़ा हलफ़त फ़कैफ़ा इज़ा वअ्दत। नफ़्स अगर कोई बात क़सम खा कर कहे तो सबसे बढ़ कर झूठा है न कि जब ख़ाली वादा करे सही हदीस में फरमाया जब दज्जाल निकलेगा कुछ उसे तमाशे के तौर पर देखने जाएंगे कि हम तो अपने दीन पर मुस्तक़ीम हैं हनें उस से क्या नुक़सान होगा वहां जा कर वैसे ही हो जाएंगे हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया "मैं हलफ़ से कहता हूं कि जो जिस क़ौम से दोस्ती रखता है उसका हश्र उसी के साथ होगा।" सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इरशाद हमारा ईमान और फिर हुज़ूर का हलफ़ से फरमाना। दूसरी हदीस है "जो काफिरों से मुहब्बत रखेगा वह उन्हीं में से है।" इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि शरहुस्सुदूर में नक़्ल फरमाते हैं एक शख़्स रवाफ़िज़ के पास बैठा करता था जब उसकी नज़अ् का वक़्त आया लोगों ने हस्बे मअ्मूल उसे कलिमा तैयबा की तल्क़ीन की कहा नहीं कहा जाता पूछा क्यों कहा यह दो शख़्स खड़े कह रहे हैं तू उनके पास बैठा करता था जो अबू बकर व उमर को बुरा कहते थे अब यह चाहता है कि कलिमा पढ़ कर उठे हरगिज़ न पढ़ने देंगे यह नतीजा है बद मज़्हबों के पास बैठने का जब सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के बद गोवियों से मेल जोल की यह शामत है तो क़ादियानियों और वहाबियों और देवबन्दियों के पास नशिस्त, बर्ख़ास्त की आफत किस क़द्र शदीद होगी उनकी बदगोई सहाबा तक है उनकी अंबिया और सैयदुल-अंबिया और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल तक।

अर्ज़ : अगर मुलाज़िम है और खुशामद में लगा रहे।

इरशाद : इतना बर्ताव रखो अल्लाह व रसूल के दुश्मनों से जितना अपने दुश्मनों से रखते हो।

अर्ज़ : हुज़ूर मज्ज़ूब की क्या पहचान है।

इरशाद : सच्चे मज्ज़ूब की यह पहचान है कि शरीअ़ते मुतह्हरा का कभी मुक़ाबला न करेगा हज़रत सैयदी मूसा सुहाग रहमतुल्लाहि तआला अलैह मशहूर मजाज़ीब से थे अहमदाबाद में मज़ार शरीफ़ है मैं ज़्यारत से मुशर्रफ़ हुआ हूं ज़नाना वज़अ् रखते थे एक बार क़हत शदीद पड़ा बादशाह व क़ाज़ी व अकाबिर जमा हो कर हज़रत के पास दुआ के लिए गये इंकार फरमाते रहे कि मैं क्या दुआ के क़ाबिल हूं जब लोगों की

इल्तिजा व ज़ारी हद से गुज़री एक पत्थर उठाया और दूसरे हाथ की चूड़ियों की तरफ़ लाए और आसमान की जानिब मुंह उठा कर फरमाया मेंह भेजिए या अपना सुहाग लीजिए यह कहना था कि घटाएं पहाड़ की तरह उमड़ी और जल थल भर दिए एक दिन नमाज़े जुमा के वक़्त बाज़ार में जा रहे थे उधर से क़ाज़ी शहर कि जामा मस्जिद को जाते थे आए उन्हें देख कर अम्र बिल-मारूफ़ किया कि यह वज़अ् मर्दों को हराम है मरदाना लिबास पहनिए और नमाज़ को चलिए उस पर इंकार व मुक़ाबला न किया चूड़ियां और ज़ेवर और ज़नाना लिबास उतारा और मस्जिद को साथ हो लिए खुतबा सुना जब जमाअत क़ायम हुई और इमाम ने तक्बीरे तहरीमा कही अल्लाहु अक्बर सुनते ही उनकी हालत बदली फरमाया अल्लाहु अकबर मेरा ख़ावन्द हैय्युन ला यमूत है कि कभी न मरेगा और यह मुझे बेवह किए देते हैं इतना कहना था कि सर से पांव तक वही सुर्ख़ लिबास था और वही चूड़ियां अंधी तक़्लीद के तौर पर उनके मज़ार के बाज़ मुजावरों को देखा कि अब तक बालियां कड़े जोशन पहनते हैं यह गुमराही है सूफ़ी साहब तहक़ीक़ और उनका मुक़ल्लिद ज़िन्दीक़।

अर्ज़ : सच्चे वज्द की क्या पहचान है?

इरशाद : यह कि फराइज़ व वाजिबात में मुख़िल्ल न हो हज़रत सैयद अबुल-हुसैन अहमद नूरी पर वज्द तारी हुआ तीन शबाना रोज़ गुज़र गये हज़रत सैयदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हम अस्र थे किसी ने हज़रत सैयदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से यह हालत अर्ज़ की फरमाया नमाज़ो का क्या हाल है अर्ज़ की नमाज़ों के वक़्त होशियार हो जाते हैं और फिर वही कैफ़ियत तारी हो जाती है फरमाया अल्हम्दुलिल्लाह उनका वज्द सच्चा है (उसके बाद फरमाया) नमाज़ जब तक अक़्ल बाक़ी है किसी वक़्त में मुआफ़ नहीं। रमज़ान शरीफ़ के रोज़े हालते सफर में या मरज़ में कि रोज़ा रखने की ताक़त नहीं इजाज़त है कि क़ज़ा करे इसी तरह ज़कात साहिबे निसाब पर और हज साहिबे इस्तिताअत पर फर्ज़ है लेकिन नमाज़ सब पर बहरहाल फर्ज़ है यहां तक कि किसी हामिला औरत के निस्फ़ बच्चा पैदा हो लिया है और नमाज़ का वक़्त आ गया तो अभी नुफ़सा नहीं हुक्म है कि गड्ढे खोदे या देग पर बैठे और इस तरह

नमाज़ पढ़े कि बच्चे को तक्लीफ़ न हो या बीमार है खड़े होने की ताक़त नहीं दीवार या असा या किसी शख़्स के सहारे खड़ा हो कर नमाज़ अदा करे और अगर इतनी देर खड़ा नहीं रह सकता तो जितनी देर मुम्किन हो क़्याम फर्ज़ है अगरचे इसी क़द्र कि तक्बीरे तहरीमा खड़े हो कर कह ले और बैठ जाए अगर बैठ भी न सके तो लेटे-लेटे इशारों से पढ़े। हुज़ूर नमाज़ की कसरत फरमाते यहां तक कि पाए मुबारक सूज जाते सहाबा किराम अर्ज़ करते हुज़ूर इस क़द्र क्यों तक्लीफ़ गवारा फरमाते हैं मौला तआला ने हुज़ूर को हर तरह की मुआफ़ी अता फरमाई है फरमाते *अफला अकूनु अब्दन शकूरा*। तो क्या मैं कामिल शुक्र गुज़ार बन्दा न हूं यहां तक कि रब अज़्ज़ा व जल्ल ने खुद ही बकमाले मुहब्बत इरशाद फरमाया : *ताहा मा अंज़लना अलैकल-कुरआन लेतशक़ा*। ऐ चौदहवीं रात के चाँद हम ने तुम पर कुरआन इसलिए न उतरा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो ग़रज़ नमाज़ मरते वक़्त तक मुआफ़ नहीं रब अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है। *वअ़बुद रब्बका हत्ता यातीकल-यक़ीन*। ऐ बन्दे अपने रब की इबादत किए जा यहां तक कि तुझे मौत आए। एक साहब सालेहीन से थे बहुत ज़ईफ़ हुए पंजगाना मस्जिद की हाज़िरी न छोड़ते एक शब इशा की हाज़िरी में गिर पड़े चोट आई बाद नमाज़ अर्ज़ की इलाही अब मैं बहुत ज़ईफ़ हुआ बादशाह अपने बूढ़े गुलामों को ख़िदमत से आज़ाद कर देते हैं मुझे आज़ाद फरमा उनकी दुआ कुबूल हुई मगर यूं कि सुबह उठे तो मज्नून थे यानी जब तक अक़्ल तक्लीफ़ी बाक़ी है नमाज़ मुआफ़ नहीं है सच्चे मजाज़ीब भी नमाज़ नहीं छोड़ते। अरगचे लोग उन्हें पढ़ते न देखें किसी ने हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से हज़रत सैयदी क़ज़ीबुल-बयान मूसली कुद्दिसा सिर्रहू की शिकायत की कि उनको कभी नमाज़ पढ़ते न देखा इरशाद फरमाया उस से कुछ न कहो उसका सर हर वक़्त ख़ान-ए-काबा में सुजूद में है।

अर्ज़ : मर्द को चोटी रखना जाइज़ है या नहीं बाज़ फ़क़ीर रखते हैं।

इरशाद : हराम है हदीस में फरमाया : *लअ़नल्लाहु अल-मुत ाब्बेहीना मिनर्रिजाले बिन्निसाए वल-मुत ाबिहाते मिनन्निसाए बिर्रिजाले*। अल्लाह की लानत है ऐसे मर्दों पर जो औरतों से मुशाबेहत रखें और ऐसी औरतों पर जो मर्दों से मुशाबेहत पैदा करें।

अर्ज़ : वलदुल-हराम के पीछे नमाज़ हो जाएगी या नहीं।

इरशाद : अगर उस से इल्म व तक़्वा में ज़्यादा उसकी मिस्ल जमाअत मौजूद हो तो उसे इमाम बनाना न चाहिए हाँ अगर यही सब हाज़िरीन से इल्म व तक़्वा में ज़ाइद हो तो उसी को इमाम बनाया जाए।

अर्ज़ : हुज़ूर इसमें बच्चा का क्या कुसूर है?

इरशाद : शरअ़ को तक्सीरे जमाअत का बड़ा लिहाज़ है इमाम में जब कोई ऐसी बात हो जिस से क़ौम को नफरत और बाइस तक़लील जमाअत हो उसकी इमामत नापसन्द है अगरचे उसका कुसूर न हो। लिहाज़ा जिसके बदन पर बरस के दाग़ बकसरत हों उसकी इमामत मकरूह है रगबत जमाअत ही के लिहाज से मुस्तहब है और फ़ज़ाइल में मुसावत के बाद इमाम ख़ूबसूरत व खुश गुलू हो (फिर फरमाया) नमाज़ को लोगों ने आसान समझ लिया है अवाम बेचारे किस गिनती में बाज बड़े-बड़े आलिम जो कहलाते हैं उनकी नमाज़ सही नहीं होती (फिर फ़रमाया कि) इबादत महज लेवज्हिल्लाह होना चाहिए कभी अपने आमाल पर नाज़ां न हो कि किसी के उम्र भर के आमाले हसना उसकी किसी एक नेमत को जो उसने अपनी रहमत से अता फरमाई हैं बदला नहीं हो सकते अगली उम्मतों में एक बन्द-ए-खुदा बीच समुन्द्र में एक पहाड़ पर जहाँ इंसान का गुज़र न था रात दिन इबाद[illegible] इलाही में मशग़ूल रहते रब अज़्ज़ा व जल्ल ने उस पहाड़ पर उनके लिए अनार का एक दरख़्त उगाया और एक शीरीं चश्मा निकाला अनार खाते और वह पानी पीते और इबादत करते चार सौ बरस इसी तरह गुज़ारे ज़ाहिर है कि जब इंसान बिल्कुल तने तन्हा ज़िन्दगी बसर करे और कोई दूसरा न हो तो न झूठ बोल सकता है न किसी की ग़ीबत कर सकता है न चोरी न और कोई कुसूर कर सकता है जिसका तअल्लुक़ दूसरे से हो और अक्सर गुनाह वही हैं ग़रज़ जब उनके नज़अ़ का वक़्त आया हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए उन्होंने कहा इतनी इजाज़त दीजिए कि मैं वुज़ू ताज़ा करके दो रकअत नमाज़ पढ़ लूं जब दूसरी रकअत के दूसरे सज्दा में जाऊं क़ब्ज़ रूह कर लेना उन्होंने फरमाया मैं तुम्हारे लिए इतनी इजाज़त लाया हूं उन्होंने वुज़ू किया दो रकअत नमाज़ पढ़ी दूसरी रकअत के सज्दा में इंतिक़ाल हुआ बदन उनका सलामत है अब तक वैसे ही सज्दा में हैं जिब्रील अमीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़

की हम जब आसमान से उतरते या आसमान को जाते हैं उन्हें इसी तरह सर बसुजूद देखते हैं यह बन्द-ए-खुदा जब क्यामत के रोज हाजिर होंगे इबादत के सिवा नाम-ए-आमाल में कोई गुनाह तो होगा ही नहीं हिसाब व मीजान की क्या हाजत रब्बुल-इज्जत इरशाद फरमाएगा। मेरे बन्दे को मेरी जन्नत मे मेरी रहमत से ले जाओ उनके मुंह से निकलेगा। "ऐ रब मेरे बल्कि मेरे अमल से" यानी मैने अमल ही ऐसे किए जिन से मुस्तहिके जन्नत हूं इरशाद होगा लौटाओ और मीजान खड़ी करो उसकी चार बरस की इबादत एक पल्ले में और हमारी नेमतों से जो हमने उसे चार सौ बरस मे दीं सिर्फ आंख की नेमत दूसरे में रखो वज़न किया जाएगा उनके चार सौ बरस के आमाल से एक यह नेमत कहीं ज़्यादा होगी इरशाद होगा मेरे बंदे को जहन्नम में ले जाओ मेरे अदल से इस पर घबराकर अर्ज करेंगे ऐ रब मेरे बल्कि तेरे रहमत से इरशाद होगा। मेरे बन्दे को मेरी जन्नत में मेरी रहमत से ले जाओ क्यामत के दिन सब से पहले नमाज ही की पुरसिश होगी। (उसके बाद कुछ और वाकेआत हश्र का बयान फरमाया कि) सब अव्वलीन व आखिरीन जमा होंगे और उस दिन ज़र्रह-ज़र्रह का हिसाब होगा बाज मुस्लेमीन भी अपने मुआसी पर मुअज्जब किए जाएंगे कोई मुसलमान पूरी सज़ा न पाएगा सजा पूरी होने से पहले ही हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफाअत उन्हें नजात दिलवा देगी सजा अगर पूरी हो लेती तो नजात आप ही होती शफाअत का क्या असर होता लेकिन शफ़ाअत उन्हें बख़्शवाएगी तो साबित की सज़ा पूरी न होने पाएगी (फिर फरमाया) एक बन्दा हाजिर होगा रब्बुल-इज्ज़त का हुक्म होगा उसका नाम-ए-आमाल उसे दिया जाएगा वह तो मार हद्दे निगाह तक तवील और सरापा गुनाहों से भरा होगा अपना नाम-ए-आमाल खुद पढ़ेगा उसमें सग़ाइर व कबाइर सब लिखे होंगे यह छोटे-छोटे गुनाह जाहिर करेगा और कबाइर को छोड़ता जाएगा रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाएगा पढ़ लिया है कहेगा हां सब पढ़ लिया फरमाएगा ऐ मेरे फरिश्तो उसके हर गुनाह के बदले एक नेकी लिखो उस वक्त चिल्ला उठेगा कि इलाही मेरे बड़े गुनाह तो रह ही गये हैं मैंने तो सिर्फ सग़ाइर पढ़े यह सब सदका है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हदीस में है जब आयते करीमा नाज़िल हुई *वलसौफा युअ़तीका रब्बुका फतरज़ा*। अल्बत्ता करीब है कि तुम्हारा रब

तुम्हें इतना देगा कि तुम राजी हो जाओ हुज़ूर शफ़ीउल-मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया। ऐसा है तो मैं राजी न हूंगा अगर मेरा एक उम्मती भी नार में रहा। रोज़े क्यामत दारोगा दोजख अलैहिस्सलातु वस्सलाम हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफाअतें देख कर अर्ज़ कर देंगे हुज़ूर ने अपनी उम्मत में ग़ज़बे इलाही का कोई हिस्सा न छोड़ा (फिर फरमाया) क्यामत के रोज़ दो बन्दे दोजख़ से निकाले जाएंगे रब अज़्ज़ा व जल्ला फरमाएगा जो कुछ तुम्हें पहुंचा तुम्हारे आमाल का बदला था मैं किसी पर जुल्म नहीं करता तुम फिर जहन्नम में चले जाओ। उन में से एक तो दौड़ता हुआ जहन्नम की तरफ़ जाएगा और दूसरा आहिस्ता हुक्म होगा वापस जाओ। उन में से एक तो दौड़ता हुआ जहन्नम की तरफ़ जाएगा और दूसरा आहिस्ता हुक्म होगा वापस लाओ उस शताबी और आहिस्तगी का सबब पूछो जल्दी करने वाला अर्ज़ करेगा ऐ रब मेरे नाफरमानी के सबब यह कुछ देख चुका था क्या अब भी नाफरमानी करता दूसरा अर्ज करेगा इलाही मुझे उम्मीद न थी कि जहन्नम से निकाल कर मुझे फिर उसमें भेजेगा हुक्म होगा दोनों को जन्नत में ले जाओ।

अर्ज़ : बाज़ लोग कहते हैं कि आलिम की सोहबत में बैठने से आदमी बिगड़ जाता है।

इरशाद : हदीस में तो यह फरमाया है। इस हाल में सुबह कर कि तू आलिम हो या मुतअल्लिम या आलिम की बातें सुनने वाला या आलिम का मुहिब्ब और पांचवां न होना कि हलाक हो जाएगा।

अर्ज़ : ज़ैद ने अपनी औरत को तलाके मुग़ल्लज़ा दे दी उलमा से इस्तिफ़्ता पूछा हलाला का हुक्म मिला अगर बग़ैर हलाला रजअत कर ले।

इरशाद : हराम कतई है जब इद्दत गुज़ार ले और मुतल्लेक़ा का निकाह दूसरे शख़्स से हो और वह उस से हम बिस्तर हो फिर वह तलाक़ दे और फिर इद्दत गुज़रे उसके बाद ज़ैद से निकाह हो सकता है बेग़ैर उसके जिना ख़ालिस होगा (इसी सिलसिले में फरमाया) एक सहाबिया को उनके शौहर ने मुग़ल्लज़ा तलाक़ दे दी उन बीवी ने दूसरे से निकाह कर लिया और बिला हम बिस्तर हुए ख़िदमते अक्दस में जा कर अर्ज़ की कि अगर वह तलाक़ दे दे तो अब मैं पहले से निकाह कर सकती हूं इरशाद फरमाया। *ला हत्ता तज़ूक़ी ईसल्तुहू व यज़ूक़ु असीलतका।*

तो रब्बुल-इज़्ज़त ने यह ताज़िया न रखा है कि लोग तीन तलाक़ें देने से ख़ौफ़ करें और उसे बाज़ रहें लेकिन फिर भी हया नहीं करते तीन तो दरकनार जब देने पर आते हैं तो बेशुमार तलाक़ें देते हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर औरत का इंतिक़ाल हो जाए तो उसके शौहर को हाथ लगाने की इजाज़त नहीं न वह कन्धा दे न मुंह देखे।

इरशाद : यह मसअला जुहला में बहुत मशहूर है और बिल्कुल बेअसल है हां बेहाइल उसके जिस्म को बेशक हाथ नहीं लगा सकता बाक़ी कन्धा भी दे सकता है और क़ब्र में भी उतार सकता है और अगर मौत ऐसी जगह आए जहां मियां बीवी के सिवा कोई और न हो तो शौहर खुद अपने हाथों पर कपड़ा लपेट कर मैयत को तयम्मुम कराए लेकिन औरत को बिला किसी शर्त के अपने शौहर मुर्दा को छूने की इजाज़त है।

अर्ज़ : ज़ैद अगर फौत हो गया मन्कूहा ने उसके रुपये से मस्जिद बनवा दी और उसके बहन भाई को महरूम रखा।

इरशाद : अगर उसका महर इतना था कि ज़ैद का मतरूका उसके महर में मुस्तग़रक़ होता तो अख़्तियार था वरना अपने महर व हिस्सा से ज़ाइद ग़सब है।

अर्ज़ : अगर किसी मुरीद की अपने शैख़ से ज़्यादा रसाई हो उस पर उसके पीर भाई रंज रखें।

इरशाद : यह हसद है जो ले जाता है जहन्नम में रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला ने हज़रत आदम अली नबीयेना अलैहिस्सलातु वस्सलाम को यह रुतबा दिया कि तमाम मलाइका से सज्दा कराया शैतान ने हसद किया वह जहन्नम में गया दुनिया में अगर किसी को अपने से ज़्यादा देखे शुक्र बजा लाए कि मुझे इतना मुब्तला न किया और दीन में देखे तो उसकी दस्त बोसी करे उसे माने किसी पर हसद करना रब्बुल-इज़्ज़त पर एतराज़ है कि उसे क्यों ज़्यादा दिया और मुझे क्यों कम रखा।

अर्ज़ : ताज़ियादारी में लहव व लइब समझ कर जाए तो कैसा है।

इरशाद : नहीं चाहिए नाजायज़ काम में जिस तरह जान व माल से मदद करेगा यूंहीं सुवाद बढ़ा कर भी मददगार होगा, नाजाइज़ बात का तमाशा देखना भी नाजाइज है बन्दर नचाना हराम है उसका तमाशा

देखना भी हराम है दुर्रे मुख़्तार व हाशिया अल्लामा तहतावी में इन मसाइल की तस्रीह है आजकल लोग उन से ग़ाफ़िल हैं मुत्तक़ी लोग जिनको शरीअत की एहतियात है ना वाक़फ़ी से रीछ या बन्दर का तमाशा या मुर्ग़ों की पाली देखते हैं और नहीं जानते कि उस से गुनहगार होते हैं। हदीस में इरशाद है कि अगर कोई मज्मा ख़ैर का हो और वह न जाने पाया और ख़बर मिलने पर उस ने अफसोस किया तो इतना ही सवाब मिलेगा जितना हाज़िरीन को और अगर मज्मा। शुरका हो उसने अपने न जाने पर अफसोस किया तो जो गुनाह उन हाज़िरीन पर होगा वह उस पर भी।

अर्ज़ : बुज़ुर्गाने दीन की तसावीर बतौर तबर्रुक लेना कैसा है।

इरशाद : काबा मुअज़्ज़मा में हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल व हज़रत मरयम की तसावीर बनी थीं कि यह मुतबर्रक हैं ना जाइज़ फ़ेअ्ल था हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने खुद दस्ते मुबारक से उन्हें धो दिया।

अर्ज़ : नमाज़े फज्र में दुआ कुनूत पढ़ना क्या असर रखता है और उसके पढ़ने का क्या तरीक़ा है।

इरशाद : अगर मआज़ल्लाह कोई नाज़ला हुआ और सख़्त नाज़ला आम बला हो और सख़्त बला अल्लाह पनाह में रखे तरीक़ा उसका यह है कि दूसरी रकअत में अल्हम्दु व सूरः के बाद अल्लाहु अक्बर कह कर इमाम दुआए कुनूत पढ़े और मुक़्तदी आहिस्ता-आहिस्ता दुआ मांगें या आमीन कहें।

अर्ज़ : वुज़ू करने का मस्नून तरीक़ा क्या है।

इरशाद : वुज़ू करने जब बैठे पहले। *बिस्मिल्लाहिल-अज़ीम वल्हम्दु लिल्लाहि अला दीनिल-इस्लाम*। पढ़ ले जो वुज़ू बिस्मिल्लाह से शुरू किया जाता है तमाम बदन को पाक कर देता है वरना जितने पर पानी गुज़रेगा उतना ही पाक होगा फिर दोनों हाथ पहुंचों तक तीन-तीन बार इस तरह धोए कि पहले सीधे हाथ को उलटे हाथ से पानी डाल कर तीन बार फिर उलटे को सीधे हाथ से पानी डाल कर तीन बार और उसका ख़्याल रहे कि उंगलियों की घाइयाँ पानी बहने से न रह जाएं फिर तीन बार कुल्ली ऐसी करे कि मुंह की तमाम जड़ों और दांतों की सब खिड़कियों में पानी पहुंच जाए कि वुज़ू में इसी तरह कुल्ली करना

सुन्नते मुअक्कदा और गुस्ल में फ़र्ज़ है अक्सर लोगों को देखा कि उन्होंने जल्दी-जल्दी तीन बार पच-चप कर लिया या नाक की नोक पर तीन मरतबा पानी लगा लिया ऐसा करने से वुज़ू में सुन्नत अदा नहीं होती एक आध बार ऐसा करने से तारिके सुन्नत और आदत डालने से गुनाहगार व फासिक़ होता है और गुस्ल में फ़र्ज़ रह जाता है तो गुस्ल तो होता ही नहीं कि नर्म बांसे तक पानी चढ़ाना वुज़ू में सुन्नते मुअक्कदा और गुस्ल में फ़र्ज़ है दाढ़ी अगर है तो ख़ूब तर कर ले अगर एक बाल की जड़ भी खुश्क रही और पानी उस पर न बहा तो वुज़ू न होगा और मुंह पर पानी लम्बाई में पेशानी के बालों की जड़ों से ठोढ़ी के नीचे तक और चौड़ाई में कान की एक लव से दूसरी लव तक पानी बहाएं फिर दोनों हाथ कुहनियों तक इस तरह धोएं कि पानी की धार कुहनी तक बराबर पड़ती चली जाए यह न हो कि पहुंचे से तीन बार पानी छोड़ दिया और वह कुहनी तक बहता चला गया इस तरह कुहनी बल्कि कलाई की करवटों पर पानी न बहने का एहतमाल है उसका लिहाज़ ज़रूरी है कि एक रोंगटा भी खुश्क न रहे अगर पानी किसी बाल की जड़ को तर करता हुआ बह गया और बालाई हिस्सा खुश्क रह गया तो वुज़ू न होगा फिर सर के बालों का मसह करे चहारुम सर का मसह करना फ़र्ज़ है और पूरे सर का सुन्नत है दोनों हाथों का अंगूठा और कलिमा की उंगली छोड़ कर तीन-तीन उंगलियों और उन्हीं के मक़ाबिल हथेली के हिस्सों से पेशानी की जानिब से गुद्दी तक खींचता हुआ ले जाए फिर हथेलियों का बाक़ी हिस्सा गुद्दी से पेशानी तक लाए और कलिमा की उंगलियों के पेट से कानों के पेट का मसह करे और अंगूठों के पेट से कानों की पुश्त का और पुश्त दस्त से गर्दन के पिछले हिस्सा का गले पर हाथ न लाए कि बिदअत है फिर दोनों पांव टखनों के ऊपर तक धोए और हर अज़्व पहले दायां फिर बायां धोए कुल्ली करते वक़्त कहे। *अल्लाहुम्मा अइन्नी अला तिलावतिल-कुरआने व ज़िकरिका व शुकरिका व हुस्ने इबादतिका।* इलाही मेरी मदद फरमा कुरआने अज़ीम की तिलावत और अपने ज़िक्र व शुक्र और अच्छी इबादत पर नाक में पानी डालते वक़्त कहे। *अल्लाहुम्मा अरेहनी राइहतल-जन्नते वला तुरिहनी राइहतन्नार।* इलाही मुझे जन्नत की खुशबू सुंघा और दोज़ख़ की बदबू सुंघा मुंह धोते वक़्त कहे। *अल्लाहुम्मा बैइज़ वज्ही यौमा तबयज़्ज़ु वुजूहुन व तस्वद्दु वुजूहुन।*

इलाही मेरा मुंह उजाला कर जिस दिन कुछ मुंह उजाले होंगे और कुछ काले। दाहिना हाथ धोते वक़्त कहे। *अल्हुम्मा आतेनी किताबी बेयमीनी व हासिबनी हिसाबन यसीरा।* इलाही मेरा नाम-ए-आमाल मेरे सीधे हाथ में दे और मुझ से आसान हिसाब लें बायां हाथ धोते वक़्त कहे। *अल्लाहुम्मा ला तुअ़तेनी किताबी बेशिमाली वला मिन वराइ ज़हरी।* इलाही मेरे नामए आमाल मेरे उलटे हाथ में न देना न मेरी पीठ के पीछे से सर का मसह करते वक़्त कहे। *अल्लाहुम्मा अज़िल्लनी तहता ज़िल्ले अरशिका यौमन ला ज़िल्ला इल्ला ज़िल्ला अरशिका।* इलाही मुझे अपने अर्श के नीचे साया दे जिस दिन साया नहीं मगर तेरे अर्श का कानों का मसह करते वक़्त कहे। *अल्लाहुम्मज अलनी मिनल्लज़ीना यस्तमेऊनल-क़ौला फ़यत्तबेऊना अहसनहू।* इलाही मुझे उनमें कर जो कान लगा कर बात सुनते हैं फिर उस में बेहतर की पैरवी करते हैं। गर्दन के मसह में कहे। *अल्लाहुम्मा आतिक़ रक़बती मिनन्नार।* इलाही मेरी गर्दन दोज़ख़ से आज़ाद फरमा। सीधा पांव धोते वक़्त कहे। *अल्लाहुम्मा सब्बित क़दमी अलस्सिराति यौमा तज़िल्लुल-अक़्दामु।* इलाही मेरे पांव सिरात पर जमा जिस दिन क़दम फिसलें। उलटा धोते वक़्त कहे। *अल्लाहुम्मा अज्अल ज़ंबी मग़फ़ूरन व सअ्यी म श्कूरा व तिजारती लन तबूर।* इलाही मेरा गुनाह मआफ़ कर और मेरी कोशिश ठिकाने लगा और मेरी सौदागरी ज़ाए न कर और हर अज़्व धोने के बाद दरूद शरीफ़ पढ़े ख़त्मे वुज़ू के बाद आसमान की तरफ़ मुंह उठा कर कलिमा शहादत पढ़े फिर कहे। *अल्लाहुम्मा अज्अलनी मिनत्तौवाबीना वज्अलनी मिनल-मुततहहेरीन।* इलाही मुझे बहुत तौबा करने वालों में से कर और मुझे सुथरा होने वालों में से कर जन्नत के आठों दरवाज़े उसके लिए खोल दिए जाएंगे (इसी सिलसिला में फरमाया) एक मरतबा गांव जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ एक आलिम मेरे साथ थे फज की नमाज़ के लिए उन्होंने वुज़ू किया भवों से चेहरा पर पानी डाला जब उन से कहा गया तो फरमाया जल्दी की वजह से कि वक़्त न जाए। मैंने कहा तो बिला वुज़ू ही पढ़िएगा। मुझे ख़्याल रहा ज़ुहर के वक़्त देखा उन्होंने उस वक़्त भी ऐसा ही किया मैंने कहा अब तो वक़्त न जाता था। आजकल लोगों की आम तौर से यही आदत है गुस्ल में जिस क़द्र एहतियात चाहिए आजकल इतनी ही बेएहतियाती है अल्लाह मआफ़ फरमाए।(फिर फरमाया) नमाज़ में सज्दा

करते हैं कि पांव की उंगलियों के सिरे ज़मीन पर लगते हैं हालांकि हुक्म है कि पेट लगे एक उंगली का पेट लगना फर्ज़ और सबका सुन्नत है फिर सिर्फ़ नाक की नोक पर सज्दा करते हैं हालांकि हुक्म है कि जहां तक हड्डी का सख़्त हिस्सा है लगना चाहिए उमूमन देखा जाता है कि रुकूअ़ से ज़रा सर उठाया और सज्दा की तरफ़ चले गये सज्दा से एक बालिश्त सर उठा पाया बहुत हुआ ज़रा उठा लिया और वहीं दूसरा सज्दा हो गया हालांकि पूरा सीधा खड़ा होना और बैठना चाहिए इस तरह अगर ६० बरस नमाज़ पढ़ेगा क़ुबूल न होगी एक शख़्स मस्जिदे अक़्दस में हाज़िर हुआ और बहुत तेज़ी से जल्दी-जल्दी नमाज़ पढी बाद नमाज़ हाज़िर हो कर सलाम अर्ज किया फरमाया। *व अलैकस्सलामु इरजेअ़ फ़सल्ले फइन्नका लम तुसल्लि।* वापस जा कर फिर पढ़ कि तूने नमाज़ न पढ़ी उन्होंने दोबारा वैसे ही पढी यही इरशाद हुआ आख़िर में उन्होंने अर्ज़ की क़सम उस की जिस ने हुज़ूर को हक़ के साथ भेजा मुझे ऐसी ही आती है हुज़ूर फरमाएं "फरमाया" रुकूअ़ व सुजूद बइत्मीनान कर और रुकूअ़ से सीधा खड़ा हो और दोनों सज्दों के दर्मियान सीधा बैठ।

अर्ज़ : हुज़ूर जिस में ६६ बातें कुफ़्र की हों और एक इस्लाम की उसके लिए क्या हुक्म है।

इरशाद : काफिर है कोई नहीं कह सकता कि एक सज्दा करे अल्लाह को और ६६ महादेव को तो मुसलमान रहेगा अगर ६६ सज्दे अल्लाह को और एक भी महादेव को किया तो काफिर हो जाएगा। गुलाब में एक क़तरा पेशाब का डाला जाए वह पाक रहेगा या नापाक इत्तिफ़ाक़न एक सफर में किसी का नाक़ा गुम हो गया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया फुलां जंगल में है उसकी महार पेड़ से अटक गई है ज़ैद इब्ने लसीत मुनाफ़िक़ ने कहा मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कहते हैं कि नाक़ा फुलां जंगल में है हुज़ूर ग़ैब की ख़बर क्या जानें। *कुल अबिल्लाहि व आयातेही व रसूलेही कुन्तुम तस्तहज़ेऊना ला तातज़ेरू क़द कफरतुम बअ़दा ईमानिकुम।* तुम फरमा दो क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल से ठट्ठा करते हो बहाने न बनाओ तुम काफिर हो चुके अपने ईमान के बाद अल्लाह ने ६६ न गिनें एक गुनी इरशाद उलमा यूं हैं कि

किसी से कोई कलिमा सादिर हो जिसके सौ मानी हो सकते हों ६६ पर कुफ़्र लाज़िम आता हो और एक पहलू इस्लाम की तरफ़ जाता हो उसके कुफ़्र का हुक्म न करेंगे जब तक मालूम न हो कि उस ने कोई पहलूए कुफ़्र मुराद लिया मसअला तो यह था और वे दीनों ने क्या से क्या कर लिया उसका बहुत वाज़ेह व रौशन बयान हमारी किताब तम्हीदे ईमान बेआयाते कुरआन में है और यहां यह भी मालूम हो गया कि जो मुतलक़न ग़ैब का मुंकिर हो वह काफिर हो गया जो लफ़्ज़ उस मुनाफ़िक़ ने कहे जिसे कुरआने अज़ीम ने फरमाया तू बहाने न बना तू काफिर हो चुका यही तो था कि रसूल ग़ैब क्या जाने बेऐनेही यही तक़्वियतुल-ईमान में लिखा कि "ग़ैब की बातें अल्लाह जाने रसूल को क्या ख़बर।

अर्ज़ : मुहर्रम की मजालिस में जो मर्सिया ख़्वानी वग़ैरह होती है सुनना चाहिए या नहीं।

इरशाद : मौलाना शाह अब्दुल-अज़ीज़ साहब की किताब जो अरबी में है वह या हसन मियां मरहूम मेरे भाई की किताब आईन-ए-क़यामत में सही रिवायात हैं उन्हें सुनना चाहिए बाक़ी ग़लत रिवायात के पढ़ने से न पढ़ना और न सुनन बहुत बेहतर है।

अर्ज़ : और उन मजालिस में रिक़्क़त आना कैसा।

इरशाद : रिक़्क़त आने में हरज नहीं बाक़ी रफ़्ज़ा की हालत बनाना जाइज़ नहीं कि *मन तशब्बहा बेक़ौमिन फ़हुवा मिन्हुम*। नीज़ हक़ सुबहानहू ने नेमतों के ऐलान को फरमाया और मुसीबत पर सब्र का हुक्म दिया है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की विलादत बारह (१२) रबीउल-अव्वल शरीफ़ यौमे दो शंबा को है और उसी में वफ़ात शरीफ़ है तो अइम्मा ने खुशी व मुसर्रत का इज़्हार किया ग़म परवरी का हुक्म शरीअ़त नहीं देती।

अर्ज़ : यह सही है कि शबे मेअ़राज मुबारक जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अर्श बरीं पर पहुंचे नअ़लैन पाक उतारना चाहें कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को वादी-ए-ऐमन में नअ़लैन शरीफ़ उतारने का हुक्म हुआ था फौरन ग़ैब से निदा आई ऐ हबीब तुम्हारे मआ नअ़लैन शरीफ़ रौनक़ अफ़रोज़ होने से अर्श की ज़ीनत व इज़्ज़त ज़्यादा होगी।

इरशाद : यह रिवायत महज बातिल व मौज़ूअ़ है।

अर्ज़ : शबे मेअ्राज जब बुराक़ हाज़िर किया गया हुज़ूर आबदीदा हुए हज़रत जिब्रील ने सबब पूछा फरमाया आज मैं बुराक़ पर जा रहा हूं कल क़्यामत के दिन मेरी उम्मत बरहना पा पुल सिरात की राह तय करेगी यह तक़ाज़ाए मुहब्बत व शफ़्क़ते उम्मत के मुवाफ़िक़ नहीं इरशादे बारी हुआ यूंही एक एक बुराक़ बरोज़ हश्र तुम्हारी हर उम्मती की क़ब्र पर भेजेंगे यह रिवायत सही है या नहीं।

इरशाद : बिल्कुल बेअसल है ऐसी ही और भी बहुत सी रिवायात बिल्कुल बेअसल व बेहूदा हैं क्या कहा जाए।

अर्ज़ : खाने के वक़्त शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ लेना काफी है।

इरशाद : हाँ काफी है बेग़ैर बिस्मिल्लाह शैतान उस खाने में शरीक हो जाता है रब्बुल-इज़्ज़त ने उस से फरमाया था। *वशारिकहुम फिल-अमवाले वल-औलादे*। माल व औलाद में उनका शरीक हो जो बग़ैर बिस्मिल्लाह खाए पिए उसके खाने पीने में शैतान शरीक होता है और बेग़ैर बिस्मिल्लाह औरत के पास जाए उसकी औलाद में शैतान का साझा होता है हदीस ऐसों को मग़रबीन फरमाया जो इंसान व शैतान के मज्मूई नुत्फ़े से बनते हैं अगर खाने की इब्तिदा में भूल जाए और दर्मियान में याद आ जाए फौरन बिस्मिल्लाह अला अव्वलेही व आख़िरही पढ़ ले कि शैतान उसी वक़्त क़य कर देता है और बफ़ज़्लेही मैं भूखा ही मारता हूं यहां तक कि पान खाते वक़्त बिस्मिल्लाह और जब छालिया मुंह में डाली तो बिस्मिल्लाह शरीफ़ हां हुक़्क़ा पीते वक़्त नहीं पढ़ता तहतावी में उस से मुमानेअत लिखी है वह ख़बीस अगर उस में शरीक होता हो तो ज़रर ही पाता होगा कि उम्र भर का भूखा प्यासा उस पर धुएं से कलीजा जलना भूख प्यास में हुक़्क़ा बहुत बुरा मालूम होता है (फिर फरमाया) शैतान हर वक़्त तुम्हारी घात में है उस से ग़ाफ़िल किसी वक़्त न हो।

अर्ज़ : बदगुमानी क्या हराम है?

इरशाद : बेशक। अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है। ऐ ईमान वालो बहुत से गुमानों से बचो बेशक बाज़ गुमान गुनाह हैं। और हदीस सही में फ़रमाया। गुमान से दूर रहो कि गुमान सबसे बढ़ कर झूठी बात है। एक मरतबा इमाम जाफर सादिक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तन्हा एक गुदड़ी पहने मदीना तैयबा से काबा मुअ़ज़्ज़मा को तशरीफ़ लिए जाते थे और हाथ में सिर्फ़ एक तामलूट। शफ़ीक़ बल्ख़ी रहमतुल्लाहि

तआला अलैहि ने देखा दिल में ख़्याल किया कि यह फ़क़ीर औरों पर अपना बार डालना चाहता है यह वसवसा शैतानी आना था कि इमाम ने फरमाया शफ़ीक़ बचो गुमानों से गुमान गुनाह होते हैं नाम बताने और वसवसा दिली पर आगाही से निहायत अक़ीदत हो गई और इमाम के साथ हो लिए रास्ता में एक टीला पर पहुंच कर इमाम ने उस से थोड़ा रेत लेकर तामलोट में घोल कर पिया और शफ़ीक़ रहमतुल्लाह अलैहि से भी पीने को फरमाया उन्हें इंकार का चारा न हुआ जब पिया तो ऐसे नफीस लज़ीज़ खुशबूदार सत्तू थे कि उम्र भर में न देखे न सुने एक रोज़ शफ़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने मस्जिदे हराम शरीफ़ में देखा कि वही साहबे वेश बहा लिबास पहने दर्स दे रहे हैं लोगों से पूछा यह कौन बुजुर्ग हैं किसी ने कहा इब्ने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जाफर सादिक़ जब तख़्लिया हुआ उन्होंने अर्ज़ किया हज़रत यह क्या बात है कि राह में आपको एक गुदड़ी पहने देखा था और इस वक़्त यह लिबास देख रहा हूं आपने दामन मुबारक उठाया कि वही गुदड़ी नीचे ज़ेब तन है और फरमाया कि वह तुम्हारे दिखाने को है और यह गुदड़ी अल्लाह के लिए।

अर्ज़ : हुज़ूर एक किताब में मैंने देखा कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के वक़्त रेश मुबारक में ख़िज़ाब था।

इरशाद : ख़िज़ाब सियाह या उसकी मिस्ल हराम है सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है। उस सपेदी को बदल दो और सियाही के पास न जाओ सुनन निसई शरीफ़ की हदीस में है कुछ आएंगे कि सियाह ख़िज़ाब करेंगे जैसे जंगली कबूतरों के नीलगूं पोटे वह जन्नत की बू न सूंघेंगे, तीसरी हदीस में है। जो सियाह ख़िज़ाब करे अल्लाह तआला रोज़े क़्यामत उसका मुंह काला करेगा, चौथी हदीस में है। ज़र्द ख़िज़ाब मोमिन का है और सुर्ख़ ख़िज़ाब मुस्लिम का और सियाह ख़िज़ाब काफिर का पांचवीं हदीस में है अल्लाह दुशमन रखता है बुड्ढे कव्वे को छठी हदीस में है, सब में पहले जिसने सियाह ख़िज़ाब किया फिरऔन था देखो फिरऔन काहे में डूबा नील में यह लोग भी नील में डूबते हैं सियाह ख़िज़ाब सिर्फ़ मुजाहिदीन को जाइज़ है जैसे जंग में रज्ज़ पढ़ना और खुद सताई उनको जाइज़ है अकड़ कर चलना उनको जाइज़ है

रेशमी बाने का दबीज़ लिबास उनको पहनना जाइज़ है चालीस दिन से ज़्यादा लबीं और चेहरे का बाल और नाखुन बढ़ाना उनको जाइज़ है औरों को यह सब बातें हराम हैं फौजी क़ानून आम क़ानून से जुदा होता है उस में सियाह ख़िज़ाब दाख़िल है सैयदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुजाहिद थे उन्हें जाइज़ था तुम को हराम है।

अर्ज़ : जाहिल फ़क़ीर का मुरीद होना शैतान का मुरीद होना है।

इरशाद : बिला शुब्ह।

अर्ज़ : अक्सर बाल बढ़ाने वाले लोग हज़रत गैसू दराज़ को दलील लाते हैं।

इरशाद : जिहालत है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बकसरत अहादीसे सहीहा में उन मर्दों पर लानत फरमाई है जो औरतों से मुशाबिहत पैदा करें और उन औरतों पर जो मर्दों से, और तशब्बुह के लिए हर बात में पूरी वज़अ् बनाना ज़रूर नहीं एक ही बात में मुशाबेहत काफी है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक औरत को मुलाहिज़ा फरमाया कि मर्दों की तरह कन्धे पर कमान लटकाए जा रही है उस पर भी यही फरमाया कि उन औरतों पर लानत जो मर्दों से तशब्बुह करें उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने एक औरत को मर्दाना जूता पहने देखा उस पर भी यही हदीस रिवायत फरमाई कि मर्दों से तशब्बुह करने वालियां मलऊन हैं जब सिर्फ़ जूते या कमान लटकाने में मुशाबेहत मूजिबे लानत है तो औरतों के से बाल बढ़ाना उस से सख़्त तर मूजिबे लानत होगा कि वह एक ख़ार्जी चीज़ हैं और यह ख़ास जुज़्व व बदन तो शानों से नीचे गैसू रखना बहुक्म अहादीसे सहीहा ज़रूर मूजिबे लानत है और चोटी गुंधवाना और ज़्यादा और उसमें मुबाफ़ डालना और उस से सख़्त तर हज़रत सैयदी मुहम्मद गैसू दराज़ कुद्दिसा सिर्रहू ने तशब्बुह न किया था एक गैसू महफ़ूज़ रखा था और उसके लिए एक वज्ह ख़ास थी कि अकाबिर उलमा व अजिल्ल-ए-सादात से थे जवानी की उम्र थी सादात की तरह शानों तक दो गैसू रखते थे कि इस क़द्र शरअन जाइज़ बल्कि सुन्नत से साबित है एक बार सरे राह बैठे थे हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चिराग़ दिल्ली रहमतुल्लाहि अलैहि की सवारी निकली उन्होंने उठ कर ज़ानवए मुबारक पर बोसा दिया हज़रत ख़्वाजा ने फरमाया सैयद फरो तर्क सैयद और नीचे बोसा दो उन्होंने पाए मुबारक पर बोसा लिया फरमाया सैयद फरो तर्क उन्होंने घोड़े के सुम पर बोसा दिया एक गैसू कि रुकाब मुबारक में उलझ गया था वहीं उल्झा रहा और रुकाब से सुम तक बढ़ गया। हज़रत ने फरमाया सैयद फरो तर्क उन्होंने हट कर ज़मीन पर बोसा दिया गैसू रेकाबे मुबारक से जुदा करके हज़रत तशरीफ़ ले गये लोगों को तअज्जुब हुआ कि ऐसे जलील सैयद इतने बड़े आलिम ने ज़ानो पर बोसा दिया और हज़रत राज़ी न हुए और नीचे बोसा देने को हुक्म फरमाया उन्होंने ने पाए मुबारक को बोसा दिया और नीचे को हुक्म फरमाया घोड़े के सुम पर बोसा दिया और नीचे को हुक्म फरमाया यहां तक कि ज़मीन पर बोसा दिया यह एतराज़ हज़रत सैयद गैसू दराज़ ने सुना फरमाया लोग नहीं जानते कि मेरे शैख़ ने उन चार बोसों में क्या अता फरमा दिया जब मैंने ज़ानवए मुबारक पर बोसा दिया आलमे नासूत मुंकशिफ़ हो गया जब पाए अक़्दस पर बोसा दिया आलमे मलकूत मुंकशिफ़ हुआ जब घोड़े के सुम पर बोसा दिया आलमे जबरूत मुंकशिफ़ था जब ज़मीन पर बोसा दिया लाहूत का इंकिशाफ़ हो गया उस एक गैसू को कि ऐसी जलील नेमत का यादगार था और उसे ऐसी तजल्ली-ए-रहमत ने बढ़ाया था न तरशवाया उसे तशब्बुह से क्या इलाक़ा औरतों का एक गैसू बड़ा नहीं होता न इतना दराज़ और उसके महफ़ूज़ रखने में यह राज़ उसकी सनद अबू मख़्दूरह रज़ि अल्लाह तआला अन्हु का फ़ेअ्ल है जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तायफ़ शरीफ़ फतह फरमाया अज़ान हुई बच्चों ने उसकी नक़ल की उन में अबू मख़्दूरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी थे उनकी आवाज़ बहुत अच्छी थी हुज़ूर ने आपको बुलाया और सर पर दस्ते मुबारक रखा और उनको मुअज़्ज़िन मुक़र्रर फरमा दिया। मां ने बरकत के लिए पेशानी के उन बालों को जिन पर दस्ते अक़्दस रखा गया था महफ़ूज़ रखा जिस वक़्त बाल खोले जाते तो ज़मीन पर आ जाते थे उसे भी तशब्बुह से कुछ इलाक़ा नहीं औरतें फ़क़त पेशानी के बाल नहीं बढ़ातीं और उनका महफ़ूज़ रखना उस बरकत के लिए था।

अर्ज़ : हुज़ूर मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहुल-करीम का यह इरशाद

है कि असल से ख़ता नहीं कम असल से वफ़ा नहीं।

इरशाद : हुज़ूर का यह इरशाद नहीं मगर यह वात है ज़रूर कि असल तैयव में अख़्लाक़े फ़ाज़िला होते हैं और रज़ील उसका अक्स है इसी वास्ते अह्दे माज़ी में सलातीने इस्लाम रज़ीलों को ज़रूरत से ज़्यादा इल्म नहीं पढ़ने देते थे अब देखो नाइयों और मनिहारों ने इल्म पढ़ कर क्या क्या फित्ने फैला रखे हैं वाज़ मनिहार तो सैयद और इब्ने शेर खुदा बन बैठे।

अर्ज़ : रवाफ़िज़ में शादी करना कैसा है आजकल अजब क़िस्सा है कोई राफ़ज़ी किसी का मामूं है और किसी का साला कोई कुछ कोई कुछ।

इरशाद : ना जाइज़ है। ईमान दिलों से हट गया है और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत जाती रही है रब्बुल-इज़्ज़त इरशाद फरमाता है। तुझे अगर शैतान भुला दे तो याद आने पर ज़ालिमों के पास न बैठ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। उन से दूर भागो और उन्हें अपने से दूर करो कहीं वह तुम्हें गुम्राह न कर दें कहीं वह तुम्हें फित्ने में न डालें ख़ास राफ़ज़ीयों के वारे में एक हदीस है।

एक क़ौम आने वाली है उनका एक वद लक़व होगा उन्हें राफ़ज़ी कहा जाएगा न जुमा में आएंगे, न जमाअत में और सलफ़े सालेह को बुरा कहेंगे। तुम उनके पास न बैठना न उनके साथ खाना पीना न शादी व्याह करना वीमार पड़ें तो पूछने न जाना, मर जाएं तो जनाज़े पर न जाना। इमरान विन हत्तान रक़ाशी अकाविर उलमाए मुहद्देसीन से था उसकी एक चचाज़ाद वहन ख़ारजीया थी उस से निकाह कर लिया उलमाए किराम ने सुन कर तअ्ना ज़नी की कहा मैंने तो इसलिए निकाह कर लिया है कि उसको अपने मज़्हव पर ले आऊंगा। एक साल न गुज़रा था कि खुद ख़ार्जी हो गया -

शिकार करने चले थे शिकार हो वैठे। यह सव इस सूरत में है कि वह राफ़ज़ी या राफ़ज़ीया जिस से शादी की जाए वाज़ अगले रवाफ़िज़ की तरह सिर्फ़ वद मज़्हव हो दाइर-ए-इस्लाम से ख़ारिज न हो आजकल के रवाफ़िज़ तो उमूमन ज़रूरियाते दीन के मुन्किर और क़तअ़न मुरतद

हैं उनके मर्द या औरत का किसी से निकाह हो सकता ही नहीं ऐसे ही वहावी, क़ादयानी, देववन्दी, नेचरी, चकरालवी जुमला मुरतदीन हैं कि उनके मर्द या औरत का तमाम जहां में जिस से निकाह होगा मुस्लिम हो या काफिर असली या मुरतद इंसान हो या हैवान महज़ वातिल और ज़ना ख़ालिस होगा और औलाद वलदुज़्ज़ना आलमगीरीया में ज़हरीया से है।

अर्ज़ : हुज़ूर सुलह कुल वाले यह एतराज़ करते हैं कि तहज़ीव के ख़िलाफ़ है अगर कोई अपने पास मिलने आए और उस से न मिला जाए।

इरशाद : तहज़ीव से अगर तहज़ीव नेचरी मुराद है कि वह तहज़ीव नहीं तख़रीव है और अगर तहज़ीवे इस्लामी मक़्सूद तो जिन से हम ने तहज़ीव सीखी वही मना फरमाते हैं। उन से दूर भागो और उनको अपने से दूर करो कहीं वह तुम को गुमराह न कर दें कहीं वह तुमको फित्ने में न डाल दें हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु नमाज़े मग़्रिव पढ़ कर मस्जिद से तशरीफ़ लाए थे कि एक शख़्स ने आवाज़ दी कौन है कि मुसाफिर को खाना दे अमीरुल-मुमिनीन ने ख़ादिम से इरशाद फरमाया उसे हम्राह ले आओ वह आया उसे खना मंगा कर दिया मुसाफ़िर ने खाना शुरू ही किया था कि एक लफ़्ज़ उसकी ज़वान से ऐसा निकला जिस से वद मज़्हवी की बू आती थी फौरन खाना सामने से उठवा लिया और उसे निकाल दिया।

मुअल्लिफ़ : यह वाक़या २८ रजव १३३७ हिज० रोज़े जुमा क़रीव अस्र का है उस जल्से में वाज़ वह लोग भी थे जो वद मज़्हवों के पास वैठा करते थे। हुज़ूर पुर नूर के यह गिरां वहा नसाइह सुन कर दिल ही दिल में अपने ऊपर नफ़रें और मलामत कर रहे थे और कभी-कभी किसी गोशा से तौवा व इस्तिग़फ़ार की आवाज़ भी आ जाती थी उसी वक़्त साहव ने खड़े हो कर दूसरे साहव से कहा आपको अक्सर औक़ात वद मज़्हवों की सोहवत में देखा गया है मुनासिव है कि आला हज़रत अज़ीमुल-वरकत खुश क़िस्मती से तशरीफ़ फरमा हैं तौवा कर लीजिए यह सुनते ही वह क़दमों पर आकर गिरे और सिद्क़ दिल से ताइव हुए

उस पर इरशाद फरमाया भाइयो! यह वक़्त नुज़ूले रहमते इलाही का है सब हज़रात अपने-अपने गुनाहों से तौबा करें जिनके खुफ़िया हों वह खुफ़िया और जिनके एलानिया हों वह एलानिया कि जब तू कोई गुनाह करे तो फौरन तौबा कर मख़्फ़ी की मख़्फ़ी और आशकारा की आशकारा सच्चे दिल से तौबा करें कि रब अज़्ज़ा व जल्ल ऐसी ही तौबा क़ुबूल फरमाता है फ़क़ीर दुआ करता है कि मौला तआला आप हज़रात को इस्तिक़ामत करामत फरमाए जो दाढ़ी मुंडाते या कतरवाते हों या चढ़ाते या सियाह ख़िज़ाब लगाते हों वह और ऐसी ही जो एलानिया गुनाह करते हों उन्हें एलानिया तौबा करना चाहिए और जो गुनाह पोशीदा तौर पर किए उन से पोशीदा कि गुनाह का एलान भी गुनाह है हुज़ूर पुर नूर के उन चन्द फ़ुक़रात में अल्लाह ही जाने क्या असर था कि लोग धाड़ें मार-मार कर रोने लगे गोया वह अपने गुनाहों के दफ़्तर आंसुओं से धो रहे थे और बेताबाना परवाना वार इस शमअ् अंजुमन मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर निसार होने दौड़ते और क़दमों पर गिर गिर कर अपने खुफ़िया व एलानिया आसाम से तौबा कर रहे थे अजब समां था हुज़ूर पुर नूर खुद भी निहायत गिरया व ज़ारी के साथ उनके लिए दुआए मग़्फ़िरत में मसरूफ़ थे जब सब लोग ताइब हो चुके हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि आज मुझे फाइदा मालूम हुआ कि तेरा जबल पुर आना इतने दिनों क़याम करना यूं हुआ (फिर फरमाया कि) मुनासिब होगा अगर ताइबीन की फ़ेहरिस्त तैयार कर ली जाए कि देखा जाए कौन-कौन तौबा पर मुस्तक़ीम रहता है उस वक़्त कुछ लोग चले भी गये थे जिस क़द्र मौजूद थे उनकी फेहरिस्त अगले सफ़ः पर मुलाहिज़ा हो :

फ़ेहरिस्त ताईबीन

नं०	इस्माए गिरामी	पता	जिस बात से तौबा की
१.	अकबर ख़ां साहब	लार्ड गंज	ख़िज़ाब स्याह
२.	क़ासिम भाई साहब	लार्ड गंज	हलक़े लहया
३.	दादा भाई साहब	लार्ड गंज	हलक़े लहया
४.	सेठ अब्दुल करीम साहब	लार्ड गंज	हलक़े लहया
५.	उमर भाई साहब	लार्ड गंज	हलक़े लहया
६.	अब्दुल शकूर साहब	लार्ड गंज	हलक़े लहया
७.	हाफ़िज़ अब्दुल हमीद साहब	कमानिया फाटक	हलक़े लहया
८.	अब्दुल ग़नी साहब	गुलहाई	हलक़े लहया
६.	बाबू अब्दुल शकूर साहब	अपरनी गंज	हलक़े लहया
१०.	हबीबुल्लाह साहब	मुहल्ला खटक	हलक़े लहया
११.	मुहम्मद इदरीस साहब	सदर बाज़ार	हलक़े लहया
१२.	अल्लाह बख़्श साहब	तमरहाई	हलक़े लहया
१३.	अज़ीम मुहम्मद साहब	मुहल्ला खटक	हलक़े लहया
१४.	अज़ीजुद्दीन साहब	मुहल्ला खटक	हलक़े लहया
१५.	अब्दुल जब्बार साहब	कमानिया फाटक	हलक़े लहया
१६.	अज़ीजुद्दीन साहब	मुहल्ला खटक	हलक़े लहया
१७.	निज़ामुद्दीन साहब	भरती गंज	हलक़े लहया
१८.	वली मुहम्मद साहब	लार्ड गंज	हलक़े लहया
१६.	सुलेमान ख़ां साहब	पुल ओमती	हलक़े लहया
२०.	औलाद हुसैन साहब	फूटा तालाब	हलक़े लहया
२१.	मुहम्मद ग़ौस साहब	दुलहाई	हलक़े लहया
२२.	तराब ख़ां साहब	दुलहाई	हलक़े लहया
२३.	हबीबुल्लाह साहब	फूटा तालाब	हलक़े लहया
२४.	मुहम्मद हनीफ़ साहब	पेशकारी	हलक़े लहया
२५.	मुंशी रियायत अली साहब	भान तलय्या	हलक़े लहया
२६.	मुंशी अब्दुर्रहीम साहब	भान तलय्या	हलक़े लहया
२७.	अहमद भाई साहब	कोतवाली बाज़ार	हलक़े लहया
२८.	मूसा भाई साहब	कोतवाली बाज़ार	हलक़े लहया

इन हज़रात ने खुफ़िया मअसी से तौबा की

नं०	इस्माए गिरामी	पता	जिस बात से तौबा की
१.	मौलवी शफ़ी साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
२.	अब्दुल मजीद साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
३.	शैख़ बाक़र साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
४.	अय्यूब अली साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
५.	अब्दुर्रहमान साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
६.	मुहम्मद ज़ाकिर साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
७.	अब्दुल करीम साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
८.	अज़ीमुद्दीन साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
९.	मुहम्मद हुसैन ख़ां साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१०.	अब्दुल समद ख़ां साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
११.	मुहम्मद उसमान ख़ां साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१२.	अब्दुर्रहीम ख़ां साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१३.	नूर ख़ां साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१४.	गुलाम मुहम्मद ख़ां साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१५.	अब्दुल सुबहान साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१६.	ख़ां मुहम्मद साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१७.	मुहम्मद फ़ारुक़ साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१८.	क़ाज़ी क़ासिम ख़ां साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
१९.	मुहम्मद हुसैन साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
२०.	अल्लाह बख़्श साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
२१.	मुलायम ख़ां साहब	बीसल पुरी	हलके लहया
२२.	गुलाम हैदर साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
२३.	अब्दुल गफ़्फ़ार साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
२४.	मुहम्मद जान साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
२५.	मुहम्मद रमज़ान साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
२६.	रुस्तम ख़ां साहब	बीसलपुरी	हलके लहया

नं०	इस्माए गिरामी	पता	जिस बात से तौबा की
२७.	हकीम अब्दुर्रहीम मज़ाक	बीसलपुरी	हलके लहया
२८.	मुल्ला मुहम्मद ख़ां साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
२९.	मुहम्मद इसहाक़ साहब साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३०.	लअल मुहम्मद साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३१.	मक़बूल शाह साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३२.	अब्दुल सत्तार साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३३.	क़नाअत अली साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३४.	अली मुहम्मद साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३५.	हाजी किफ़ायतुल्लाह साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३६.	मौलवी अब्दुल बाक़ी बरहानुल हक़ साहब साहबज़ादा मौलाना शाह मुहम्मद अब्दुस्सलाम साहब जबलपुर	बीसलपुरी	हलके लहया
३७.	मीर अब्दुल करीम साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३८.	मौलवी मुहम्मद ज़ाहिद साहब बिरादरज़ादए मौलाना मौलवी शाह मुहम्मद अब्दुस्सलाम साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
३९.	मुहम्मद फ़ज़ले हक़ साहब बिरादरज़ादए मौलाना मौसूफ़	बीसलपुरी	हलके लहया
४०.	ज़हूरुल हक़ साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
४१.	मास्टर हबीबुल्लाह साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
४२.	अब्दुर्रशीद साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
४३.	अब्दुल मजीद साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
४४.	हुसैन उस्ताद साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
४५.	अब्दुल गफ़ूर साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
४६.	मुहम्मद उस्मान साहब	बीसलपुरी	हलके लहया
४७.	जनाब हाफ़िज़ अब्दुल शकूर साहब बिरादर मौलाना मौसूफ़	बीसलपुरी	हलके लहया
४८.	मौलाना मौलवी शाह मुहम्मद अब्दुस्सलाम साहब ख़लीफ़ा आज़म आला हज़रत अज़ीम अलबरकातिया मअ मुसलेमीन बतूल बक़ाह	बीसलपुरी	हलके लहया

४६. फ़िरोज़ ख़ां साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५०. अहमद ख़ां साहब वल्द गुलाम हुसैन ख़ां साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५१. ह़ाफ़िज़ करीम बख़्श साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५२. शैख़ हातिम अली साहब मुलाज़िम जापान कंपनी (तौबा करते वक़्त बैत भी हुए)	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५३. शैख़ बहादुर साहब मोज़्ज़न	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५४. मुहम्मद तक़ी साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५५. बनोल ख़ां साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५६. खुदा बख़्श साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५७. मुराद साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५८. रहमत अली साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
५६. अब्दुल क़दीर साहब उर्फ़ बन्ने साहब बुरहान पुरी	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६०. अमीर ख़ां साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६१. मुहम्मद बशीरुद्दीन साहब मौज़ा पोटरी ज़िला बमबह	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६२. मुहम्मद इब्राहीम साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६३. शैख़ लअल मुहम्मद साहब मास्टर	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६४. बदीउर्रहमान साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६५. शैख़ अमीर साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६६. शैख़ महबूब साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६७. अब्दुर्रहमान साहब	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६८. अब्दुर्रहीम साहब पुल ओमती	बीसलपुरी	हलक़े लहया
६६. अब्दुल शकूर साहब इमाम मस्जिद पुल ओमती	बीसलपुरी	हलक़े लहया

जो लोग हाज़िरे जल्सा न थे उन्हें बाद को इत्तिला हुई वह सब हाज़िर हो कर ताइब होते गये दूसरे दिन वक़्ते ज़ुहर जबल पुर से रवानगी थी लोग स्टेशन तक आए और ताइब हुए उन सब हज़रात के नाम लिखने से रह गये।

बाद अस्र एक साहब अंगुशतरी तलाई पहने हाज़िर हुए इरशाद फरमाया मर्द को सोना पहनना हराम है सिर्फ़ एक नग की चांदी की अंगूठी साढ़े चार माशे से कम की उसकी इजाज़त है जो सोने या तांबे या लोहे या पीतल की अंगूठी या चांदी की साढ़े चार माशे से ज़्यादा वज़न की या कई अंगूठियां अगरचे सब मिल कर साढ़े चार माशे से कम हों पहने उसकी नमाज़ मकरूहे तहरीमी वाजिबुल-एआदा है।

अर्ज़ : दाढ़ी चढ़ाना कैसा है ?

इरशाद : हदीस में है-

जो शख़्स दाढ़ी बांधे उसे ख़बर दे दो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस से बेज़ार हैं।

अर्ज़ : सूद ख़्वार का क़यामत के रोज़ क्या हाल होगा?

इरशाद : उनके पेट ऐसे होंगे जैसे बड़े-बड़े मकान और शीशे की तरह चमकेंगे कि लोगों को उनकी हालत नज़र आए उन में सांप और बिच्छू भरे होंगे अल्लाह पनाह में रखे हदीस सहीह में है।

तरजमा : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लानत फरमाई सूद खाने वाले सूद देने वाले और उसका काग़ज़ लिखने वाले और उस पर गवाहियां करने वालों पर और फरमाया वह सब बराबर हैं सब एक रस्सी में बंधे हुए हैं। दूसरी हदीस सही में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। सूद ७३ गुनाह के बराबर है जिनमें सबसे हल्का यह कि आदमी अपनी मां से ज़ना करे लोग समझते हैं कि उस से रुपया बढ़ता है मगर यह ख़्याल बातिल है उस में अल्लाह बरकत नहीं रखता अल्लाह तआला फ़रमाता है। अल्लाह मिटाता है सूद को और बढ़ाता है ज़कात को जिसे अल्लाह मिटाए वह क्योंकर बढ़ सकता है हदीस में है। जिसने दानिस्ता एक दिरम सूद का खाया गोया उस ने छत्तीस बार अपनी मां से ज़ना किया दिरम तक़रीबन साढ़े चार आने का होता है तो फी धेला एक बार मां से ज़ना हुआ।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर अदवियात पी कर बाल सियाह हो जाएं तो यह भी ख़िज़ाब के हुक्म में है।

इरशाद : इस में कुछ हरज नहीं दवा खाने से सपेद बाल सियाह न हो जाएंगे बल्कि कुव्वत वह पैदा होगी कि आइन्दा सियाह न निकलेंगे तो कोई धोखा न दिया गया न ख़ल्कुल्लाह की तब्दीली की गई।

एक रोज़ बाद फरागे़ नमाज़े इशा लोग दस्त बोस हो रहे थे उस मज्मा में से एक साहब ने ख़िदमते बाबरकत में अर्ज़ किया हुज़ूर मैं ज़िला होशंगाबाद का रहने वाला हूं मुझे हुज़ूर की जबल पुर तशरीफ़ आवरी की रेल में ख़बर मिली लिहाज़ा डाक से सिर्फ़ दुआ के वास्ते हाज़िर हुआ हूं कि खुदा बन्दे करीम ईमान के साथ ख़ात्मा बिल-ख़ैर करे हुज़ूर ने दुआ फरमाई और इरशाद फरमाया इक्तालीस बार सुबह को *या हय्यु या क़ैयूमु ला इलाहा इल्ला अन्ता* अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ नीज़ सोते वक़्त अपने सब औराद के बाद सूरः काफिरून रोज़ाना पढ़ लिया कीजिए उसके बाद कलाम वग़ैरह कीजिए हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बाद सूरः काफिरून तिलावत कर लें कि ख़ात्मा उसी पर हो इन्शाअल्लाह तआला ख़ात्मा ईमान पर होगा और तीन बार सुबह और तीन बार शाम इस दुआ का विर्द रखें।

मुअल्लिफ़ : शहर जबल पुर एक कोहिस्तानी मक़ाम है जैसा कि उसके नाम से ज़ाहिर है म्मालिक मुतवस्सित में वाक़े है निहायत खुशनुमा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ है क़ुदरत के फ़ैयाज़ हाथों ने ऐसा दिलफरेब मक़ाम बना दिया है कि सैर से जी नहीं भरता शहर की मौज़ूनियत के अलावा वहां चन्द अजीब मक़ामात भी हैं जिनमें भीरा घाट जो शहर से तेरह मील के फासिले पर है निहायत अजीब व पुर फ़िज़ा मंज़र है दरियाए नरबदा ने मीलों पहाड़ काटा है यहां एक मक़ाम पर पानी जमा हो कर एक ऐसे दुर्रह में गिरता है जो तक़रीबन दो बांस नीचा है उस मक़ाम का नाम धुवां धार है अव्वल तो पानी का ज़ोर फिर इतनी मोटी धार हो कर गिरना और नीचे पत्थरों से टकरा-टकरा कर ऊपर उड़ना एक अजीब लुत्फ़ देता है दूर से उसके गिरने की आवाज़ मस्मूअ् होती है और ऐसा मालूम होता है कि रेल गाड़ी निहायत ज़ोर से पुल पर जा रही है पानी जो टकरा कर उड़ता है बिल्कुल धुवां मालूम होता है इसीलिए उसका नाम धुवां धार रखा है वहां के मुख़्लेसीन ने हुज़ूर पर

नूर से अजीब मक़ाम की सैर की दर्ख़्वास्त की जो बाद इसरार बिसियार मन्ज़ूर हो गई धुवां धार जाते हुए चौंसठ जो गुनी मिली (यह एक मन्दिर पहाड़ की चोटी पर है जिसकी चार दीवारी चौंसठ दर की मशहूर है मगर दरहक़ीक़त चौरासी हैं। हर दुर में एक बुत पत्थर का तरशा हुआ है हज़रत सुल्तान आलमगीर रहमतुल्लाह तआला अलैह ने फतह फरमा कर तमाम बुतों को काटा है किसी की नाम नदारद है किसी का हाथ किसी का पांव किसी को दो पारा फरमा दिया है यह मक़ाम जब उस ज़माने में कि हर जगह जाने के लिए कुशादा सड़कें तामीर हो गई हैं हुनूज़ दुशवार गुज़ार मक़ाम है और सुल्तान आलमगीर रहमतुल्लाहि अलैहि के ज़माने में न मालूम किस दरजा मुहीब होगा और एक ही मक़ाम नहीं बल्कि अक्सर इस क़िस्म के तारीख़ी मक़ामात देखे गये कि बावजूद अपने दुशवार गुज़ार होने के अगर उन में कोई बुत बग़रज़ इबादत रखा गया है तो सुल्तान आलमगीर रहमतुल्लाहि अलैहि की बुत शिकनी का असर ज़रूर लिए हुए है। उसकी सैर भी हुई हुज़ूर ने हस्बे आदत करीमा अस्नाम को देख कर।) *अशहदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू। इलाहन वाहिदन ला नअ्बुदु इल्ला इय्याहु*। पढ़ा कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस रिवायत फरमाई कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो कुफ़्र की कोई बात देखे या सुने और उस वक़्त यह दुआ पढ़े। दुनिया में जितने मुश्रिक मर्द और मुश्रिका औरतें हैं उन सब की गिनती के बराबर सवाब पाए। आला हज़रत क़िबला मद्दा ज़िल्लहुल-आली ने हाज़िरीन आस्ताना को भी यह दुआ तालीम फरमा दी है कि मन्दिरों के घन्टे और संख की आवाज़ और गिरजा वग़ैरह की इमारत को देख कर पढ़ते हैं जबल पुर में बकसरत कुफ़्फ़ार हैं और बड़े मालदार हैं क़रीब ज़माना में बाज़ हुनूद ने उन शिकस्ता बुतों की मरम्मत करा दी थी गवर्नमेंट को ख़बर हुई फिर बदस्तूर तोड़वा दिए और पत्थर पर कुन्दह करा के एक कतबा दरवाज़े पर लगा दिया है कि जो कोई इस यादगार को बदले या बिगाड़ेगा जेल ख़ाने भेजा जाएगा और पांच हज़ार रुपया जुर्माना होगा। अल्हम्दुलिल्लाह यह सुल्तान आलमगीर का खुलूसे नीयत है। *अनारुल्लाहे बुरहानहू व अदख़लहू जनानह*।

ग़रज़ वहां से फारिग़ हो कर धुवां धार की सैर की गई फिर दोपहर

को आराम फरमाने के बाद कश्ती पर उस दुर्रह की सैर फरमाई यह दुर्रह पानी ने संग मर मर के पहाड़ काट कर पैदा किया है ऊंची-ऊंची चोटी की पहाड़ों का सिलसिला दूर तक चला गया है यह रास्ता पानी ने पहाड़ों को काट कर हासिल किया है दूर तक दो रवैया संग मर मर के पहाड़ सर बफलक दीवारों की तरह चले गये हैं कई मील के सफ़र में सिर्फ़ एक जगह किनारा देखा हो, ग़ालिबन ८ गज़ चौड़ा इस हैबतनाक मंज़र का नाम बिरादर मुकर्रम मौलाना मौलवी हसनैन रज़ा ख़ां साहब ने फिल-बदिया दहान मर्ग रखा कश्ती निहायत तेज़ जा रही थी लोग आपस में मुख़्तलिफ़ बातें कर रहे थे उस पर इरशाद फ़रमाया उन पहाड़ों को कलिम-ए-शहादत पढ़कर गवाह क्यों नहीं कर लेते (फिर फरमाया) एक साहब का मामूल था जब मस्जिद तशरीफ़ लाते तो सात ढेलों को जो बाहर मस्जिद के ताक़ में रखे थे अपने कलिम-ए-शहादत का गवाह कर लिया करते इसी तरह जब वापस होते तो गवाह बना लेते बाद इंतिक़ाल मलाइका उनको जहन्नम की तरफ़ ले चले इन सातों ढेलों ने सात पहाड़ बन कर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिए और कहा हम उसके कलिम-ए-शहादत के गवाह हैं उन्होंने नजात पाई तो जब ढेले पहाड़ बन कर हाइल हो गये तो यह पहाड़ हैं। हदीस में है शाम को एक पहाड़ दूसरे से पूछता है कि क्या तेरे पास आज कोई ऐसा गुज़रा जिसने ज़िक्रे इलाही किया हो वह कहता है न यह कहता है मेरे पास तो ऐसा शख़्स गुज़रा जिस ने ज़िक्रे इलाही किया वह समझता है कि आज मुझ पर फ़ज़ीलत है।

मुअल्लिफ़ : यह सुनते ही सब लोग बआवाज़ बुलन्द कलिमा शहादत पढ़ने लगे मुसलमानों की ज़बान से कलिमा शरीफ़ की सदा बुलन्द हो कर पहाड़ों में गूंज गई।

अर्ज़ : हुज़ूर दोनों खुतबों के दर्मियान सुन्नतें पढ़ सकता है या नहीं।

इरशाद : जिस वक़्त इमाम खुतबा पढ़ने के लिए चले उसी वक़्त से कोई नमाज़ जाइज़ नहीं। *इज़ा ख़रजल-इमामु फला सलाता वला कलामा*। अल्बत्ता वह जो साहिबे तरतीब है और उसकी नमाज़ फज नहीं हुई तो वह खुतबे की हालत में भी आप ही अदा करेगा कि अगर नहीं पढ़ता है तो जुमा भी जाता है जिसकी पांच नमाज़ों से ज़ाइद क़ज़ा न हों वह साहिबे तरतीब है उसे अगर अपनी क़ज़ा नमाज़ याद है और

दूसरी नमाज़ के वक़्त में इतनी उसअत है कि क़ज़ा पढ़ कर वक़्ती पढ़े उस पर फ़र्ज़ है कि ऐसी ही करे वरना यह वक़्ती नमाज़ भी बातिल होगी।

अर्ज़ : अगर वबाई बीमारी की वजह से सब हम्साए मकान छोड़-छोड़ कर भाग गये हों और किसी हामिला औरत के अय्यामे हमल पूरे हो चुके हों तो उसका शौहर बख़्याल तन्हाई दूसरी जगह मुन्तक़िल कर सकता है या नहीं।

इरशाद : नीयत अगर उसकी यही है कोई हरज नहीं वबा से भागने पर ठिकाना जहन्नम में है वैसे अपनी ज़रूरियात के लिए जाने आने की मुमानअत नहीं।

अर्ज़ : ख़ानदाने क़ादरीया में जो शख़्स बैअ़त हो और वह मुर्तकिब हो मज़ामीर के साथ गाना सुनने का।

इरशाद : फासिक़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर अजमेर शरीफ़ में ख़्वाजा साहब के मज़ार पर औरतों को जाना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : गुनीयह में है यह न पूछो कि औरतों का मज़ारात पर जाना जाइज़ है या नहीं बल्कि यह पूछो कि उस औरत पर किस क़द्र लानत होती है अल्लाह की तरफ़ से और किस क़द्र साहिबे क़ब्र की जानिब से। जिस वक़्त वह घर से इरादा करती है लानत शुरू हो जाती है और जब तक वापस आती है मलाइका लानत करते रहते हैं सिवाए रौज़-ए-अनवर के किसी मज़ार पर जाने की इजाज़त नहीं वहां की हाज़िरी अल्बत्ता सुन्नते जलीला अज़ीमा क़रीब बवाजिबात है और कुरआने अज़ीम ने उसे मग़फ़िरत जुनूब का तिरयाक़ बताया।

अगर वह जब अपनी जानों पर जुल्म करें तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उनके लिए मुआफ़ी मांगे तो ज़रूर अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाएंगे खुद हदीस में इरशाद हुआ। *मन ज़ार क़बरी वजबत लहू शफ़ाअती*। जो मेरे मज़ारे करीम की ज़ियारत को हाज़िर हुआ उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई, दूसरी हदीस में है। *मन हज्जा व लम यज़ुरनी फ़क़द जफ़ानी*। जिसने हज किया और मेरी ज़ियारत को न आया बेशक उसने मुझ पर जफ़ा की एक तो यह अदाए वाजिब दूसरे क़बूले तौबा, तीसरे दौलते शफ़ाअत हासिल होना चौथे सरकार के साथ मआज़ल्लाह जफ़ा से

बचना यह अज़ीम अहम उमूर ऐसे हैं जिन्होंने सब सरकारी गुलामों और सरकारी कनीज़ों पर ख़ाक बोसी आस्ताने अर्श निशान लाज़िम कर दी, बख़िलाफ़ दीगर कुबूर व मज़ारात कि वहां ऐसी ताकीदें मफ़्क़ूद और एहतमाले मुफ़्सिदा मौजूद अगर अज़ीज़ों की क़ब्रें हैं बेसबरी करेगी। औलिया के मज़ार हैं तो मुहतमिल कि बेतमीज़ी से बेअदवी कर ले या जिहालत से ताज़ीम में इफरात जैसा कि मालूम व मुशाहिदा है लिहाज़ा उनके लिए तरीक़-ए-असलम एहतराज़ ही है-

अर्ज़ : किसी मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाया जाता था उसका लैम्प अगर फरोख़्त किया जाए तो उसकी क़ीमत उस शख़्स को जिस ने यह इंतज़ाम किया था दी जाएगी या मस्जिद के सर्फ़ में दाख़िल होगी और उसकी क़ीमत बाज़ार के नर्ख़ से लगाई जाएगी या असली।

इरशाद : अव्वल तो मस्जिद में किसी बदबूदार तेल के जलाने की इजाज़त नहीं न कि मिट्टी का तेल हां अगर उसकी बदबू किसी मुसालेहा से दूर कर दी जाए तो जुर्म नहीं और वह जब तक साबित व क़ाबिल इस्तेमाल है मस्जिद का माल है अगर फरोख़्त की हाजत हो तो बाज़ार के नर्ख़ पर फरोख़्त करना चाहिए।

(फिर चन्द मसाइल, मुतअल्लिक़ अहकाम मस्जिद बयान फरमाए)

(१) मस्जिद में क़दम रखो तो पहले सीधा फिर उलटा और वापसी पर उसका अक्स।

(२) मस्जिद में आते वक़्त एतकाफ की नीयत *बिस्मिल्लाहे दख़ल्तु व अलैहि तवक्कल्तु व नवैतु सुन्नतल-एतकाफ*। कर लो कि इस इबादत का भी सवाब मिलेगा और उसके लिए रोज़ा शर्त नहीं न किसी मुऐयन वक़्त तक बैठना लाज़िम जब तक ठहरोगे मोअ्तकिफ़ रहोगे जब बाहर आए ऐतकाफ़ ख़त्म हो गया और उसके सबब मस्जिद में पानी पीना या मसलन पान खाना भी जाइज़ हो जाएगा।

(३) बेग़ैर नीयते ऐतकाफ़ किसी चीज़ के खाने की इजाज़त नहीं बहुत मसाजिद में दस्तूर है कि माह रमज़ान मुबारक में लोग नमाज़ियों के लिए इफ़्तारी भेजते हैं वह बिला नीयत एतकाफ़ वहीं बेतकल्लुफ़ खाते पीते और फर्श ख़राब करते हैं यह नाजाइज़ है।

(४) मस्जिद के एक दर्जे से दूसरे दर्जे के दाख़िले के वक़्त सीधा क़दम बढ़ाया जाए हत्ता कि अगर सफ बिछी हो उस पर भी पहले

सीधा क़दम रखो और जब वहां से हटो तब भी सीधा क़दम फ़र्श मस्जिद पर रखो या ख़तीब जब मिंबर पर जाने का इरादा करे पहले सीधा क़दम रखे और जब उतरे तो सीधा क़दम उतारे।

(५) वुज़ू करने के बाद आज़ाए वुज़ू से एक छींट पानी की फ़र्श मस्जिद पर न गिरे।

(६) मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना जिस से धमक पैदा हो मना है।

(७) मस्जिद में अगर छींक आए तो कोशिश करो कि आहिस्ता आवाज़ निकले इसी तरह खांसी नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मस्जिद में ज़ोर की छींक को नापसन्द फ़रमाते इसी तरह डकार को ज़ब्त करना चाहिए और न हो तो हत्तल-इम्कान आवाज़ दबाई जाए अगरचे ग़ैर मस्जिद में हो खुसूसन मज्लिस में या किसी मुअ्ज़म के सामने कि बेतहज़ीबी है हदीस में है एक शख़्स ने दरबारे अक़्दस में डकार ली फरमाया। हम से अपनी डकार दूर रख कि दुनिया में जो ज़्यादा मुद्दत तक पेट भरे थे वह क़्यामत के दिन ज़्यादा मुद्दत तक भूखे रहेंगे और जमाही में आवाज़ निकलना तो कहीं न चाहिए अगरचे ग़ैर मस्जिद में तन्हा हो कि वह शैतान का क़हक़हा है जमाही जब आए हत्तल-इम्कान मुंह बन्द रखो मुंह खोलने से शैतान मुंह में थूक देता है यूं न रुके तो ऊपर के दांतों से नीचे का होंठ दबा लो और यूं भी न रुके तो हत्तल-इम्कान कम खोलो और उलटा हाथ उलटी तरफ से मुंह पर रख लो यूंही नमाज़ में भी मगर हालते क़्याम में सीधा हाथ उलटी तरफ़ से रखो कि उलटा हाथ रखने में दोनों हाथ अपनी मस्नून जगह से बदलेंगे और सीधा रखने में सिर्फ़ यही बज़रूरत बदला उलटा अपनी महल सुन्नत पर साबित रहा जमाही रोकने का एक मुजर्रब तरीक़ा यह है जब जमाही आने को हो फौरन तसव्वुर करे कि हज़राते अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को कभी न आई कि यह मिस्ल एहतलाम शैतान की तरफ़ से है और वह दख़ल शैतान से मासूम छींक अच्छी चीज़ है उसे बदशगूनी जानना मुश्रिकीने हिन्द का नापाक अक़ीदा है हदीस में तो यह इरशाद फरमाया। *अल-अतसह इन्दल-हदीस शाहिदुन अद्ल*। बात के वक़्त छींक आदिल गवाह है यानी कुछ बयान किया जाता हो जिस का सिद्क़ व किज़्ब मालूम नहीं और उस वक़्त किसी को छींक आए तो वह उस बात के सिद्क़ पर दलील है और यह भी आया कि दुआ के वक़्त छींक होना दलील कुबूल है लिहाज़ा छींक पर

हम्दे इलाही बजा लाना मस्नून हुआ बहुत लोग सिर्फ़ *अलहम्दु लिल्लाह* कहते हैं पूरा कलिमा कहना चाहिए। *अलहम्दुलिल्लाहि रब्बुल-आलमीन*। हदीस में है जो छींक पर अल्हम्दुलिल्लाह कहे फरिश्ता कहता है *रब्बुल-आलमीन* यानी उसका कलिमा पूरा कर देता है। और जो कहता है *अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बुल-आलमीन।* फरिश्ता कहता है *यरहमुकल्लाहु* अल्लाह तुझ पर रहम करे तो कितनी बड़ी दौलत है कि मासूम फरिश्ते की ज़बान से दुआ रहमत, यह मलाइका के लिए है आदमी पर वाजिब है कि जब छींकने वाला मुसलमान हम्दे इलाही बजा लाए अगरचे सिर्फ़ अल्हम्दुलिल्लाह कहे यह *यरहमुकल्लाह* कहे फिर उसे मुस्तहब कि उस से कहे *यग्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम* अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग्फ़िरत करे और छींक पर अफज़ल व अकमल सेग़ा हम्द का यह है। *अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल-आलमीन अला कुल्ले हालिन मा काना मिन हाले व सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरे ख़ल्क़ेही मुहम्मदिन व अह्ले बैतेही* उसे इमाम शम्सुद्दीन सख़ावी ने *अल-क़ौलुल-बदीअ़ फ़िस्सलाते अलन्नबी* अश्शफ़ीअ़ में ज़िक्र किया यहां एक हदीस ज़बाने ज़द है। *मूतिनानुन ला अज़्कुरु फ़ीहिमल-अतसह वज़्ज़बह*। दो जगह मेरा ज़िक्र न किया जाए यानी छींक और ज़िबहा अजिल्ला उलमा ने उस पर एतमाद करके उन दोनों मक़ामों को ज़िक्रे अक़्दस हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुस्तस्ना फरमा दिया मगर तहक़ीक़ यह है कि यह हदीस साबित नहीं छींक के वक़्त ज़िक्र शरीफ़ का सेग़ा यह है और ज़िबह में भी मआज़ल्लाह बतौर शिर्कत नाम लेना जाइज़ नहीं बतौर बरकत में असलन मुज़ाइक़ा नहीं मसलन *बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर व सल्लल्लाहु अला सैयदना मुहम्मदिन व आलेही* बल्कि फतावा इमाम अजल क़ाज़ी ख़ां में उसका जवाज़ भी मिसरह कि *बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर मुहम्मदुन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)* खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक दुंबे की ज़िबह में फरमाया। *बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर अल्लाहुम्मा अन मुहम्मदिन व अह्ले बैतहू*, दूसरे की ज़बह में फरमाया। *बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर अल्लाहुम्मा अम्मन लम यज़्ओ मिन उम्मती* यह उसकी तरफ़ से जिस ने मेरी उम्मत से कुरबानी न की मुसलमानो! अपने नबी रऊफ़ व रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रहमत देखो हदीस में इरशाद है। *इस्तफ़र्रा हुवा अज़्हाया कम फ़इन्नहा मतायाकुम अलस्सिराते*। फरबा व तरो ताज़ा कुरबानियां करो कि वह पुल सिरात पर तुम्हारी सवारियां

होंगी हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मालूम था कि मेरी उम्मत में करोड़ों वह होंगे जो कुरबानी से आजिज़ होंगे या उन पर वाजिब न होने के सबब कुरबानी न करेंगे हुज़ूर ने न चाहा कि सिरात पर बेसवारी के रह जाएं उनकी तरफ़ से खुद कुरबानी फरमा दी कि अगर वह अपनी जान भी कुरबान करते तो उनके दस्ते मुबारक की फ़ज़ीलत को न पहुंचते सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलेही व अस्हाबेही व बारिक व सल्लम -

मैं हमेशा से रोज़े ईद एक आला दर्जे का बेश क़ीमत मेंढा अपने सरकारे आलम मदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरफ़ से किया करता हूं और रोज़े विसाल हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहू से एक मेंढा उनकी तरफ़ से और अब उस सुन्नते करीमा के इत्तिबा से यह नीयत कर ली है कि इन्शाअल्लाहु तआला ता बक़ाए ज़िन्दगी अपने उन अह्ले सुन्नत भाईयों की तरफ़ से किया करूंगा जिन्होंने कुरबानी न की ख़्वाह गुज़र गये हों या मौजूद हों या आइन्दा आएं। हां कलाम का सिलसिला कहां पहुंचा यह जो मैंने कहा था कि कोई मुसलमान छींक कर हम्दे इलाही बजा लाए तो हर सुनने वाला यरहमुकल्लाह कहे उस क़ैद का फाइदा यह था कि अगर वहाबी या राफ़ज़ी या देवबन्दी या नेचरी या क़ादयानी या सूफ़ी बनने वाला ग़रज़ कोई कलिमा गो मुरतद छींक कर लाख बार *अल्हम्दुलिल्लाह* कहे उसे *यरहमुकल्लाह* कहना जाइज़ नहीं एक फाइदा यह भी याद रखने का है कि हदीस में है। जो छींकने वाले से पहले हम्दे इलाही बजा लाए वह कान और दांत और पेट के दर्द से महफ़ूज़ रहेगा ग़रज़ छींक महबूब चीज़ है मगर वह कि नमाज़ में आए हदीस में उसे भी शैतान की तरफ़ से शुमार फरमाया है यह सारा बयान इत्तिफ़ाक़ी छींक की निस्बत है ज़ुकाम की छींकें कोई चीज़ नहीं मगर आवाज़ पस्त करना उन में भी तहज़ीब है और मस्जिद में उसकी ज़्यादा ताकीद।

(८) मस्जिद में दुनिया की कोई बात न की जाए हां अगर कोई दीनी बात किसी से कहना हो तो क़रीब जा कर आहिस्ता से कहना चाहिए न यह कि एक साहब मस्जिद में खड़े हुए दूसरे राह गीर से जो सड़क पर खड़ा हुआ है चिल्ला कर बातें कर रहे हैं या कोई बाहर से पुकार रहा है और यह उसका जवाब बुलन्द आवाज़ से दे रहे हैं।

(९) तमस्खुर वैसे ही मम्नूअ़ और मस्जिद में सख़्त नाजाइज़ या हंसना मना है क़ब्र में तारीकी लाता है हां मौक़ा से तबस्सुम में हरज नहीं।

(१०) फ़र्शे मस्जिद पर कोई शैय फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दे मौसमे गरमा में लोग पंखा झलते-झलते फेंक देते हैं या लकड़ी छतरी वग़ैरह रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं उसकी मुमानअत है ग़रज़ मस्जिद का एहतराम हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

(११) मस्जिद में हदस मना है ज़रूरत हो तो बाहर चला जाए लिहाज़ा मोअ्तकिफ को चाहिए कि अय्यामे ऐतकाफ में थोड़ा खाए पेट हल्का रखे.कि क़ज़ाए हाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़राज रीह की हाजत न हो वह उसके लिए बाहर न जा सकेगा।

(१२) क़िब्ला की तरफ़ पांव फैलाना तो हर जगह मना है मस्जिद में किसी तरफ न फैलाए कि ख़िलाफ़े आदाब दरबार है हज़रत इब्राहीम अदहम कुद्दिसा सिर्रहू मस्जिद में तन्हा बैठे थे पांव फैला लिया गोशा मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी इब्राहीम बादशाहों के हुज़ूर में यूंही बैठते हैं मअन पांव समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्त इंतिक़ाल ही फैले।

(१३) इस्तेमाल जूता अगर पास हो मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बेअदबी है अदब व तौहीन का राज़ उर्फ़ व आदत पर है हां बिल्कुल नया जूता पहन सकता है और उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है जब कि पंजा इतना सख़्त न हो कि सज्दे में उंगलियों का पेट ज़मीन पर न बिछने दे बहरुर्राइक़ में है अमीरुल-मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम जूते के दो जोड़े रखते इस्तेमाली पहन कर दरवाज़ा मस्जिद तक जाते दूसरा ग़ैर इस्तेमाली पहन कर मस्जिद में क़दम रखते।

(१४) मस्जिद में यहां के किसी काफिर को आने देना सख़्त नाजाइज़ और मस्जिद की बेहुर्मती है फ़िक़्ह में जवाज़ है तो ज़िम्मी के लिए और यहां के काफिर ज़िम्मी नहीं कैसा शदीद ज़ुल्म है वह तुम को भंगी की तरह समझें जिस चीज़ को तुम्हारा हाथ लग जाए उसे नापाक जानें सौदा दें तो दूर से डाल दें पैसे लें तो अलग रखवालें हालांकि उनकी नजासत पर कुरआने करीम शाहिद है तुम उन नजिसों को मस्जिद में आने की इजाज़त दो कि अपने नापाक पांव तुम्हारे माथा रखने की जगह रखें अपने गन्दे बदनों से तुम्हारे रब के दरबार में आएं अल्लाह हिदायत फरमाए।

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

मुस्ताफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम
शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नव बाहारे शफ़ाअत पे लाखों सलाम
अर्श ता फर्श है जिसके ज़ेरे नगीं
उसकी क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम
दूर व नज़्दीक के सुनने वाले वह कान
काने लअ्ले करामत पे लाखों सलाम
जिसके माथे शफ़ाअत का सहरा रहा
उस जबीने सआदत पे लाखों सलाम
जिस तरफ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम
वह दहन जिसकी हर बात वही-ए-ख़ुदा
चश्म-ए-इल्म व हिक्मत पे लाखों सलाम
वह ज़बां जिसको सब कुन की कुंजी कहें
उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम
नूर के चश्मे लहराएं दरिया बहें
उंगलियों की करामत पे लाखों सलाम
कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम
खाई कुरआं ने खांके गुज़र की क़सम
उस कफ़े पा की हुर्मत पे. लाखों सलाम
जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफरोज़े साअत पे लाखों सलाम
वह दसों जिनको जन्नत का मुज़्दा मिला
उस मुबारक जमाअत पे लाखों सलाम
एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम
काश महशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम
मुझ से ख़िदमत के कुदसी कहें हाँ रज़ा
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
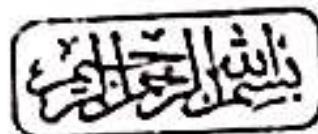
मुसलमानाने आलम के लिए एक आला तरीन
इस्लामी दस्तूरुल-अमल
यानी
मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत
रज़ि अल्लाहु अन्हु

मुसम्मा बनाम तारीख़ी

अल-मल्फ़ूज़

1338 हिजरी

हिस्सा सोम

लेखक

शहज़ादए आला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी कुद्देसे सिर्रुहू

प्रकाशक
रज़वी किताब घर
423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524
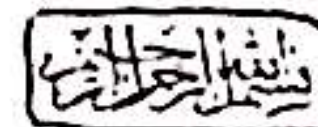
फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
खुसरुवा व अर्श पे उड़ता है फुरेरा तेरा

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल-करीम।

वाद अस्र किसी साहव ने एक मरीज़ का ज़िक्र करते हुए अर्ज़ किया कि वेहद वुख़ार है उस पर इरशाद फरमाया वेहद वुख़ार के तो यह मानी हैं कि उसकी इंतिहा ही नहीं कभी उतरेगा ही नहीं। कोस्ते तो आप खुद हैं (फिर फरमाया) सूरः मुजादला शरीफ़ जो अट्ठाईसवीं पारा की पहली सूरः है वाद अस्र तीन मरतवा पढ़ कर पानी पर दम कर के पिलाइए।

अर्ज़ : अमामा के दोनों सिरे का मदार हों तो क्या हुक्म है।

इरशाद : इसमें राजेह यह है कि अगर चार अंगुल से ज़ाइद है तो मम्नूअ़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर तांवे या लोहे की अंगूठी का क्या हुक्म है।

इरशाद : मर्द व औरत दोनों के लिए मक्रूह है।

अर्ज़ : इसकी क्या वजह है कि चांदी की अंगूठी जाइज़ रखी जाए जो उस से वेश वहा है और तांवे वग़ैरह की मक्रूह।

इरशाद : चांदी की अंगूठी तज़्कीरे आख़िरत के लिए जाइज़ रखी गई है कि सोना चांदी जन्नतियों का ज़ेवर है तांवे वग़ैरह का वहां क्या काम (फिर फरमाया) एक साहव ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए उनके हाथ में पीतल की अंगूठी थी इरशाद फरमाया, क्या हुआ कि मैं तुम्हारे हाथ में वुतों का ज़ेवर देखता हूं उन्होंने उतार कर फेंक दी दूसरे दिन लोहे की अंगूठी पहन कर हाज़िर हुए इरशाद फरमाया, क्या हुआ कि मैं तुम्हारे हाथ में दोज़ख़ियों का ज़ेवर देखता हूं उन्होंने उतार कर फेंक दी और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम किस चीज़ की अंगूठी वनाऊं। इरशाद फरमाया, चांदी की वनाव और एक मिस्क़ाल (यानी साढ़े चार माशे) पूरी न करो।

अर्श : टोपी या कपड़े वग़ैरह में सच्चा काम हो तो क्या हुक्म है।

इरशाद : अगर चार अंगुल तक है तो हरज नहीं और अगर चन्द वोटियां हैं और हर एक चार अंगुल से ज़्यादा नहीं और दूर से देखने

में फस्ल मालूम होता हो जव भी कोई हरज नहीं अगरचे जमा करने से चार अंगुल से ज़्यादा हो जाएं हाँ अगर कोई वोटी चार अंगुल से ज़्यादा है या मुग़रक़ है कि दूर से फ़स्ल न मालूम होता हो ता नाजाइज़।

अर्ज़ : अंगूठी कौन सी उंगली में पहनना चाहिए।

इरशाद : वाएं हाथ में भी आया है और दाहिने में भी लेकिन वेहतर यह हे कि दोहिन हाथ की वनस्र (वह उंगली जो छंगुलियां के पास है) में पहने।

अर्ज़ : अपना नाम अगर अंगूठी में कुन्दा हो, वैतुल-ख़ला में जा सकता है या नहीं।

इरशाद : नाम अगर ऐसा ज़्यादा मुअज़्ज़म न हो जव भी हरफ़ों की ताज़ीम तो चाहिए और अगर कोई मुतवर्रक नाम हो तो पहन कर जाना नाजाइज़ है हां जेव में रख ले तो हरज नहीं।

अर्ज़ : नगीना पर कलिमा तैयवा कुन्दह कराना कैसा है।

इरशाद : तवर्रुकन जाइज़ है और महर की हैसियत से हराम।

अर्ज़ : अल्लाह साहव कहना कैसा है।

इरशाद : जाइज़ है हदीस में है। और सरकारे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए तो कुरआने अज़ीम में साहव फरमाया गया : लेकिन अल्लाह साहव कहना इस्माईल देहलवी का मुहावरा है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यक़ीनन हमारे साहव हैं मगर नाम पाक के साथ साहव कहना आरिया व पादरियों का मुहावरा है इसलिए न चाहिए (फिर फरमाया) आरिया, पादरी, वहाविया सव एक से हैं।

अर्ज़ : मख़मल मुर्दों को जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर उस पर रेशम का रुवां विछा हुआ है तो नाजाइज़ है वरना नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर रेशम का भी यही हुक्म है कि चार अंगुल से ज़्यादा नाजाइज़।

इरशाद : हां अगर तवअ् मुस्तक़िल हो तो चार अंगुल तक जाइज़ है मसलन टोपी की गोट जाइज़ है लेकिन रामपुर जैसी टोपी कि वाज़ चार अंगुल की भी नहीं होती अगर रेशम की हों तो नाजाइज़ है कि वह खुद मुस्तक़िल हैं तवअ् मुस्तक़िल नहीं ऐसे ही तावीज़ कि वाज़ एक अंगुल के भी

नहीं होते हैं लेकिन चूंकि मुस्तक़िल हैं इसलिए अगर रेशम के हों तो नाजाइज़।

अर्ज़ : तांवे पीतल के तावीज़ों का क्या हुक्म है।

इरशाद : मर्द व औरत दोनों को मक्रूह और सोने चांदी के मर्द को हराम औरत को जाइज़।

अर्ज़ : चांदी और सोने की घड़ी रख सकता है या नहीं।

इरशाद : रख सकता है अल्वत्ता उस में वक़्त नहीं देख सकता कि हराम है। इसी तरह आरसी पहनने में औरत के लिए कोई हरज नहीं और उसमें मुंह देखना हराम। (फिर फरमाया) चांदी सोना सिर्फ़ पहनना औरत के लिए हलाल है वाक़ी तर्क़ इस्तेमाल उसके लिए भी हराम हैं हां खाना दोनों के लिए जाइज़ है वर्क़ चांदी सोने के खाएं या रेज़ह रेज़ह करके या कश्ता वना कर।

अर्ज़ : जो दरख़्त नजिस पानी से सींचा गया हो उसके फल खाना जाइज़ हैं।

इरशाद : जाइज़ है।

अर्ज़ : जिस गाय को ग़सव या सरक़ा वग़ैरह का भूसा दिया जाए उसका दूध पीना कैसा है।

इरशाद : दूध हराम न होगा हां तोरअ् एक वड़ी चीज़ है। एक वीवी इमाम अहमद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास तशरीफ़ लाईं और फरमाया मैं अपनी छत पर सीती हूं रौशनी इतनी नहीं कि सूइ में से अगर डोरा निकल जाए तो डाल सकूं वादशाह की सवारी निकलती है उसकी रौशनी में डोर डाल सकती हूं या नहीं कि वह रौशनी ज़ालिम की है उसके रुपये में हलाल व हराम सव है आप ने उन से दरयाफ़्त फरमाया तुम कौन हो फरमाया मैं वहन हूं विशर हाफ़ी (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा) की इमाम ने फरमाया वरअ् तुम्हारे घर से पैदा हुआ तुम्हारे लिए उस रौशनी में डोर डालना जाइज़ नहीं फिर फरमाया हमारे इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तिजारत करते थे हज़ारों रुपये लोगों पर क़र्ज़ थे तक़ाज़े के वास्ते दोपहर को तशरीफ़ ले जाया करते और मक़रूज़ की दीवार के साए से एलाहिदा खड़े होते कि यह क़र्ज़ से नफ़ा हासिल करने में दाख़िल न हो जाए एक शख़्स पर हुज़ूर के दस हज़ार आते थे वादा गुज़रे मुद्दत हो चुकी थी एक मरतवा आप तशरीफ़

लिए जाते थे सामने से वह आता था आपको देख कर डर के मारे एक गली में हो गया। क़िस्मत की बात कि वह दूसरी तरफ़ से सर बरता थी इमाम वहीं तशरीफ़ ले गये फरमाया क्यों तुम इधर कैसे आ गये सबब बताया कि मैं हुज़ूर का मक़रूज़ हूं वादा गुज़र गया मैं डरा कि हुज़ूर तक़ाज़ा फरमाएंगे और मेरे पास इस वक़्त मौजूद नहीं इसलिए मैं इस तरफ आ गया फरमाया दस हज़ार भी ऐसी चीज़ हैं कि किसी मुसलमान का कल्ब परेशान किया जाए मैंने मुआफ किए।

अर्ज़ : हुज़ूर बुज़ुर्गाने दीन के एरास में मज़ामीर होते हैं जब तक मजामीर हों उस वक़्त तक न जाए और मज़ामीर के बाद कुल में शरीक होने के वास्ते जा सकता है या नहीं।

इरशाद : जा सकता है अमीरुल-मुमिनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना में जब बलवाइयों ने बल्वा किया तमाम मदीना मुनव्वरा में उनका शोर था अमीरुल-मुमिनीन के मकान को घेरे हुए थे नमाज भी वही पढ़ाते थे सवाल हुआ कि उनके पीछे नमाज़ पढ़ी जाए या नहीं इरशाद फरमाया कि वह लोग जब बुराई करें तो उन से इलाहिदा रहो और जब भलाई करें तो उनके शरीक हो।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर साहिबे सज्जादा बदमज़्हब हो।

इरशाद : अगर आप साहिबे सज्जादा के पास जाना चाहते हैं तो न जाइए और साहिबे मज़ार की ख़िदमत में हाज़िर होना चाहते हैं तो जाइए।

अर्ज़ : हुज़ूर बाज़ अहादीस में यह वाक़या आया है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को हुक्म हुआ कि जाओ हमारा एक बन्दा फ़लां पहाड़ पर है उस से इल्म हासिल करो यह वाक़या तौरेत मुक़द्दस से पहले का है या बाद का।

इरशाद : तौरेत मुक़द्दस से बहुत पेशतर (मेरे ख़्याल में पेश्तर की जगह बाद होना चाहिए) जैसा कि सही बुख़ारी शरीफ़ की हदीस *इन्नकुम अला इल्मुन अल्लमकुम अल्लाहु ला आमल*। से उसकी तरफ़ इशारा है नीज़ क़ासिम मूसा ख़तीबन फ़ी बनी इस्राईल भी उसी को चाहता है।(१२) का वाक़या है।

अर्ज़ : अगर उसको तौरेत मुक़द्दस से बाद का माना जाए तो यह एतराज़ लाज़िम आएगा कि तौरेत के मुतअल्लिक़ अल्लाह तआला

फरमाता है। *सुम्मा आतैना मूसल-किताबा तमामन अला अल्लज़ी अहसना व तफ़्सीला लेकुल्ले शैइन व हुदा व रहमतुन लेक़ौमिन यूमिनून*। जब तौरेत तफ़्सील कुल शय है तो दूसरे से इल्म हासिल करने की क्या ज़रूरत।

इरशाद : कोई एतराज़ नहीं तौरेत का तफ़्सील कुल्लु शैइन होना फ़रमाया है इस तफ़्सील का बाक़ी रहना कहीं नहीं फरमाया मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब तौरेत लेकर आए यहां देखा कि लोग गव साला के आगे सज्दा करते और उसकी परस्तिश करते हैं आपकी शान जलाल की यह हालत थी कि जिस वक़्त जलाल तारी होता आध गज़ आग का शोअ्ला कुलाह मुबारक से ऊपर को उठता जलाल में आ कर अल्वाह तौरेत फेंक दें वह टूट गई इमाम मुजाहिद तिल्मीज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा का क़ौल है वह फरमाते हैं कि *तफ़्सील कुल्लु शैइन* उड़ गई सिर्फ़ अहकाम बाक़ी रह गये।

अर्ज़ : हुज़ूर अरवाह तौरेत तो कलामे खुदा है उनके साथ यह बर्ताव किस तरह किया।

इरशाद : हज़रत हारून अलैहिस्सलातु वस्सलाम नबी हैं और आपके बड़े भाई और नबी की ताज़ीम फ़र्ज़ है उनके साथ तो आपने जलाल के वक़्त यह किया *अख़ज़ा रासा अख़ीहे यज्रुहू इलैहि*। उनका सर और दाढ़ी पकड़ कर खींचने लगे जाने दीजिए यह तो आपके बड़े भाई थे शबे मेअ्राज हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुलाहिज़ा फरमाया कि कोई शख़्स रब अज़्ज़ा व जल्ला के हुज़ूर बुलन्द आवाज़ से कलाम कर रहा है इरशाद फरमाया ऐ जिब्रील यह कौन शख़्स हैं अर्ज़ की मूसा हैं फरमाया किया अपने रब पर तेज़ी करते हैं अर्ज़ किया : *क़द अरफ़ा रब्बहू हद्दतहू* उनका रब जानता है कि उनका मिजाज़ तेज़ है ख़ैर उसको भी जाने दीजिए वह जो रब अज़्ज़ा व जल्ला से अर्ज़ की है *इन हिया इला फतन्तका* यह सब तेरे ही फ़ित्ने हैं यहां क्या कहिएगा उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा जो अल्फ़ाज़ शाने जलाल में इरशाद कर गई हैं दूसरा कहेगा तो गर्दन मारी जाए अन्धों ने सिर्फ़ शाने अब्दीयत देखी शाने महबूबियत से आंखें फूट गईं।

अर्ज़ : हुज़ूर यह इमाम मुजाहिद का क़ौल है और वह भी ख़बरे आहाद है।

इरशाद : तो इससे आपका मतलब यह है कि उनका क़ौल न माना जाए कुरआने अज़ीम एक हरफ़ नहीं चल सकता ता वक़्ते कि अहादीस और अइम्मा के क़ौल की न माना जाए।

अर्ज़ : अइम्मा से मुराद अइम्मा तफ़्सीर हैं।

इरशाद : हाँ।

अर्ज़ : बहुत मक़ामात पर अइम्म-ए-तफ़्सीर का क़ौल नहीं माना जाता है मसलन क़ाज़ी बैज़ावी ने या और अइम्मा मसलन ख़ाज़िन वग़ैरह ने *तिबयानन लेकुल्ले शैइन* को मुख़्सस बताया है।

इरशाद : क़ाज़ी बैज़ावी या ख़ाज़िन वग़ैरह अम्मा तफ़्सीर नहीं किसी फन का इमाम होना और बात है और उस फन में किताब लिख देना और बात अइम्मा तफ़्सीर सहाबा हैं और ताबईने इज़ाम ताबईन में भी इज़ाम की तख़्सीस है (फिर असल जवाब की तरफ़ तवज्जोह फरमाई और फरमाया) कुरआने अज़ीम में यह फरमाया है कि तौरेत में हम ने *तफ़्सील कुल्लु शैइन* नाज़िल की थी यह नहीं फरमाया कि वह तफ़्सील हमेशा बाक़ी रखी जाएगी तो अब उसका *तफ़्सील कुल्लु शैइन* होना तो क़तई मगर उसका *तफ़्सील कुल्लु शैइन* रहना यह ज़न्नी और ख़बरे आहाद भी मुफ़ीद ज़न और ज़न-ज़न का मुक़ाबिल हो सकता है जब ख़बरे आहाद से साबित हो गया कि तौरेत में *तफ़्सील कुल्लु शैइन* न रही तो मान लिया गया।

अर्ज़ : हुज़ूर इसी तरह कुरआन को फरमाया गया है *तिबयानन लेकुल्ले शैइन* यह नहीं फ़रमाया गया कि *तिबयानन लेकुल्ले शैइन* बाक़ी रहेगा तो अब किस तरह साबित होगा।

इरशाद : बिलाशुबह अगर इसके ख़िलाफ़ किसी हदीस में आया हो कि *तिबयानन लेकुल्ले शैइन* बाक़ी न रहा तो मान लिया जाएगा लेकिन ख़िलाफ़ आना तो दरकनार अहादीसे सहीहा में उसकी ताईद ही आई है अल्बत्ता मुतलक़न इल्मे ग़ैब का मुंकिर काफिर है कि वह सिरे से ही नुबुव्वत का मुंकिर है नुबुव्वत कहते हैं इल्मे ग़ैब देने को। इमाम क़ाज़ी अयाज़ मालकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह शिफ़ा शरीफ़ में फरमाते हैं। *अन्नुबुव्वतु हियल-इत्तिला अलल-ग़ैबे*। इमाम इब्ने हजर मक्की मदख़ल में और इमाम क़स्तलानी *मवाहिबे लदुनिया* में फरमाते हैं : नुबुव्वत ग़ैब पर मुत्तला होने का नाम है।

अर्ज़ : अगर कोई शख़्स यह कहे कि हम ग़ैब की तारीफ़ करते हैं वह इल्म जो बिला वास्ता हो और उस मानी से इल्मे ग़ैब का मुतलक़न मुंकिर हो तो उस पर क्या हुक्म है।

इरशाद : इल्म बिला वास्ता के साथ ग़ैब को ख़ास करना कुरआन के ख़िलाफ़ है कुरआन फरमाता है *वमा हुआ अलल-ग़ैबे बेज़नीन।* क्या नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बिला वास्ता के बताने पर बख़ील नहीं हैं यह तो कुफ़्र हो जाएगा जो शख़्स ज़र्रह बराबर ग़ैरे ख़ुदा के लिए इल्म बिला वास्ता माने काफिर है अगर कोई इंसान के मानी पागल के गढ़ ले तो वह ख़ुद पागल है अल्लाह फरमाता है। *आलेमुल-ग़ैबे फला युज़्हिरु अला ग़ैबेही अहदा। इल्ला मनिर्तज़ा मिन रसूलिन* क्या बिला वास्ता अपने रसूलों को इल्म देता है।

अर्ज़ : अल्लाह तआला फरमाता है। व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून। कुरआन शरीफ़ की हिफ़ाज़त का वादा फरमाया गया जब उसके अल्फ़ाज़ महफ़ूज़ हुए तो मआनी की हिफ़ाज़त ज़रूर कि मआनी अल्फ़ाज़ से मुन्फ़क नहीं हो सकते और मआनी कुरआने अज़ीम की सिफ़त *तिबयानन लेकुल्ले शैइन* है तो कुरआने अज़ीम ही से तिबयानन लेकुल्ले शैइन का दवाम साबित हो गया।

इरशाद : कुरआने अज़ीम के अल्फ़ाज़ की हिफ़ाज़त का वादा फरमाया गया अगरचे मआनी इन अल्फ़ाज़ के साथ हैं लेकिन उन मआनी का इल्म में होना क्या ज़रूर नबी कलामे इलाही के समझने में बयाने इलाही का मुहताज होता है। *सुम्मा अलैना बयानहू*। और यह मुम्किन है कि बाज़ आयात का निस्यान हुआ हो। इल्ला माशाअल्लाह।

अर्ज़ : *माशा अल्लाह* तो *मा काना वमा यकून*। में है और अल्लाह फरमाता है। *सनुक़रेओका फला तन्सा। इल्ला माशा अल्लाह*। हम तुम को पढ़ाएंगे फिर तुम न भूलोगे मगर जो अल्लाह चाहे उस से लाज़िम आता है कि *माशा अल्लाह* का इल्म हुज़ूर को न रहा हालांकि वह *माकाना वमा यकून* में से है।

इरशाद : *माशा अल्लाह* किस की निस्बत फरमाया गया है आयाते इलाही की निस्बत कलाम है और आयाते इलाही सिफ़ते इलाही है और वह क़दीम है *मा काना वमा यकून।* में दाख़िल नहीं। *मा काना वमा यकून* तो उन हवादिस का नाम है जो अव्वल रोज़ से आख़िर रोज़ तक

हुए और होंगे।

अर्ज़ : समदन के साथ निकाह कर सकता है।

इरशाद : हां।

अर्ज़ : ख़ूर्जी जो घोड़े की ज़ीन में लटकी रहती है उस में कुरआन शरीफ़ रखा हो ऐसी हालत में सवार हो सकता है।

इरशाद : अगर गले में नहीं लटका सकता है और ख़ूर्जी में रखने पर मजबूर महज़ है तो जाइज़ है।

अर्ज़ : बअ्द तुलूअ् फज्र के सुन्नतुल-फज्र में तहियतुल-वुज़ू और तहियतुल-मस्जिद की नीयत जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : नहीं कि बाद तुलूअ् फज्र सिवाए सुन्नते फज्र के और कोई नफ़्ल पढ़ना नाजाइज़ है हां बेग़ैर नीयत के तहयतुल-वुज़ू व तहियतुल-मस्जिद सुन्नते फज्र ही से अदा हो जाएंगी।

अर्ज़ : हुज़ूर १३ साल में मेरी अहलिया के चार लड़के और दो लड़कियां पैदा हुए जिनमें से पांच औलादें इंतिक़ाल कर गईं किसी की उम्र ३ साल की किसी की दो साल किसी की एक साल हुई और सब को एक ही बीमारी लाहिक़ हुई यानी पसली और उम्मुस्सिबयान फिल-हाल सिर्फ़ एक लड़की ३ साला हयात है हुज़ूर दुआ फरमाएं और इन अमराज के वास्ते कोई अमल जो मुनासिब हो इरशाद फरमाएं।

इरशाद : मौला तआला अपनी रहमत फरमाए अब जो हमल हो उसे दो महीने न गुज़रने पाएं कि यहां इत्तिला दीजिए और ज़ौजा और उनकी वालिदा का नाम भी मालूम होना चाहिए उस वक़्त से इन्शाअल्लाह तआला बन्दोबस्त किया जाए अपने घर में पाबन्दी नमाज़ की ताकीद शदीद रखिए और पांचों नमाज़ों के बाद आयतुल-कुर्सी एक-एक बार ज़रूर पढ़ा करें और अलावा नमाज़ों के एक बार सुबह सूरज निकलने से पहले और शाम को सूरज डूबने से पहले और सोते वक़्त जिन दिनों में औरतों को नमाज़ का हुक्म नहीं उन में भी उन तीन वक़्त की आयतुल-कुर्सी न छूटे मगर उन दिनों में आयते कुरआन मजीद की नीयत से न पढ़ें बल्कि उस नीयत से कि अल्लाह तआला की तारीफ़ करते हैं। और जिन दिनों में नमाज़ का हुक्म है उन में उसका भी इल्तिज़ाम रखें कि तीनों कुल ३-३ बार सुबह व शाम और सोते वक़्त पढ़ें सुबह से मुराद यह है कि आधी रात ढलने से सूरज निकलने तक और

शाम से मुराद यह है कि दोपहर ढले से गुरूब आफताब तक और सोते वक़्त उस तौर पर पढ़ें कि चित लेट कर दोनों हाथ दुआ की तरह फैला कर एक-एक बार तीनों कुल पढ़ कर हथेलियों पर दम करके सारा मुंह और सीने और पेट और पांव आगे और पीछे जहां तक हाथ पहुंच सके सारे बदन पर हाथ फेरें दोबारा ऐसे ही सेह बारह ऐसे ही और जिन दिनों में औरतों को नमाज़ का हुक्म नहीं उन में आप इसी तरह पढ़ कर तीन बार उनके बदन पर हाथ फेर दिया कीजिए बड़ा चिराग़ यहां एक साहब बनाते हैं वह बनवा लीजिए और अय्यामे हमल में और बच्चा पैदा होने के बाद जिस तरकीब से बताया जाए रौशन कीजिए और यह लड़की जो मौजूद है उसको अगर नासाज़ी लाहक़ हो तो उसके लिए भी रौशन कीजिए वह चिराग़ बेइज़्नेही तआला सहर व आसेब व मरज़ तीनों के दफ़ा में मुजर्रब है बच्चा जो पैदा हो पैदा होते ही मअन सब से पहले उसके कानों में ७ बार अज़ानें दी जाएं ४ बार अज़ान सीधे कान में और तीन बार तक्बीर बाएं में उसमें हरगिज़ देर न की जाए देर करने में शैतान का दख़ल हो जाता है। चालीस रोज़ तक बच्चा को किसी नाज से तौल कर ख़ैरात किया जाए फिर साल भर तक हर महीने पर दो बरस की उम्र तक हर दो महीने पर तीसरे साल हर तीन महीने पर चौथे साल हर चार महीने पर पांचवें साल भी चार महीने पर छठे साल हर छेः महीने पर सातवें साल से सालाना। यह तौल उस लड़की के लिए भी कीजिए। चौथे साल में है तो हर चार महीने पर तौलिए मकान में रात दिन तक मग़्रिब के वक़्त ७-७ बार अज़ान बआवाज़ बुलन्द कही जाए और तीन शब किसी सही ख़्वां से पूरी सूरः बक़रा ऐसी आवाज़ से तिलावत कराई जाए कि मकान के हर गोशा में पहुंचे शब को मकान का दरवाज़ा बिस्मिल्लाह कह कर बन्द किया जाए और सुबह को बिस्मिल्लाह कहर कर खोला जाए जब पाख़ाना को जाएं उसके दरवाज़ा से बाहर *बिस्मिल्लाहि अऊज़ुबिल्लाहि मिनल-ख़ुबुसे वल-ख़बाइस* पढ़ कर बायां पैर पहले रख कर जाएं और जब निकलें तो दाहिना पांव पहले निकालें और अल्हम्दुलिल्लाह कहें और कपड़े बदलने या नहाने के लिए जब उतारें पहले बिस्मिल्लाह कह लें और कुर्बत के वक़्त निहायत एहतमाम के साथ याद रखिए कि शुरू फ़ेअ्ल के वक़्त आप और वह दोनों बिस्मिल्लाह कहें इन बातों का इल्तिज़ाम रहेगा तो इन्शाअल्लाह

तआला कोई ख़लल न होने पाएगा।

अर्ज़ : हुज़ूर बड़ा चिराग़ रौशन करने की क्या तरकीब है।

इरशाद : (१) यह चिराग़ मुअल्लक़ रौशन किया जाएगा किसी छींके या क़िन्दील में (२) रौशन करते वक़्त लव के पास सोने का छल्ला या अंगूठी या बाली डाल दिया करें चिल्ला ख़त्म होने पर वह मसाकीन मुस्लेमीन पर तसद्दुक़ करें (३) चिराग़ बावुज़ू नमाज़ी आदमी रौशन करे अगरचे औरत हो और मर्द बेहतर है। (४) मरज़ हल्का हो तो चिराग़ रोज़ डेढ़ घन्टा रौशन हो और सख़्त हो तो दो घन्टे तीन घन्टे और बहुत सख़्त हो तो शब भर (५) मरीज़ उसकी रौशनी में बैठे ख़्वाह लेटे मगर मुंह उसी की तरफ़ रखे और अक्सर औक़ात उसकी लौ को देखे। (६) जितनी देर तक जलाना मन्ज़ूर हो उसी हिसाब से आला दरजा का फलेल उस में डालें और उसे डाल कर चिराग़ के सब तरफ़ फिरा लें कि तमाम नुक़ूश पर दौरा कर आए फिर झुका कर रख दें और जिस तरफ़ बत्ती का निशान है बिस्मिल्लाह कह कर उस तरफ़ रौशन करें। (७) अगर मरज़ निहायत शदीद हो तो चारों गोशों में चार बत्तियां जलाएं और चिराग़ सीधा रखें और हर लौ के पास सूना रखें। (८) जिस मकान में यह चिराग़ रौशन हो वहां न कोई तस्वीर हो न कुत्ता आने पाए न सिवा मरीज़ा के कोई औरत हैज़ या निफ़ास वाली या कोई नापाक मर्द या औरत। (९) उस जगह बैठ कर सब ज़िक्रे इलाही व दरूद शरीफ़ में मशग़ूल रहें जो बात ज़रूरत की हो बक़द्र ज़रूरत आहिस्तगी से कह दें चपक़लश न करें न कोई लग्व व बेहूदा बात वहां होने पाए। (१०) जितनी औरतें वहां बैठें या आएं जाएं सब संगीन कपड़े पहने हों नमाज़ की तरह सिवा मुंह की टिकुली या हथेलियों के सर का कोई बाल या गले या कलाई या बाज़ू या पेट या पिंडली का कोई हिस्सा असलन न खुलने पाए। (११) चिराग़ पहले दिन जिस वक़्त रौशन हो वह घन्टा मिनट याद रखें कि किसी दिन उस से ज़्यादा देर रौशन करने में न होने पाए उसके मुअक्किल अपनी हाज़िरी का वही वक़्त मुक़र्रर कर लेते हैं जिस वक़्त पहले दिन रौशन हुआ था फिर अगर किसी दिन आए और चिराग़ उस वक़्त रौशन न पाया तो उनको तक्लीफ़ होती है लिहाज़ा चाहिए कि पहले दिन क़स्दन कुछ देर करके रौशन करें कि अगर किसी दिन इत्तिफ़ाक़िया देर हो जाए तो उस वक़्त से ज़्यादा न होने पाए मगर

पहले दिन इतनी देर भी न हो करें कि किसी दिन चिराग़ रौशन हो कर उस वक़्त के आने से पहले ख़त्म हो जाए। (१२) जब चिराग़ बढ़ाने का वक़्त आए कोई बावुज़ू शख़्स बढ़ाए और उस वक़्त यह कहे अस्सलामु अलैकुम इरजेऊ माजूरीन। (१३) रोज़ नया फलेल डालें कल का बचा हुआ आज मरीज़ के सर और बदन पर मल दें। (१४) जिस के लिए चिराग़ रौशन हुआ हो उसके सिवा और मरीज़ भी बनीयत शिफ़ा उन शराइत की पाबन्दी से बैठ सकते हैं।

अर्ज़ : एक साहब की लड़की बिला नाग़ा कुछ अरसा से सूरः मुज़म्मिल शरीफ़ पढ़ा करती थीं बल्कि क़रीब निस्फ़ के हिफ़्ज़ भी थी अब उन साहबज़ादी का दिमाग़ ख़राब हो गया है।

इरशाद : लाहौल शरीफ़ ६० बार अल्हम्दु शरीफ़ और आयतुल-कुर्सी शरीफ़ एक-एक बार तीनों कुल तीन बार पानी पर दम करके पिलाइए।

अर्ज़ : क्या आयाते कुरआनी भी यह असर रखती हैं।

इरशाद : जो कुयूदे आमिल बताते हैं उनकी पाबन्दी न करने से ऐसा होता है।

अर्ज : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का कम्बल ओढ़ना साबित है या नहीं।

इरशाद : हां हदीस शरीफ़ से साबित है।

अर्ज़ : पैराहन अक़्दस में क्या क्या कपड़े हैं।

इरशाद : (१) रिदा (२) तह बन्द (३) अमामा यह तो आम तौर से होता और कभी क़मीस (४) और टोपी (५) पाजामा (६) एक बार ख़रीदना लिखा है पहनने की रिवायत नहीं औरतें भी तहबन्द ही बांधती थीं एक बार हुज़ूर तशरीफ़ ले जाते थे राह में एक बीबी का पांव फिसला रूए मुबारक उस तरफ़ से फेर लिया सहाबा ने अर्ज़ क्या हुज़ूर वह पाजामा पहने हुए है इरशाद फ़रमाया *अल्लाहुम्मा इग़्फ़िर लिल-मतसरूलात*। ऐ अल्लाह बख़्श दे उन औरतों को जो पाजामा पहनती हैं और ग़ालियन पाजामा तंग था इस वास्ते कि अगर ढीला होता तो उस में भी तहबन्द की तरह खुल जाने का एहतमाल हो सकता था।

अर्ज़ : मोमबत्ती जिसमें चर्बी पड़ती है मस्जिद में जलाना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर मुसलमान की बनाई हुई है तो जाइज़ है वरना

मस्जिद ही में नहीं वैसे भी जलाना न चाहिए।

अर्ज़ : यह जो जर्मन वग़ैरह ग़ैर विलायतों से आती है उसका क्या हुक्म है।

इरशाद : उनका भी वही हुक्म है इस वास्ते की चर्बी और गोश्त का हुक्म है अगरचे गाय हो या बकरी किसी मुसलमान से कोई हिन्दू या नसरानी ले गया और थोड़ी देर में वापस लाए और कहे कि यह वही चर्बी है जो अभी-अभी तुम से ले गया हूं उसका लेना हराम है। *अन्नसरानियह ला ज़बीहता लहू* बख़िलाफ़ यहूदियों के कि उनके यहां अब ज़बह करने का एहतमाम है फतावा क़ाज़ी ख़ां में है। *अल-यहूदिया यज़्बहु औ याकुलु ज़बीहतुल-मुस्लिमे* नसरानी व यहूदी, काफिर दोनों हैं कि एक महबूबाने खुदा की मुहब्बत में और दूसरे अदावत में काफिर हुए कुरआने अज़ीम में यहूदियों को *मग़ज़ूबे अलैहिम* और नसारा को ज़ाल्लीन फ़रमाया यही वजह है कि आज रूए ज़मीन पर कोई यहूदी एक गांव का भी हाकिम नहीं बख़िलाफ़ नसारा के कि उनकी सलतनत ज़ाहिर है और वैऐनेही यही मिसाल रवाफ़िज़ व वहाबिया की है कि रवाफ़िज़ मिस्ल नसारा के मुहब्बत में काफिर हुए और वहाबिया मिस्ल यहूद के अदावत में।

अर्ज़ : इमाम मुसाफ़िर के पीछे मुक़्तदी मुक़ीम को एक रकअत मिली तो बक़िया नमाज़ में क़िरअत किस तरह करे।

इरशाद : पहले दो रकअत मिस्ल लाहिक़ के बेग़ैर क़िरअत बक़द्र सूरः फातिहा क़्याम करके क़अ्दा करे और पिछली रकअत में क़िरअत करे।

अर्ज़ : जमाअते सानिया जिस वक़्त शुरू हो सुन्नते जुहर उस वक़्त पढ़ना जाइज़ है या नहीं या फज्र की सुन्नत जमाअते सानिया के क़अ्दा न मिलने की वजह से छोड़ दी जाएं या क्या।

इरशाद : जमाअते सानिया फक़त जाइज़ है उसके लिए सुन्नतें न छोड़े असल नमाज़ जमाअते औला है जिसके लिए हदीस में इरशाद है कि अगर मकानों में बच्चे और औरतें न होतीं तो जो लोग जमाअत में शरीक नहीं होते हैं उनके मकानों को जल्वा देता एक मरतबा मौलवी अब्दुल-क़ादिर साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते थे कि मारहरा मुतहहरा में इत्तिफ़ाक़न मुझे नमाज़ में देर हो गई जब मैं मस्जिद की सीढ़ियों पर पहुंचा हज़रत मियां साहब क़िबला नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ ला रहे थे इरशाद फरमाया अब्दुल-क़ादिर नमाज़ तो हो गई तो असल

नमाज़ जमाअते ऊला ही है।

अर्ज़ : नमाज़े जनाज़ा में तो तीन सफ़ करने की फ़ज़ीलत है उसकी तरकीब दुर्रे मुख़्तार व कबीरी में यह लिखी है कि पहली सफ में तीन दूसरी में दो और तीसरी में एक आदमी खड़ा हो उसकी क्या वजह है कि हर सफ़ में दो दो खड़े हो सकते थे।

इरशाद : अक़ल्ल दरजा सफ कामिल का तीन आदमी हैं इस वास्ते सफ़ अव्वल की तक्मील कर दी गई और उसकी दलील यह है कि इमाम के बराबर दो आदमियों का खड़ा होना मकरूहे तंज़ीही है और तीन का मकरूहे तहरीमी। क्योंकि सफ़ कामिल हो गई और इस सूरत में इमाम का सफ़ में खड़ा होना हो गया और पंज वक़्ता नमाज़ में भी बाज़ सूरतों में तन्हा सफ़ में खड़ा होना नाजाइज़ नहीं है मसलन दो मर्द और एक औरत है तो औरत पिछली सफ में तन्हा खड़ी होगी।

अर्ज़ : अय्यामे वबा में बाज़ जगह दस्तूर है कि बकरे के दाहिने कान में सूरः यासीन शरीफ़ और बाएं में सूरः मुज़म्मिल शरीफ़ पढ़ कर दम करते हैं और शहर के इर्द गिर्द फिरा कर चौराहे पर ज़िबह करते हैं और उसकी खाल व सिरी ज़मीन में दफ़न कर देते हैं यह कैसा है।

इरशाद : खाल दफ़न करना हराम है कि इज़ाअत माल है और चौराहे पर ले जा कर ज़िबह करना जिहालत और बेकार बात है अल्लाह के नाम पर ज़िबह करके मसाकीन को तक़्सीम कर दे।

अर्ज़ : क्या खुतब-ए-निकाह भी खड़े हो कर क़िब्ला रू पढ़ना चाहिए।

इरशाद : हां खड़े हो कर पढ़ना अफ़्ज़ल है और क़िबला रूह होना कुछ ज़रूरी नहीं सामेईन की तरफ़ मुंह होना चाहिए खुत्ब-ए-जुमा भी तो क़िबला की जानिब पुश्त करके पढ़ा जाना मशरूअ् है।

अर्ज़ : मुअल्लिम की अगर तन्ख़्वाह मुक़र्रर न हो तो बच्चों से काम ले सकता है या नहीं।

इरशाद : अगर वालिदैन को नागवार न हो और बच्चा को तक्लीफ़ न हो तो हरज नहीं तन्ख़्वाह मुक़र्रर हो या न हो।

अर्ज़ : मीलाद ख़्वां के साथ अगर अमर्द शामिल हों या कैसा है।

इरशाद : नहीं चाहिए।

अर्ज़ : नोशा के उपटन मलना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : खुशबू है जाइज़ है।

अर्ज़ : अगर बीसल पुर से बदायूं जाना है और रास्ते में बरैली उतरा तो कस्र करे गाया नहीं।

इरशाद : इस सूरत में क़स्र नहीं कि सफर के दो टुकड़े हो गये।

अर्ज़ : एक शख़्स बरैली का साकिन मुरादाबाद में दुकान खोले और हमेशा वहां तिजारत का इरादा हो और कभी-कभी अपने अह्लो अयाल को भी ले जाया करे इस सूरत में मुरादाबाद वतन असली होगा या वतन इक़ामत।

इरशाद : वतन असली न होगा हाँ अगर वहां निकाह कर ले तो हो जाएगा।

अर्ज़ : अगर वहाबी निकाह पढ़ा जाए तो हो जाएगा या नहीं।

इरशाद : निकाह तो हो ही जाएगा इस वास्ते कि निकाह नाम बाहमी ईजाब व कुबूल का है अगरचे बामन पढ़ा दे चूंकि वहाबी से पढ़वाने में उसकी ताज़ीम होती है जो हराम है लिहाज़ा एहतराज़ लाज़िम है।

अर्ज़ : वलीमा निकाह की सुन्नत है या ज़ुफ़ाफ़ की और नाबालिग़ का निकाह हो तो वलीमा कब और किस दिन करे।

इरशाद : वलीमा ज़ुफ़ाफ़ की सुन्नत है और नाबालिग़ भी बादे ज़ुफ़ाफ़ के वलीमा करे और वलीमा शबे ज़ुफ़ाफ़ की सुबह को करे।

अर्ज़ : निकाह के बाद छोहारे लुटाने का जो रिवाज है यह कहीं साबित है या नहीं।

इरशाद : हदीस शरीफ़ में लूटने का हुक्म है और लुटाने में भी कोई हरज नहीं और यह हदीस दारु कुतनी व बैहक़ी व तहतावी से मरवी है।

अर्ज़ : ख़िज़ाब सियाह अगर वस्मा से हो।

इरशाद : वस्मा से हो या तस्मा से सियाह ख़िज़ाब हराम है।

अर्ज़ : कोई सूरत भी उसके जवाज़ की है।

इरशाद : हां जिहाद की हालत में जाइज़ है।

अर्ज़ : अगर जवान औरत से मर्द ज़ईफ़ निकाह करना चाहे तो ख़िज़ाब सियाह कर सकता है या नहीं।

इरशाद : बूढ़ा बैल सींग काटने से बछड़ा नहीं हो सकता।

अर्ज़ : बाज़ कुतुब में है कि वक़्ते शहादत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के वस्मा का ख़िज़ाब था।

इरशाद : हज़रत इमाम हसन व हुसैन व अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ख़िज़ाब वस्मा का किया करते थे कि यह सब हज़रात मुजाहिदीन थे।

अर्ज़ : नमाज़े क़स्र न थी और क़स्र पढ़ी तो एआदा होगा या नहीं।

इरशाद : ज़रूर एआदा होगा कि सिरे से नमाज़ ही न हुई।

अर्ज़ : एक गांव में मस्जिद बिल्कुल वीराना में है उसके मुत्तसिल एक कुम्हार का मकान है मस्जिद मज़्कूर में नमाज़ भी नहीं होती है बल्कि उसके इर्द गिर्द लोग कूड़ा वग़ैरह डालते हैं वह कुम्हार ज़मीन मस्जिद को ख़रीदना चाहता है आया उसकी बैअ़ हो सकती है या नहीं।

इरशाद : हराम है अगरचे ज़मीन के बराबर सोना दे मस्जिद के लिए जो ऐसा करें उनकी निस्बत कुरआने अज़ीम फरमाता है। *लहुम फ़िद्दुनिया ख़िज़्युन व लहुम फिल-आख़िरते अज़ाबुन अज़ीम* दुनिया में उनके लिए रुसवाई है और आख़िरत में बड़ा अज़ाब।

अर्ज़ : नमाज़े जनाज़ा की तअ़जील से क्या मुराद है।

इरशाद : गुस्ल व कफ़न बग़ैर तो नमाज़ पढ़ सकते ही नहीं हां उसके बाद ताख़ीर न करे बाज़ लोग शबे जुमा में जिसका इंतिक़ाल हुआ मैयत को तानमाज़े जुमा रखे रहते हैं कि आदमियों की नमाज़ में कसरत हो जाए यह नाजाइज़ है और उसकी तस्रीह कुतुबे फ़िक़्ह में मौजूद है अगर क़ब्र तैयार होने से पेश्तर किसी उज़्र से ताख़ीर की जाए तो हरज नहीं।

अर्ज़ : मुर्दा के साथ मिठाई क़ब्रिस्तान में च्यूंटियों के डालने के लिए ले जाना कैसा है।

इरशाद : साथ ले जाना रोटी का जिस तरह उलमाए किराम ने मना फरमाया है वैसे ही मिठाई है और च्यूंटियों को इस नीयत से डालना कि मैयत को तक्लीफ़ न पहुंचाएं यह महज़ जिहालत है और यह नीयत न भी हो तो बजाए उसके मसाकीन सालेहीन पर तक़्सीम करना बेहतर है (फिर फरमाया) मकान पर जिस क़द्र चाहें ख़ैरात करें क़ब्रिस्तान में अक्सर देखा गया है कि अनाज तक़्सीम होते वक़्त बच्चे और औरतें वग़ैरह गुल मचाते और मुसलमानों की क़ब्रों पर दौड़ते फिरते हैं।

अर्ज़ : मामूली छींट जिसके पाजामे औरतों के होते हैं खुश दामन का पाजामा ऐसी छींट का हो उस पर से उसके जिस्म को हाथ वशहवत लगाए तो क्या हुक्म है।

इरशाद : अगर ऐसा कपड़ा है कि हरारत जिस्म की न मालूम हो जब तो नहीं वरना हुर्मत मुसाहिरत सावित हो जाएगी।

अर्ज़ : यह जो मौलूद शरीफ़ की वाज़ किताव में लिखा है कि जिस रात आमना ख़ातून हामला हुई दो सौ औरतें रश्क हसद से मर गईं यह सही है या नहीं।

इरशाद : उसकी सेहत मालूम नहीं अल्वत्ता चन्द औरतों का वतमन्नाए नूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मर जाना सावित है।

अर्ज़ : इस्क़ात की हालत में चन्द सेर गन्दुम और कुरआने अज़ीम दिया जाता है उस में कुल कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा या नहीं।

इरशाद : जिस क़द्र हदिया कुरआन अज़ीम का वाज़ार में है उतने का कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा।

अर्ज़ : समन के अन्दर आक़ेदीन मुख़्तार हैं जितना चाहें तय कर लें।

इरशाद : यहां कि सदक़ा दिया जा रहा है वही वाज़ार के भाव का एतबार होगा।

अर्ज़ : खुवता के वक़्त असा हाथ में लेना सुन्नत है या क्या?

इरशाद : इख़्तिलाफ़ है उलमा का वाज़ कहते हैं कि सुन्नत है और वाज़ मक्रूह बताते हैं।

अर्ज़ : सुन्नत व मक्रूह में तआरुज़ हो तो क्या करना चाहिए।

इरशाद : तर्के औला है जामे-उर्रुमूज़ में मुहीत से नक़ल किया है कि सुन्नत है और मुहीत ही में है कि मक्रूह है उसी की हिन्दीया में नक़ल किया है।

अर्ज़ : देहात में जुमा न पढ़ने के मसाइल व रसाइल उलमा ने लिखे हैं उस से अह्ले दिहात वहुत परेशान हैं।

इरशाद : मज़्हवे हन्फ़ी में जुमा व ईदैन जाइज़ नहीं लेकिन जहां क़ायम है वहां मना न किया जाए और जहां नहीं है वहां क़ायम न किया जाए आख़िर शाफई मज़्हव पर तो हो ही जाएगा ऐसी सूरत में जुह्ला

जुमा तो जुमा जुहर भी छोड़ देंगे। *अरऐतल्लज़ी यन्हा अव्दन इज़ा सल्ला*। से ख़ौफ़ करना चाहिए मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम से मन्क़ूल है कि एक शख़्स को तुलूअ़ आफ़ताव के वक़्त नफ़्ल पढ़ते हुए देख कर मना न फरमाया जव वह पढ़ चुका तो मरअला तालीम फरमा दिया।

अर्ज़ : हुज़ूर की क़सम खा कर ख़िलाफ़ करने से कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा या नहीं।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : क़सम हुज़ूर की खाना जाइज़ है।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : क्या वे अदवी है।

इरशाद : हां।

अर्ज़ : खेलाल तांवे पीतल का गले में लटकाना कैसा है।

इरशाद : नाजाइज़ है क्योंकि यह तअलीक़ के हुक्म में है वैसे जाइज़ है और सोने चांदी का हराम है वल्कि औरतों को भी ऐसे ही सोने चांदी के जुरुफ़ में खाना जाइज़ है और घड़ी की चैन भी आम अर्ज़ी कि चांदी की हो या पीतल की हां डोरा बांध सकता है।

अर्ज़ : जवान ग़ैर महरिम औरत के सलाम का जवाव देना चाहिए या नहीं।

इरशाद : दिल में जवाव दे।

अर्ज़ : अगर ग़ायवाना ना महरिम को सलाम कहलाए।

इरशाद : यह भी ठीक नहीं।

अर्ज़ : सुन्नतुल-फज्र अव्वले वक़्त पढ़े या मुत्तसिल फ़र्ज़ों के।

इरशाद : अव्वले वक़्त पढ़ना औला है हदीस शरीफ़ में है जव इंसान सोता है शैतान तीन गिरह लगा देता है जव सुवह उठते ही वह रव अज़्ज़ा व जल्ला का नाम लेता है एक गिरह खुल जाती है और वुज़ू के वाद दूसरी और जव सुन्नतों की नीयत बांधी तीसरी भी खुल जाती है लिहाज़ा अव्वले वक़्त सुन्नतें पढ़ना औला है।

अर्ज़ : जुहर के वक़्त वग़ैर सुन्नत पढ़े इमामत कर सकता है।

इरशाद : विला उज़्र न चाहिए।

अर्ज़ : सुन्नते जुमा अगर खुतवा शुरू होने की वजह से छूट जाएं तो

वाद नमाज़ जुमा पढ़े या नहीं।

इरशाद : पढ़े और ज़रूर पढ़े।

अर्ज़ : वाज़ जगह दस्तूर है कि मुसलमान हिन्दू की आरहत में माल फरोख़्त करता है और इस सूरत में हिन्दू को कमीशन देना पड़ता है और वह लोग कमीशन के साथ चार आने सेकड़ा इस वात का लेते हैं कि इस रक़म का अनाज ख़रीद कर कवूतरों को डाला जाएगा यह देना जाइज़ है या नाजाइज़।

इरशाद : अगर जानवरों के लिए ले लें कुछ हरज नहीं अल्वत्ता वुत वग़ैरह के लिए नाजाइज़ है।

अर्ज़ : दस्ते ग़ैव व कीमिया हासिल करना कैसा है।

इरशाद : दस्ते ग़ैव के लिए दुआ करना मुहाल आदी के लिए दुआ करना है जो मिस्ल मुहाल अक़्ली व ज़ाती के हराम है और कीमिया तज़ैयुअ़ माल है और यह हराम है आज तक कहीं सावित नहीं हुआ कि किसी ने वना ली हो। (जैसे कोई दोनों हाथ फैलाए पानी की तरफ़ वैठा हो और वह पानी यूं उसे पहुंचने वाला नहीं) दस्ते ग़ैव जो क़ुरआने अज़ीम में इरशाद है उसकी तरफ़ लोगों को तवज्जोह ही नहीं कि फरमाता है। *वमन यत्तक़िल्लाहा यज्अल लहू मख़रजा। व यरज़ुक़ुहू मिन हैसु ला यहतसिव। यत्तक़िल्लाह*। पर अमल नहीं वरना हक़ीक़तन सव कुछ हासिल हो सकता है मेरे एक दोस्त मदीना तैयवा के रहने वाले उनका मदीना मुनव्वरा से भेजा हुआ एक ख़त इतवार के रोज़ मुझे मिला जिसमें पचास रुपये (और जो अल्लाह से डरे उसके लिए नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उसका गुमान न हो।) की तलव थी वुध के रोज़ यहां से डाक जाती थी जो हफ़्ता को डाक के जहाज़ में रवाना हो जाती थी पीर के दिन तो मुझे ख़्याल ही न रहा मंगल के रोज़ याद आया देखा तो अपने पास पांच पैसे भी नहीं वह दिन भी ख़त्म हुआ नमाज़े मग़्रिव पढ़ कर और यह फ़िक्र कि कल वुध है और अभी तक रुपये की कोई सवील नहीं हुई मैंने सरकार में अर्ज़ किया कि हुज़ूर ही में भेजना हैं अता फरमाए जाएं कि वाहर से हसनैन मियां (आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू के भतीजे) ने आवाज़ दी "सेठ इब्राहीम मुम्वई से मिलने आए हैं" मैं वाहर आया और मुलाक़ात की चलते वक़्त इक्कियावन रुपये उन्होंने दिए हालांकि ज़रूरत सिर्फ़

पचास रुपये की थी यह इक्कियावन यूं थे कि एक रुपया फीस मनी आर्डर का भी तो देना पड़ता ग़रज़ सुवह को फौरन मनी आर्डर कर दिया।

मुअल्लिफ़ : यह है *यरज़ुक़्हु मिन हैसु ला यहतसिव।*

अर्ज़ : वाज़ अकाविर औलियाए किराम से कुछ कलिमात ऐसे सादिर हुए जो वज़ाहिर ख़िलाफ़े शरीअ़त हैं उसमें उनको माज़ूर रखा जाता है और उन कलिमात की तावील की जाती है अगर कोई इस ज़माना में ऐसे अल्फ़ाज़ कहे उसको क्यों नहीं माज़ूर रखा जाता।

इरशाद : अगर उसकी विलायत सावित हो जाए तो उसको भी माज़ूर रखा जाएगा।

अर्ज़ : सुवूते विलायत का क्या तरीक़ा है।

इरशाद : इतवाक़े अइम्मा का उलमा का जम्हूर का सुवादे आज़म का। सुवादे आज़म जिसको वली मान रहा है वह वेशक वली है और अगर यह शर्त न लगाई जाए वल्कि जिस किसी को भी ख़िलाफ़े शरीअ़त अल्फ़ाज़ वकते सुनिए उसको माज़ूर रखिए तो हर शरावी हर भंगड़ जो चाहेगा वक देगा और कह देगा कि हम ने हालते सकर में ऐसा कहा शरीअ़त विल्कुल मअ़्दूम हो जाएगी।

अर्ज़ : वाज़ वज़ाइफ़ में आयात और सूरतों का मअ़कूस करके पढ़ना लिखा है।

इरशाद : हराम और अशद हराम कवीरा और सख़्त कवीरा क़रीव कुफ़्र है यह तो दरकनार सूरतों की सिर्फ़ तरतीव वदल कर पढ़ना उसकी निस्वत तो अव्दुल्लाह विन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं क्या ऐसा करने वाला डरता नहीं कि अल्लाह उसके क़ल्व को उलट दे न कि आयात को विल्कुल मअ़कूस करके मुहमल वना देना।

अर्ज़ : हुज़ूर फिर सूफ़ियाए किराम के वज़ाइफ़ में यह आमाल दाख़िल क्यों कर हुए।

इरशाद : अहादीस जिन के मन्क़ूल अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उनमें किस क़द्र मौज़ूआत हैं (इसी सिलसिला में फरमाया कि) जाहिलों में अस्माए हुसना की कुव्वत वढ़ाने के वास्ते एक तरीक़ा यह रखा गया है कि मसलन *या अज़ीज़ु तअज़्ज़तु फ़ी ग़ुर्रतिका वल-इज़्ज़ते फ़ी इज़्ज़ते इज़्ज़तिका या अज़ीम तअज़्मतु फ़ी अज़्मतिका वल-अज़्मते फ़ी अज़्मते अज़्मतिका* ख़ैर यहां तक तो सही था

आगे उसके यह है *या मुज़िल्लु तज़ल्लत फ़ी ज़िल्लतिका वज़्ज़िल्लते फ़ी ज़िल्लते ज़िल्लतिका या ख़ाफ़िज़ु तख़्फ़ज़्तु फ़ी ख़फ़्ज़तिका वल-ख़फ़्ज़े फ़ी ख़फ़्ज़े ख़फ़्ज़तिका।* अव कहिए यह कुफ़्र हुआ या नहीं लेकिन वह काफ़िर न हुए इस वास्ते कि उनको शैतान ने वहका दिया उनको इस अरवी इवारत का तरजमा नहीं मालूम (फिर फरमाया) सूफ़ियाए किराम फरमाते हैं।

सूफ़ी वेइल्म मस्ख़रह शैतान अस्त वह जानता ही नहीं शैतान अपनी वाग डोर पर लगा लेता है हदीस में इरशाद हुआ। *अल-मुतअव्वदु वेग़ैरि फ़िक़्हे कल-हिमारे फ़ित्ताहून।* वेग़ैर फ़िक़्ह कि आविद वनने वाला, आविद न फरमाया वल्कि आविद वनने वाला फरमाया यानी वेग़ैर फ़िक़्ह के इवादत हो ही नहीं सकती आविद वनता है वह ऐसा है जैसे चक्की में गधा कि मेहनते शाक़्क़ा करे और हासिल कुछ नहीं। एक साहव औलिया-ए-किराम में से थे *क़द्द सत्रल्लाहु तआला वेइसरारेहिम।* उन्होंने एक साहिवे रियाज़त व मुजाहिदा का शहरा सुना उनके वड़े-वड़े दुआवी सुनने में आए उनको वुलाया और फरमाया यह क्या दावे हैं जो मैंने सुने अर्ज़ की मुझे दीदारे इलाही रोज़ होता है उन आंखों से समुन्द्र पर खुदा का अर्श विछता है और उस पर खुदा जल्वा फरमा होता है अव अगर उनको इल्म होता तो पहले ही समझ लेते कि दीदारे इलाही दुनिया में वहालते वेदारी उन आंखों से मुहाल है सिवाए सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के और हुज़ूर को भी *फ़ौक़स्समावाते वल-अर्श* दीदार हुआ दुनिया नाम है समावात व अर्ज़ का ख़ैर उन वुज़ुर्ग ने एक आलिम साहव को वुलाया उन से फरमाया कि वह हदीस पढ़ो जिस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि शैतान अपना तख़्त समुन्द्र पर विछाता है उन्होंने अर्ज़ की कि वेशक सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है। *इन्ना इब्लीसा यज़ओ अरशुहू अलल-वहरे* शैतान अपना तख़्त समुन्द्र पर विछाता है उन्होंने जव यह सुना तो समझे कि अव तक मैं शैतान को खुदा समझता रहा उसी की इवादत करता रहा उसी को सज्दे करता रहा कपड़े फाड़े और जंगल को चले गये फिर उनका पता न चला।

सैयदी अवुल-हसन जोसक़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा हैं हज़रत सैयदी अवुल-हसन अली विन हैती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के

और आप ख़लीफा हैं हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के आपने अपने एक मुरीद को रमज़ान शरीफ़ में चिल्ले में विठाया एक दिन उन्होंने रोना शुरू किया आप तशरीफ़ लाए और फरमाया क्यों रोते हो अर्ज किया हजरत शवे क़द्र मेरी नज़रों में है शजर व हजर और दीवार व दर सज्दा में हैं नूर फैला हुआ है मैं सज्दा करना चाहता हूं एक लोहे की सलाख़ हलक़ से सीने तक है जिस से मैं सज्दा नहीं कर सकता इस वजह से रोता हूं फरमाया ऐ फरज़न्द वह सलाख़ नहीं वह तीर है जो मैंने तेरे सीने में रखा है और यह सव शैतान का करिशमा है शवे क़द्र वग़ैरह कुछ नहीं अर्ज़ की हुज़ूर तशफ़्फ़ी के लिए कोई दलील इरशाद हो फरमाया अच्छा दोनों हाथ फैला कर तदरीजन समेटो समेटना शुरू किया जितना समेटते थे उतनी ही रौशनी मुव्दल वेही जुल्मत होती जाती थी यहां तक कि दोनों हाथ मिल गये विल्कुल अन्धेरा हो गया आपके हाथों में से शोर व गुल होने लगा हज़रत मुझे छोड़िए मैं जाता हूं तव उन मुरीद की तशफ़्फ़ी हुई (फिर फरमाया) वेग़ैर इल्म के सूफी को शैतान कच्चे तागे की लगाम डालता है एक हदीस में है वाद नमाज़ अस्र शयातीन समुन्द्र पर जमा होते हैं इव्लीस का तख़्त विछता है शयातीन की कारगुज़ारी पेश होती है कोई कहता है उसने आज फलां तालिवे इल्म को पढ़ने से वाज़ रखा सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा और उसको गले से लगाया और कहा अन्ता अन्ता तूने काम किया तूने काम किया शयातीन यह कैफ़ियत देख कर जल गये कि उन्होंने इतने वड़े-वड़े काम किये उनको कुछ न कहा और उसको इतनी शावाशी दी इव्लीस वोला तुम्हें नहीं मालूम जो कुछ तुमने किया सव उसकी सदक़ा है अगर इल्म होता तो वह गुनाह न करते वताओ वह कौन सी जगह है जहां सव से वड़ा आविद रहता है मगर वह आलिम नहीं और वहां एक आलिम भी रहता हो उन्होंने एक मक़ाम का नाम लिया सुवह को क़व्ल तुलूअ्-ए-आफ़ताव शयातीन को लिए हुए उस मक़ाम पर पहुंचा और शयातीन मख़्फ़ी रहे और यह इंसान की शक्ल वन कर रास्ता पर खड़ा हो गया आविद साहव तहज्जुद की नमाज़ के वाद नमाज़े फज्र के वास्ते मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ लाए रास्ता में इव्लीस खड़ा ही था सलामुन अलैकुम व अलैकुम अस्सलाम हज़रत मुझे एक मस्अला पूछना है आविद साहव ने फरमाया पूछो मुझे नमाज़ को जाना

है उसने अपनी जेब से एक छोटी शीशी निकाल कर पूछा अल्लाह तआला क़ादिर है कि उन समावात व अर्ज़ को उस छोटी सी शीशी में दाखिल कर दे आबिद साहब ने सोचा और कहा कहां आसमान व जमीन और कहां यह छोटी सी शीशी बोला बस यही पूछना था तशरीफ़ ले जाइए और शयातीन से कहा देखा मैंने उसकी राह मार दी उसको अल्लाह की कुदरत ही पर ईमान नहीं इबादत किस काम की तुलूअ् आफ़ताब के क़रीब आलिम साहब जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए उसने कहा अस्सलामुन अलैकुम व अलैकुम अस्सलाम मुझे एक मरअला पूछना है उन्होंने फरमाया पूछो जल्दी पूछो नमाज़ का वक़्त कम है उसने वही सवाल किया फरमाया मल्ऊन तू इबलीस मालूम होता है अरे वह क़ादिर है कि यह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सूई के ना के अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाख़िल कर दे। *इन्नल्लाहा अला कुल्ले शैईन क़दीर* आलिम साहब के तशरीफ़ ले जाने के बाद शयातीन से बोला देखा यह इल्म ही की बरकत है।

अर्ज़ : औरतों के लिए मिस्वाक कैसी है।

इरशाद : उनके लिए उम्मुल-मुमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की सुन्नत है लेकिन अगर वह न करें तो हरज नहीं उनके दांत और मसूढ़े बनिस्बत मर्दों के कमज़ोर होते हैं मस्सी काफी है।

अर्ज़ : बैअ़ाना की निस्बत क्या हुक्म है।

इरशाद : बैअ़ाना आजकल तो यूं होता है कि अगर ख़रीदार बाद बैअ़ाना देने के न ले तो बैअ़ाना ज़ब्त, और यह क़तअन हराम है।

अर्ज़ : मरने के बाद मस्नूई दांत निकालना चाहिएं या नहीं।

इरशाद : निकाल लेना चाहिएं अगर कोई तक्लीफ़ न हो और उसके टूटे हुए दांत कफन में रख दिए जाएं।

अर्ज़ : एक सफ फ़र्ज़ पढ़ रही है दर्मियान में एक शख़्स बनीयत नफ़्ल शरीक है उनकी नमाज़ में कोई ख़राबी है या नहीं।

इरशाद : कोई हरज नहीं।

अर्ज़ : क्या क़तअ् सफ़ नहीं।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : हालांकि उसकी नमाज़ और है और उनकी और।

इरशाद : उसकी नमाज़ और नहीं फ़र्ज़ मुश्तमिल है मुतलक़ नमाज़ को और मुतलक़ नमाज़ नफ़्ल भी है नफ़्ल हर नमाज़ में दाख़िल है हां अगर वह लोग आज की ज़ुहर पढ रहे हों और यह कल की ज़ुहर की नीयत से इमाम के पीछे खड़ा हो गया तो अब उसकी नमाज़ न होगी कि उसकी नमाज़ और है और इमाम की और। कल की ज़ुहर आज की ज़ुहर में दाख़िल नहीं।

अर्ज़ : एक शख़्स वुज़ू कर रहा था और दो आदमी बावुज़ू थे यह ख़्याल करके वह वुज़ू करके शामिल हो जाएगा एक शख़्स इमाम बन कर आगे खड़ा हो गया और दूसरा तन्हा पीछे लेकिन वह शख़्स वुज़ू करके शामिल ही न हुआ अब उन दोनों की नमाज़ हुई या नहीं।

इरशाद : नमाज़ तो हो गई लेकिन इमाम और मुक़्तदी दोनों ने ग़लती की और ख़िलाफ़े सुन्नत किया चाहिए था कि इमाम और मुक़्तदी दोनों बराबर खड़े होते जब वह वुज़ू करके आता मुक़्तदी पीछे हट आता या इमाम आगे बढ़ जाता (फिर फरमाया) इस ग़लती में अवाम तो अवाम उलमा मुब्तला हैं हालते मौजूदा का एतबार है ग़ैब का क्या इल्म, मुम्किन है कि वह वुज़ू करते ही में मर जाए या और कोई उज़्र पेश आ जाए।

अर्ज़ : दो औरतों के बीच में से निकलने की मुमानेअत की क्या वजह है।

इरशाद : दो औरतों के बीच में से निकलने को मना फरमाया औरतों के पीछे चलने से मना फरमाया (फिर फरमाया) एक औरत तीन मर्दों की नमाज़ फासिद करती है एक वह जो दाहिनी तरफ़ हो एक वह जो बाएं तरफ हो और एक वह जो पीछे हो और दो औरतें कम से कम चार की दो दाहिने बाएं और दो वह जो उनके पीछे हैं और तीन औरतें दो दाहिने बाएं मर्दों की नमाज़ फासिद करती हैं और अपने पीछे हर सफ़ में से तीन-तीन आदमियों की जो उनके महाज़ात में हों और अगर चार औरतें हैं तो दो मर्दों की तो दाहिने बाएं नमाज़ फासिद करेंगी और उनके पीछे अगर लाख सफ़ें हों तो सब की नमाज़ फ़ासिद अगरचे महाज़ात न हो। आख़िर कुछ तो असर है जो इतनी नमाज़ें फ़ासिद होती है इसी वजह से दो औरतों के दर्मियान निकलने से मना फ़रमाया।

अर्ज़ : कुछ मर्द आगे हैं उनके पीछे औरतें और उनके पीछे एक दीवार है उस दीवार के पीछे जो लोग खड़े हों उनकी नमाज़ का क्या

है उसने अपनी जेब से एक छोटी शीशी निकाल कर पूछा अल्लाह तआला क़ादिर है कि उन समावात व अर्ज़ को उस छोटी सी शीशी में दाखिल कर दे आबिद साहब ने सोचा और कहा कहां आसमान व जमीन और कहां यह छोटी सी शीशी बोला बस यही पूछना था तशरीफ़ ले जाइए और शयातीन से कहा देखा मैंने उसकी राह मार दी उसको अल्लाह की कुदरत ही पर ईमान नहीं इबादत किस काम की तुलूअ् आफ़ताब के क़रीब आलिम साहब जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए उसने कहा अस्सलामुन अलैकुम व अलैकुम अस्सलाम मुझे एक मरअला पूछना है उन्होंने फरमाया पूछो जल्दी पूछो नमाज़ का वक़्त कम है उसने वही सवाल किया फरमाया मल्ऊन तू इबलीस मालूम होता है अरे वह क़ादिर है कि यह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सूई के ना के अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाख़िल कर दे। *इन्नल्लाहा अला कुल्ले शैईन क़दीर* आलिम साहब के तशरीफ़ ले जाने के बाद शयातीन से बोला देखा यह इल्म ही की बरकत है।

अर्ज़ : औरतों के लिए मिस्वाक कैसी है।

इरशाद : उनके लिए उम्मुल-मुमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की सुन्नत है लेकिन अगर वह न करें तो हरज नहीं उनके दांत और मसूढ़े बनिस्बत मर्दों के कमज़ोर होते हैं मस्सी काफी है।

अर्ज़ : बैअ़ाना की निस्बत क्या हुक्म है।

इरशाद : बैअ़ाना आजकल तो यूं होता है कि अगर ख़रीदार बाद बैअ़ाना देने के न ले तो बैअ़ाना ज़ब्त, और यह क़तअन हराम है।

अर्ज़ : मरने के बाद मस्नूई दांत निकालना चाहिएं या नहीं।

इरशाद : निकाल लेना चाहिएं अगर कोई तक्लीफ़ न हो और उसके टूटे हुए दांत कफन में रख दिए जाएं।

अर्ज़ : एक सफ फ़र्ज़ पढ़ रही है दर्मियान में एक शख़्स बनीयत नफ़्ल शरीक है उनकी नमाज़ में कोई ख़राबी है या नहीं।

इरशाद : कोई हरज नहीं।

अर्ज़ : क्या क़तअ् सफ़ नहीं।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : हालांकि उसकी नमाज़ और है और उनकी और।

इरशाद : उसकी नमाज़ और नहीं फ़र्ज़ मुश्तमिल है मुतलक़ नमाज़ को और मुतलक़ नमाज़ नफ़्ल भी है नफ़्ल हर नमाज़ में दाख़िल है हां अगर वह लोग आज की जुहर पढ रहे हों और यह कल की जुहर की नीयत से इमाम के पीछे खड़ा हो गया तो अब उसकी नमाज़ न होगी कि उसकी नमाज़ और है और इमाम की और। कल की जुहर आज की जुहर में दाख़िल नहीं।

अर्ज़ : एक शख़्स वुज़ू कर रहा था और दो आदमी बावुज़ू थे यह ख़्याल करके वह वुज़ू करके शामिल हो जाएगा एक शख़्स इमाम बन कर आगे खड़ा हो गया और दूसरा तन्हा पीछे लेकिन वह शख़्स वुज़ू करके शामिल ही न हुआ अब उन दोनों की नमाज़ हुई या नहीं।

इरशाद : नमाज़ तो हो गई लेकिन इमाम और मुक़्तदी दोनों ने ग़लती की और ख़िलाफ़े सुन्नत किया चाहिए था कि इमाम और मुक़्तदी दोनों बराबर खड़े होते जब वह वुज़ू करके आता मुक़्तदी पीछे हट आता या इमाम आगे बढ़ जाता (फिर फरमाया) इस ग़लती में अवाम तो अवाम उलमा मुब्तला हैं हालते मौजूदा का एतबार है ग़ैब का क्या इल्म, मुम्किन है कि वह वुज़ू करते ही में मर जाए या और कोई उज़्र पेश आ जाए।

अर्ज़ : दो औरतों के बीच में से निकलने की मुमानेअत की क्या वजह है।

इरशाद : दो औरतों के बीच में से निकलने को मना फरमाया औरतों के पीछे चलने से मना फरमाया (फिर फरमाया) एक औरत तीन मर्दों की नमाज़ फासिद करती है एक वह जो दाहिनी तरफ़ हो एक वह जो बाएं तरफ हो और एक वह जो पीछे हो और दो औरतें कम से कम चार की दो दाहिने बाएं और दो वह जो उनके पीछे हैं और तीन औरतें दो दाहिने बाएं मर्दों की नमाज़ फासिद करती हैं और अपने पीछे हर सफ में से तीन-तीन आदमियों की जो उनके महाज़ात में हों और अगर चार औरतें हैं तो दो मर्दों की तो दाहिने बाएं नमाज़ फासिद करेंगी और उनके पीछे अगर लाख सफ़ें हों तो सब की नमाज़ फ़ासिद अगरचे महाज़ात न हो। आख़िर कुछ तो असर है जो इतनी नमाज़ें फ़ासिद होती है इसी वजह से दो औरतों के दर्मियान निकलने से मना फ़रमाया।

अर्ज़ : कुछ मर्द आगे हैं उनके पीछे औरतें और उनके पीछे एक दीवार है उस दीवार के पीछे जो लोग खड़े हों उनकी नमाज़ का क्या

हुक्म है।

इरशाद : अगर दीवार इतनी नीची है कि सीना या सर दिखाई दे जब भी महाज़ात है और मर्दों की नमाज़ फासिद।

अर्ज़ : अगरचे औरतें ज़ईफ़ा हों।

इरशाद : ज़ईफ़ा हों या क़वीया औरतों को मस्जिद में जाना ही मना है हदीस में इरशाद फरमाया औरत की नमाज़ अपने तहख़ाना में बेहतर है कोठरी में नमाज़ पढ़ने से और उसकी कोठरी में नमाज़ बेहतर है दालान में नमाज़ पढ़ने से और उसकी नमाज़ दालान में बेहतर है सेहन में नमाज़ पढ़ने से और उसकी अपने सेहन में नमाज़ बेहतर है मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से (फिर फरमाया) मस्जिद और जमाअत की हाज़िरी औरतों को मआफ़ है बल्कि मम्नूअ् है।

अर्ज़ : एक सफ मर्दों की पूरी खड़ी है और उनके पीछे औरतें हैं अब और मर्द बाद में आने वाले कहां खड़े हों।

इरशाद : अगर यहां जगह नहीं तो नमाज़ बातिल होगी दूसरी मस्जिद में पढ़ें।

अर्ज़ : अगर इमाम ने दो आयतें पढ़ीं और भूल कर और जगह की एक आयत पढ़ दी तो नमाज़ हो गई या नहीं।

इरशाद : हो गई।

अर्ज़ : रंडियों का रुपया मस्जिद की ख़िदमत में सर्फ़ कर सकते हैं या नहीं।

इरशाद : नहीं। मस्जिद के लिए माल हलाल तैयब हो।

अर्ज़ : अगर दीवार इस क़द्र ऊंची हो कि औरतों के सर नहीं दिखाई देते तो अब इमाम का रुकूअ् व सुजूद भी उन लोगों पर जो दीवार पीछे हैं मख़्फ़ी हो जाएगा तो इक़्तिदार क्योंकर सही होगी।

इरशाद : आवाज़ पहुंचेगी।

अर्ज़ : क़र्ज़ वुसूल करने में ख़र्च हो वह मक़रूज़ से ले सकता है या नहीं।

इरशाद : एक हिबा नहीं ले सकता।

मुअल्लिफ़ : दूसरी बार की हाज़िरी में जो इंआमात सरकार से पाए उनको बयान फरमाते हुए इरशाद फरमाया वह खुद अपने मेहमानों की मदद फरमाते हैं और हुज़ूर तो हुज़ूर हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

सल्लम! हुज़ूर की उम्मत के औलियाए किराम की भी यही शान है। हज़रत सैयदी अहमद बदवी कबीर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जिनकी मज्लिसे मीलाद मिस्र में होती है मज़ार मुबारक पर आपकी विलादत के दिन हर साल मज्मा होता है और आपका मीलाद पढ़ा जाता है इमाम अब्दुल-वहाब शोअ्रानी कुद्दिसा सिर्रहू अर्रब्बानी इल्तिज़ाम के साथ हर साल हाज़िर होते अपनी किताब में भी बहुत तारीफ़ लिखी है कई वरक़ों में इस मज्लिस के हालात बयान किए हैं मज्लिस तीन दिन होती है एक दफा आपको ताख़ीर हो गई यह हमेशा एक दिन पहले ही हाज़िर हो जाते थे उस दफा आख़िर दिन पहुंचे जो औलियाए किराम मज़ार मुबारक पर मुराक़िब थे उन्होंने फरमाया कहां थे दो रोज़ से हज़रत मज़ारे मुबारक से पर्दा उठा-उठा कर फरमाते हैं अब्दुल-वहाब आया अब्दुल-वहाब आया उन्होंने फरमाया क्या हुज़ूर को मेरे आने की इत्तिला होती है उन्होंने फरमाया इत्तिला कैसी हुज़ूर तो फरमाते हैं कि कितनी ही मंज़िल पर कोई शख़्स मेरे मज़ार पर आने का इरादा करे मैं उसके साथ होता हूं उसकी हिफ़ाज़त करता हूं अगर उसका एक टुकड़ा रस्सी का जाता रहेगा अल्लाह तआला मुझ से सवाल करेगा (फिर फरमाया) उन पर ख़ास तवज्जोह थी और उनको भी ख़ास नियाज़ मन्दी थी इसी वजह से हज़रत को उन से ख़ास मुहब्बत थी हदीस में है जो कोई दरयाफ़्त करना चाहे कि अल्लाह के यहां उसकी किस क़द्र क़द्र व मंज़िलत है वह यह देखे कि उसके दिल में अल्लाह की किस क़द्र क़द्र व मंज़िलत है इतनी ही उसकी अल्लाह के यहां है। हज़रत सैयदी अब्दुल-वहाब अकाबिर औलियाए किराम में से हैं हज़रत सैयदी अहमद बदवी कबीर के मज़ार पर बहुत बड़ा मेला और हुजूम होता था इस मज्मा में चले आते थे एक ताजिर की कनीज़ पर निगाह पड़ी फौरन निगाह फेर ली कि हदीस में इरशाद हुआ। *अन्नज़रतु इल्ला वलीयुन लका वस्सानियता अलैका।* पहली नज़र तेरे लिए है और दूसरी तुझ पर यानी पहली नज़र का कुछ गुनाह नहीं और दूसरी का मुवाख़ज़ा होगा ख़ैर निगाह तो आपने फेर ली मगर वह आपको पसन्द आई जब मज़ार शरीफ़ पर हाज़िर हुए इरशाद फरमाया अब्दुल-वहाब वह कनीज़ पसन्द है अर्ज़ की हां अपने शैख़ से कोई बात छुपाना न चाहिए इरशाद फरमाया अच्छा हम ने तुम को वह कनीज़ हिबा की अब आप सुकूत में

हैं कि कनीज़ तो उस ताजिर की है और हुज़ूर हिबा फरमाते हैं मअन वह ताजिर हाज़िर हुआ और उसने वह कनीज़ मज़ारे अक़्दस की नज़्र की ख़ादिम को इशारा हुआ उन्होंने आपकी नज़्र कर दी इरशाद फरमाया अब्दुल-वहाब अब देर काहे कि फलां हुजरा में ले जाओ और अपनी हाजत पूरी करो।

अर्ज़ : अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और औलियाए किराम की हयाते बरज़ख़िया में क्या फ़र्क़ है।

इरशाद : अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियावी है उन पर तस्दीक़ वादा इलाहिया के लिए महज़ एक आन को मौत तारी होती है फिर फौरन उनको वैसे ही हयात अता फरमा दी जाती है इस हयात पर वही अहकाम दुनयवीया हैं उनका तरका बांटा न जाएगा उनकी अज़्वाज को निकाह हराम नीज़ अज़्वाजे मुतह्हरात पर इद्दत नहीं वह अपनी कुबूर में खाते पीते नमाज़ पढ़ते हैं बल्कि सैयदी मुहम्मद बिन अब्दुल-बाक़ी ज़रक़ानी फरमाते हैं कि अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की कुबूर मुतह्हरा में अज़्वाजे मुतह्हरात पेश की जाती हैं वह उनके साथ शब बाशी फरमाते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तो उनको हज करते हुए लब्बैक पुकारते हुए नमाज़ पढ़ते हुए देखा और औलिया उलमा शुहदा की हयाते बरज़ख़िया अगरचे हयाते दुनियवीया से अफ़्ज़ल, आला है मगर उस पर अहकामे दुनयवीया जारी नहीं उनका तरेका तक़्सीम होगा उनकी अज़्वाज इद्दत करेंगी और हयाते बरज़ख़ीया का सुबूत तो अवाम के लिए भी है हदीस में है मिस्ल मोमिन की उस ताइर की तरह जो क़फ़स में है कि जब तक वह क़फ़स में है उसकी उड़ान उसी तक है और जब उस से आज़ाद हुआ तो उसकी उड़ान कितनी होगी बाद मरने के समअ़ा, बसर और इद्राक आम लोगों का, यहां तक कि कुफ़्फ़ार का ज़ाइद हो जाता है और यह तमाम अह्ले सुन्नत व जमाअत का इज्माई अक़ीदा है और अहादीसे सहीहा से साबित है जो ख़िलाफ़ करे गुमराह है कि जिस किसी की क़ब्र पर आदमी जाता है अगर साहिबे क़ब्र उसको पहचानता था तो उसको पहचानता है और उस से तसल्ली पाता है उसकी आवाज़ बल्कि उसकी पैछल सुनता है और अगर नहीं पहचानता था तो इतना ज़रूर जानता है कि एक मुसलमान मेरी क़ब्र पर आया है

अगर किसी ज़िन्दा शख़्स को इतने मन मिट्टी में दबा दिया जाए तो उसके ऊपर अगर तोप भी छोड़ी जाए जब भी न सुनेगा। तो साबित हुआ कि बाद मरने के समअ़ा व बसरा व इद्राक बढ़ जाता है।

अर्ज़ : हुज़ूर बाज़ जगह बच्चा पैदा होता है और वह बयान करता है कि मैं फुलां जगह पैदा हुआ था और तमाम निशानियां ज़ाहिर करता है।

इरशाद : *अश्शैतानु यन्तेकु अला लेसानेही।* शैतान उसकी ज़बान पर बोलता है उसका शैतान उस बच्चा के शैतान से पूछ रखता है वही बयान करता है ताकि लोग गुमराह हों कि ओ हो यह तो आवा गोन हो गया मुसलमान का हम्ज़ाद मुक़ैयद कर लिया जाता है और काफिर का भूत हो जाता है जब काम के वास्ते लोग दुनिया में भेजे जाते हैं उनके साथ किरामन कातेबीन और शयातीन होते हैं जब इंसान मर जाता है किरामन कातेबीन अर्ज़ करते हैं ऐ रब हमारा काम ख़त्म हो गया वह शख़्स दारे आमाल से निकल गया इजाज़त दे कि हम आसमान पर आएं और तेरी इबादत करें रब अज़्ज़ा व जल्ला इरशाद फरमाता है कि मेरे आसमान भरे हैं इबादत करने वालों से कुछ हाजत तुम्हारी नहीं अर्ज़ करते हैं इलाही हमें ज़मीन में जगह दे इरशाद होता है मेरी ज़मीनें भरी हैं इबादत करने वालों से तुम्हारी कुछ हाजत नहीं अर्ज़ करते हैं इलाही फिर हम क्या करें इरशाद होता है मेरे बन्दे की क़ब्र के सरहाने क़्यामत तक खड़े रहो और तस्बीह व तक़्दीस करते रहो उसका सवाब मेरे बन्दे को बख़्शते रहो। (फिर फरमाया) अच्छी बातें मसलन *सुबहानल्लाह वल-हम्दुलिल्लाह वला इलाहा इल्लल्लाह वल्लाहु अक्बर* उनका उख़रवी नफ़ा तो यह है कि हर कलिमा से एक पेड़ जन्नत में लगाया जाता है उसी को फरमाया जाता है। *वल-बाक़ियातुस्सालेहातु ख़ैर इन्दा रब्बिका सवाबन व ख़ैरा अमला।* और दूसरी जगह फरमाया जाता है। *वल-बाक़ियातुस-सालेहातु ख़ैर इन्दा रब्बिका सवाबन व ख़ैरा मर्रदन।* और फिल-हाल उनका नफ़ा यह है कि वह कलिमाते मुंह से निकल कर हुआ में मुज्तमा रहते हैं। क़्यामत तक तस्बीह व तक़्दीस करेंगे और अपने क़ाइल के वास्ते मग़्फ़िरत मानेंगे उसी तरह कलिमात कुफ़्र मुंह से निकल कर हवा में मुज्तमा रहते हैं क़्यामत तक तस्बीह व तक़्दीस करेंगे और अपने क़ाइल पर लानत करते रहेंगे।

अर्ज़ : ऐसी अलमारी जो छत से लगी हुई है उसके ऊपर के दर्जे में

कुरआन शरीफ़ रखा है अव उसकी तरफ़ पैर करके सो सकता है या नहीं।

इरशाद : जव पांव के महाज़ात से वहुत बुलन्द है तो हरज नहीं।

अर्ज़ : शराव बेचने वाले के हाथ कोई चीज़ वेचना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर शराव वेचने वाला मुसलमान है और उसके पास सिवाए शराव की आमदनी के और कुछ नहीं तो उस से कोई चीज़ बेचना हराम है (यानी जव कि वह क़ीमत उसी माले हराम से दे और अगर उस ने किसी से माल हलाल क़र्ज़ लिया है और माल हलाल के एवज़ उस से कुछ ख़रीदता है तो बेचने में हरज न होगा १२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू।) और अगर काफिर है या उसके पास सिवाए उसके और भी आमदनी है तो जाइज़ है। कुफ़्फ़ार के लिए शराव और ख़िंज़ीर ऐसे हैं जैसे हमारे लिए सिरका और बकरी। *कल-ख़िल्ले वश्शाते लना।*

अर्ज़ : रंडी को मकान किराया पर देना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : उसका उस मकान में रहना कोई गुनाह नहीं रहने के वास्ते मकान किराया पर देना कोई गुनाह नहीं वाक़ी रहा उसका ज़िना करना यह उसका फ़ेअ्ल है उसके वास्ते मकान किराया पर नहीं दिया गया (यहां भी वही है कि अगर रंडी के पास सवा उस नापाक कमाई के और माल नहीं जिस से किराया अदा करे तो वह माल ज़नाना लेना चाहिए और अगर और हो ख़्वाह यूं कि माल हलाल क़र्ज़ लेकर दे तो हरज नहीं। (१२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू)

अर्ज़ : इलाज करना सुन्नत है या न करना।

इरशाद : दोनों सुन्नत हैं यह भी इरशाद हुआ है।

तदाऊ इयादल्लाहि फ़इन्नल्लज़ी अंज़ला अद्दाआ अंज़लद्दवाए लेकुल्ले दाइन। इलाज करो ऐ अल्लाह के वन्दो कि जिसने मरज़ उतारा है उस ने हर मरज़ की दवा भी उतारी है अंविया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की आदत करीमा अक्सर यही रही है कि उम्मत के लिए सुन्नत हो और अकाविर सिद्दीक़ीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम की सुन्नत इलाज न करना रही है।

अर्ज़ : अंग्रेज़ी दवाइयाँ जाइज़ हैं या नहीं।

इरशाद : उनके यहां की जिस क़द्र रक़ीक़ दवाएं हैं सब में उमूमन

शराव होती है सव नजिस व हराम हैं।

अर्ज़ : अगर विस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्वर कह कर जानवर के तीर मारा और उसके पास पहुंचने से पहले वग़ैर ज़वह किए मर गया अव उसका खाना कैसा है।

इरशाद : जाइज़ है ख़्वाह कहीं लग जाए (फिर फरमाया) अगर तक्वीर कह कर वन्दूक़ मारी और ज़वह करने से पेशतर मर गया तो हराम है इस वास्ते कि वन्दूक़ में तोड़ है काट नहीं और तीर में काट है।

अर्ज़ : सुना गया है कि हज़रत अवू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की विल्ली और अस्हावे कहफ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का कुत्ता जन्नत में जाएंगे यह सही है या नहीं।

इरशाद : हज़रत अवू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की विल्ली के लिए सावित नहीं और अस्हावे कहफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का कुत्ता वलअम वाऊर की शक्ल वन कर जन्नत में जाएगा और वह उस कुत्ते की शक्ल हो कर दोज़ख़ में पड़ेगा उसी को फरमाया गया है। *फ़मिस्लुहू कमसलिल-कल्वे। इन तहमिलु अलैहि यल्हस औ ततरकहू यल्हस।* हम ने उसको अपनी आयतें दीं तो वह निकल गया उन से और गुम्राहों में से हो गया और अगर हम चाहते तो उसको उन आयतों के सवव वुलन्द फरमा लेते लेकिन वह तो ज़मीन पर पकड़ गया उस से उठा न गया उसने अपनी ख़्वाहिश का इत्तिवा किया तो उसकी मिस्ल कुत्ते की मिस्ल है अगर उस पर वोझ लादे तो हांपे और अगर छोड़ दे तो हांपे यह उन लोगों की मिस्ल है जिन्होंने हमारी आयतों की तक्ज़ीव की (फिर फरमाया) उसने महवूवाने ख़ुदा का साथ दिया अल्लाह ने उसको इंसान वना कर जन्नत अता फ़रमाई। और उसने महवूवाने ख़ुदा से इद्दात की वनी इस्राईल में वहुत वड़ा आलिम था मुस्तजावुद्दावात था लोगों ने उसको वहुत सा माल दिया कि मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए वद्दुआ करे ख़वीस लालच में आ गया और वद्दुआ करनी चाही जो अल्फ़ाज़ मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए कहना चाहता था अपने लिए निकलते थे अल्लाह ने उसको हलाक कर दिया और अस्तन हिनाना शरीफ़ में उलमा का इख़्तिलाफ़ है एक रिवायत आई है कि हुज़ूर ने इरशाद फरमाया अगर तू चाहे तो तेरे बाग़ के अन्दर तुझे फिर लगा दिया जाए तुझ में पते फल फूल आएं या जन्नत का एक पेड़ हो जन्नत

के लोग तुझ से फाइदा उठाएं उसने अर्ज़ किया दुनिया दारुल-फना है मैंने दारुल-फना पर दारुल-बक़ा इख़्तियार किया हुज़ूर ने उसको मिंबर के नीचे दफ़न फरमा दिया हज़रत मौलाना रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं -

अर्ज़ : सिर्रतैन (फर्ज़ की पिछली वह दो रकअतें जिन में क़िरअत ख़फ़ी होती है। १२ मुअल्लिफ़ गुफ़िर लहू) में जब इमाम अल्हम्दु शरीफ़ पढ़े तो तअव्वुज़ और आमीन कहे या नहीं।

इरशाद : तअव्वुज़ न करे हाँ बिस्मिल्लाह पढ़ कर शुरू करे और ख़त्म पर आमीन कहे और अगर मुक़्तदियों के कानों तक आवाज़ पहुंच जाए तो वह भी आमीन कहें।

अर्ज़ : हुज़ूर बाज़ मरज़ मुतअद्दी भी होते हैं।

इरशाद : नहीं। हदीस में इरशाद हुआ *ला अदवी*।

अर्ज़ : फिर जुज़ामी से भागने का क्यों हुक्म दिया गया।

इरशाद : वह हुक्म ज़ईफ़ुल-ईमान के वास्ते है कि अगर वह उसके पास बैठे और तक़्दीरे इलाही से कुछ हो जाए तो शैतान बहका देगा कि यह उसके पास बैठने से हो गया गर न बैठता तो न होता तक़्दीरे इलाही को भूल जाएगा।

अर्ज़ : फिर ताऊन से भागने की मुमानअत क्यों।

इरशाद : उसके लिए हदीस में साफ़ इरशाद है। *अल-फारु मिनत्ताऊन कल-फ़ारे मिनज़्ज़हफ़े*। ताऊन से भागने वाला ऐसा ही है जैसा जिहाद में कुफ़्फ़ार को पीठ देकर भागने वाला उस पर भी यही इरशाद हुआ कि जहां ताऊन हो वहां बिला ज़रूरत न जाओ।

अर्ज़ : उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा का इंकार सिमा मौता से रुजूअ साबित है या नहीं।

इरशाद : नहीं। वह जो फरमा रही हैं हक़ फरमा रही हैं वह मुर्दो के सुनने का इंकार फरमाती हैं मुर्दे कौन हैं जिस्म, रूह मुर्दा नहीं और बेशक जिस्म नहीं सुनता सुनती रूह है और उसकी दलील यह है कि जब उम्मुल-मुमिनीन के हुज़ूर में सैयदना उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस बयान की गई कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया। *मा अन्तुम बेअस्मा मिन्हुम*। तुम उस से ज़्यादा सुनने वाले नहीं। उम्मुल-मुमिनीन

ने फरमाया अल्लाह रहम फरमाए अमीरुल-मुमिनीन पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यह नहीं इरशाद फरमाया बल्कि फ़रमाया। *इन्नहुम लयअ्लमून*। बेशक वह जानते हैं अमीरुल-मुमिनीन को सह्व हुआ उन्होंने फरमाया *मा अन्तुम बेअस्मा मिन्हुम*। तो खुद उम्मुल-मुमिनीन मुर्दो को इल्म का इक़रार फरमाती हैं सिमाअ् से बेशक इंकार फरमाती हैं और वह भी उसके उन मानों से जो उर्फ़ में शाए हैं। सिमाअ् के उर्फ़ी मानी उन आलात के ज़रिया से सुनना और यह यक़ीनन बाद मरने के रूह के लिए नहीं रूह को जिस्म मिसाली दिया जाता है उस जिस्म के कानों से सुनती है फिर उम्मुल-मुमिनीन का उन आयतों से इस्तिदलाल और भी उसको ज़ाहिर कर रहा है। *इन्नका ला तुस्मेउल-मौता*। और *वमा अन्ता बेसमए मन फ़िल-क़बूर*। मौता कौन हैं अज्साम। क़ुबूर में कौन हैं वही अज्साम तो फिर अज्साम ही के सुनने से इंकार हुआ और वह यक़ीनन हक़ है (फिर फरमाया) खुद उम्मुल-मुमिनीन का तरज़े अमल सिमाअ् मौता को साबित कर रहा है। फरमाती हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मेरे हुजरा में दफन हुए मैं बेग़ैर चादर ओढ़े बेहिजाबाना हाज़िर होती और कहती इन्नमा हुवा ज़ौजी। मेरे शौहर ही तो हैं फिर मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु दफन हुए जब भी मैं बेग़ैर एहतियात के चली जाती और कहती *इन्नमा हुमा ज़ौजी व अबी* मेरे शौहर और मेरे बाप ही तो हैं फिर जब हज़रत उमर दफन हुए (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) तो मैं निहायत एहतियात के साथ चादर से लिपटी हुई हाज़िर होती इस तरह कि कोई अज़्व खुला न रहे। *हयाओ मिन उमर* रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु उमर की शर्म से तो अगर अरवाह का समेआ, बसरा न मानतीं तो फिर *हयाओ मिन उमर* के क्या मानी (फिर फरमाया) तीन बातों में उम्मुल-मुमिनीन का ख़िलाफ़ मशहूर है और इन तीनों में ग़लत फ़हमी एक तो यही सिमाअ् मौता कि वह सिमाअ् उर्फ़ी का जिस्मों के वास्ते इंकार फ़रमाती हैं और उसकी ग़लत फ़हमी से अरवाह के सिमाअ् हक़ीक़ी पर महमूल किया जाता है। दूसरे मेअ्राज जस्दी के बारह में इंकार मशहूर है कि उम्मुल-मुमिनीन फरमाती हैं। *मा फ़क़्दत जसद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम* जसदे अक़्दस मेरे पास से कहीं न गया हालांकि आप मेअ्राज मनामी के बारह

में फरमा रही हैं जो मदीना मुनव्वरह में हुई और वह मेअ्राज तो मक्का मुअज़्ज़मा में हुई उस वक़्त उम्मुल-मुमिनीन ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर भी न हुई थीं बल्कि निकाह से भी मुशर्रफ़ न हुई थीं उसे उस पर महमूल करना सरासर ग़लतफ़हमी। तीसरे इल्म माफ़िल-ग़द के बारह में उम्मुल-मुमिनीन का क़ौल है कि जो यह कहे कि हुज़ूर को इल्म माफ़िल-ग़द था वह झूठा है उस से मुतलक़ इल्म का इंकार निकालना महज़ जिहालत है इल्म जब कि मुतलक़ बोला जाए खुसूसन जब कि ग़ैब की तरफ़ मुज़ाफ़ हो तो उस से मुराद इल्म ज़ाती होता है उसकी तस्रीह हाशिया कशाफ़ पर मीर सैयद शरीफ़ रहमतुल्लाह तआला अलैह ने कर दी है और यह यक़ीनन हक़ है कि कोई शख़्स किसी मख़्लूक़ के लिए एक ज़र्रह का भी इल्म ज़ाती माने यक़ीनन काफिर है।

अर्ज़ : *वलक़द राहु नज़्लतन उख़रा। इन्दी सिदरतुल-मुन्तहा।* में इन्द किस से ज़र्फ़ है।

इरशाद : रआहु की ज़मीर फाइल से और जिन लोगों ने उस से मुराद रूयत जिब्रील ली है वह *रआहु* की ज़मीर मफ़ऊल से मानते हैं (फिर फरमाया) बाज़ इस पूरी सूरत को जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुतअल्लिक़ मानते हैं और असहह वार हज और नज़्मे कुरआनी से औफ़क़ वही है जो जम्हूर सहाब-ए-किराम व ताबईने इज़ाम व अइम्म-ए-आलाम का मज़्हब है कि यह तमाम ज़मीरें रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू की तरफ़ राजे इरशाद होता है। *फ़औही इला अब्देही मा औहा।* ज़ाहिर आयत चाहती है इस बात को कि यह ज़मीरें अल्लाह की तरफ़ राजे हों वरना इख़्तिलात हो जाएगा कि औहा की ज़मीरें दोनों जगह जिब्रील की तरफ़ राजे होंगी और *अब्दुहू* की ज़मीर बीच में अल्लाह की तरफ़, फिर आगे माबूदाने बातिल का मुक़ाबला फरमाया जाता है।

क्या तुमने देखा है लात व उज़्ज़ा व मनात को वह तो नहीं हैं मगर कुछ नाम कि तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने गढ़ लिए अल्लाह ने उस पर कोई दलील न उतारी वहम की पैरवी करते हो, तो फरमाया जाता है कि तुम अपने माबूदों को बेग़ैर देखे पूजते और यह अपने रब को देख कर उसकी इबादत करते हैं (फिर फरमाया) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इस में क्या कमाल कि जिब्रील को देख लें जिब्रील का कमाल है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

सल्लम की ज़्यारत से मुशर्रफ़ हों इमाम अहमद हंबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इन ज़माइर को जिब्रील की तरफ़ फेरा करते। एक मरतबा ख़लवत में लेटे हुए थे एक साहब ने पूछा हल *रआ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम रब्बहू।* क्या हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने रब को देखा यह सुनते ही उठ कर बैठ गये और फरमाने लगे : *रआहु रआहु हत्ता इन्क़तआ नफ़्सहू।* हुज़ूर ने अपने रब को देखा देखा देखा फ़रमाते रहे यहां तक कि सांस ख़त्म हो गई उस वक़्त के अवाम के ज़हन में यह मस्अला नहीं आ सकता था इसलिए अवाम में उसके मानी वह फरमाते थे और जब ख़ल्वत में पूछा तो चूंकि कोई अन्देशा न था इसलिए साफ़-साफ़ फरमा दिया (फिर फरमाया) यह वाक़या ऐसा है कि रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू को उसकी तस्रीह खुद नहीं मन्ज़ूर सूरः नजम शरीफ़ में कोई लफ़्ज़ तस्रीह का नहीं खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जिस हदीस में इस वाक़या को बयान फरमाया वह दोनों मानी को मुतहम्मिल फरमाते हैं। *नूरानीयुन अराहु।* इन्नी के मानी कैफ़ के भी हैं तो मानी यह होंगे नूर है उसको क्योंकर देखूं और *इन्नी ऐनमा* का मुरादिफ़ है तो मानी यह हैं नूर है जहां देखूं उसको।

मुअल्लिफ़ : मौलवी अब्दुल-करीम साहब रज़वी चित्तौड़ी ने उज़्लत नशीनी के मुतअल्लिक़ कुछ अर्ज़ किया उस पर इरशाद फ़रमाया आदमी तीन क़िस्म के हैं मुफ़ीद, मुस्तफ़ीद, मुंफरिद, मुफीद वह कि दूसरों को फाइदा पहुंचाए मुस्तफ़ीद वह कि खुद दूसरे से फाइदा हासिल करे मुंफरिद वह कि दूसरे से फाइदा लेने की उसे हाजत न हो और न दूसरे को फाइदा पहुंचा सकता हो। मुफीद और मुस्तफ़ीद को उज़्लत गज़ीनी हराम है और मुंफरिद को जाइज़ बल्कि वाजिब इमाम इब्ने सीरीन का वाक़या बयान फरमा कर इरशाद फरमाया वह लोग जो पहाड़ पर गोशा नशीन हो कर बैठ गये थे वह खुद फाइदा हासिल किए हुए थे और दूसरों को फाइदा पहुंचाने की उन में क़ाबलीयत न थी उनको गोशा नशीनी जाइज़ थी और इमाम इब्ने सीरीन पर उज़्लत हराम थी (फिर फरमाया) इमाम इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने लिखा है एक आलिम साहब की वफ़ात हुई उन को किसी ने ख़्वाब में देखा पूछा आपके साथ क्या मुआमला हुआ फरमाया जन्नत

अता की गई न इल्म के सबब वल्कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ इस निस्वत के सबब जो कुत्ते को राई के साथ होती है कि हर वक़्त भोंक-भोंक कर भेड़ों को भेड़िए से होशियार करता रहता है मानें न मानें यह उनका काम सरकार ने फरमाया कि भोंके जाओ वस इस क़द्र निस्वत काफी है। लाख रियाजते लाख मुजाहिदे इस निस्वत पर कुरवान जिस को यह निस्वत हासिल है उसको किसी मुजाहिदे किसी रियाज़त की ज़रूरत नहीं (फिर फरमाया) और उसी में रियाज़त किया थोड़ी है जो शख़्स उज़्लत नशीन हो गया न उसके क़ल्व को कोई तक्लीफ़ पहुंच सकती है न उसकी आंखों को न उसके कानों को। उस से कहिए जिसने ओखली में सर दिया है और चारों तरफ़ से मूसल की मार पड़ रही है कई हज़ार की तादाद में वह लोग होंगे जिन्होंने न मुझ को कभी देखा न मैंने कभी उनको देखा और रोज़ाना सुवह उठ कर पहले मुझे कोस्ते होंगे फिर और काम करते होंगे और बहम्दुलिल्लाह तआला लाखों की तादाद में वह लोग भी निकलेंगे जिन्होंने न मुझ को देखा और न मैंने उनको देखा और रोज़ाना सुवह उठ कर नमाज़ के वाद मेरे लिए दुआ करते होंगे (फिर फरमाया) गालियां जो छापते हैं अख़्वारों में और इश्तेहारों में वह अख़वार व इश्तेहार तो रद्दी में जल कर ख़ाकिस्तर हो जाते हैं लेकिन वह चुटकियां जो उनके दिलों में ली गई हैं वह क़ब्रों में साथ जाएंगी और इन्शाअल्लाह तआला हश्र में रुस्वा करेंगी सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के विसाल को तेरह सौ वरस से ज़ाइद हुए उस वक़्त तक तवरे से उन्हें नजात नहीं यह क्यों। इसलिए कि ग़ाशिया उठाया हक़ का अपने कन्धों पर और दूर मिटाया अह्ले वातिल का अल्लाह रहमत करे उमर पर कि हक़ गोई ने उसे ऐसा कर दिया कि उसका कोई दोस्त न रहा।

अर्ज़ : यह दुआ करना कि अल्लाह वहावियों को हिदायत करे जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : वहाविया के लिए दुआ फुज़ूल है *सुम्मा ला यऊदूना* उनके लिए आ चुका है वहावी कभी लौट कर न आएगा और जो हिदायत पा जाए वह वहावी न था हो चला था कुफ़्फ़ार वहां जा कर कहेंगे हमें वापस दुनिया में भेज कि तुझ पर ईमान लाएं फरमाया है *वलौ रदुल-आदू लेमा* नुहू अन्हु। अगर उन्हें फिर भेजा जाए तो वही करेंगे जिस से पहले मना किया गया था।

मुअल्लिफ़ : पंजशंवा के दिन वाद अस्र हस्वे मामूल ख़त वनाने के वास्ते हज्जाम हाज़िर हुआ उसके हाथों में वदवू थी नापसन्द फरमा कर धोने के लिए इरशाद फ़रमाया (फिर फरमाया) यह भी वेसव्री व ना शुक्री है सैयदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक मरतवा लोगों के साथ तशरीफ़ लिए जा रहे थे रास्ता में निहातय लतीफ़ खुशवू आई तमाम लोगों ने क़स्दन उसे सूंघा और आपने नाक वन्द कर ली आगे चल कर एक निहायत तेज़ वदवू आई सव ने नाक वन्द कर ली मगर आप खोले रहे लोगों ने सवव पूछा इरशाद फरमाया वह नेमत थी मैंने ख़ौफ़ किया कि शुक्रिया मैं उसका शुक्रिया अदा न कर सकूं और यह वला थी उस पर मैंने सब्र किया।

अर्ज़ : दाढ़ी चढ़ाना कैसा है।

इरशाद : निसई शरीफ़ में है। *मन अक़दा लेहयतुहू फ़ख़्वेरुहु अन्ना मुहम्मदन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वरीयुन मिन्हु*। जो शख़्स अपनी दाढ़ी चढ़ाए उसे ख़वर दे दो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस से वेज़ार हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर मेरी आंखों की रौशनी वहुत कम है।

इरशाद : आयतुल-कुर्सी शरीफ़ याद कर लीजिए हर नमाज़ के वाद एक वार पढ़िए नमाज़ पंजगाना की पावन्दी रखिए और औरतें कि जिन दिनों में उन्हें नमाज़ का हुक्म नहीं वह भी पांचों वक़्त आयतुल-कुर्सी इस नीयत से कि अल्लाह की तारीफ़ है न उस नीयत से कि कलामुल्लाह है पढ़ लिया करें और जव उस कलिमा पर पहुंचें *वला यऊदुहु हिफ़्ज़ुहुमा* दोनों हाथों की उंगलियां आंखों पर रख कर उस कलिमा को ग्यारह वार कहीं फिर दोनों हाथों की उंगलियों पर दम करके आंखों पर फेर लें।

नूर नूर नूर नूर नूर

सफेद चीनी की तशतरी पर उसे इसी तरह लिखें कि वाव और मीम के सर खुल रहें और अवे ज़मज़म शरीफ़ और न मिले तो आवे वारां और न मिले तो आवे ताज़ा से धो कर दो सौ छप्पन (२५६) वार उस पर *या नूर* पढ़ कर दम करें अव्वल व आख़िर तीन-तीन वार यह दरूद शरीफ़ *अल्लाहुम्मा नूर या नूर अन्नूर सल्ले अला नूरिका अल-मुनीर व आलेही व*

वारिक व सल्लिम। यह पानी आंखों पर लगाएं और बाक़ी पी लें।

३. टलिया के तावीज़ों का चिल्ला करें (फिर फरमाया) यह अमल ऐसे क़वी अत्तारीर हैं कि अगर सिद्क़ एतक़ाद हो तो इन्शाअल्लाह तआला गई हुई आंखें वापस आ जाएं।

मुअल्लिफ़ : एक साहब ने पानी पी कर बचा हुआ फेंक दिया उस पर इरशाद फरमाया फेंकना न चाहिए किसी बर्तन में डाल देते उस वक़्त तो पानी इफ़रात से है उस एक घूंट पानी की क़द्र नहीं जंगल में जहाँ पानी न हो वहां उसकी क़द्र मालूम हो सकती है कि अगर एक घूंट पानी मिल जाए तो एक इंसान की जान बच जाए। हज़रत ख़लीफ़ा हारून रशीद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि उलमा दोस्त थे दरबार में उलमा का मज्मा हर वक़्त रहता था। एक मरतबा पानी पीने के वास्ते मंगाया मुंह तक ले गये थे पीना चाहते थे कि एक आलिम साहब ने फरमाया अमीरुल-मुमिनीन ज़रा ठहरिए मैं एक बात पूछना चाहता हूं फौरन ख़लीफ़ा ने हाथ रोक लिया उन्होंने फरमाया अगर आप जंगल में हों और पानी मयस्सर न हो और प्यास की शिद्दत हो इतना पानी किस क़द्र क़ीमत देकर ख़रीदेंगे फरमाया वल्लाह आधी सलतनत देकर फरमाया बस पी लीजिए जब ख़लीफ़ा ने पी लिया उन्होंने फरमाया अब अगर यह पानी निकलना चाहे और न निकल सके तो किस क़द्र क़ीमत देकर उसका निकलना मोल ले लेंगे वल्लाह पूरी सलतनत देकर। इरशाद फरमाया बस आपकी सलतनत की यह हक़ीक़त है कि एक मरतबा एक चुल्लू पानी पर आधी बिक जाए और दूसरी बार पूरी उस पर जितना चाहे तकब्बुर कर लीजिए।

अर्ज़ : सब्ज़ रंग का जूता पहनना कैसा है।

इरशाद : जाइज़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शक्ल मुबारक शक्ले अक़्दस से मिलती थी या नहीं।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : फिर उस शेअ्र का क्या मतलब है।

नक़्शए शाहे मदीना साफ आता है नज़र
जब तसव्वुर में जमाते हैं सरापा ग़ौस का

इरशाद : उसके यह मानी हैं कि जमाले ग़ौसियत आईना है जमाले

अक़्दस का उस में वह शबीह मुबारक दिखाई देगी। (फिर फरमाया) इमाम हुसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शक्ले मुबारक सर से सीना तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशाबेह थी और इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की सीने से नाखुन पा तक और हज़रत इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सर से पांव तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशाबेह होंगे एक सहाबी हज़रत आबिस इब्ने रबीआ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शबाहत कुछ कुछ सरकार से मिलती थी जब वह तशरीफ लाते हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तख़्त से सरोक़द खड़े हो जाते (फिर फरमाया) और यह तो ज़ाहिरी शबाहत है वरना फिल-हक़ीक़त वह ज़ाते अक़्दस तो शबीह से मुनज़्ज़ह पाक बनाई गई है कोई उनके फज़ाइल में शरीक नहीं इमाम मुहम्मद बूसेरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह क़सीदा बुर्दा शरीफ़ में अर्ज़ करते हैं।

मुनज़्ज़ह अन शरीक फ़ी महासिनहू
फजौहर अल-हसन फीह ग़ैर मुन्क़सिम

हुज़ूर अपने तमाम फ़ज़ाइल व महासिन में शरीक से पाक हैं जौहर हुस्न आप में ग़ैर मुन्क़सिम है अह्ले सुन्नत की इस्तेलाह में जौहर उस जुज़ को कहते हैं जिसकी तक़्सीम मुहाल हो यानी हुज़ूर के हुस्न में से किसी को हिस्सा नहीं मिला।

अर्ज़ : जुमा पढ़ाना किस का हक़ है।

इरशाद : सुल्ताने इस्लाम या उसके नायब या उसके माज़ून का।

अर्ज़ : जहां सुल्ताने इस्लाम न हो वहां क्या आलिमे दीन उसका क़ायम मक़ाम माना जाएगा।

इरशाद : हां आलिमे दीन ही सुल्तान इस्लाम है वह हो या उसका नाइब या उसका माज़ून।

अर्ज़ : बजाए अत्तहीयात के अल्हम्दु शरीफ़ पढ़ गया अब क्या करे।

इरशाद : सिवाए क़्याम के तिलावते कुरआन न रुकूअ् में जाइज़ है न सुजूद में न क़अ्दा में भूल कर पढ़ गया तो सज्दा सह्व करे।

अर्ज़ : जिस तरह ईमान का तअल्लुक़ क़ल्ब से है कि बेग़ैर तस्दीक़े क़ल्बी ज़बानी कलिमा गोई कारआमद नहीं इसी तरह सिर्फ़ कुफ़्र बकने से भी कुफ़्र न होना चाहिए जब तक कि दिल से उसका इक़रार न करे।

इरशाद : ज़बान से बिला कराह उसका कलिमा कुफ़्र बकना सराहतन इस बात पर दलालत करता है कि उसके दिल में ईमान नहीं होता तो बिला कराह ऐसे लफ़्ज़ न बकता *अल-अमनु अकरहू व क़ल्बुहू मुतमइन्नुन बिल-ईमान*। फ़रमाया गया है सिर्फ़ सूरत इकराह का इतिस्ना है हदीस में ईमान की तारीफ़ आई है कि दोबारा काफिर होने को आग में डाले जाने से बदतर जाने अगर ऐसा जानता हरगिज़ बिला इकराह न बकता।

अर्ज़ : सज्दा शुक्र की नीयत नमाज़ के सज्दा में कर ली तो कुछ हरज तो नहीं।

इरशाद : कोई हरज नहीं और बेहतर यह कि नमाज़ से इलाहिदा करे।

अर्ज़ : नूरुल-ईज़ाह में है। *सज्दतु शुक्र मक्रूहतुन इन्दल-इमाम*।

इरशाद : इसमें से इमाम से तीन क़ौल मन्कूल हैं एक तो यही कि मक्रूह है और एक *लैसा बेशैइन* और सही यह कि मुस्तहब है।

अर्ज़ : जनाज़ा की नमाज़ तुलूअ् या गुरूब के वक़्त पढ़ सकता है।

इरशाद : जनाज़ा अगर आया ख़ास तुलूअ् या गुरूब के वक़्त या नमाज़े अस्र के बाद तो पढ़ सकता है और अगर पहले से लाया हुआ रखा है तो जब तक आफताब बुलन्द न हो या गुरूब न हो ले न पढ़े।

अर्ज़ : एक मरतबा इरशाद आली हुआ था कि मरने के लिए खुशी से तैयार रहे हुज़ूर जो मुज्रिम है वह कैसे खुश हो सकता है।

इरशाद : गुनाह छोड़े तौबा करे और खुशी से मौत के लिए तैयार रहे यह मतलब नहीं कि गुनाह करता रहे और मौत के लिए खुश रहे यह कैसे हो सकता है (फिर फ़रमाया) अल्लाह का बन्दा जब तौबा लाता है रब के हुज़ूर तो वह उस से ज़्यादा खुश होता है जितना वह शख़्स जिसकी ऊंटनी मआ ज़ादे राह के कम गई उसके मिल जाने पर खुश हो।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर कोई शख़्स ऐसे मक़ाम पर ज़िना करे जहां इक़ामते हुदूद न हो वहां तौबा करने से मुआफ़ी हो जाएगी या नहीं।

इरशाद : जिस गुनाह में सिर्फ़ हक़ अल्लाह तआला हो हक़्कुल-अब्द न हो वह तौबा से मुआफ़ हो जाएगा और बाज़ वह हैं जिन में हक़्कुल-अब्द भी शामिल होता है तो जब तक उस से मआफ़ न कराए सिर्फ़ तौबा से मुआफ़ न होंगे।

अर्ज़ : ज़िना में वह कौन हैं जिनका हक़ शामिल होता है।

इरशाद : बाज़ वक़्त औरत का भी हक़ होता है जब कि उस से जबरन ज़िना किया जाए और उसका बाप भाई शौहर जिस-जिस को उस ख़बर से आर लाहिक़ होगी उन सबका हक़ है उलमा में इख़्तिलाफ़ है बाज़ ने कहा कि साफ लफ़्ज़ों में उन से मुआफ़ी मांगे कि मैंने यह काम किया है मुआफ़ी चाहता हूं और बाज़ ने कहा यूं कह सकता है कि जो छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा तुम्हारा हक़ मेरे ज़िम्मा है मुआफ़ कर दो लेकिन यह क़ौल मरजूह है और मुफ़्ती को जाइज़ नहीं कि क़ौल मरजूह पर फतवा दे और न क़ाज़ी हुक्म दे सकता है फुक़हाए किराम तस्रीह फरमाते हैं। *अल्हुक्मु वल-फतिया बिल-क़ौलल-मरजूह जहला व ख़रक़ लिल-इज्मा*। क़ौल मरजूह पर फतवा और हुक्म देना जिहालत और इज्मा की मुख़ालिफ़त है (फिर फरमाया) उस बरेली में ग़द्र से पहले एक साहब ने अजीब शान से तौबा की कि न ऐसा कहीं देखा न सुना किसी औरत के साथ उन से गुनाह सरज़द हुआ बाद को नादिम हुए एक गढ़ा क़द आदम अकेले मकान में आ कर खोदा और उस औरत के शौहर को वहां ला कर उस गढ़े में कूदे तल्वार उसको दी उस वक़्त कहा यह ख़ता मुझ से सरज़द हुई है ख़्वाह क़त्ल करके मुझ को उस गढ़े में दफन कर दे किसी को ख़बर भी न होगी या अल्लाह के वास्ते मुआफ़ कर दे उसकी ज़बान से कुछ न निकला और मुआफ़ ही करना पड़ा।

अर्ज़ : अगर क़र्ज़दार है और मीआद पूरी हो चुकी है और डर यह है कि क़र्ज़ ख़्वाह क़ैद करा देगा और मकान कोई लेता नहीं है ऐसी हालत में दख़ली रहन करना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर हाजत सही है और सच्चे दिल से बेचना चाहता है और कोई नहीं लेता तो इजाज़त है (फिर फरमाया) मगर ऐसी सूरत बहुत कम होगी दस का माल नौ में फरोख़्त करेगा हर कोई लेगा और रहन में यह हालत होती है कि हज़ार का माल चार सौ में।

अर्ज़ : ख़िलाल करना सुन्नत है।

इरशाद : हां तिनके से करना सुन्नत है।

अर्ज़ : वुज़ू की हालत में झूठ बोला या ग़ीबत की या फहश बका तो वुज़ू में कोई ख़राबी तो नहीं आती।

इरशाद : मुस्तहब यह है कि फिर वुज़ू कर ले अगर नमाज़ उसी वुज़ू से पढ़ ली ख़िलाफ़े मुस्तहब किया।

अर्ज़ : अगर दवा में अफ़्यून इस क़द्र पड़ी हो कि नशा न लाए तो जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : हां अगर ऐसी सूरत हो कि उसका कोई असर वाक़े न होता हो और उसकी आदत न पड़े और आइन्दा भी कोई वात ज़ाहिर न हो तो जाइज़ है।

अर्ज़ : हदीस शरीफ़ में आया है। इन्नी हर्रम्तु कुल्लु मस्करिन व मुफ़्तरिन। और अफ़्यून मुफ़्तर है तो चाहिए कि हराम हो।

इरशाद : हां अगर हद तफ़्तीर को पहुंचेगी तो हराम है।

अर्ज़ : तो हुज़ूर शराव का भी जव तक हद उसका रुकू न पहुंचे यही हुक्म होना चाहिए।

इरशाद : वह तो हराम। लईना है मिस्ल पेशाब के नजिस है अपनी नजासत के सवव हराम है न उसका रुके सवव अगर एक क़तरा कुएं में पड़ जाए सारा कुआं नजिस हो जाएगा।

अर्ज़ : इमाम ज़ामिन का जो पैसा वांधा जाता है उसकी कोई असल है।

इरशाद : कुछ नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर यह किसी साहव का लक़व है।

इरशाद : हां इमाम अली रज़ा का रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु।

अर्ज़ : अगर मिट्टी आंखों में पड़ जाए और पानी निकले तो नाक़िज़ वुज़ू है या नहीं।

इरशाद : यह वह पानी नहीं जिस से वुज़ू टूटे हां दुखती आंख से अगर पानी निकले नाक़िज़े वुज़ू है।

अर्ज़ : हुज़ूर यह मशहूर है। *अल-वलायतु अफ़ज़ल मिनन्नुवुव्वते।*

इरशाद : यूं नहीं वल्कि यूं है। *वेलायतुन्नवी अफ़ज़लु मिन नुवुव्वतेही।* नवी की विलायत उसकी नुवुव्वत से अफ़्ज़ल है कि विलायत की तवज्जोह इल्लल्लाह है और नुवुव्वत की तवज्जोह इलल-मख़्लूक़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर वली की विलायत भी मुतवज्जेह इलल्लाह होती है।

इरशाद : हां मगर उसकी तवज्जोह इल्लल्लाह नवी की तवज्जोह इलल-ख़ल्क़ के करोड़वीं हिस्सा को नहीं पहुंचती।

अर्ज़ : हुज़ूर वुज़ुर्गाने दीन के एरास की तऐयुन में भी कोई मस्लहत है।

इरशाद : हां औलियाए किराम की अरवाहे तैयवा को उनके विसाल शरीफ़ के दिन कुवूर करीमा की तरफ़ तवज्जोह ज़्यादती होती है चुनांचे वह वक़्त जो ख़ास विसाल का है अख़ज़ वरकात के लिए ज़्यादा मुनासिव होता है।

अर्ज़ : हुज़ूर वुज़ुर्गाने दीन के एरास में जो अफ़आल नाजाइज़ होते हैं उन से उन हज़रात को तक्लीफ़ होती है।

इरशाद : विला शुवह और यही वजह है कि उन हज़रात ने भी तवज्जोह कम फ़रमा दी वरना पहले जिस क़द्र फ़्यूज़ होते थे वह अव कहां।

अर्ज़ : यह हुक्म जो फ़रमाया गया है कि मज़ार शरीफ़ पर पायती की तरफ़ से हाज़िर हो वरना साहिवे क़ब्र को सर उठा कर देखना पड़ेगा तो क्या आलमे वरज़ख़ में भी औलियाए किराम को सर उठाने की ज़रूरत पड़ती है।

इरशाद : हां अवाम को वल्कि आम्मा औलियाए किराम को भी उसकी ज़रूरत है और यह तो शाने नुवुव्वत में से है कि आगे पीछे यक्सां देखना वाज़ सहाव-ए-किराम ने जो नए मुसलमान हुए थे नमाज़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर सवक़त की वाद नमाज़ के हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम देखते हो कि मेरा मुंह क़िवला को है मैं ऐसा ही अपने पीछे देखता हूं जैसा आगे।

मुअल्लिफ़ : हज़रत ख़्वाजा ग़रीव नवाज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के तज़्किरा पर फरमाया कि हज़रत ख़्वाजा के मज़ार से वहुत कुछ फ़्यूज़ व वरकात हासिल होते हैं। मौलाना वरकात अहमद साहव मरहूम जो मेरे पीर भाई और मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाह तआला अलैह के शागिर्द थे उन्होंने मुझ से वयान किया कि मैंने अपनी आंखों से देखा कि एक हिन्दू जिसके सर से पैर तक फोड़े थे अल्लाह ही जानता है कि किस क़द्र थे ठीक दोपहर को आता और दरगाह शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों और पत्थरों पर लोटता और कहता ख़्वाजा उगन लगी है तीसरे रोज़ मैंने देखा कि विल्कुल अच्छा हो गया (फिर फ़रमाया) भागलपुर से एक साहव हर साल अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुआ करते एक वहावी रईस

से मुलाक़ात थी उसने कहा-मियां हर साल कहां जाया करते हो बेकार इतना रुपया सर्फ़ करते हो उन्होंने कहा चलो और इंसाफ़ की आंख से देखो तुम को इख़्तेयार है ख़ैर एक साल वह साथ में आया देखा कि एक फ़क़ीर सोंटा लिये रौज़ा शरीफ़ का तवाफ़ कर रहा है और यह सदा लगा रहा है ख़्वाजा पांच रुपया लूंगा और एक घंटे के अंदर लूंगा और एक ही शख़्स से लूंगा जव उस वहावी को ख़्याल हुआ कि अब बहुत वक़्त गुज़र गया एक घंटा होगया और अव तक उसे किसी ने कुछ न दिया जेब से पांच रुपया निकालकर उनके हाथ पर रखे और कहां लो मियां तुम ख़्वाजा से मांग रहे थे ख़्वाजा क्या देंगे लो हम देते हैं फ़क़ीर ने वह रुपया तो जेब में रखे और एक चक्कर लगाकर ज़ोर से कहा, ''ख़्वाजा तोरे वलहारी जाऊं दिलवाए भी तो कैसे ख़वीस मुन्किर से'' (फिर फ़रमाया) यमन में हज़रत सैयदी अहमद विन उलवान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का भी मज़ार शरीफ़ ऐसा ही मश्हूर है।

अर्ज़ : हुज़ूर कुर्वे क़यामत के अलामात अहादीसे सहीहास से सावित हैं।

इरशाद : उनके बारह में सही हदीसें भी आई है और हसन व ज़ईफ़ व मौज़ूअ़ भी मगर दज्जाल का खुरूज इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़ुहूर हज़रत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का नुज़ूल, आफताव का मग़्रिव से तुलूअ़ यह सव अहादीसे मुतावतेरा से सावित है जिस रोज़ आफताव मग़्रिव से निकलेगा वही वक़्त दर तौवा वन्दे होने का होगा उन्हीं अय्याम में दाव्वतुल-अर्ज़ कावा मुअज़्ज़मा के कुर्व में ज़मीन से निकलेगा और घोड़े की तरह फरेरी लेकर ग़ायव हो जाएगा फिर दोवारा निकलेगा और उसी तरह फरेरी लेकर ग़ायव हो जाएगा। तीसरी मरतवा जव निकलेगा तो दाहिने हाथ में हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का असा होगा और वाएं हाथ में सैयदना सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अन्गुशतरी होगी जो इल्मे इलाही में मुसलमान होगा उसकी पेशानी पर असा से नूरानी निशान कर देगा और जो काफिर होगा अन्गुशतरी से काला दाग़ लगा देगा हदीस शरीफ़ में आया है एक दस्तर्ख़्वान पर चन्द आदमी बैठे हुए खाना खाते होंगे यह कहेगा कि वह काफिर है वह कहेगा कि यह मुसलमान फिर न कोई मुसलमान काफिर हो सकेगा और न काफिर मुसलमान (फिर फरमाया) क़यामत तीन

क़िस्म की है क़यामते सुग़रा यह मौत है। *मन माता फ़क़द क़ामत क़यामतुहू।* जो मर गया उसकी क़यामत हो गई दूसरी क़यामते उस्ता वह यह कि एक क़र्न के तमाम लोग फना हो जाएं और दूसरे क़र्न के नए लोग पैदा हो जाएं तीसरी क़यामते कुबरा वह यह कि आसमान व ज़मीन सब फना हो जाएंगे।

अर्ज़ : कुरआन शरीफ़ में आया है।

और यह भी आया है। जव से यहूद व नसारा क़ब्ल क़यामत ईमान ले आएंगे तो अदावत किस तरह होगी।

इरशाद : किताबियों से कोई ऐसा न होगा जो ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माना में उनकी वफ़ात से पहले उन पर ईमान न लाए फिर ज़माना वदलेगा ख़ैर से शर की तरफ़ इस्लाम से कुफ़्र की तरफ़ यहूद व नसारा वाक़ी न रहे होंगे सब मुसलमान हो गये होंगे लेकिन जो उनकी नस्लें होंगी उस में यहूद भी होंगे नसारा भी होंगे हुनूद भी होंगे ग़रज़ सब तरह के काफिर होंगे उनके आपस में क़यामत तक दुश्मनी व अदावत होगी।

अर्ज़ : यह आयते करीमा आम है या ख़ास। *व इन मिन अहलिल-किताबे अलख़।*

इरशाद : इस आयत की दो तफ़्सीरें हैं अगर मौतेही की ज़मीर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तरफ़ फेरी जाए तो यह आयत उन सबके वास्ते होगी जो उनके ज़माना में होंगे अब पहले जो हैं वह कुफ़्र पर मरते हैं इसी तरह जो वाद में होंगे वह भी कुफ़्र पर मरेंगे हां आपके ज़माना में जो किताबी होंगे उन में से वह जो तल्वार से बच रहे होंगे कोई ऐसा न होगा जो आप पर ईमान न लाए और दूसरी तफ़्सीर यह है कि *मौतेही* की ज़मीर किताबी की तरफ़ फिरती है अब यह आयत आम होगी कि कोई किताबी नहीं मरता मगर मरते वक़्त जब उसको अज़ाव दिखाया जाता हे पर्दे उठा दिए जाते हैं तो कहता है कि मैं ईमान लाया उस ईसा पर जिस ने बशारत दी थी अहमद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की लेकिन यह ऐसे वक़्त का ईमान होगा जब कि नफ़ा न देगा ईमान यास बेकार है जब नार सामने मलाइका अज़ाव सामने उस वक़्त का ईमान मुफ़ीद नहीं। जब फ़िरऔन डूबने लगा। वोला *आमन्तु बिल्लज़ी आमन्तु बेही बनू इसराईल* में ईमान लाया उस पर जिस पर बनी

इसराईल ईमान लाए फरमाया गया। *आल-आना वक़द असैता मिन क़ब्ल* अब ईमान लाता है और उसके पहले नाफरमान था।

अर्ज़ : हुज़ूर कुरआन शरीफ़ में आया है।

(साइल की यह अर्ज़ ख़त्म न हुई थी ख़त्म होने से पहले ही इरशाद फरमाया) *वला अल्लज़ीना यमूतूना वहुम कुफ़्फ़ारुन*। (फिर फरमाया) मुसलमान की तौबा यास के मक़बूल होने में इख़्तिलाफ़ है और सही यह है कि मक़बूल है और कुफ़्फ़ार की तौबा यास यक़ीनन मरदूद, व ना मक़बूल है।

अर्ज़ : *वलकुम फ़िल-अर्ज़े मुस्तक़िर्रुन व मताउन इला हीन*। इस से यह साबित होता है कि बनी आदम में से कोई शख़्स ज़मीन के सिवा कहीं न जाएगा और यह ख़िताब तमाम बनी आदम को आम है तो चाहिए कि ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी आसमान पर तश्रीफ़ फ़रमा न हों।

इरशाद : बेशक यह आम है कि इसके माने यह है कि हर शख़्स को ज़मीन पर करार है ईसा अलैहिस्सलाम को भी क़रार ज़मीन ही पर है ज़मीन से कोई जुदा न होगा और अगर यह मानी लिए जाएं कि ज़मीन से कोई किसी वक़्त जुदा न होगा तो मेअ्राज जस्दी से भी इंकार करना पड़ेगा और चाहिए कि समुन्द्र (यूंही हवाई जहाज़ पर उड़ना सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम के तख़्त का हवा पर जाना बाज़ औलियाए किराम का अपनी करामत से हवा पर चलना। मुअल्लिफ़ ग़ुफ़िरा लहू।) पर चलना मुहाल हो कि उस वक़्त भी ज़मीन पर क़रार नहीं होता लेकिन हर शख़्स जानता है कि समुन्द्र पर थोड़ी देर के वास्ते चला जाना ज़मीन पर क़रार होने के मनाफ़ी नहीं।

अर्ज़ : लेकिन ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम तो कितनी सदियों से आसमान पर तशरीफ़ फरमा हैं उनका मुस्तक़िर्र तो आसमान ही पर हो गया।

इरशाद : वह ऐसे आलम में हैं जहां हज़ार बरस का एक दिन है। *व इन्ना यौमन इन्दा रब्बुका कअल्फ़े सनतिन मिम्मा तउद्दून*। तो शायद एक दिन गुज़रा होगा दूसरे दिन के कुछ हिस्से में उतर आएंगे।

अर्ज़ : एक मुनाजात हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ मन्सूब है उस में यह अल्फ़ाज़ हैं। इब्ने ईसा इब्ने मूसा

इब्ने यहया इब्ने नूह।

इरशाद : यह निस्बत झूठ है और उसका वर्द भी अच्छा नहीं कोई शख़्स सिद्दीक़ तख़ल्लुस होगा जिस को अरबी इबादत भी लिखना न आती थी।

अर्ज़ : कुरआने अज़ीम में फरमाया गया।

इरशाद : अल्लाह तआला फरमाता है। *अल्लाहु यतवफ़्फ़लअन्फ़ुस हीना मौतिहा वल्लती लम तुमित फी मनामिहा।* अल्लाह ले लेता है जानों को उनकी मौत के वक़्त और उन जानों को जो नहीं मरें उनके सोने के वक़्त। एक लफ़्ज़ "*तुवफ़्फ़ा*" का दोनों के वास्ते फरमाया गया *तुवफ़्फ़ा* मनाम को भी शामिल है और मौत को भी तो अब मानी यह होंगे कि ऐ ईसा मैं तुमको सुला देने वाला हूं और उठाने वाला हूं अपनी तरफ़ और पाक करने वाला हूं तुम को काफिरो से और फर्ज़ किया जाए *तुवफ़्फ़ा* के मानी अगर मौत ही के हैं तो यह कहां से निकला कि तुम को वफ़ात देने वाला हों फिर तुम को उठाने वाला हूं अपनी तरफ़ फ नहीं तम नहीं व है और वह तरतीब पर दलालत नहीं करता सिर्फ़ जमा के लिए आता है और क ख़िताब जो *राफ़ेउका* में है वह न सिर्फ़ रूह से ख़िताब है और न सिर्फ़ जिस्म से बल्कि *रूहुन मअल-जसदे* मुख़ातब है अगर सिर्फ़ रूह मुराद होती तो *राफ़ेओका* न फरमाया जाता बल्कि *राफ़ेओ रूहिका* इसी तरह उलमाए किराम ने मेअ्राज जस्दी को फरमाया है कि फरमाया गया है असरा बेअब्देही अब्दुन रूहुन मअल-जसदे का नाम है अगर मेअ्राज रूही होती तो *इसरा बेरूहुन बेअब्दुहू।* फरमाया जाता।

अर्ज़ : बग़ैर इजाज़त मुतवल्ली के मस्जिद में वअ्ज़ कह सकता है या नहीं ख़ुसूसन इस हालत में जब कि मुतवल्ली का हुक्म हो कि बेग़ैर मेरी इजाज़त के कोई वअ्ज़ न कहे।

इरशाद : मुतवल्ली अगर आलिमे दीन है और यह रोक इस वजह से है कि पहले वह वाइज़ के अक़ाइद जांच ले सुन्नी सहीहुल-अक़ीदा पाए तो वअ्ज़ की इजाज़त दे ऐसी हालत में ग़ैर उसकी इजाज़त के वअ्ज़ कहना जाइज़ नहीं और अगर ऐसा नहीं तो मुतवल्ली को रोकने का मजाज़ नहीं।

अर्ज़ : ज़ैद अपनी ज़िन्दगी में अपने लिए ईसाले सवाब कर सकता

इरशाद : कह सकते हैं तावील के दर्जे में होगी।

अर्ज़ : तावील कहां तक जाइज़ है।

इरशाद : जहां तक लफ़्ज़ मुहतमिल हो (फिर फरमाया) *व लिल-आख़िरते ख़ैरुन लका मिनल-ऊला।* की तफ़्सीर ज़ाहिर यही है कि आख़िरत आपके वास्ते दुनिया से बेहतर है और मैं हमेंशा उसकी यही तावील करता हूं। *वस्साअतिल-आख़िरते ख़ैरुन लका मिनस्साअतिल-ऊला।* कि जो साअत आती है वह गुज़र जाने वाली साअत से आपके लिए अफ़ज़ल है।

अर्ज़ : खड़ाऊं पहनना कैसा है।

इरशाद : सही रिवायत से सावित है कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बाद वुज़ू खड़ावें पहना करते।

अर्ज़ : खुतबा में खुलफ़ाए राशिदीन रज़ि अल्लाहु अन्हुम का ज़िक्र तो ज़मान-ए-अव्वल में न था।

इरशाद : ज़मान-ए-अव्वल में सावित है फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने आपका ज़िक्र खुतबा में किया वाद आपके ज़िक्र के सैयदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र किया उसकी ख़बर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु को पहुंची सख़्त नाराज़ हुए कि तुम ने अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र मेरे वाद क्यों किया मुझ से पहले चाहिए था ज़िक्र करने पर नाराज़ी न फरमाई।

अर्ज़ः*रग़मन ला नौफ़ुन अल-वहाबियते वरीफ़ज़ीयते*। खुतवा में सरकार हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र कैसा है।

इरशाद : जाइज़ व मुस्तहसन है और मेरे तो अक्सर खुतवों में हुज़ूर का ज़िक्र होता है हां इल्तिज़ाम से नहीं।

अर्ज़ : जब कि आलिमे दीन हक़ीक़तन सुल्ताने इस्लाम है और *ऊलुल अमरे मिन्कुम* से उलमाए दीन ही मुराद हैं तो जिस जगह वादशाह इस्लाम न हो वहां खुतवा में आलिमे दीन का नाम लेकर उसके वास्ते दुआ करना कैसा है।

इरशाद : जाइज़ है जिस तरह सुल्तान इस्लाम दुआ का मुस्तहिक़ है इसी तरह आलिमे दीन भी।

अर्ज़ : सैयद के लड़के को उस का उस्ताद तादीबन मार सकता है या नहीं।

इरशाद : क़ाज़ी जो हुदूदे इलाहिया क़ायम करने पर मज्बूर है उसके सामने अगर किसी सैयद पर हद्दे सावित हुई तो वावजूद कि उस पर हद लगाना फ़र्ज़ है और वह हद लगाएगा लेकिन उसको हुक्म है कि सज़ा देने की नीयत न करे वल्कि दिल में यह नीयत रखे कि शहज़ादे के पैर में कीचड़ लग गई है उसे साफ़ कर रहा हूं तो क़ाज़ी जिस पर सज़ा देना फ़र्ज़ है उसको तो यह हुक्म है तावा मुअल्लिम चेह रसद।

अर्ज़ : शावान में निकाह करना कैसा।

इरशाद : कोई हरज नहीं हां यह आया है। *ला निकाहा बैनल-ईदैन।* दो ईदों के दर्मियान निकाह नहीं उस से मुराद यह है कि जुमा के दिन अगर ईद पड़े तो ज़ाहिर है कि जुमा व ईदैन के दर्मियान फ़ुर्सत कहां हो सकती है।

अर्ज़ : हज़रत उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु क्योंकर इस्लाम लाए।

इरशाद : हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु उस वक़्त ईमान लाए जब कुल मर्द व औरत ३६ मुसलमान थे आप चालीसवें मुसलमान हैं इसी वास्ते आपका नाम मुतम्मिम अल-अरबईन है यानी चालीस मुसलमानों के पूरा करने वाले जब आप मुसलमान हुए तो यह आयत नाज़िल हुई। *या ऐयुहन्नबीयु हस्बुकल्लाहु व मनित्तबअका मिनल-मुमिनीन*। ऐ नबी तुझ को काफी है अल्लाह और इस क़द्र लोग जो अब तक मुसलमान हो गये कुफ़्फ़ार ने जब सुना तो कहा आज हम और मुसलमान आधो आध हो गये जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम हाज़िर हुए अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हुज़ूर को खुशख़बरी हो कि आज आसमानों पर उमर के इस्लाम लाने पर शादी रचाई गई है और आपके इस्लाम लाने का वाक़या यह है कि कुफ़्फ़ार हमेशा सरकार की ईज़ा रसानी की फ़िक्र में रहते आयते करीमा नाज़िल हुई वल्लाहु यासिमुका मिनन्नासे अल्लाह तुम्हारा हाफ़िज़ व नासिर है कोई तुम्हारा कुछ नहीं कर सकता उस वक़्त तक यह भी मुसलमान न हुए थे अबू जहल लईन ने एलान दिया कि शख़्स उसको इस क़द्र इंआम दूंगा। उनको जोश आया तल्वार नंगी कर ली और क़सम खाई कि उसको नियाम में न करेंगे जब तक कि मआज़ल्लाह

अपने इरादे को पूरा न कर लेंगे मआरिज में है कि उन्होंने तो यह क़सम खाई और उधर रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू ने क़सम याद फरमाई कि यह तल्वार नियाम में न होगी ता वक़्ते कि कुफ़्फ़ार को उसी से क़त्ल न करें। जा रहे थे रास्ता में अब्दुल्लाह बिन नईम सहाबी मिले देखा निहायत गुस्सा की हालत में सुर्ख़ आंखें नंगी तल्वार लिए हैं पूछा। कहां जा रहे हो उन्होंने अपना इरादा ज़ाहिर किया अब्दुल्लाह बिन नईम ने कहा बनी हाशिम के हमजों से कैसे बचोगे उन्होंने कहा शायद तू भी मुसलमान हो गया है तुझी से शुरू करूं अब्दुल्लाह बिन नईम ने फरमाया मेरी क्या फ़िक्र करते हो अपने घर में तो जा कर देखो तुम्हारे बहन बहनोई दोनों मुसलमान हो गये हैं। उनको ग़ैज़ आया सीधे बहन के मकान पर गये दरवाज़ा बन्द पाया अन्दर से पढ़ने की आवाज़ आ रही थी उनकी बहन को हज़रत खुब्बाब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सूरः ताहा शरीफ़ सिखा रहे थे। आवाज़ अजनबी कलाम अजनबी ख़ैर आवाज़ दी उनकी बहन ने सहीफ़ा को किसी गोशा में छुपा दिया। और हज़रत खुबाब एक कोठरी में छुप गये दरवाज़ा खोला गया आते ही बहन से पूछा तू दीन से फिर गई इस्लाम में राफ़ज़ियों का सातक़िया कहां साफ़ कह दिया मैंने सच्चा दीने इस्लाम कुबूल किया ख़ैर उन्होंने तल्वार से तो नहीं मारा मगर हाथ से मारना शुरू किया यहां तक कि ख़ून बहने लगा जब आपकी बहन ने देखा कि छोड़ते ही नहीं तो कहा ऐ उमर तुम मार ही डालो मगर दीने इस्लाम हम से न छूटेगा जब उन्होंने ख़ून बहता हुआ देखा गुस्सा फुरो हुआ अपनी बहन को छोड़ दिया। थोड़ी देर के बाद कहा कि मैंने नए कलाम की आवाज़ सुनी थी वह मुझे दिखाओ आपकी बहन ने कहा तुम मुश्रिक हो उस को छू नहीं सकते उन्होंने ज़बरदस्ती करके मांग लिया दो तीन आयतें पढ़ीं फौरन उनके मुंह से निकला वल्लाहु मा हाज़ल-कलामु अल-बश्र खुदा की क़सम यह कलाम बश्र का नहीं यह सुन कर हज़रत खुबाब फौरन कोठरी से निकल आए और कहा ऐ उमर तुम्हें खुशख़बरी हो कल ही हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई। *अल्लाहुम्मा अइज़्ज़ल-इस्लाम बेअबी जहल बिन हि शाम औ बेउमर बिनुल-ख़त्ताब*। इलाही इस्लाम को इज़्ज़त दे अबू जहल या उमर के ज़रिया से अल्हम्दु लिल्लाह कि हुज़ूर की दुआ तुम्हारे हक़ में कुबूल हुई उन्होंने फरमाया हुज़ूर कहां तशरीफ़

फरमा हैं हज़रत खुबाब ने फरमाया दारे अरक़म में उन्होंने कहा मुझे ले चलो हज़रत खुबाब दरे दौलत पर लेकर हाज़िर हुए यहां मुसलमान बख़ौफ़े कुफ़्फ़ार छुप कर नमाज़ पढ़ते थे। दरवाज़ा पर आवाज़ दी अन्दर से आवाज़ आई "कौन" उन्होंने कहा उमर जुअफ़ाए मुस्लेमीन ख़ाइफ़ हुए दो तीन आवाज़ें दीं मगर जवाब न दिया गया जब उन्होंने सख़्ती से आवाज़ दी सैयदना अमीर हमज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया किवाड़ खोल दिया जाए अगर ख़ैर के लिए आया है फ़बिहा और अगर इरादा शर से आया है तो वल्लाह उसी की तल्वार से उस का सर क़लम कर दूंगा दरवाज़ा खुला यह अन्दर गये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम खड़े हो गये और उनके शाना पर हाथ रख कर फरमाया उमर क्या वह वक़्त नहीं आया कि तू मुसलमान हो। फरमाते हैं मुझे यह मालूम हुआ कि एक अज़ीमुश्शान पहाड़ मेरे ऊपर रख दिया गया यह अज़्मते नुबुव्वत थी फौरन अर्ज़ किया *अ हदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू*। यह देखते ही मुसलमानों ने खुश हो कर बआवाज़ बुलन्द तक्बीरें कहीं जिन से पहाड़ गूंज उठे उन्होंने मुसलमान होते ही अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह कुफ़्फ़ार अलल-एलान अपने माबूदाने बातिल की परस्तिश करें और हम मुसलमान छुप कर अपने सच्चे खुदा की इबादत करें हम एलानिया मस्जिदिल हराम में नमाज़ पढ़ेंगे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुसलमानों को लेकर बरामद हुए मुस्जिदे हराम शरीफ़ में अज़ान कही गई दो सफ़ें हुईं एक में हज़रत हम्ज़ा शरीक हुए और दूसरी में उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जिस काफिर ने देखा चिपका अपने घर में घुस गया जब जुअफ़ाए मुस्लेमीन ने हिजरत की तो कुफ़्फ़ार से छुप-छुप कर चले गये उन्होंने जब हिजरत फरमाई एक-एक मज्मा कुफ़्फ़ार में नंगी शम्शीर ले जा कर फरमाया जिस ने मुझे जाना उसने जाना और जिस ने न जाना हो वह अब जान ले पहचान ले मैं हूं उमर जिसे अपनी औरत बेबह और अपने बच्चे यतीम करना हों वह मेरे सामने आए मैं अब हिजरत करता हूं फिर यह न कहना कि उमर भाग गया तमाम कुफ़्फ़ार सर झुकाए बैठे रहे किसी ने चूं भी न की। (फिर फरमाया) सैयदना उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ज़ेरे क़दम मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम हैं

और सैयदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ज़ेरे क़दम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम हैं इसी वास्ते उनकी शिद्दत और उनकी रहमदिली दरज-ए-कमाल पर थी।

अर्ज़ : हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु किस नबी के ज़ेरे क़दम थे।

इरशाद : एक लाख चौबीस हज़ार सहाबी हैं किस किस तरह किस किस के ज़ेरे क़दम बताऊं नमा भी तो सब के नहीं मालूम वह सहाबा जिन के नाम मालूम हैं सात हज़ार हैं हुज्जतुल-विदाअ् में एक लाख चौबीस हज़ार थे।

अर्ज़ : यह भी हदीस शरीफ़ में आया है कि अली मेरा नज़ीर है।

इरशाद : ज़ाल से या ज़ा से अगर ज़ाल से नज़ीर मुराद है तो तमाम उलमा हुज़ूर की नियाबत में नज़ीर हैं मगर यह कोई हदीस नहीं हां यह आया है। *अल-उलमाओ वरसतुल-अंबिया*। उलमा अंबिया के वारिस हैं और अगर ज़ा से नज़ीर लिया है तो यह सरीह कलिमा कुफ़्र है हदीस में कहां से आ सकता है वह ज़ात तो अल्लाह तआला ने बेमिस्ल व बेनज़ीर बनाई हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नज़ीर मुहाल बिज़्ज़ात है तहत क़ुदरत ही नहीं। हो ही नहीं सकता न अव्वलीन में न आख़िरीन में न अंबिया में न मुरसलीन में।

अर्ज़ : हज़रत सैयदी अहमद ज़रूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया है जब किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंचे या ज़रूक़ कह कर निदा करे मैं फौरन उसकी मदद करूंगा।

इरशाद : मगर मैंने कभी इस क़िस्म की मदद न तलब की जब कभी मैंने इस्तिआनत की या ग़ौस ही कहा यक दर गीर मुहकम गीर मेरी उमर का तीसवां साल था कि हज़रत महबूबे इलाही की दर्गाह में हाज़िर हुआ एहाता में मज़ामीर वग़ैरह का शोर मचा था तबीअत मुन्तशिर होती थी मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर मैं आपके दरबार में हाज़िर हुआ हूं इस शोर व शग़ब से मुझे नजात मिले जैसे ही पहला क़दम रौज़-ए-मुबारक में रखा है कि मालूम हुआ सब एक दम चुप हो गये मैं समझा कि वाक़ई सब लोग ख़ामोश हो गये क़दम दर्गाह शरीफ़ से बाहर निकाला फिर वही शोर व गुल था फिर अन्दर क़दम रखा फिर वही ख़ामोशी। मालूम हुआ कि यह सब हज़रत का तसर्रुफ़ है यह बैय्यिन

करामत देख कर मदद मांगनी चाही बजाए हज़रत महबूबे इलाही रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नाम मुबारक के या ग़ौसाह ज़बान से निकला वहीं मैंने अक्सीरे आज़म क़सीदा भी तस्नीफ़ किया (फिर इरशाद फरमाया) इरादत शर्त अहम है बैअत में बस मुर्शिद की ज़रा सी तवज्जोह दरकार है और दूसरी तरफ़ अगर इरादत नहीं तो कुछ नहीं हो सकता। एक साहब हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ फरमा हैं और नीचे एक मख़्लूक़ जमा है हर एक अपनी-अपनी चिट्ठी देता है हज़रत उसको बारगाहे रब्बुल-इज़्ज़त में पेश करते हैं यह चुपके खड़े रहे जब हज़रत ने बहुत देर तक उन्हें देखा और उन्होंने कुछ न कहा तो खुद फरमाया। *हाता आरज़ा क़िस्सतुका* लाओ कि मैं तुम्हारी अर्ज़ी पेश करूं उन्होंने अर्ज़ किया ओ शेख़ी *अज़लूहु*। क्या मेरे शेख़ को माज़ूल कर दिया गया *वल्लाहु मा अज़लूहु वलन यअ़्ज़ुलूहु*। खुदा की क़सम उनको माज़ूल नहीं किया और न कभी उनको माज़ूल करेंगे उन्होंने अर्ज़ की तो बस मेरा शेख़ काफी है आंख खुली हाज़िर हुए दरबार में सरकारे ग़ौसियत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के कि वाक़या अर्ज़ करें क़ब्ल उसके कि कुछ अर्ज़ करें हुज़ूर ने इरशाद फरमाया *हाता आरज़ा क़िस्सतुका*। लाओ कि तुम्हारी अर्ज़ी पेश करूं (फरमाया) इरादत यह है। जब तक मुरीद यह एतक़ाद न रखे कि मेरा शेख़ तमाम औलियाए ज़माना से मेरे लिए बेहतर है नफ़ा न पाएगा अली बिन हैती ने जो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ख़ास ख़लीफ़ा हैं एक बार हुज़ूर की दावत की उनके ख़ास मुरीद थे हज़रत अली जौसक़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु यह खाना लाए ख़्याल करते हैं कि रोटियां किस के सामने पहले रखूं अपने शैख़ के सामने रखता हूं तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शान के ख़िलाफ़ है और अगर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के सामने रखता हूं तो इरादत तक़ाज़ा नहीं करती उन्होंने इस तरह रोटियां घुमाईं कि दोनों के हुज़ूर एक साथ जा कर गिरीं हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया यह मुरीद तुम्हारा बहुत बाअदब है अली बिन हैती ने अर्ज़ किया बहुत तरक़्क़ियां कर चुका है अब उसको हुज़ूर अपनी ख़िदमत में लें अली जौसक़ी यह सुनते ही एक कोना में गये और रोना शुरू किया हुज़ूर ने फरमाया उसको अपने ही पास रहने

दो जिस पिस्तान का हिला हुआ है उसी से दूध पिएगा दूसरे को नहीं चाहता (फिर फरमाया) अपने तमाम हवाइज में अपने शैख़ ही की तरफ़ रुजूअ् करे।

अर्ज़ : इस हदीस के क्या मानी हैं : *लौ काना मूसा हैयन मा वसअहू इल्ला इत्तिबाई।*

इरशाद : अगर मूसा तशरीफ़ लाएं और तुम मुझे छोड़ कर उनका इत्तिबा करो गुम्राह हो जाओगे हालांकि नबी-नबी में बहैसियत नुवुव्वत के कुछ फ़र्क़ नहीं वजह यह हे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नासिख़ जमीअ् अदयाने साबेक़ा हैं। बहुत अहकामे शरीअत मौसवी और शरीअते ईसवी के हमारी शरीअत में मन्सूख़ हुए तो अगर उन अहकाम को छोड़ कर उनकी पैरवी की जाए यक़ीनन गुमराही है अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और चन्द यहूद मुशर्रफ़ बाइस्लाम हुए और नमाज़ में तौरेत शरीफ़ भी पढ़ने की इजाज़त चाही आयते करीमा नाज़िल हुई।

ऐ मुसलमानो! अगर मुसलमान होते हो तो पूरे मुसलमान हो जाओ शैतान के फरेब में न पड़ो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

अर्ज़ : शैख़ के हुज़ूर चिपका रहना अफ़ज़ल है या नहीं।

इरशाद : बेकार बातों से तो हर वक़्त परहेज़ चाहिए और शैख़ के हुज़ूर ख़ामोश रहना अफ़ज़ल है ज़रूरी मसाइल पूछने में हरज नहीं औलियाए किराम फरमाते हैं शैख़ के हुज़ूर बैठ कर ज़िक्र भी न करे कि ज़िक्र में दूसरी तरफ़ मशग़ूल होगा और यह हक़ीक़तन मुमानअते ज़िक्र नहीं बल्कि तक्मीले ज़िक्र है कि वह जो करेगा बिला तवस्सुल होगा और शैख़ की तवज्जोह से जो ज़िक्र होगा वह बतवस्सुत होगा यह उस से बदरजहा अफ़ज़ल है (फिर फरमाया) असल कार हुस्ने अक़ीदत है यह नहीं तो कुछ नफ़ा नहीं और सिर्फ़ हुस्ने अक़ीदत हैं तो ख़ैर इत्तिसाल तो है (फिर फरमाया) परनाला कि मिस्ल तुम को फ़ैज़ पहुंचेगा। हुस्ने अक़ीदत होना चाहिए।

अर्ज़ : हुज़ूर क्या यह सही है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफ़ाते अक़्दस के वक़्त मौला अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया सब्र बेहतर है मगर आप पर और रोना बुरा है मगर आप पर।

इरशाद : यह अल्फाज़ नज़र से न गुज़रे बहुत मुम्किन है कि ऐसा हुआ हो।

अर्ज़ : अगर उसको सही माना जाए तो उसके क्या मानी होंगे।

इरशाद : मानी ज़ाहिर हैं सब्र होता है मुतनाही रंज पर और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुदाई का रंज हर मुसलमान को ग़ैर मुतनाही है तो ग़ैर मुतनाही पर सब्र क्योंकर होगा।

अर्ज़ : लेकिन हमारे उलमाए किराम ग़म ताज़ा करने को हराम फरमाते हैं।

इरशाद : ग़म ताज़ा करना अपनी तरफ से होता है और यहां जो रंज है वह अपने अख़्तियार में नहीं।

अर्ज़ : तो अगर बेअख़्तियारी में अपने अज़ीज़ की मौत पर सब्र न करे तो जाइज़ होगा।

इरशाद : बेअख़्तियारी बना लेते हैं वरना अगर तबीअत को रोका जाए तो यक़ीन है कि सब्र हो सकता है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लिए जा रहे थे राह में मुलाहिज़ा फरमाया कि एक औरत अपने लड़के की मौत पर नौहा कर रही है हुज़ूर ने मना फरमाया और इरशाद फरमाया सब्र कर, वह अपने हाल में ऐसी बेख़बर थी कि उसको न मालूम हुआ कि कौन फरमा रहे हैं जवाब बेहूदा दिया कि आप तशरीफ़ ले जाएं मुझे मेरे हाल पर छोड़ें हुज़ूर तशरीफ़ ले गये बाद को लोगों ने उस से कहा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया था वह घबराई और फौरन दरबार में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझे मालूम न हुआ कि हुज़ूर मना फरमा रहे हैं अब मैं सब्र करती हूं इरशाद फरमाया *अस्सबरु इन्दा अस्सदमतिल-ऊला।* सब्र पहली ही बार करती तो सवाब मिलता फिर तो सब्र आ ही जाता है इस से मालूम हुआ कि अगर आदमी सब्र करे तो हो सकता है इमाम मुहम्मद बूसेरी रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं नफ़्स बच्चा की मिस्ल है कि अगर उसको दूध पिलाए जाओ जवान हो जाएगा और पीता रहेगा और अगर छुड़ा दो छोड़ देगा मैंने खुद देखा गांव में एक लड़की १८ या २० बरस की थी मां उसकी ज़ईफ़ा थी उसका दूध उस वक़्त तक न छुड़ाया था मां हर चन्द मना करती वह ज़ोर आवर थी पिछाड़ती और सीने पर चढ़ कर दूध पीने लगती।

अर्ज़ : हुज़ूर नफ़्स और रूह में फ़र्क़ एतबारी मालूम होता है।

इरशाद : असल में तीन चीज़ें एलाहिदा-एलाहिदा हैं नफ़्स, रूह, क़ल्ब, रूह बमंज़िला बादशाह के है और नफ़्स व क़ल्ब उसके दो वज़ीर हैं नफ़्स उसको हमेशा शिर्क की तरफ़ ले जाता है और क़ल्ब जब तक साफ़ है ख़ैर की तरफ़ बुलाता है और मआज़ल्लाह कसरते मआसी और खुसूसन कसरते बिदआत से अन्धा कर दिया जाता है अब उस में हक़ के देखने समझने ग़ौर करने की क़ाबलीयत नहीं रहती मगर अभी हक़ सुनने की इस्तेअ्दाद बाक़ी रहती है और फिर मआज़ल्लाह औंधा कर दिया जाता अब वह न हक़ सुन सकता है और न देख सकता है बिल्कुल चौपट हो कर रह जाता है (फिर फरमाया) क़ल्ब हक़ीक़तन इस मुज़ग-ए-गोश्त का नाम नहीं बल्कि वह एक लतीफ़ा ग़ैबिया है जिसका मरकज़ीया मुज़ग़ा गोश्त है सीने के बाएं जानिब और नफ़्स का मरकज़ ज़ेरे नाफ़ है इसी वास्ते शाफ़ईया सीने पर हाथ बांधते हैं कि नफ़्स से जो वसाविस उठें वह क़ल्ब तक न पहुंचने पाएं और हन्फ़ीया ज़ेरे नाफ़ बांधते हैं -

यानी गरबा किश्तन रोज़े अव्वल बायद इसी वास्ते यह तहरीर किया गया है कि अगर हाथ सख़्ती से बांधे जाएं तो वसाविस न पैदा हों।

अर्ज़ : किसी शख़्स को ऐसी बला में मुब्तला देखे जो बज़ाहिर इंसान की तरफ़ से पहुंचती है उस वक़्त भी यह दुआ पढ़ सकता है।

इरशाद : हर बला में मुब्तला को देख कर पढ़ सकता है ख़्वाह वह बला इंसानी हो या आसमानी (फिर फरमाया) मैं तो काफिर का मुर्दा भी देख कर पढ़ता हूं कि जिस बला में वह मुब्तला हुआ यानी मौत अलल-कुफ़्र उस से खुदा ने हम को नजात दी कि उस पर शुक्र करना चाहिए (फिर फरमाया) हदीस में है काफिर के जनाज़ा के आगे शैतान आग के शोअ्ले उड़ाता हुआ शोर मचाता नाचता हुआ चलता है कि आदमी कुफ़्र पर मरा।

(फिर फ़रमाया) के जनाज़ा के साथ शैतान को थोड़ी देर नाचना पड़ता है कि वह दौड़ते हुए ले जाते हैं और के जनाज़ा के साथ बहुत देर तक उसे नाचना पड़ता है कि वह बाजा बजाते जगह-जगह ठहराते बहुत आहिस्ता-आहिस्ता ले जाते हैं अल्लाहु अक्बर हमारे मज़हबे इस्लाम में हर बात में तवस्सुत को अख़्तियार फरमाया यहां भी हुक्म है कि मैयत

को न बहुत आहिस्ता ले जाओ न दौड़ते हुए।

अर्ज़ : हुज़ूर वस्त के मानी अफ़ज़ल के भी आते हैं जैसे *वजअलनकुम उम्मतन वसतन*।

इरशाद : हां वस्त के लिए अफ़ज़लीयत लाज़िम है आयत के मानी यह हैं हम ने तुम को बेहतरीन उम्मत बनाया हदीस में इरशाद हुआ। *अन्तुम ततिम्मूना सबईना उम्मतन मिन क़ब्लेकुम व अन्तुम आख़ेरुहुम*। तुम से पहले ६६ उम्मतें गुज़रीं और तुम सबसे पिछले हो शबे मेराज रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इरशाद फरमाया। क्या तुम्हें इस बात का ग़म हुआ कि मैंने तुम्हें सबसे पिछला नबी किया अर्ज़ की नहीं इरशाद फरमाया कि तुम्हारी उम्मत को इस बात का ग़म हुआ कि मैंने उन्हें सबसे पिछली उम्मत किया अर्ज़ की नहीं ऐ रब मेरे इरशाद फ़रमाया मैंने उन्हें किसी के सामने रुस्वा न करूं (फिर फरमाया) एक आंख के लिए करोड़ों आंखों का एज़ाज़ किया जाता है रोज़े क़यामत तमाम उम्मतों को मुनादी पुकारेगा जब उस उम्मत की बारी आएगी। निदा करेगा कहां हैं उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और दामने रहमत वसीअ् किया जाएगा उस में सबको ले लिया जाएगा किसी को उनके हिसाब का पता न चलेगा एक हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अर्ज़ की ऐ रब मेरी उम्मत का हिसाब मुझे दे दे इरशाद फरमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) तेरी उम्मत मेरे बन्दे हैं खुद हिसाब लूंगा और खुद ही बख़्श दूंगा रोज़े क़यामत दामने रहमत में तमाम उम्मत को जमा फरमाया जाएगा और इरशाद फरमाया जाएगा मैंने अपने हुक़ूक़ मुआफ़ किए तुम आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ मुआफ़ करो और जन्नत को चले जाओ यह सब सदक़ा है सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम (फिर फरमाया) बन्दगी होना चाहिए मरते वक़्त मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पढ़ कर जान निकल जाए फिर तो सब आसान है यही एक पहली ही मंज़िल है जो तमाम मंज़िलों से सख़्त तर है अल्लाह आसान फरमाए। *हसबुनल्लाहु व नेअ्मल-वकील अलैहि तवक्कलना*। (फिर फरमाया) क़यामत के दिन बावजूद इन रहमतों और मेहरबानियों के हम में बाज़ वह लोग होंगे जो उस वक़्त भी बुख़्ल करेंगे हदीस में है एक

शख़्स को जन्नत का हुक्म होगा वह जाना चाहेगा कि उसका हक़्दार खड़ा होगा अर्ज़ करेगा ऐ रव मेरा हक़ मेरे उस भाई से दिला। हुक्म होगा कि उसकी नेकियां उसे देकर हक़ पूरा करो नेकियां ख़त्म हो जाएंगी और उसका हक़ वाक़ी रहेगा (फरमाया कि) तीन पैसे जो किसी के अपने ऊपर आते होंगे उनके वदले में ७०० वा जमाअत नमाज़ें ली जाएंगी हक़्दार फिर खड़ा होगा अर्ज़ करेगा ऐ रव मेरा हक़ मेरे इस भाई से दिल्वा हुक्म होगा उसकी वदियां उस पर रख कर हक़ पूरा करो उसकी वदियां भी ख़त्म हो जाएंगी और अभी वाक़ी है फिर वह खड़ा होगा अर्ज़ करेगा ऐ रव मेरा हक़ मेरे इस भाई से दिल्वा इरशाद होगा उसकी तमाम नेकियां तुझे मिल गई तेरी तमाम वुराइयां उस पर रख दी गई। *फ़ल्लाहु ख़ैरुन हाफ़िज़न वहुवा अरहमुर्राहिमीन*। अव उसके पास किया है जो तू लेगा अर्ज़ करेगा ऐ रव मेरे मेरा हक़ अभी वाक़ी है वह उस से दिलवा तव फरिश्तों को हुक्म होगा कि जन्नत से एक मकान ख़ूव आरास्ता करके अरसात में लाया जाए सव लोग उसको निहायत शौक़ से देखने लगेंगे रव्वुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू इरशाद फरमाएगा मैं उस मकान को वेचता हूं कोई है जो उसको ख़रीदेगा लेकिन तेरे पास उसकी क़ीमत है अर्ज़ करेगा ऐ रव मेरे वह क्या चीज़ है इरशाद फरमाएगा अपने भाई का हक़ मआफ़ फरमा दे और उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में चला जा (फिर फरमाया) ख़ुदा ने वादा फरमा लिया है कि हक्कुल-अब्द को मैं मआफ़ न करूंगा वरना वन्दे का भी वही मालिक वन्दे के हुक़ूक़ का भी वही मालिक वह चाहे तो तमाम वन्दों के तमाम हुक़ूक़ मुआफ़ कर दे मगर चूंकि उस ने वादा फरमा लिया है इसलिए इस तौर पर अपने हवीव सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के गुलामों से हुक़ूकुल-इवाद मुआफ़ कराएगा।

अर्ज़ : क़वाइद रूयते हिलाल यक़ीनी हैं या तख़्मीनी।

इरशाद : तख़्मीनी हैं। सव में पहला फन्ने हैयात का इमाम जो गुना जाता है। वतलीमूस है उसने मुजस्सती लिखी उस में तमाम अफ़्लाक के अहवाल सितारों का तुलूअ् व गुरूव उनका आपस में नज़री फासिला यहां तक कि सवावित का भी तुलूअ् व गुरूव लिखा है कि फ़लां सितारा आफताव से इतने वाद पर होगा तो नज़र आएगा और इतने वाद पर होगा तो नहीं और हिलाल को छोड़ गया वह उसके क़ावू का न था

मुतअख़्ख़ेरीन ने उसका क़ायदा ईजाद किया है आठ वर्क़ कामिल पर उसके आमाल आते हैं और उसके वाद कभी यक़ीनी जवाव आता है और कभी इस क़द्र आमाले कसीरा के वाद भी मश्कूक सीधा हिसाव जो हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सिखाया है वह कभी न टूट सकता है न टूटेगा।

हम उम्मते उमैया हैं न लिखते हैं न हिसाव करते हैं महीना ३६ का है या ३० का तो अगर तुम्हें शुवह पड़ जाए तो ३० की गिनती पूरी कर लो।

मुअल्लिफ़ : विलादत की तारीख़ों का ज़िक्र था उस पर इरशाद फरमाया वहम्दुलिल्लाह तआला मेरी विलायत की तारीख़ उस आयते करीमा में है। *ऊलाइका कुतवुन फ़ी कुलूवेहिम अल-ईमानु व ऐदीहिम वेरूहिम मिन्हु।* जिसका तरजमा यह है कि वह लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फरमा दिया है। और अपनी तरफ से रूहुल-कुदुस के ज़रिया से उनकी मदद फरमाई है और उसका सदर है।

न पाएंगे आप उन लोगों को जो अल्लाह व रसूल और यौमे आख़िर पर ईमान रखते हैं कि वह अल्लाह व रसूल के मुख़ालिफ़ों से दोस्ती रखें अगरचे वह उनके वाप उनकी औलाद या उनके भाई उनके कुंवे क़वीले ही के क्यों न हों उसी के मुत्तसिल फरमाया *ऊलाइका कतवा फ़ी कुलूवेहिमुल- ईमानु*। वहम्दुलिल्लाह तआला वचपन से मुझे नफ़रत है आदा अल्लाह से और मेरे वच्चों के वच्चों को भी वफ़ज़्ल अल्लाह तआला अदावत अदाअल्लाह घुट्टी में पिला दी गई है और वफ़ज़्लेही तआला यह वादा भी पूरा हुआ। *ऊलाइका कतवा फ़ी कुलूविहिमुल-ईमानु।* वहम्दुलिल्लाह अगर क़ल्व के दो टुकड़े किए जाएं तो ख़ुदा की क़सम एक पर लिखा होगा। *ला इलाहा इल्लल्लाह* दूसरे पर लिखा होगा *मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह* (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) और वहम्दुलिल्लाह तआला हर वद मज़हव पर हमेशा फ़तह व ज़फर हासिल हुई रव्वुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू ने रूहुल-कुदुस से ताईद फरमाई अल्लाह पुरा फरमाए।

(फिर फ़रमाया) यह सव वरकात हैं हज़रत जद्दे अम्जद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की कुरआने अज़ीन में ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वाक़या में है कि दो यतीम एक मकान में रहते थे उसकी दीवार गिरने वाली थी और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना ख़िज़्र अलैहिस्सलातु

वस्सलाम ने उस दीवार को सीधा कर दिया उस वाक़या को फ़रमाया जाता है। *वकाना अवूहुमा सालेहन*। उनका वाप सालेह था उसकी वरकत से यह रहमत की गई। अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं वह वाप उनकी चौदहवीं पुश्त में था सालेह वाप की यह वरकात होती हैं तो यहां तो अभी तीसरी ही पुश्त है देखिए कब तक वरकात उस सिलसिले में रहें (फिर इरशाद फ़रमाया) हज़रत जद्दे अमजद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को वेहम्दुलिल्लाह तआला मेरे साथ उस वक़्त तक वही मुहब्वत है जो पहले थी मेरे हज़रत जद्दे अम्जद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के एक हक़ीक़ी भतीजे थे उन्होंने कोई दक़ीक़ा मेरी बुराई में अपने नज़्दीक उठा न रखा एक रोज़ मैंने ख़्वाव देखा कि हज़रत जद्दे अमजद रज़ि अल्लहु तआला अन्हु पलंग पर तशरीफ़ फ़रमा हैं और वह साहव पाएती वैठे हैं और हर चन्द वात करना चाहते हैं हज़रत जवाव नहीं देते और मुतवज्जोह नहीं होते इतने में मैं हाज़िर हुआ हज़रत मुझे देख कर फ़ौरन सरोक़द खड़े हो गये और फ़रमाया आइए मौलाना तशरीफ़ लाइए वावजूद यह कि मैं उनकी पांव की जूती की ख़ाक मगर हज़रत ने मुझ को निहायत ताज़ीम से अपने पास विठाया और जव तक मैं वैठा रहा हज़रत वरावर मेरी तरफ़ मुतवज्जेह रहे दो रोज़ हुए थे कि लखनऊ से ख़मीरा आया था हज़रत हक़्क़ा मुलाहिज़ा फ़रमा रहे थे मुझे ख़्वाव में ख़मीरा याद आया मैं उठा और अर्ज़ किया मैं लखनऊ का ख़मीरा भरता हूं सुनते ही घवरा गये और फ़ौरन खड़े हो गये फ़रमाने लगे मौलाना आप तक्लीफ़ न फ़रमाइए मौलाना आप तक्लीफ न फ़रमाइए और विठा लिया मेरी मुहब्वत के सवव अपने हक़ीक़ी भतीजे से कलाम न फ़रमाया (फिर फ़रमाया) मैं रोता हुआ दोपहर को सो गया देख हज़रत जद्दे अम्जद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ लाए और एक ज़न्दूकची अता फ़रमाई और फ़रमाया अन्क़रीव आने वाला है वह शख़्स जो तुम्हारे दर्दे दिल की दवा करेगा दूसरे या तीसरे रोज़ हज़रत मौलाना अव्दु-क़ादिर साहव रहमतुल्लाहि अलैह वदायूं से तशरीफ़ लाए और अपने साथ मारहरा शरीफ़ ले गये वहां जा कर शर्फ़ें वैअत हासिल किया। (फिर फ़रमाया) एक मरतवा जाइदाद का झगड़ा था और वह भी ऐसा कि ज़ाहिरी रिज़्क़ के बन्द होने के अस्वाव थे।

इसी दौरान में ख़्वाव देखा कि हज़रत जद्दे अमजद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अरवी घोड़े पर सवार तमाम आज़ा निहायत रौशन अरवी लिवास में तशरीफ़ लाए मैं इसी फाटक में खड़ा था हज़रत क़रीव आ कर घोड़े से उतरे और फ़रमाया वशीरुद्दीन वकील के यहां जाना है आंख खुली मैंने कहा अव मुक़द्दमा फतह हो गया चुनांचे सुवह ही को मुक़द्दमा में फतहयावी हो गई ८-१० वरस हुए रजव के महीने में हज़रत वालिद माजिद रहमतुल्लाह तआला अलैह को ख़्वाव में देखा फ़रमाते हैं अहमद रज़ा अव की रमज़ान में तुम्हें वीमारी होगी और ज़्यादा होगी रोज़ा न छोड़ना यहां वहम्दुलिल्लाह तआला जव से रोज़े फ़र्ज़ हुए कभी न सफ़र न मरज़ किसी हालत में रोज़ा नहीं छोड़ा ख़ैर रमज़ान शरीफ़ में मैं वीमार हुआ और वहुत वीमार हुआ मगर वहम्दुलिल्लाह तआला रोज़े न छोड़े, गांव में एक ज़मीन मेरी ज़मीन के मुत्तसिल एक साहव की थी वह एक सूद ख़्वार के हाथ वेचना चाहते थे और फ़रमाया मुझे नहीं देते सूद ख़्वार को देते हैं और मिलेगी मुझी को चुनांचे ऐसा ही हुआ। एक वार वीमार हुआ और शिद्दत का दर्द हुआ आंख लग गई ख़्वाव में हज़रत वालिद माजिद और मौलवी वरकात अहमद साहव मरहूम जो वालिद माजिद से पढ़ा करते तशरीफ़ लाए मौलवी वरकात अहमद साहव ने पूछा मिज़ाज कैसा है मैंने कहा दर्द की शिद्दत है दुआ कीजिए कि ईमान पर ख़ातमा हो जाए यह कहा ही था कि वालिद माजिद का चेहरा सुर्ख़ हो गया और फ़रमाया अभी तो वावन वरस मदीना तैयवा में अव उसके दो मानी हो सकते हैं कि वावन वरस की उम्र में मदीना तैयवा की हाज़िरी होगी चुनांचे दूसरी हाजिरी में मेरी उम्र वावन वरस की थी या यह कि उस वक़्त से वावन वरस वाद मदीना तैयवा की हाज़िरी होगी और ख़ुदा से उम्मीद है कि ऐसा ही करे आमीन। एक मरतवा खाना न खाया था कई रोज़ से वालिदैन करीमैन को ख़्वाव में देखा वालिदा माजिदा ने कुछ न फ़रमाया वालिद माजिद ने फ़रमाया तुम्हारे न खाने से हम को तक्लीफ़ होती है मज्वूरन फिर सुवह से खाना शुरू कर दिया एक वार मैंने देखा कि हज़रत वालिद माजिद के साथ एक सवारी है वहुत नफ़ीस और ऊंची भी थी वालिद माजिद ने कमर पकड़ कर सवार किया और फ़रमाया ग्यारह दर्जे तक तो हम ने पहुंचा दिया आगे अल्लाह मालिक है मेरे ख़्याल में इस से मुराद गुलामी है

सरकारे ग़ौसियत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की एक साहव मेरे चचा होते थे गांव का काम वही करते थे एक वार हज़रत वालिद माजिद उन से नाराज़ हो गये फरमा दिया था कि अव से यह गांव का काम न करें वाद में मुझे फुरसत नहीं और गांव के काम पर मोतमद आदमी दरकार था और उन से वढ़ कर और कौन मोतमद हो सकता था मगर हज़रत वालेद माजिद को मुमानअत थी सख़्त फ़िक्र थी एक रोज़ शव को तशरीफ़ लाए और उनका हाथ लेकर मेरे हाथ में दे दिया मैं समझ गया कि हज़रत की इजाज़त है कि उन्हीं को गांव का काम दे दो चुनांचे सुवह ही को मैंने उन्हे गाव को भेज दिया।

अर्ज़ : मुर्ग़ी अगर पानी में चोंच डाल दे नापाक हो जाएगा?

इरशाद : नापाक न होगा मकरूह है उवाल दिया जाए कराहत ज़ाइल हो जाएगी।

अर्ज़ : मुतशावेह लगा तीन वार लौटा मगर न निकला तो सज्दा सह्व लाज़िम है।

इरशाद : क्यों और अगर तीन वार सुवहानल्लाह के क़द्र रुका तो सज्दा सह्व वाजिव होगा लौटने से न होगा अगरचे दस हज़ार वार।

अर्ज़ : नापाक पानी गर्म किया इतना कि उवल गया पाक होगा या नहीं।

इरशाद : नहीं कि पाक पानी ने न उवाला।

अर्ज़ : कुत्ते का रुवां तो नापाक नहीं।

इरशाद : सही यह है कि कुत्ते का सिर्फ़ लुआव नजिस है लेकिन विला ज़रूरत पालना चाहिए कि रहमत का फरिश्ता नहीं आता हदीस सही है कि जिव्रील कल किसी वक़्त हाज़िरी का वादा करके चले गये दूसरे दिन इंतिज़ार रहा मगर वादा में देर हुई और जिव्रील हाज़िर न हुए सरकार वाहर तशरीफ़ लाए मुलाहिज़ा फरमाया कि जिव्रील अलैहिस्सलाम दर दौलत पर हाज़िर हैं फरमाया क्यों। अर्ज़ किया *इन्ना ला तदखुलु वैतन फीहे कल्वुन और तसावीर*। रहमत के फ़रिश्ते उस घर में नहीं आते जिस में कुत्ता हो या तस्वीर हो अन्दर तशरीफ़ लाए सव तरफ़ तलाश किया कुछ न था पलंग के नीचे एक कुत्ते का पिल्ला निकला उसे निकाला तो हाज़िर हुए।

अर्ज़ : ख़िलाफ़ते राशिदा किस-किस की ख़िलाफ़त थी।

इरशाद : अवू वकर सिद्दीक़, उमर फारूक़, उस्मान ग़नी, मौला अली, इमाम हसन, अमीर मुआविया, उमर विन अव्दुल-अज़ीज़ रज़ि अल्लाह तआला अन्हुम की ख़िलाफ़ते राशिदा थी और अव सैयदना इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त ख़िलाफ़ते राशिदा होगी।

अर्ज़ : वाज़ अली गढ़ी को सैयद साहव कहते हैं।

इरशाद : वह तो एक ख़वीस मुर्तद था हदीस में इरशाद फरमाया।

तरजमा : मुनाफ़िक़ को सैयद न कहो कि अगर वह तुम्हारा सैयद हो तो यक़ीनन तुम ने अपने रव को ग़ज़व दिलाया।

अर्ज़ : हुज़ूर यह सही है कि आलिम की ज़ियारत सवाव है।

इरशाद : हां सही हदीस में वारिद हुआ।

तरजमा : आलिम के चेहरा को देखना इवादत है क़ावा मुअज़्ज़मा को देखना इवादत है क़ुरआने अज़ीम को देखना इवादत है।

अर्ज़ : दिल में अगर अल्फ़ाज़ तलाक़ वोले तो तलाक़ होगी या नहीं।

इरशाद : नहीं जव तक इतनी आवाज़ से न कहे कि अगर कोई माने न हो तो ख़ुद उसके कान सुन लें।

अर्ज़ : काफिरा अगर इस्लाम लाए और शौहर वाली हो तो क्या करे।

इरशाद : तीन हैज़ तक इंतिज़ार करे अगर उसके अन्दर शौहर इस्लाम ले आया यह उसके निकाह में है वरना दूसरे से निकाह कर सकती है।

अर्ज़ : हुज़ूर यह सरअ् क्या कोई वला है।

इरशाद : हां और वहुत ख़वीस वला है और इसी को उम्मुस्सिवयान कहते हैं अगर वच्चों को हो, वरना सरअ् (मिर्गी) तजरवा से सावित हुआ है कि अगर पच्चीस (२५) वरस के अन्दर-अन्दर होगी तो उम्मीद है कि जाती रहे और अगर पच्चीस (२५) वरस के वाद या पच्चीस (२५) वरस वाले को हुई तो अव न जाएगी हां किसी वली की करामत या तावीज़ से जाती रहे तो अम्र आख़िर है यह फ़िल-हक़ीक़ते एक शैतान है जो इंसान को सताता है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवार में एक औरत अपनी लड़की को लाईं अर्ज़ की सुवह शाम यह मसरूआ हो जाती है हुज़ूर ने इसको क़रीव किया और उसके सीने पर हाथ मार कर फ़रमाया। *अख़रजा अदूवुल्लाहा व अना* रसूलुल्लाह।

निकल एक खुदा के दुश्मन मैं अल्लाह का रसूल हूं उसी वक़्त उसे कय आई एक सियाह चीज़ जो चलती थी उसक पेट से निकली और ग़ायब हो गई और वह औरत होश में हो गई हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना में एक शख़्स को मिर्गी हो गई हुज़ूर ने फरमाया उसके कान में कह दो ग़ौसे आज़म का हुक्म है कि बग़दाद से निकल जा चुनांचे उसी वक़्त वह अच्छा हो गया और अब तक बग़दाद मुक़द्दस में मिर्गी नहीं होती (फिर फरमाया) बच्चा पैदा होने के बाद जो अज़ान में देर की जाती है उस से अक्सर यह मरज़ हो जाता है और अगर बच्चा पैदा होने के बाद पहला काम यह किया जाए कि नहला कर अज़ान व इक़ामत बच्चा के कान में कह दी जाए तो इन्शाअल्लाह तआला उम्र भर महफ़ूज़ी है।

अर्ज़ : ग्रामोफून का क्या हुक्म है।

इरशाद : बाज़ बातों में असल का हुक्म है बाज़ में नहीं ग्रामोफून में अगर कुरआन अज़ीम हो उसका सुनना फ़र्ज़ नहीं बल्कि नाजाइज़ और आयते सज्दा पर सज्दा वाजिब और गाने में असल का हुक्म है अगर असल जाइज़ यह भी जाइज़ अगर असल हराम यह भी हराम मसलन औरत व अमर्द की आवाज़ न हो मज़ामीर की आवाज़ न हो अशआर ख़िलाफ़े शिरअ् न हो तो जाइज़ है वरना नहीं और कुरआने अज़ीम का सुनना तूजद है कि इबादत है और ग्रामोफून से सुनना लह्व है कि वह मौज़ूअ् है इसलिए है, अगरचे कोई नीयत लहव न करे मगर असल वज़अ् की तब्दील कोई नहीं कर सकता फिर जो जो मसालह उस में भरा होता है उस में अक्सर स्प्रिट का मेल होता है और स्प्रिट शराब है और शराब नजिस है तो उस में कुरआन शरीफ़ का भरना ही हराम हुआ।

अर्ज़ : जानवरों को खिलाने पिलाने से सवाब मिलता है या नहीं।

इरशाद : हां हदीस में इरशाद हुआ।

हर तर जिगर में अज्र है यानी हर जानदार को आराम पहुंचाने में सवाब है।

अर्ज़ : थानवी को लोग सैयद कहते हैं और वह माने नहीं होता हालांकि वह क़ौम का झूजा हैं

इरशाद : हदीस में है।

तरजमा : जो शख़्स अपना बाप छोड़ कर दूसरे को बाप बनाए उस

पर अल्लाह और तमाम फ़रिश्तों और तमाम आदमियों की लानत अल्लाह न उसका फ़र्ज़ क़बूल करेगा न नफ़्ल दूसरी हदीस में इरशाद हुआ। *फ़ल-जन्नतु अलैहि हरामुन*। तीसरी हदीस में फरमाया। *फ़अलैहि लानतुल्लाहि मुततावितुन इला यौमिल-क़यामते* उस पर अल्लाह की पै-दर-पै क़यामत तक लानत है।

अर्ज़ : अय्यामे बैज़ में रोज़ा रखने से महीना भर का सवाब मिलता है।

इरशाद : हां पहली, दूसरी, तीसरी, चौदा, पन्द्रह या सत्ताईस, अट्ठाईस, उन्तीस उन में से जिस में रोज़ा रखे सब का सवाब बराबर है। पहली दूसरी तीसरी लयाली हिलाल और तेरह चौदह पन्द्रह लयाली बीज़ (सफ़ेद रातें) और सत्ताइस अट्ठाइस उन्तीस लयाली सूद (सियाह)

अर्ज़ : हुज़ूर एक रिवायत है कि बनी इसराईल में एक शख़्स दो सौ बरस तक फ़िस्क़ व फ़ुजूर में मुब्तला रहा और बाद इंतिक़ाल उसकी मग़्फ़िरत फरमा दी गई इस वजह से कि उस ने तौरेत शरीफ़ में नाम पाक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का देख कर चूम लिया था।

इरशाद : हां सही है उनका नाम मस्तह था फिर फरमाया उसके करम की कोई इंतिहा नहीं उसकी रहमत चाहे तो करोड़ों बरस क गुनाह धो दे गुलामी होना चाहिए सरकार की, एक नेकी से मुआफ़ फरमा दे बल्कि उन गुनाहों को नेकियों से बदल दे और अगर अदल फरमाए तो करोड़ों बरस की नेकियां एक सग़ीरा के एवज़ रद्द फ़रमा दे हदीस में इरशाद हुआ कोई शख़्स बग़ैर अल्लाह की रहमत के अपने आमाल से जन्नत में नहीं जा सकता सहाबा ने अर्ज़ की *वला अन्ता या रसूलुल्लाह*। आप भी नहीं या रसूलुल्लाह इरशाद फ़रमाया *वला अना इल्ला अन यतग़म्मदनी रहमतुन*। और मैं भी जब तक कि मेरा रब रहमत न फरमाए गुनाह न सही इस्तेहक़ाक़ किस बात का है दुनिया ही का क़ायदा देखिए अगर अजीर है मज़्दूरी करेगा उजरत पाएगा और अगर अब्द है मम्लूक है कितनी ही ख़िदमत करे कुछ न पाएगा हम सब तो उसी की मख़्लूक़ व मम्लूक हैं उसकी रहमत ही रहमत है आप ही बन्दों को तौफ़ीक़ दी आप ही उनको अस्बाब दिए आप ही आसान फरमाया और फरमाता है बदला है उनके नेक अमलों का नेअ्मल-अब्द

क्या अच्छा बन्दा है अय्यूब अलैहिस्सलातु वस्सलाम् कितने अरसा तक बला में मुब्तला रहे और सब्र भी कैसा जमील फरमाया जब उस से नजात मिली अर्ज़ किया इलाही मैंने कैसा सब्र किया इरशाद हुआ और तौफ़ीक़ किस घर से लाया अय्यूब अलैहिस्सलाम ने अपने सर पर ख़ाक उड़ाई अर्ज़ किया बेशक अगर तौफ़ीक़ न अता फरमाता तो मैं सब्र कहां से करता।

अर्ज़ : आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम रसूल भी थे।

इरशाद : हां।

अर्ज़ : नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अव्वलुर्रुसुल कहा जाता है यह किस वजह से।

इरशाद : काफिरों की तरफ़ जो रसूल भेजे गये हैं उन में सबसे अव्वल हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वस्सलाम हैं आप से पहले जो नबी तशरीफ़ लाए वह मुसलमान की तरफ़ भेजे जाते थे।

अर्ज़ : कल्बे अली के क्या मानी हैं।

इरशाद : अली की सरकार का कुत्ता।

अर्ज़ : औलियाए किराम में भी किसी का नाम कल्ब हुआ है।

इरशाद : सल्फ़े सालेहीन सहाबा ताबईन में कल्ब कुलैब केलाब नाम हुए।

अर्ज़ : ख़ानदाने सालारिया भी कोई खानदाने बैअ़त है।

इरशाद : नहीं। हज़रत सैयदी सालार मरऊद गाज़ी रहमतुल्लाह तआला अलैह मुजाहिद थे शहीद हुए हैं तो क्या हर शहीद से बैअत का सिलसिला शुरू हो जाएगा (फिर बतज़्किरा हज़रत सैयदी अहमद कबीर रिफ़ाई रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाया) कि आप अजिल्ला अकाबिरे औलिया से हैं हज़रत के एक मुरीद बारगाहे ग़ौसियत में हाज़िर थे अर्ज़ की मुझे अपने शैख़ की ज़ियारत का शौक़ है हुज़ूर ने एक शीशा सामने रख दिया उस में शैख़ की शक्ल नज़र आई कि दांतों में उंगली दबाए फरमा रहे हैं जो बहर के पास हो वह जदवल को चाहे।

अर्ज़ : क्या हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी ने कहीं हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर अपनी तफ़्सील भी लिखी है।

तरजमा : फिर फरमाया मक्तूबात की अव्वल दो जिल्दों में तो ऐसे अल्फ़ाज़ मिलेंगे जिन में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु

की तो क्या गिनती तीसरी जिल्द में फरमाते हैं जो कुछ फ़यूज़ व बरकात का मज्मा है वह सब सरकारे ग़ौसियत से मिले हैं। *नूरुल-क़मर मुस्तफ़ादा मिन नूरिश्शम्से*। इसी में लिखा है क्या तुम यह समझते हो कि जो कुछ मैंने अगली जिल्दों में कहा सह्व से कहा नहीं बल्कि ज़्यादा सकर है अब अगर कोई मुजद्देदी उनके क़ौल से इस्तिदलाल करे उसको वह जाने हम तो ऐसे शैख़ के गुलाम हैं जिसने जो बताया सह्व से बताया खुदा के फरमाने से कहा। तमाम जहान के शुयूख़ ने जो ज़बानी दावा किए हैं ज़ाहिर कर दिया है कि हमारा सकर है और ऐसी ग़लतियां दो वज्हों से होती हैं या नावाक़फ़ी या सकर। सकर तो यही है और नावाक़ेफ़ी यह कि मसलन हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना में एक बुजुर्ग सैयदी अब्दुर्रहमान तफ़्सूंजी ने एक रोज़ बरसरे मिंबर फरमाया। *अनाबीनल-औलिया कल-कुर्की अतवला उनक़न*। मैं औलिया में ऐसा हूं जैसे कलंक सबमें ऊंची गर्दन वहीं हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के एक मुरीद हज़रत सैयदी अहमद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी तशरीफ़ फरमा थे उन्हें नागवार हुआ कि हुज़ूर पर अपने आपको तफ़्सील दी गुदड़ी फेंक कर खड़े हो गये और फरमाया मैं आप से कुश्ती लड़ना चाहता हूं। हज़रत सैयदी अब्दुर्रहमान ने उनको सर से पैर तक देखा फिर पैर से सर तक देखा फिर सर से पैर तक देखा ग़रज़ इसी तरह कई बार नज़र डाली और ख़ामोश हो गये लोगों ने हज़रत से सबब पूछा फरमाया मैंने देखा उसके जिस्म को कि कोई रोंगटा रहमते इलाही से ख़ाली नहीं है और उन से फरमाया गुदड़ी पहन लो। उन्होंने कहा फ़क़ीर जिस कपड़े को उतार कर फेंक देता है दोबारा नहीं पहनता बारह रोज़ के रास्ता पर उनका मकान था अपनी ज़ौजा मुक़द्दसा को आवाज़ दी फातिमा मेरे कपड़े दो उन्होंने वहीं से हाथ बढ़ा कर कपड़े दिए और उन्होंने हाथ बढ़ा कर पहन लिए। हज़रत सैयदी अब्दुर्रहमान ने दरयाफ़्त किया किस के मुरीद हो फरमाया मैं गुलाम हूं सरकारे ग़ौसियत रज़ि अल्लाहु अन्हु का उन्होंने अपने दो मुरीदों को बग़दाद भेजा कि हुज़ूर से जा कर अर्ज़ करो बारह बरस से कुर्बे इलाही में हाज़िर होता हूं आपको न जाते देखा ना आते उधर से यह दोनों मुरीद चले हैं कि उधर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दो मुरीदों से इरशाद फरमाया तफ़्सूंज जाओ

रास्ता में शैख़ अब्दुर्रहमान के दो आदमी मिलेंगे उनको वापस ले जाओ और शैख़ अब्दुर्रहमान को जवाब दो कि वह जो सेहन में है क्योंकर देख सकता है उसको जो दालान में है और वह जो दालान में है उसे क्योंकर देख सकता है जो कोठरी में है और वह जो कोठरी में है उसे क्योंकर देख सकता है जो नहानख़ाना ख़ास में हो। मैं नहानख़ाना ख़ास में हूं और अलामत यह है कि फलां शब बारह हज़ार औलिया को ख़िल्अत अता हुए थे याद करो कि तुम को जो ख़िल्अत मिला था वह सब्ज़ था और उस पर सोने से *कुल हुवल्लाह* शरीफ़ लिखी थी यह सुन कर शैख़ अब्दुर्रहमान ने सर झुका लिया और फरमाया *सिद्कुश्शैख़ अब्दुल-क़ादिर व हुवा सुल्तानुल-वक़्त*।

अर्ज़ : कांजी हाउस की लावारिस गाय, बकरी वग़ैरह का नीलाम ख़रीदना कैसा है।

इरशाद : हराम है।

अर्ज़ : जो शख़्स महर क़बूल करते वक़्त यह ख़्याल करे कि कौन अदा करता है उस वक़्त तो कुबूल कर लो फिर देखा जाएगा ऐसे लोगों का क्या हुक्म है।

इरशाद : हदीस में इरशाद फरमाया ऐसे मर्द व औरत क़यामत के रोज़ ज़ानी व ज़ानिया उठेंगे।

अर्ज़ : एक जल्सा में आरिया व ईसाई और देवबन्दी क़ादियानी वग़ैरह जो इस्लाम का नाम लेते हैं वह भी हों वहां देवबन्दियों का रद्द न चाहिए।

इरशाद : क्यों। क्या उन से मुवाफ़िक़त की जाएगी हाशा यह मुहाल है इस्लाम पर उस में कोई एतराज़ नहीं।

अर्ज़ : आरिया वग़ैरह यह कहेंगे कि इस्लाम ही में इख़्तिलाफ़ हो गया।

इरशाद : हाशा इस्लाम में इख़्तिलाफ़ नहीं इस्लाम वाहिद है यह लोग इस्लाम से निकल गये मुरतद हो गये मुर्तदीन की मुवाफ़िक़त बदतर है काफिर असली की मुवाफ़िक़त से।

अर्ज़ : *व औहैना इला उम्मेका मा यूहा*। इस वही से क्या मुराद।

इरशाद : उसका बयान आगे फरमा दिया *इन अक्ज़ा फ़ीहे फ़ित्ताबूते। अलख़*

अर्ज़ : इससे मालूम होता है कि ग़ैर अंबिया पर भी वही आती है।

इरशाद : यहां वही से मुराद वही इल्हाम है दूसरी जगह फ़रमाता है। *व ऊहिया रब्बिका इलन्नहले*। इससे भी इल्हाम मुराद है वही शरीअ़त वह ख़ास है अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के वास्ते ग़ैर को नहीं आ सकती (फिर फरमाया) वही इशारा से बात बताने को भी कहते हैं कि फरमाता है *फ़ऊही इलैहिम इन सब्बेहू बुकरतन व अशीया*। ज़करिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इशारे से फरमाया कि ख़ुदा की तस्बीह सुबह व शाम करो।

अर्ज़ : खाने में बरकत और पानी वग़ैरह में और अंगुश्ताने मुबारक से पानी का जारी होना मुतवातिर है।

इरशाद : हां यह और इस क़िस्म के वक़ाए मुतवातिर बिल-मानी हैं सदहा मरतबा अंगुश्ताने मुबारक से पानी जारी हुआ तक्सीरे तआम के सदहा वक़ाए हैं जिस से यह मोजिज़े मुतवातिर बिल-मानी हो गये।

अर्ज़ : अस्तन हिनाना का वाक़या भी मुतावातिर है।

इरशाद : इसमें इख़्तिलाफ़ है बाज़ ने मुतवातिर लिखा है और हो तो कोई अजब नहीं ततब्बुअ़ ऐसी चीज़ है जिस से बहुत पता चल जाता है यह मरअला कि सज्दा ग़ैरे ख़ुदा को हराम है इसमें सिर्फ़ दो हदीसें मुझे याद थीं इज्मा से उसकी हुर्मते क़तईया मैंने साबित की क़ुरआने अज़ीम में कहीं उसका ज़िक्र नहीं ततब्बुअ़ उसका क्या ४० हदीसें निकलीं कि मुतवातिर की हद से भी बढ़ गईं।

अर्ज़ : मुतवातिर होने के लिए कितनी तादाद दरकार है।

इरशाद : बाज़ ने तेरह चौदह हदीसें फरमाई हैं बाज़ ने फरमाया कि तीस और यहां चालीस हो गईं।

अर्ज़ : *इन्नी अहरमु मा बैना ला बैतहा*। यह हदीस हन्फ़ीया के यहां है या नहीं।

इरशाद : है और इसी पर उनका अमल है इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ इस बात में है कि वहां (मक्का मुअज़्ज़मा) जज़ा लाज़िम आती है और यहां (मदीना तैयबा) नहीं।

अर्ज़ : फासिक़ अगर मुसाफ़हा करना चाहे तो जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर वह करना चाहे तो जाइज़ है इब्तिदा न चाहिए।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर फासिक़े मुअ्लिन हो।

इरशाद : अगरचे मुअ्लिन हो मुब्तअ् से न चाहिए।

अर्ज़ : ज़ैद ने एक शख़्स को पोशीदगी में गुनाह करते देखा अब यह उसके पीछे इक़्तिदा कर सकता है या नहीं।

इरशाद : कर सकता है यह अपने को देखे अगर उस ने कभी कोई गुनाह न किया हो तो न पढ़े हदीस में है। *तरल-कुज़ातु फ़ी ऐने अख़ीका वला तरा अल-जज़ए फ़ी ऐनेका* (हां फासिक़ मुअ्लिन के पीछे नमाज़ पढ़ना गुनाह है)

अर्ज़ : क़ब्र का ऊंचा बनाना कैसा है।

इरशाद : ख़िलाफ़े सुन्नत है मेरे वालिद माजिद मेरी वालिदा माजिदा मेरे भाई की क़ब्रें देखिए एक बालिश्त से ऊंची न होंगी।

अर्ज़ : अगर जेब में कोई लिखा हुआ काग़ज़ हो तो बैतुल-ख़ला जा सकता है। या नहीं

इरशाद : छुपाया हुआ है जा सकता है और एहतियात यह है कि इलाहिदा कर दे।

अर्ज़ : तमग़े जो स्कूलों में मिलते हैं उन पर चेहरा बना होता है उसको लगा कर नमाज़ हो सकती है या नहीं।

इरशाद : होगी मगर मक्रूहे तहरीमी है।

अर्ज़ : हुज़ूर इमाम अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को अबू हनीफ़ा क्यों कहते हैं।

इरशाद : हनीफ़ औराक़ को कहते हैं हुज़ूर को इब्तिदा ही से लिखने का बहुत शौक़ था।

अर्ज़ : अगर बीच दरिया में कश्ती खड़ी हो तो उस पर नमाज़ हो जाएगी या नहीं।

इरशाद : अगर उतर नहीं सकता तो हो जाएगी वरना नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर कश्ती तो मुस्तक़िर है।

इरशाद : कश्ती पानी पर है या जमीन पर पानी पर बेशक मुस्तक़िर है मगर पानी मुस्तक़िर नहीं।

अर्ज़ : करामते औलिया से अगर तख़्त हवा पर रुक जाए तो उस पर नमाज होगी या नहीं।

इरशाद : नहीं कि उसके नीचे की हवा ज़मीन पर मुस्तक़िर नहीं हां अगर यह हो कि तख़्त से ज़मीन तक जितनी हवा है सब मुंजमिद हो जाए तो हो जाएगी। अर्ज़ शुमाली में बर्फ़ की कसरत से दरिया ऐसे जम जाते हैं कि फावड़ों से खोदे जाएं तब भी न खुदें उस पर नमाज़ हो जाएगी जाइज़ है।

अर्ज़ : ज़ैद का अमर से लेन देन है उसका माल ले जा कर अपनी दुकान पर बेचता है अगर वह माल चोरी हो जाए तो अमर उसकी क़ीमत ज़ैद से लेने कर मुस्तहिक़ है या नहीं।

इरशाद : अगर वह मज़ारिब है और उसका लेन देन मज़ारिबत के तौर पर है यानी यह कि उसका माल लाता है और जो कुछ नफ़ा होता है आधा या तिहाई उसको देता है बाक़ी अपने आप लेता है तो क़ीमत नहीं ले सकता हां अगर अमर से मोल लाता है तो ले सकता है कि ख़ुद उसका माल चोरी हुआ।

अर्ज़ : ज़ैद ने अमर को गोटे का तार बनाने के लिए दिया उसने बकर को दे दिया उसके यहां चोरी हो गया तो ज़ैद अमर से ले सकता है या नहीं।

इरशाद : अमर तो बकर से नहीं ले सकता और ज़ैद को अगर यह मालूम है कि अमर दूसरे से भी बनवाया करता है तो यह भी नहीं ले सकता कि उसकी रज़ामन्दी पाई जाती है और अगर मालूम न था या उस ने यह कह कर दिया था कि ख़ास तुम्हें बनाना दूसरे को न देना तो ज़ाहिरन इस सूरत में ज़ैद को ले लेने का अख़्तियार चाहिए।
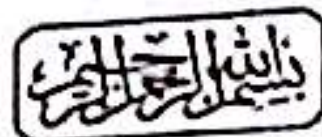
मुसलमानाने आलम के लिए एक आला तरीन

इस्लामी दस्तूरुल-अमल

यानी

मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत

रज़ि अल्लाहु अन्हु

मुसम्मा बनाम तारीख़ी

अल-मल्फ़ूज़

1338 हिजरी

हिस्सा चहारुम

लेखक

शहज़ादए आला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी कुद्देसे सिर्रुहू

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524
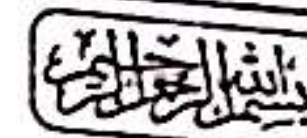
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल-करीम।

अर्ज़ : हदीस के मुतवातिर होने के लिए चौदह या तीस की तादाद है तो चौदह या तीस चाहे हसन हो या सही।

इरशाद : हसन हों या सही। हसन व सही का फ़र्क़ मुहद्देसीन का क्या हुआ है। फ़ुक़हा के नज़्दीक दोनों एक हैं (फिर फरमाया) अस्तन हिनाना के मोजिज़ा को क़्यास चाहता है मुतवातिर होने को, मज्मा का वक़्त था सहाबा किराम का मज्मा सबके सामने का वाक़िया और वाक़िया भी ऐसा अजीब हर एक ने इस वाक़िया को बयान किया होगा बख़िलाफ़ शक़्क़ुल-क़मर के वह आधी रात में वाक़े हुआ था सहाबा भी हुज़ूर के साथ कम थे उसकी हदीस मुतवातिर नहीं कुरआने अज़ीम से इस्नाद किया जाएगा (इसी सिलसिला में फरमाया) फ़ल्सफ़ा में तो गुल की वजह से क़ाज़ी बैज़ावी ने एक और तावील निकाली उन्होंने लिखा ऐ सयन्शिक़ु यानी क़्यामत के दिन शक़ हो जाएगा चुंकि यक़ीनी अल-वक़ूअ् है इसलिए बसेग़ा माज़ी फरमाया गया लेकिन इस तावील को खुद आगे की आयत रद्द फरमाती है। *व इन यरो आयातेही यारूज़ू व यक़ूलू सिहरुन मुस्तमिर्र*। और अगर वह देखें मोजिज़ा को तो एतराज़ करेंगे और कहेंगे यह बड़ा ज़बरदस्त जादू है क़्यामत के दिन कोई एतराज़ करने वाला न होगा उस दिन क्योंकर कोई कह सकता है।

कि जादू है शाह वली अल्लाह ने *तफ़्हीमाते इलाहिया* में लिखा कि शक़्क़ुल-क़मर कोई मोजिज़ा नहीं महज़ इस वजह से कह दिया जाए कि हुज़ूर ने ख़बर दी थी चांद शक़ हो जाएगा और यह महज़ ग़लत है। सही बुख़ारी और सही मुस्लिम की हदीसें उसको मरदूद कर रही हैं। हदीस में मिसरह है कि हुज़ूर ने अंगुश्ते शहादत से इशारा फरमाया और वह शक़ हुआ और इरशाद फरमाया। *अल्लाहुम्मा अशहदु* ऐ अल्लाह गवाह हो जा उसकी अहादीसे मशहूरह हैं और उन से इज्मा मुस्लेमीन लाहिक़ हो गया।

अर्ज़ : तो इस वजह से आयत में दूसरी तावील का एहतमाल न रहा।

इरशाद : असलन न रहा और न पहले था दूसरी आयत इस तावील बातिल को रद्द कर रही है मगर है यह कि *या अबी अल्लाह अल-इस्मतु इल्ला लेकलामुहू वल-कलामु* रसूलुहू। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (फिर फरमाया) इंसान से ग़लती होती है मगर रहमत है उस पर जिसकी खता किसी अम्र मुहिम दीनी पर ज़द न डाले यह बड़ी रहमत है ऐसी ही बातों की निस्बत शैख़ मुहिक़्क़क़ को मदारिज शरीफ़ में गुस्सा आ गया फलास्फ़ा के एतराज़ नक़ल किए कि वह ऐसा कहते हैं ऐसा कहते हैं फिर फरमाया उन से कोई तअज्जुब नहीं ई बद बख़्त मुतकल्लिमाने राचा शुदह अस्त (फिर फरमाया) फलास्फ़ा के तौर पर तो शक़्क़ुल-क़मर मुहाल है वह फ़ल्कियात को क़ाबिले ख़र्क़ बतियाम मानते ही नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर वह तो फ़लक मुहद्दिद अल-जेहात को क़ाबिले ख़र्क़ बतियाम नहीं मानते हैं।

इरशाद : दावा तो उनका तमाम फ़ल्कियात की निस्बत है मगर दलील उनकी सिवाए मुहद्दद अल-जिहात के और कहीं नहीं चलती (फिर फरमाया) इलाहियात व नबवात व मुआद को जो मीज़ान अक़्ल से तौलना चाहेगा वह लग्ज़िश करेगा अक़ाइदे सम्ईया के बारह में उन नुसूस शरइया के हाथ में ऐसा हो जाए जैसे ग़स्साल के हाथ में मैयत बस *आमंनन बेही कुल्ला बिन इन्दे रब्बना*। यह रास्ता सीधा ह और यह अता होता है सलीमुत्तबा सईहुल-अक़ीदा अवाम को और ख़ास कर उनकी औरतों को और ख़ा कर उनकी बूढ़ियों को उन से कितना ही कुछ कहो हरगिज़ न मानेंगी जो सुन चुकी हैं। उसी पर अक़ीदा रखेंगी इसी वास्ते इरशाद हुआ। *अलैकुम बेदीनिल-अजाइज़।* बूढ़ियों का दीन अख़्तियार करो इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि अलेह के यहां उनका एक शागिर्द आया वहां एक जाहिल अन पढ़ बैठा था उस से कहा तुम्हारा क्या मज़्हब है कहा सुन्नी पूछा अपने दिल में उस मज़हब की तरफ से कुछ ख़दशा पाते हो कहा हाशा लिल्लाह जैसा मुझे दोपहर के आफताब

पर यक़ीन है ऐसा ही मुझे अपने मज़हब पर है इमाम का शागिर्द यह सुन कर इतना रोया कि कपड़े भीग गये और कहा कि मैं उस वक़्त नहीं जानता कि कौन सा मज़्हब हक़ है (फिर फरमाया) इसी वास्ते नाक़िस बल्कि कामिल को भी बिला ज़रूरत बद मज़्हबों की किताबों देखना जाइज़ है कि इंसान है मुम्किन है कोई बात मआजल्लाह दिल में जम जाए और हलाक हो जाए इमाम हारिस मुहासेबी ने बद मज़्हबों के रद्द में एक किताब तस्नीफ़ की और वह बद मज़्हबों के रद्द में पहली तस्नीफ थी इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैहि तआला ने उन से कलाम करना छोड़ दिया कहा मुझ से क्या ख़ता हुई मैंने उनका रद्द ही तो किया है फरमाया क्या मुम्किन नहीं है कि तुम ने जो कलाम बद मज़्हबों का नक़्ल किया है किसी के दिल में जम जाए और वह गुम्राह हो जाए (फिर फरमाया) पहले तल्वार थी रद्द की हाजत न थी तल्वार के ज़रिया से सारा इंतिज़ाम हो सकता था अब कि हमारे पास सिवाए रद्द के कोई इलाज नहीं रद्द करना फ़र्ज़ है हदीस में इरशाद हुआ।

जब फित्ने या बद मज़्हिबान ज़ाहिर हों और आलिम अपना इल्म न ज़ाहिर करे तो इस पे अल्लाह और फ़रिश्तों और तमाम आदमियों की लानत अल्लाह न उसका फ़र्ज़ क़ुबूल करे न नफ़्ल (फिर फरमाया) इमाम सईद इब्ने जुबैर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु रास्ता में तशरीफ़ लिए जाते थे एक बद मज़्हब मिला इमाम से कहा मैं कुछ अर्ज़ करना चाहता हूं फरमाया मैं सुनना नहीं चाहता उसने कहा सिर्फ़ एक बात आपने छंगुलियां के पहले पोरे पर अंगूठा रख कर फरमाया। *वला निस्फ़ा कलिमतुन*। आधी बात भी नहीं सुनंगा, लोगों ने सबब पूछा फरमाया अज़ ईशां मिनहुम है (फिर फरमाया) अकाबिर की तो यह हालत और अब यह हालत है कि जाहिल सा जाहिल जुटा पड़ता है आरियों से वहाबियों से और कुछ ख़ौफ़ नहीं करता जो तमाम फ़ुनून का माहिर हो तमाम पेच जानता हो। पूरी ताक़त रखता हो तमाम हथियार पास हों उसको भी क्या ज़रूरी कि ख़्वाह मख़्वाह भेड़ियों के जंगल में जाए हां अगर ज़रूरत ही आ पड़े तो मज्बूरी है अल्लाह पर तवक्कुल करके उन हथियारों से काम ले।

मुअल्लिफ़ : एक मरतवा वाद अस्र तशरीफ़ लाए और इरशाद फरमाया आज चौथा रोज़ है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का वैय्यिन मोजिज़ा ज़ाहिर हुआ, गाय का गोश्त खाने से मुझे मअन ज़रर होता है एक साहव ने मेरे यहां नियाज़ का खाना भेजा और साथ एक रुक़आ में लिख दिया कि उस में से थोड़ा सा चख लें। शोर्वे में मिर्च ज़्यादा थी और मैं मिर्च का आदी नहीं मैंने एक वोटी साफ करके खाई वहुत अच्छा पका था मैंने एक वोटी और मांगी उस वक़्त मालूम हुआ कि गाय का गोश्त है दिल में घवराहट पैदा हुई सैयद महमूद अली साहव का खुदा भला करे ज़मज़न शरीफ़ वहुत सा उन्होंने भेज दिया है मैंने जिस वक़्त इख्तिहाल हुआ फौरन ज़मज़म शरीफ़ पिया सुवह तक वरावर पीता रहा कुछ भी न हुआ (फिर फरमाया) ज़मज़म शरीफ़ में यह मोजिज़ा है कि दो महीने का ज़मज़म शरीफ़ था उस से यह नफ़ा हुआ हालांकि वासी पानी से फौरन मुझे नुक़्सान होता है पहली वार की हाज़िरी में मेरी वाईस वरस की उम्र थी मैंने दोनों वक़्त की रोटी छोड़ दी थी सिर्फ़ गोश्त पर इक्तिफ़ा करता और गोश्त भी दुंवे का जो सुना चरे हुए होते हैं कुछ रोज़ के वाद पेट में ख़लिश मालूम हुई हरम शरीफ़ में जा कर क़दह भर कर ज़मज़म शरीफ़ पिया फौरन ख़लिश जाती रही (फिर फरमाया) खाने पीने की चीज़ों में मुझे ज़मज़म शरीफ़ से ज़्यादा कोई चीज़ मरग़ूव नहीं यहां क्या ज़रिया वहां सुवह दोपहर शाम हर वक़्त पिया सुवह आंख खुली तो पहला काम यह कि ज़मज़म शरीफ़ पीता पांचों नमाज़ों के वाद पहला काम यही होता था। (फिर फरमाया) ज़मज़म शरीफ़ का एक मोजिज़ा यह भी है कि हर वक़्त मज़ा वदलता रहता है किसी वक़्त कुछ खारा पन किसी वक़्त निहायत शीरीं और रात के दो वजे अगर पिया जाए तो ताज़ा दूहा हुआ गाय का ख़ालिस दूध मालूम होता है। (फिर फरमाया) ज़मज़म शरीफ़ जिसके पास काफ़ी मिक्दार में हो उसे न किसी गिज़ा की ज़रूरत है न दवा की हदीस शरीफ़ में फ़रमाया ज़मज़म खाने की जगह खाना है और दवा की जगह दवा अवू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जव जुअफ़े इस्लाम था सहावा चालीस तक न पहुंचे थे उस ज़माना में मक्का मुअज़्ज़मा आए

वहां न किसी से शनासाई न किसी से मुलाक़ात एक महीना कामिल वही ज़मज़म शरीफ़ पिया हालत यह हुई कि पेट की वेल्टें उलट पड़ीं (इस क़द्र तवानाई आ गई) (फिर फरमाया) यह जांच है मुनाफ़िक़ और मोमिन की। मुनाफ़िक़ कभी पेट भर कर नहीं पी सकता और मैं तो वहम्दुलिल्लाह तआला इस क़द्र दूध नहीं पी सकता हूं जिस क़द्र ज़मज़म शरीफ़ पी लेता था। एक वादिया जिस में दो सैर पानी आता था कभी निस्फ़ और कभी निस्फ़ से ज़्यादा पी लेता था वाक़ी जो वचता मुंह और सर पर डाल लेता।

अर्ज़ : ज़मज़म शरीफ़ भी तीन सांसों में पीना चाहिए।

इरशाद : हां हर चीज़ का यही हुक्म है हदीस में इरशाद हुआ : चूस-चूस कर पियो गट-गट कर के वड़े-वड़े घूंट न लगाओ।

अर्ज़ : हुज़ूर किन-किन पानियों को खड़े हो कर पीने का हुक्म है।

इरशाद : ज़मज़म और वुज़ू का पानी शरअ् में खड़े हो कर पीने का हुक्म है और लोगों ने दो और अपनी तरफ़ से लगा लिए हैं एक सवील का और दूसरा झूठा पानी और दोनों झूठे सवील का तो यूं लगा लिया कि अक्सर कीचड़ होती है वैठने की जगह नहीं होती।

(फिर फरमाया) दूसरी वार की हाज़िरी में मुझे जेठ का महीना पूरा मदीना तैयवा में गुज़रा दिन में तो कुछ ख़फ़ीफ़ गर्मी होती थी रात को अगर नमाज़ इशा पढ़कर सोए तो सिवाए मुअज़्ज़िन की आवाज़ के और कोई जगाने वाला नहीं न गर्मी न पिस्सू न खटमल न मच्छर, हदीस में इरशाद हुआ। मदीना की रात में न गर्मी है न सर्दी न ख़ौफ न मलाल, मिना में तीन दिन की करोड़ों जानवर ज़वह होते हैं न मक्खी नज़र आती है न कव्वा चील अगर कोई कहे वहां मक्खी होती ही न हो तो मक्का मुअज़्ज़मा में शव के वक़्त देखा गया कि अगर सोते में हाथ उठ गया तो मक्खियों का डंगारा उड़ गया।

अर्ज़ : ज़ैद मुर्तद हो गया तो औरत पर इद्दत है या नहीं।

इरशाद : अगर कुर्वत हो चुकी है तो इद्दत करेगी वरना नहीं।

अर्ज़ : इद्दत तो निकाह के लिए है और मुर्तद का निकाह ही नहीं।

इरशाद : शुवह निकाह की भी इद्दत होती है। (और सवाल तो याद

निकाह इर्तिदाद की सूरत से था)

अर्ज़ : मुर्तद मुसलमान हो गया तो अपनी बीवी से जबरन निकाह कर सकता है या नहीं।

इरशाद : उसकी रज़ा मन्दी से कर सकता है।

अर्ज़ : हुज़ूर क्या इस सूरत में हलाला है।

इरशाद : नहीं कि हलाला तलाक़ के साथ ख़ास है।

अर्ज़ : हालते इस्लाम में दो तलाक़ें दी थीं फिर मआज़ल्लाह मुर्तद हो गया अब फिर इस्लाम लाया अब कितनी तलाक़ का मालिक है।

इरशाद : एक तलाक़ का।

अर्ज़ : यह जो कहा जाता है कि इस्लाम अपने मा क़ब्ल को मिटा देता है।

इरशाद : अपने मा क़ब्ल के गुनाहों को मिटा देता है।

अर्ज़ : नाबालेग़ी में ज़ैद आलिम हो गया वह मुकल्लफ़ है या नहीं।

इरशाद : अभी से मुकल्लफ़ हो जाएगा इल्म सबब तक्लीफ़ नहीं जाहिल महज़ है और बालिग़ है मुकल्लफ़ है और अल्लामा है बालिग़ नहीं तो मुकल्लफ़ न होगा।

अर्ज़ : नौशेरवां को आदिल कह सकते हैं या नहीं।

इरशाद : नहीं। और अगर उसके अहकाम को हक़ जान कर कहे कुफ़्र है वरना हराम।

अर्ज़ : हुज़ूर मैं आजकल बहुत परेशान हूं गुज़र औक़ात मुश्किल से होती है क़र्ज़दार बहुत हो गया हूं।

इरशाद : हर नमाज़ के बाद ११-११ बार और सुबह व शाम १००-१०० बार रोज़ाना अव्वल व आख़िर दरूद शरीफ़, इसी दुआ की निस्बत मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम ने फ़रमाया अगर तुझ पर मिस्ल पहाड के भी क़र्ज़ होगा तो उसे अदा कर देगा।

अर्ज़ : मदारिस से जो तार आता है उसके आने में कुछ वक़्फ़ा नहीं लगता।

इरशाद : शायद एक सिकेण्ड दो सिकेण्ड का वक़्फ़ा लगता हो। अगर तार का सिलसिला बराबर मुत्तसिल हो कहीं मुन्क़ता न हो तो तीस

सैकेण्ड में सारी ज़मीन का दौरा करके फिर वहीं आ जाएगा। एक सैकेण्ड में तक़रीबन एक हज़ार मील चलता है और नूर एक सैकेण्ड में एक लाख बानवे हज़ार मील चलता है और रूह बासिरा की रफ़्तार उस से भी कहीं तेज़ है उसकी रफ़्तार ख़ुदा ही जानता है एक निगाह उठाई और फ़ौरन फलक सवाबित तक पहुंची एक सैकेण्ड का वक़्फ़ा नहीं लगता।

अर्ज़ : फ़लक सवाबित का फ़ासिला कितना होगा।

इरशाद : वल्लाहु आलम सबसे क़रीब तर साबिता जो माना गया है नौ अरब उन्तीस करोड़ मील है (फिर फ़रमाया) ज़मीन से सिदरतुल-मुन्तहा तक पचास हज़ार बरस की राह है उस से आगे मुस्तवी उसका बाद अल्लाह जाने उस से आगे अर्श के सत्तर हज़ार हिजाब हैं हर हिजाब से दूसरे हिजाब तक पांच सौ बरस का फ़ासिला और उस से आगे अर्श और इन तमाम उरअतों में फ़रिश्ते भरे हैं हदीस में है आसमानों में चार अंगुल जगह नहीं जहां फ़रिश्ते ने सज्दे में पेशानी न रखी हो। फ़रमाइए किस क़द्र फ़रिश्ते हैं। *वमा यालमु जुनूदु रब्बिका इल्ला हुवा* और तेरे रब के लशकरों को उसके सिवा कोई नहीं जानता (इसी सिलसिला में फ़रमाया) जब फ़रमाया गया *अलैहा तिस्अता अशर* दोज़ख़ पर उन्नीस फ़रिश्ते मुवक्किल फ़रमाए उस पर कुफ़्फ़ार ने इस्तेहज़ा किया रब अज़्ज़ा व जल्ल ने फ़रमाया यह इस वास्ते तादाद फ़रमाई गई ताकि यक़ीन करें वह लोग जिन्हें किताब मिली और ज़्यादा हो ईमान वालों का ईमान और शुक्र करें अह्ले किताब और मुमिनीन (फिर फ़रमाया) अबू जहल लईन ने कहा था दोज़ख़ में सिर्फ़ उन्नीस फ़रिश्ते हैं दस से मैं निबट लूंगा नौ से तुम निबट लेना। एक और ख़बीस ने कहा नौ को अपने हाथों पर उठा लूंगा और आठ को अपनी पीठ लाद लूंगा दो रह गये उन से तुम निबट लेना मआज़ल्लाह।

अर्ज़ : हुज़ूर कितने फ़रिश्तों पर ईमान लाना चाहिए।

इरशाद : जितने मलाइका हैं सब पर ईमान लाना ज़रूरी है फ़रमाता है *कुल्लुन आमना बिल्लाहि व मलाइकतिही।* कोई तादाद मुक़र्रर न फ़रमाई तमाम फ़रिश्तों पर ईमान लाना ज़रूरी है जिस तरह *व कुतुबोहि* और फ़रमाया गया तमाम किताबों पर ईमान ज़रूर है

किताबों में चार के नाम मालूम हैं और उनके सिवा और सुहफ़ नाज़िल हुए यही कहना चाहिए कि हम तमाम किताबों पर ईमान लाए इसी तरह फरमाया *व रुसुलोहि* यहां भी तमाम रसूलों पर ईमान लाना ज़रूरी है इसी तरह जितने मलाइका हैं सब पर ईमाना लाज़िम है।

अर्ज़ : अगर कश्ती बीच दरिया में खड़ी हो और किनारे उतरना मुम्किन हो लेकिन कोई उतरने न दे तो नमाज़ होगी या नहीं।

इरशाद : पढ़ ले जब किनारे पर उतरे एआदा करे।

अर्ज़ : औरत से अगर कलिमा कुफ़्र निकल जाए तो निकाह टूटेगा या नहीं बाद तौबा के फिर तज्दीदे निकाह करे।

इरशाद : हां अमलन (और फतवा उस पर है कि इर्तिदादे ज़न से औरत निकाह से नहीं निकलती वह तौबा और शौहरे अव्वल की तरफ़ रुजूअ़ पर मज्बूर की जाएगी वरना अमान उठ जाएगी। १२ मुअल्लिफ़ उफ़िफ़या अन्हु) बअस्लुल-मज़्हब यही है कि निकाह फिल-हाल फस्ख़ हो जाता है।

अर्ज़ : किसी मुसलमान को काफिर कह दिया क्या हुक्म है।

इरशाद : बतौर सब व शितम कहा तो काफिर न हुआ गुनहगार हुआ और अगर काफिर जान कर कहा तो काफिर (यह हुक्म मुसलमान के काफिर कहने का है और जो शख़्स बावजूद अदआए ईमान व इस्लाम कलिमाते कुफ़्र बोले अफ़्आ़ल कुफ़्र करे उसको काफिर ही कहा ही जाएगा कि यहां मुसलमान को काफिर कहना नहीं बल्कि काफिर को काफिर कहना है। १२) हो गया।

अर्ज़ : हुज़ूर एक साहब पहले मुहद्दिस (यानी हज़रत मौलाना वसी अहमद साहब कुद्दिसा सिर्रुहुल-अज़ीज़ १२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू) साहब रहमतुल्लाह तआला अलैहि के यहां मदरसा में पढ़ते थे अब उनकी हालत यह है कि अक्सर मख़्फ़ी बातें बताते हैं लोगों का हुजूम ज़्यादा है और नमाज़ वग़ैरह की पाबन्दी नहीं है।

इरशाद : एक साहब औलिया-ए-किराम रहमतुल्लाह तआला अलैहिम में से थे आपकी ख़िदमत में बादशाहे वक़्त क़दम बोसी के लिए हाज़िर हुआ हुज़ूर के पास कुछ सेब नज़्र में आए थे हुज़ूर ने एक सेब दिया और

कहा खाओ अर्ज़ किया हुज़ूर भी नोश फरमाएं आपने भी खाए और बादशाह ने भी उस वक़्त बादशाह के दिल में ख़तरा आया कि यह जो सब में बड़ा अच्छा। खुश रंग सेब है अगर अपने हाथ से उठा कर मुझ को दे देंगे तो जान लूंगा यह वली हैं। आपने वही सेब उठा कर फरमाया हम मिस्र गये थे वहां एक जगह जल्सा बड़ा भारी था देखा कि एक शैख़ है उसके पास एक गधा है उसकी आंखों पर पट्टी बंधी है एक चीज़ एक शख़्स की दूसरे के पास रख दी जाती है उस गधे से पूछा जाता है गधा सारी मज्लिस में दौरा करता है जिस के पास होती है सामने जा कर सर टेक देता है यह हिकायत हम ने इसलिए बयान की कि अगर यह सेब हम न दें तो वली ही नहीं और अगर दे दें तो उस गधे से बढ़ कर कमाल यह फरमा कर सेब बादशाह की तरफ़ फेंक दिया बस यह समझ लीजिए कि वह सिफ़त जो ग़ैर इंसान के लिए हो सकती है इंसान के लिए कमाल नहीं और वह जो ग़ैर मुस्लिम के लिए हो सकती है मुस्लिम के लिए कमाल नहीं -

अज़ीज़ : मुस्मरीज़म की हक़ीक़त क्या है?

इरशाद : असल उसकी तस्हीह तसव्वुर है रूह की कुव्वतों को ज़ाहिर करना रूह की बहुत कुव्वतें हैं सबअ़ सनाबिल शरीफ़ में है तीन साहब जा रहे थे दूर से एक जंगल में देखा कि बहुत आदमियों का मज्मा है एक राजा गद्दी पर बैठा है ज्वारी हाज़िर हैं एक फाहिशा नाच रही है शमअ़ रौशन है यह साहब तीर अन्दाज़ी में बड़े मशक़ थे आपस में कहने लगे कि उस मज्लिस फ़िस्क़ व फुजूर को दरहम बरहम करना चाहिए क्या तदबीर की जाए एक ने कहा कि राजा क़त्ल कर दो कि सब कुछ उसी ने किया है दूसरे ने कहा कि उस नाचने वाली औरत को क़त्ल करो तीसरे साहब ने कहा उसे भी क़त्ल न करो कि वह खुद नहीं आई राजा के हुक्म से आई है अपनी ग़रज़ तो मज्लिस का दरहम बरहम करना है उस शमअ़ को गुल करो यह राय पसन्द आई उन्होंने ताक कर शमअ़ की लव पर तीर मारा शमअ़ गुल हुई अब न वह राजा रहा न फाहिशा न मज्मा निहायत तअज्जुब हुआ बक़िया रात वहीं गुज़री जब सुबह हुई देखा तो एक उल्लू मरा पड़ा है और उसकी चोंच में वही

तीर लगा है तो मालूम हुआ कि यह सब काम उसी उल्लू की रूह कर रही थी (फिर फरमाया) नमरूद के दरवाज़ा पर एक दरख़्त था जिसका साया बिल्कुल न था जब एक शख़्स उसके नीचे आता उसके लाइक़ साया हो जाता दूसरा आता तो दो के लाइक़ हो जाता ग़रज़ एक लाख तक आदमी उसके साया में रह सकते और जहां एक लाख से भी ज़्यादा हुआ सब धूप में उसी का एक हौज़ था सुबह को लोग आते कोई उसमें प्याला भर कर दूध डालता कोई शर्बत कोई शहद जिसको जो पसन्द आता यहां तक कि वह भर जाता और सब चीज़ें ख़लत हो जातीं अब जिसको हाजत होती प्याला डालता जो शय जिस ने डाली होती वही उसके जाम में आ जाती यह काफिर और वह भी कैसे बड़े काफिर का इस्तिद्राज था। इसी वास्ते औलियाए किराम फरमाते हैं कश्फ़ व करामत न देख इस्तिक़ामत देख कर शरीअत के साथ कैसा है हज़रत ख़्वाजा शैख़ बहाउल-हक़ वालिदैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कि सिलसिला आलिया नक़्शबन्दीया के इमाम हैं आपसे किसी ने अर्ज़ की कि हज़रत तमाम औलिया से करामतें ज़ाहिर होती हैं। हुज़ूर से भी कोई करामत देखीं फरमाया उस से बड़ी और क्या करामत है कि इतना बड़ा भारी बोझ गुनाहों का सर पर है और ज़मीन में धंस नहीं जाता।

अर्ज़ : मकान में वुज़ूर के लिए मस्जिद से गर्म पानी ले जाने का क्या हुक्म है।

इरशाद : हराम है अगरचे वुज़ू के लिए ले जाए।

अर्ज़ : हुज़ूर रिजालुल-ग़ैब मलाइका से हैं।

इरशाद : नहीं। जिन्नों या इंसानों में से होते हैं आपने रिजाल पर ख़्याल नहीं किया। मलाइका पाक हैं रिजाल आर निसा होने से।

अर्ज़ : बूदार पसीना बग़लों से निकले वुज़ू ताज़ा करना होगा या नहीं।

इरशाद : पसीना निकलने से वुज़ू ज़रूरी नहीं हां अगर खुजा ले तो ताज़ा वुज़ू कर लेना मुस्तहब है।

अर्ज़ : मजाज़ीब भी किसी सिलसिले में होते हैं।

इरशाद : हां वह खुद सिलसिले में होते हैं उनका कोई सिलसिला

नहीं उन से आगे फिर नहीं चलता।

अर्ज़ : किसी की करामत कसबी भी होती है।

इरशाद : करामत सब की वहबी होती है और वह जो कसब से हासिल हो भान मती का तमाशा है लोगों को धोखा देना है।

अर्ज़ : रिजालुल-ग़ैब क्यों कहलाते हैं।

इरशाद : ग़ायब रहते हैं इस वजह से।

अर्ज़ : रिजालुल-ग़ैब भी सिलसिले में होते हैं।

इरशाद : हां यह भी सिलसिले में होते हैं अल्बत्ता अफराद सिवाए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के और किसी के मातहत नहीं इसी वास्ते फर्द कहलाते हैं सिलसिले में किसी के नहीं लेकिन हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ रुजूअ से चारा नहीं।

अर्ज़ : इन चारों सलासिल के अलावा भी कोई और ख़ानदान है जो उन चारों में से किसी की शाख़ न हो।

इरशाद : हां थे अब तो बहुत से मुन्क़ता हो गये एक सिलसिला अमीरुल-मुमिनीन फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से एक उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से एक अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से था सैयदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से एक सिलसिला अलावा सिलसिला नक़्शबन्दीया के हवारिया था उसके इमाम हज़रत सैयदी अबू बकर हवार रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु थे आपके मुरीद हज़रत अबू मुहम्मद शंबुकी और आपके मुरीद हज़रत ताजुल-आरेफीन अबुल-वफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु थे (फिर फरमाया) अल्लाह को हिदायत फरमाते देर नहीं लगती यह हज़रत अबू बकर हवार रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पहले रहज़न थे क़ाफ़िले के क़ाफ़िले तन्हा लूटा करते थे एक बार एक क़ाफ़िला उतरा आप वहां तशरीफ़ ले गये एक ख़ेमा की तरफ़ गये उस ख़ेमा में औरत अपने शौहर से कह रही थी शाम क़रीब है और उस जंगल में अबू बकर हवार का दख़ल है ऐसा न हो कि वह आ जाएं बस यह कहना उनका हादी हो गया खुद फरमाया अबू बकर तेरी हालत यह हो गई कि ख़ेमों में औरतें तक तुझ

से ख़ौफ़ करती हैं। और तू खुदा से नहीं डरता उसी वक़्त ताइब हुए और घर को लौट आए शव को सोए, ख़्वाब में ज़्यारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हुए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी थे आपने अर्ज़ किया बैअत लीजिए इरशाद फरमाया तुझ से तेरा हम नाम बैअत लेगा अबू वकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने बैअत ली और अपनी कुलाह मुबारक उनके सर पर रखी आंख खुली तो कुलाहे अक़्दस मौजूद थी यह सिलसिला हवारिया आप से शुरू हुआ।

अर्ज़ : अरव के साथ मुहब्बत रखने का हुक्म हदीस में है।

इरशाद : हां। हदीस में है।

अर्ज़ : अरवी ज़वान मरने के वक़्त से हो जाती है।

इरशाद : उसकी वावत तो कुछ हदीस में इरशाद नहीं हुआ हज़रत सैयदी अब्दुल-अज़ीज़ दबाग़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु साहिवे किताव इब्रीज़ के शैख़ फरमाते हैं मुंकर नकीर का सवाल सुरयानी में होगा और कुछ लफ़्ज़ भी बताए हैं।

अर्ज़ : इवरानी और सुरयानी एक ही हैं।

इरशाद : इवरानी और है और सुरयानी और इवरानी में इंजील नाज़िल हुई और सुरयानी में तौरेत है।

अर्ज़ : हुज़ूर मुतकल्लेमीन जो ज़मां व मकां को वाद व इम्तिदाद मौहूम कहते हैं उसके क्या मानी।

इरशाद : ख़ारिज में उनका वजूद नहीं वहम हुक्म करता है लेकिन उनका वजूद ईनाव इग़वाल के मिस्ल नहीं अस्लियत है।

अर्ज़ : हुज़ूर ख़ला मुम्किन है।

इरशाद : ख़ला मानी फ़िज़ा तो वाक़े है और ख़ला वमानी फ़िज़ा ख़ाली अन जमीअ् अल-अशिया मौजूद तो नहीं लेकिन मुम्किन है फलासफ़ा जितनी दलीलें वयान करते हैं। *जुज़ ला यतजज़्ज़ा* और ख़ला वग़ैरह के इस्तिहाला में वह सव मरदूद हैं कोई दलील फ़लासफ़ा की ऐसी नहीं जो टूट न सके फ़लासफ़ा ने जितनी दलीलें क़ायम की हैं वह सब इत्तिसाल अज्ज़ा को वातिल करती हैं। वजूद जुज़ को वातिल नहीं

करतीं और तरकीव जिस्म के लिए इत्तिसाल ज़रूरी नहीं दीवार जिस्म मुरक्कव है और उसके अज्ज़ा मुत्तसिल नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर मुक़ावला तो निकलेगा और एक वह सतह निकलेगी जो मुक़ाविल होगी और एक वह जो मुक़ाविल न होगी फिर तक़्सीम हो जाएगी।

इरशाद : मुक़ावला कल से होगा उसकी सूरत यह है कि उसूले मौज़ूआ में लिखा हैं कि सतह और ख़त और नुक़्ता मौजूद ख़ार्जी हैं अव हम एक नुक़्ता से तीन ख़त एक जानिव को एक हद तक खींचें। हर ख़त की इंतिहा पर नुक़्ता होगा हम पूछते हैं यह तीनों नुक़्ते हर एक आपस में कल से मुक़ाविल हैं या जुज़ से अगर जुज़ से माना जाए तो नुक़्ते के अज्ज़ा हो जाएंगे हालांकि नुक़्ता मुतजज़ी नहीं तो सावित हो गया कि कल से मुक़ावला हो सकता है (फिर फरमाया) मैंने तो जुज़ ला यतजज़्ज़ा का कुरआने अज़ीम से इस्वात किया है फ़रमाता है। *व मज़्ज़क़्नाहुम कुल्ला मुमज़्ज़क़िन* और हम ने उनको पारा-पारा कर दिया है पारा-पारा करना मुमज़्ज़क़ वमानी इस्म मफ़ऊल नहीं कि इस सूरत में तहसील हासिल होगी वल्कि वमानी मस्दर है।

अर्ज़ : खाना खाते वक़्त वोलना कैसा है।

इरशाद : खाना खाते वक़्त इल्तिज़ाम कर लेना न बोलने का यह आदत है मजूस की। और मक्रूह है और लग़्व वातें करना हर वक़्त मकरूह और ज़िक्रे ख़ैर करना यह जाइज़ है।

अर्ज़ : नौकर नमाज़ न पढ़े तो आक़ा पर मुवाख़ज़ा है या नहीं।

इरशाद : जितनी ताकीद कर सकता है इतनी न करे तो मुवाख़ज़ा है वरना नहीं।

अर्ज़ : मस्जिद में कुर्सी विछा कर उस पर बैठ कर वअ़ज़ कहना जाइज़ है।

इरशाद : जाइज़ है खुद हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ईदगाह में कुर्सी विछा कर उस पर वअ़्ज़ फरमाया है।

अर्ज़ : क्या औलिया से भी अहयाए मौता का सुबूत है।

इरशाद : हां हज़रत सैयदी अहमद जाम ज़िन्दा पीर रज़ि अल्लाहु

तआला अन्हु एक मरतवा तशरीफ़ लिए जाते राह में एक हाथी मरा पड़ा था लोगों का मज्मा था आप तशरीफ़ ले गये फरमाया क्या है अर्ज़ किया हाथी मर गया है फरमाया उसकी सूंड वैसी ही है आंखें भी वैसी हैं हाथ भी वैसे ही पैर भी वैसे ही हैं ग़रज़ सव चीज़ों को फरमाया कि वैसे ही हैं फिर मर कैसे गया यह फरमाना थ कि फ़ौरन ज़िन्दा हो गया जव से आप का लक़्व ज़िन्दा पीर हो गया।

अर्ज़ : अगर लड़की नावालिग़ हो तो उसका वली निकाह में कौन हो सकता है।

इरशाद : वाप और वाप के वाद दादा और दादा न हो तो भाई। भाई न हो तो भतीजा, भतीजा न हो तो चचा फिर चचा का वेटा। अलख़

अर्ज़ : नावालिग़ लड़के का वाप तलाक़ दे तो होगी या नहीं।

इरशाद : नहीं हो सकती।

अर्ज़ : हुज़ूर जव उसका निकाह का अख़्तियार है तो तलाक़ का भी होना चाहिए।

इरशाद : निकाह करा देने का मालिक है कि वह नफ़ा है तलाक़ का नहीं कि वह ज़रर है।

अर्ज़ : वद्दुआ में यह कहना कि तुझे खुदा समझे।

इरशाद : तुझे खुदा समझे कह सकता है यहां समझने के माना इंतिक़ाम लेने के हैं।

अर्ज़ : किसी को ज़ानी कह कर पुकारना कैसा है।

इरशाद : अगर चार गवाह शरई न ला सके तो क़ाज़िफ़ है (फिर फरमाया) इस तरह से तो लोग कम वोलते हैं आजकल जो अवाम में जारी है और उसको मअ्यूव नहीं समझते किसी को वेटी के साथ किसी को वहन के लफ़्ज़ के साथ किसी को लफ़्ज़ वड़ के साथ वह फ़हश लफ़्ज़ मिलाते हैं यह भी मूजिवे हद्दे क़ज़फ़ है ऐसे ही किसी को हरामी कहना लड़की को हराम ज़ादी कहना।

अर्ज़ : हुज़ूर मर्द को हराम ज़ादा कहना।

इरशाद : यह हद्दे क़ज़फ़ का मूजिव नहीं हराम ज़ादा के मानी शरीर के आते हैं।

अर्ज़ : अगर कोई हराम ज़ादी के मानी शरीरा ले तो हद्दे क़ज़फ़ का मूजिव होगा या नहीं।

इरशाद : होगा क्योंकि यहां उर्फ़ का एतवार है।

अर्ज़ : और अगर इस्तेहज़ा कह दिया।

इरशाद : जव भी मूजिव हद्दे क़ज़फ़ होगा (फिर फरमाया) वल्कि जो वड़ के साथ है अपने छोटे-छोटे वच्चों से कहते हैं हदीस में है एक वह ज़माना आने वाला है कि लोगों में उनकी तहीयत की जगह गाली होगी मैंने खुद अपनी आंखों से देखा और कानों से सुना सलाम की जगह गाली वकते हुए।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर किसी को यह अल्फ़ाज़ कह दिए हैं उनकी तलाफ़ी क्योंकर होगी।

इरशाद : अगर उसके मुंह पर कहे हैं या उसको ख़वर होगी तो उस से मआफ़ी मांगे और अल्लाह से तौवा करे और अगर मुंह पर न कहा और न ख़वर हुई तो सिर्फ़ तौवा काफ़ी है।

अर्ज़ : हुज़ूर यह भी कोई हदीस है :

इरशाद : यह हदीस नहीं वल्कि अमीरुल-मुमिनीन फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद है। (यह हदीस मिश्कात शरीफ़ में है। सह्व हुआ है। (वहाउल-मुस्तफ़ा गुफ़िरा लहू)

अर्ज़ : उसके क्या मानी हैं।

इरशाद : वअ्ज़ न कहेगा मगर अमीर या जिसको अमीर ने हुक्म दिया या इतराने वाला।

अर्ज़ : हुज़ूर उलमा मामूर की शक़ में दाख़िल होंगे।

इरशाद : हाशा उलमा खुद अमीर हैं ऊलुल-अमरे मिन्कुम से उलमा ही मुराद हैं उलमा नायव हैं नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हक़ीक़तन उलमा ही हाकिम हैं उलमा की इताअत फ़र्ज़ है सलातीन पर वशर्तेकि उलमा हों।

अर्ज़ : वाखुदा दारेम कार व वा ख़लाइक़ कार नीस्त का क्या मतलव है वक़्आतुस्सिनान में लिखा है कि उसका मतलव जो हम अह्ले सुन्नत के नज़्दीक है वह तुमको क्यों पसन्द होगा और जो तुम्हारा

मतलब है वह यक़ीनन कुफ़्र है।

अर्ज़ : हुज़ूर यह मशहूर है कि जिस मुवाह को कुफ़्फ़ार मना करें वाजिब हो जाता है।

इरशाद : जिस मुवाह के तर्क में मुसलमानों के लिए ज़िल्लत हो वह वाजिब हो जाता है कि मुसलमानों को ज़िल्लत पहुंचाना हराम तो जिस अम्र में मुसलमानों को ज़िल्लत पहुंचे उसका तर्क वाजिब है।

अर्ज़ : फतावा आलमगीरिया किस की तस्नीफ़ है।

इरशाद : मौलाना निज़ामुद्दीन साहब जो मज्मा उलमा के सरदार थे उनकी तस्नीफ़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर फिर उसको आलमगीरिया क्यों कहते हैं।

इरशाद : सुल्तान आलमगीर रहमतुल्लाह अलैह ने उलमा को जमा करके तस्नीफ़ कराई और उस में कई लाख रुपया सर्फ़ किया करीब कुतुबख़ाना जमा किया तमाम किताबों में देख-देख कर यह फतावा तस्नीफ़ हुआ।

अर्ज़ : मुनाज़रा में यह शर्त करना कि जो मग़लूब हो ग़ालिब का मज़्हब अख़्तियार कर ले कैसा है।

इरशाद : हराम है और अगर दिल में यह है कि दूसरा ग़ालिब होगा तो वह शख़्स अपने मज़्हब को छोड़ देगा तो यह कुफ़्र है अइम्मा किराम की तस्रीह है कि जो शख़्स कुफ़्र का इरादा करे मुज़ाफ़न या मुअल्लक़न अभी काफिर हो गया मुज़ाफ़न यह कि मसलन इरादा करे बीस बरस बाद कुफ़्र करेगा तो अभी काफिर हो गया कि कुफ़्र पर राज़ी हुआ और मुअ़ल्लक़ की शक्ल यह है कि अगर वह काम हो जाए या न हो तो वह शख़्स कुफ़्र करेगा हां अगर दिल में यह है कि यक़ीनन मैं ही ग़ालिब आऊंगा तो कुफ़्र नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर वहाबिया यह कहें कि बारी तआला के लिए जुल्म इस वजह से मुहाल है कि ग़ैर मालिक मुस्तक़िल है ही नहीं तो बिज़्ज़ात मुहाल नहीं उसका क्या जवाब है।

इरशाद : यूं तो कोई शय मुहाल बिज़्ज़ात न रहे मुख़ालिफ़ पूछेगा यह क्यों मुहाल है जब उसकी वजह इस्तेहाला बताइएगा वह कह देगा

इस वजह से मुहाल है नफ़्स ज़ात में इस्तेहाला नहीं, मुहाल बिज़्ज़ात वह है जिस की नफ़्स ज़ात उबा करे वजूद से और वह अर्ज़ भी मुहाल बिज़्ज़ात होता है जो अपने वजूद के वक़्त ऐसी शय से मुतअल्लिक़ होता है जिसकी नफ़्स ज़ावत उबा करती है वजूद से और अगर वह से शय मुस्तक़िल नहीं तो जिसके साथ उसका तअल्लुक़ है उसकी नफ़्स ज़ात उबा करे उसके वजूद से तो वह भी मुहाल बिज़्ज़ात है वज्हे इस्तेहाला बयान करने से शय मुहाल बिल-ग़ैर नहीं हो जाती अल्लाह ने ख़बर दी कि फलां बात होगी या न होगी अब उसका ख़िलाफ़ मुम्किन है या मुहाल मुम्किन तो है नहीं और मुहाल बिज़्ज़ात हो नहीं सकता कि नफ़्स ज़ात में इम्कान है तो मुहाल बिल-ग़ैर होगा अब वह ग़ैर किया है जिसके सबब से यह मुहाल है वह किज़्बे इलाही है लाज़िम आएगा कि किज़्बे इलाही मुहाल बिज़्ज़ात हो वरना मुहाल बिल-ग़ैर मुम्किन बिज़्ज़ात होता है और मुम्किन बिज़्ज़ात पर कोई शय मौक़ूफ़ होने से मुहाल बिल-ग़ैर नहीं हो जाती (फिर फरमाया) किज़्बे इलाही का इम्कान मान कर अक़ाइदे ईमान, शराए अदयान कुछ भी न रहेगा ईमान कहते हैं एतक़ाद साबित जाज़िम ग़ैर मुतज़लज़ल को हमारा ईमान है कि क़यामत आएगी फिर क्या सबब है कोई दलील अक़्ली उस पर क़ायम नहीं सम्ईयात मुहज़ा में से है ला मुहाला मानना पड़ेगा कि अख़्बारे इलाही और जब अख़्बारे इलाही में किज़्ब मुम्किन हुआ तो एतक़ाद साबित जाज़िम ग़ैर मुतज़लज़ल कहां से आएगा फिर तो हर बात में यह रहेगा कि मुम्किन है झूठ कह दिया हो तो न दीन रहा न कुरआन न इस्लाम रहा न ईमान।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर कलामे लफ़्ज़ी में किज़्ब मुम्किन माना जाए और कलामे नफ़्सी को उस से पाक माना जाए तो क्या ख़राबी है।

इरशाद : कलामे लफ़्ज़ी ताबीर किस से है किसी मानी से है या यह मानी से इलाहिदा अल्फ़ाज़ हैं ज़रूर है कि माना से ताबीर है और माना कलामे नफ़्सी अब हम यह पूछते हैं कि सिद्क़े किज़्ब अव्वलन माना को आरिज़ हुआ या अल्फ़ाज़ को ज़रूर है कि माना ही को आरिज़ है उसके ज़रिया से अल्फ़ाज़ पर, तो किज़्बे कलाम नफ़्सी पर हुआ या सिर्फ़ कलाम लफ़्ज़ी पर, माना अगर मुताबिक़ वाक़े हैं तो सादिक़, वरना

काज़िब अल्फ़ाज़ अगर उसके मुवाफ़िक़ हैं तो यह सादिक़ होगा तो वह भी सादिक़ और यह काज़िब तो यह भी काज़िब और अगर मुवाफ़िक़ नहीं तो ताबीर ही न हुई बशर का कलाम लीजिए ज़ैद के ज़हन में एक मानी हैं। *ज़ैदुन क़ाइमुन* अब अगर अल्फ़ाज़ में *ज़ैदुन लैसा बेक़ाइमुन* हैं तो सिरे से उसकी ताबीर ही न हुई और अगर ज़ैद क़ायम है तो माना सादिक़ होंगे तो यह भी सादिक़ होगा और यह काज़िब तो यह भी काज़िब (फिर फरमाया) हम तो कलाम बारी अज़्ज़ा व जल्ला में लफ़्ज़ी व नफ़्सी का तफ़रक़ा मानते ही नहीं हमारे नज़्दीक दोनों एक ही हैं यह मुतअख़्ख़ेरी मुतकल्लेमीन की ग़लती है।

अर्ज़ : मुतसल्लिब सुन्नी को एतराज़ की नज़र से ख़ुबसा की किताबें देखना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : फ़क़त मुतसल्लिब होना काफी नहीं बल्कि आलिम हो पूरा माहिर हो वसीअ् नज़र हो उसके साथ मुतसल्लिब सुन्नी भी हो क्या एतमाद रखता है अपने नफ़्स पर और जो अपने नफ़्स पर एतमाद करे उसने बड़े कज़्ज़ाब पर एतमाद किया हदीस में है। *अल-कुलूबु फ़ी अस्बईर्रहमानु यस्रेफुहा कैफ़ा यशाओ*। इंसान के दिल रहमान के दस्ते कुदरत की दो उंगलियों में हैं। फेरता है उनको जिस तरफ चाहता है उसके बाद मग़्रिब की नमाज़ का वक़्त आ गया खुद आला हज़रत क़िब्ला रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने क़याम फरमाने से पहले हस्बे मामूल यह दुआ पढ़ी। *सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बेहम्देका अशहदु अन्ना ला इलाहा इल्ला अन्ता अस्तग़्फ़िरुका व अतूबु इलैका।* एक ख़ादिम ने अर्ज़ किया हुज़ूर इसकी फ़ज़ीलत क्या है इरशाद फरमाया हदीस में है जो शख़्स जल्सा से उठते वक़्त इस दुआ को पढ़ेगा जिस क़द्र नेक बातें उस जल्सा में की होंगी उन पर मुहर लगा दी जाएगी कि साबित रहें और जितनी बुरी बातें की होंगी वह महव कर दी जाएंगी।

अर्ज़ : मख़्लूक़ाते ख़ालिक़ तबारक व तआला में हीज़दह हज़ार आलम कि मशहूर हैं इस तरह होते हैं अव्वल आलमे उक़ूल दोम आलमे अरवाह नौ (९) आलम अफ़्लाक चार आलम अनासिर तीन आलम मवालीद मज्मूअ् अट्ठारह हुए और खुदा वन्दे आलम के हज़ार नाम हैं

हर नाम उन में एक तसर्रुफ़ मख़्सूस रखता है जब अट्ठारह को एक हज़ार में ज़रब दी जाएगी अट्ठारह हज़ार होंगे बाज़ रिवायात से सी सद व शस्त हज़ार यानी त्रिसठ हज़ार पाए जाते हैं बाज़ सत्तर हज़ार बताते हैं बाज़ के नज़्दीक अट्ठारह आलम हैं अक़्लीया, रूहिया, नफ़्सिया, तबईया, जिस्मानिया, उन्सुरीया, मिसालिया, ख़्यालिया, बरज़ख़ीया, हश्रीया, जिन्नातिया, जहन्नमीया, एराफ़िया, रूवैतिया, सूरीया, जमालिया, जलालिया यह सत्तरह होते हैं यक़ीनन एक रह गया है वह इरशाद हो।

इरशाद : यह किसी का तख़ैयुल है और ग़ैर सही उसकी तक्मील क्या हो।

अर्ज़ : बरज़ख़ की तारीफ़ तो यह है कि वह शय जो मुतवस्सित हो दर्मियान दो शय के जिससे दोनों से इलाक़ा हो सके, जब सिर्फ़ बरज़ख़ का लफ़्ज़ बोला जाता है तो उसका मफ़्हूम क़ब्र होता है सवाल यह है कि बरज़ख़ से मुराद क़ब्र है या वह ज़माना जो बाद मरने से क़यामत या हश्र तक है।

इरशाद : न क़ब्र न वह ज़माना बल्कि वह मक़ामात जिन में अरवाह बाद मौत हश्र तक हस्बे मरातिब रहती हैं।

अर्ज़ : क़यामत और हश्र का फ़र्क़, क़यामत वह है जिसमें सब मौजूदात फना किए जाएंगे और हश्र में फिर अज़ सरे नौ पैदा किए जाएंगे अगर बरज़ख़ का ज़मान क़यामत है तो बाद क़यामत हश्र के ज़माना का कोई नाम है या नहीं और क़यामत के कितने अरसा के बाद हश्र होगा।

इरशाद : वह साअत है कभी उसे भी क़यामत कहते हैं वरना क़यामत व हश्र एक हैं साअत व हश्र के दर्मियान जो ज़माना है उसे *मा बैना अन्नफ़ख़तैन* कहते हैं हश्र चालीस बरस बाद होगा।

अर्ज़ : दरजाते बरज़ख़ इल्लीयीन और सिज्जीन और उनके सिवा जो हों इरशाद हों।

इरशाद : इल्लीयीन और सिज्जीन बरज़ख़ ही के मक़ामात हैं और हर एक में हस्बे मरातिब तफ़ावुत बेशुमार।

अर्ज़ : दरजाते फ़िक्र तरतीब वार इरशाद हों कि जब तालिब सुलूक

की राह चलता है तो अव्वल कौन सा दरजा हासिल होता है फिर कौन सा।

इरशाद : सुलहा, सालिकीन, क़ानेवीन, वासेलीन अब उन वासिलों के मरातिब हैं नजवा, नुक़वा, अब्दाल, बदला, औताद, इमामैन, ग़ौस, सिद्दीक़, नवी, रसूल तीन पहले सैर इलल्लाह के हैं बाक़ी सैर फ़िल्लाह के और वली उन सब को शामिल।

अर्ज़ : अंविया अलैहिमुस्लातु वस्सलाम के फ़ुज़्लाते शरीफ़ा पाक हैं।

इरशाद : पाक हैं और उनके वालिदैन करीमैन के वह नुत्फ़े भी पाक हैं जिन से यह हज़रात पैदा हुए (फिर फरमाया) हज़रत जाविर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हमराह था हुज़ूर को क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत हुई। दो मुतफ़र्रिक़ पेड़ अलग-अलग खड़े थे और कुछ पत्थर इधर उधर पड़े थे हुज़ूर ने इरशाद फरमाया ऐ जाविर इन पेड़ों और पत्थरों से जा कर कह दो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हुक्म है कि तुम आपस में मिल जाओ हज़रत जाविर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जाकर फरमाया दोनों पेड़ों ने जुंविश की और अपने तमाम रग व रेशा ज़मीन से निकाले एक इधर से चला और दूसरा उधर से और दोनों मिल गये और पत्थरों ने एक दीवार की मिस्ल हो कर उड़ना शुरू किया और दरख़्तों के पास आ कर खड़े हुए फिर हुज़ूर वहां तशरीफ़ ले गये और क़ज़ाए हाजत फरमाई जब फारिग़ हो कर तशरीफ़ लाए। मैं गया इस क़स्द से कि जो कुछ ख़ारिज हुआ हो उसको खाऊं वहां कुछ न था अल्बत्ता उस जगह मुश्क की खुशवू आ रही थी फरमाया उन पेड़ों और पत्थरों से कहो अपनी-अपनी जगह चले जाओ वह अपनी-अपनी जगह चले गये मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं इस नीयत से गया था कि जो कुछ मिले उसको तवर्रुकन खाऊं वहां सिवाए मुश्क की खुशवू के और कुछ न पाया फरमाया क्या तुम को मालूम नहीं कि ज़मीन निगल लेती है जो अंविया से ख़ारिज होता है (फिर मुस्कुरा कर फरमाया) जो अच्छी चीज़ होती है उसको ज़मीन ही नहीं छोड़ती (फिर फरमाया) सब अंविया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ताहिर महज़ हैं

और जो शय उन से इलाक़ा रखने वाली है सब ताहिर हां उनके फ़ुज़्लात खुद उनके हक़ में ऐसे ही नजिस हैं जैसे हमारे नज़्दीक हमारे फ़ुज़्लात नजिस हैं और अगर उन से कोई फ़ुज़्ला ख़ारिज हो जो हमारे लिए नाक़िज़े वुज़ू है तो बेशक उनका वुज़ू भी टूट जाएगा। (फिर फरमाया) मेरी नज़र में इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी शारेह सही बुख़ारी की उक़्अत इब्तिदाअन इमाम बदरुद्दीन महमूद ऐनी शारेह सही बुख़ारी से ज़्यादा थी फ़ुज़्लाते शरीफ़ा की तहारत की बहस उन दोनों साहिबों ने की है इमाम इब्ने हजर ने इब्हासे मुहद्दिसाना लिखी हैं कि यूं कहा जाता है और उस पर यह एतराज़ है यूं कहा जाता है और उस पर यह एतराज़ है अख़ीर में लिखा है कि फ़ुज़्लाते शरीफ़ा की तहारत उनके नज़्दीक साबित नहीं इमाम ऐनी ने भी शरह बुख़ारी में इस बहस को बहुत बसत से लिखा है आख़िर में लिखते हैं कि यह सब कुछ इयहास हैं जो शख़्स तहारत का क़ाइल हो उसको मैं मानता हूं और जो उसके ख़िलाफ़ कहे उसके लिए मेरे कान बहरे हैं मैं सुनता नहीं यह लफ़्ज़ उनकी कमाले मुहब्बत को साबित करता है और मेरे दिल में ऐसा असर कर गया कि उनकी उक़्अत बहुत हो गई।

अर्ज़ : अंविया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम क आज़ाए शरीफ़ा मसलन मूए मुबारक और दन्दान शरीफ़ और नाखुन शरीफ़ का खाना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : यह नाजाइज़ व हराम है इब्तिज़ाल व तौहीन है जो चीज़ हराम की गई उसकी हिल्लत की कोई वजह नहीं वह मुबाह नहीं हो सकती अगर चाहता है पानी में धो कर पिए।

अर्ज़ : की क़ैद कैसी है क्योंकि हर हलाल तैय्यिब है।

इरशाद : जो चीज़ हलाल हो और तैयब हो उसे खाओ यह मानी हैं (फिर फरमाया) हर तैयब हलाल है और हर हलाल तैयब नहीं जो चीज़ें मक्रूह हैं वह तैयबात से ख़ारिज हैं।

अर्ज़ : आदमियों की हड्डी तैयब है और हलाल नहीं।

इरशाद : ताहिर है तैयब नहीं ताहिर के मानी पाक के अगर नमाज़ में पास हो तो हरज नहीं और तैयब के माना पाक जाइज़ुल-इस्तेमाल जिस

में किसी जेहत से नुक़सान न हो, नाक़िस चीज़ को ख़वीस कहा जाता है ताहिर आम है हलाल उस से ख़ास है तैयव उस से भी ख़ास है।

अर्ज़ : क़ैदी लोग क़ैदख़ाना में जो अशिया वनाते हैं गवर्नमेंट उनको फ़रोख़्त करती है उनका इस्तेमाल जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : ज़ुल्मन वनवाई गई हैं ना जाइज़ है।

अर्ज़ : पागल ख़ाना की अशिया का भी क्या यही हुक्म है।

इरशाद : जो वाक़े में पागल हैं उनको एक जगह पर रखना ज़ुल्म नहीं वल्कि ख़लाइक़ को फाइदा पहुंचाना है और काम जो उन से लेते हैं यह रोटी कपड़े के एवज़।

अर्ज़ : ओझड़ी खाना कैसा है।

इरशाद : मक्रूह है।

अर्ज़ : तफ़रीहन झूला झूलना कैसा है।

इरशाद : शारे आम पर न हो मकान में हो कुछ हरज नहीं यह तो वदन की रियाज़त है वाज़ अमराज़ में अतिब्बा मुफ़ीद वताते हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर औरतों को भी जाइज़ है।

इरशाद : कोई महरिम न हो, अगर घर के अन्दर हों और गाना न गाएं तो उनके वास्ते भी जाइज़, उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं मुझे अपने निकाह की कोई ख़वर न थी में अपने मकान में झूला झूल रही थी कि मेरी मां मुझ को उठा कर ले गई।

अर्ज़ : कुफ़्फ़ार के जनाज़े के साथ जाना कैसा है।

इरशाद : अगर इस एतक़ाद से जाएगा कि उसका जनाज़ा शिर्कत के लाइक़ है तो काफिर हो जाएगा और यह नहीं तो हराम है हदीस में फरमाया गया अगर काफिर का जनाज़ा आता हो तो हट कर चलना चाहिए कि शैतान आगे-आगे का शोअ्ला हाथ में लिए उछलता कूदता खुश होता हुआ चलता है कि मेरी मेहनत एक आदमी पर वसूल हुई।

अर्ज़ : हिन्दुओं के राम लीला वग़ैरह देखने जाना कैसा है।

तरजमा : मुसलमान हुए हो तो पूरे मुसलमान हो जाओ शैतान की पैरवी न करो वह तुम्हारा ज़ाहिर दुशमन है हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने सलाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने इस्तिदआ की कि अगर इजाज़त

हो तो नमाज़ में कुछ आयतें तौरेत शरीफ़ की भी हम लोग पढ़ लिया करें उस पर यह आयते करीमा इरशाद फरमाई। तौरेत शरीफ़ पढ़ने के वास्ते तो यह हुक्म हुआ राम लीला के वास्ते क्या कुछ हुक्म न होगा।

अर्ज़ : गुर्दे खाने का क्या हुक्म है।

इरशाद : जाइज़ है मगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पसन्द न फरमाया इस वजह से कि पेशाव उन में से हो कर मसाना में जाता है।

अर्ज़ : हुज़ूर यह माना हुआ है नजासत अपने महल में पाक है और ओझड़ी में जो फुज़्ला है वह भी नजिस नहीं तो फिर कराहत की क्या वजह।

इरशाद : इसी वजह से तो मक्रूह कहा गया अगर नजासत माना जाता तो ओझड़ी मक्रूह न होती वल्कि हराम हो जाती।

तर्जमा : मालूम होता है कि कभी कोई काफिर किसी मुसलमान पर ग़ालिव न होगा हालांकि वाक़या उसके ख़िलाफ़ है।

इरशाद : उसके मानी यह हैं कि हम ने कोई विलायत नहीं रखी काफिरों के वास्ते मुसलमानों पर, विलायत कहते हैं हुक्म नाफ़िज़ुत्तसर्रुफ़ को शाआ अवावा चाहे माने या न माने और शरीअत भी उसको क़ुवूल कर ले यह वात कभी हासिल न होगी किसी काफिर को किसी मुस्लिम पर, वालिद अपनी नावालिग़ औलाद पर विलायत रखता है यह उनका निकाह कर दे और वह चिल्लाते रहें हमें नहीं मन्ज़ूर निकाह नाफ़िज़ हो गया वाद वालिग़ होने के भी कुछ अख़्तियार नहीं या दो आदिल मुसलमान किसी पर गवाही दें वह कह रहा है यह झूठे हैं मैंने ऐसा नहीं किया वह कह दें कि उस ने ऐसा किया गवाही नाफ़िज़ हो गई।

अर्ज़ : हुज़ूर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वास्ते आया है यज़्उल-जिज़्या और हमारी शरीअत में जिज़्या है तो ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम हमारी शरीअत के नासिख़ हुए।

इरशाद : यह हुक्म किस में है इंजील में है या तौरेत में ज़ाहिर है कि उन में नहीं वल्कि हदीस में है यह खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हुक्म हुआ अगर हुज़ूर यह फरमाते कि

जिज़्या हमेशा है और ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम आ कर उतार देते तो अल्बत्ता नस्ख़ होता।

अर्ज़ : हुज़ूर कुरआने मजीद में है कि मुसलमानों ने यह दुआ की *रब्बना ला तज्अलना फ़ित्नल-लिल्लज़ीना कफरू।* इससे यह मालूम **होता है** कि मुसलमान इस तरह से काफिरें के हाथ में बेदस्त व पा न **कर दिए** जाएंगे कि उनको यह कहने का मौक़ा मिले कि अगर इस्लाम **सच्चा होता** तो ऐसा क्यों होता।

इरशाद : यह दुआ की थी कि किसी मुसलमान को फ़ित्ना कर या हम को फ़ित्ना न कर, इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की यह दुआ है।

तरजमा : और वह कुबूल हुई अगर उसके मानी यह लिए जाएं कि **कभी कोई** मुसलमान किसी काफिर के फित्ने में न फंसेगा तो फिर **उसके क्या** मानी होंगे जो अस्हाबुल-उख़्दूद के लिए फरमाया गया।

अर्ज़ : अल्लाह तआला फरमाता है। *कतबल्लाहु लअग़्लबन्ना अन्ना व रुसुली*। तो बाज़ अंबिया शहीद क्यों हुए।

इरशाद : रसूलों में से कौन शहीद किया गया अंबिया अल्बत्ता शहीद **किए गये** रसूल कोई शहीद न हुआ। *यत्तकेलूनन्नबीयीन* फरमाया गया **न कि** *यक़्तुलूनर्रुसुल* (और शहीद हो जाना मग़्लूबी नहीं ग़लबा से मुराद ग़ल्ब-ए-हुज्जत है कमा सैय्येयाती। १२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू।)

अर्ज़ : हुज़ूर मुसलमान कितना ही बड़ा गुनहगार हो लेकिन कलिमा इस्लाम पढ़ता है मुसलमान फिर मुसलमान है काफिर से बदतर **तो क्या बराबर** नहीं हो सकता क़तअ़ नज़र *यफ़्अलु मा य ग़ाओ* के कोई **वजह काफिर** को मुसलमान पर मुसल्लत होने की नहीं मालूम होती।

इरशाद : उसका जवाब हदीस देगी। *कमा तकूनू ऐवलु अलैकुम*। **जैसे तुम** होगे वैसा ही हाकिम तुम पर भेजा जाएगा।

अर्ज़ : हुज़ूर कुछ भी हो आख़िर मुसलमान तो हैं उनका ग़लबा **इस्लाम का** ग़लबा और उनकी मग़्लूबियत से इस्लाम की मग़्लूबियत **हालांकि यह** साबित है। *अल-इस्लामु यअ़लू ला यअ़ली* **तो** चाहिए कि मुसलमान कभी मग़लूब न हों।

इरशाद : इस्लाम कभी मग़लूब न होगा मुसलमान मग़लूब हो जाएं मुसलमानों के मग़लूब होने से इस्लाम की मग़लूबियत नहीं इस्लाम जब मग़लूब होता, कि कुफ़्फ़ार की हुज्जत मुसलमानों की हुज्जत पर ग़ालिब आ जाती है *हुज्जतुहुम दाहिज़तुन* उनकी हुज्जत मग़लूब है (फिर फरमाया) हदीस में है अगर दुनिया की क़द्र अल्लाह के **नज़्दीक एक** मच्छर के पर के बराबर होती तो एक घूंट उस में से काफिर **को न** देता। ज़लील है ज़लीलों को दी गई जब से उसे बनाया है **कभी उसकी** तरफ़ नज़र न फरमाई दुनिया की रूहानियत आसमान व ज़मीन के दर्मियान जव में मुअल्लक़ है फरयाद व ज़ारी करती है और कहती है ऐ मेरे रब तू मुझ से क्यों नाराज़ है मुद्दतों के बाद इरशाद होता है। "चुप ख़बीसा" सूरः ज़ुख़रफ़ शरीफ़ में तो यह इरशाद होता है कि अन्धे कहेंगे यह कुफ़्र ही हक़ है वरना हम काफिरों के वास्ते उनके घरों की छतें और सीढ़ियां चांदी की बना देते और उनके घरों के दरवाज़े और तख़्त सोने के।

सिर्फ़ इस बात पर कि कुफ़्फ़ार को दुनिया बहुत दी है और हम को थोड़ी उस पर तो आप जैसे आलिम यह कह रहे हैं अगर सब दुनिया उन्हें दे दी जाती और हम को बिल्कुल न मिलती तो न मालूम क्या हाल होता (फिर फरमाया) सोना, चांदी खुदा के दुशमन हैं वह लोग जो दुनिया में सोने चांदी से मुहब्बत रखते हैं क़यामत के दिन पुकारे जाएंगे कहां हैं वह लोग जो खुदा के दुशमन से मुहब्बत रखते थे। अल्लाह तआला दुनिया को अपने महबूब से ऐसा दूर फरमाता है जैसे बिला तशबीह बीमार बच्चे को उसकी मुज़िर चीज़ों से मां दूर रखती है। आदमी अपने मुंह बुराई मांगता है जिस तरह की अपने लिए भलाई मांगता है अल्लाह जानता है कि उस में कितना ज़रर है यह दुआ **मांगता** है और वह नहीं देता (फिर फरमाया) इरशाद होता है।

तुम को धोखे में न डाल दे काफिरों का अह्ले गहले शहरों में फिरना यह थोड़ी पूंजी है फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और बुरा ठिकाना है।

अर्ज़ : अहलील में अगर पिचकारी लगाई जाए तो पानी जो पिचकारी को वापस आएगा वह पाक है या नहीं।

इरशाद : नापाक है और नाक़िज़े वुज़ू है।

मुअल्लिफ़ : आला हज़रत क़िवला की हिद्दत मिज़ाज का तज़्किरा था एक साहव ने अर्ज़ किया एक तो मिज़ाज गरम दूसरे इल्म की गर्मी उस पर इरशाद फरमाया हदीस में है।

कुर्रा मुहावर-ए-हदीस में उलमा को कहते हैं। यानी मेरी उम्मत के उलमा को गर्मी पेश आएगी कुरआन की इज़्ज़त के सवव उनके दिलों में है।

अर्ज़ : हुज़ूर कुश्ती लड़ना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : कुश्ती आजकल जिस तौर पर लड़ी जाती है महमूद नहीं उस में तन परवरी होती है मज्मा आम होता है और अगर उसके सवव नमाज़ की पावन्दी न करे या सतर खोले तो हराम है हां अगर ख़ास मज्मा है अपने ही लोग हैं वन्द मकान में नमाज़ की पावन्दी के साथ वेग़ैर सतर खोले हुए लड़ें तो मुज़ाइक़ा नहीं हज़रत वहाउल-हक़ वद्दीन ख़्वाजा नक़्शवन्दी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु वुख़ारा में हज़रत अमीर कुलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का शोहरा सुन कर ख़िदमत में हाज़िर हुए आपको देखा कि मकान के अन्दर ख़ास लोगों का मज्मा है अखाड़े में कुश्ती हो रही है हज़रत भी तशरीफ़ फरमा हैं और कश्ती में शरीक हैं हज़रत ख़्वाजा नक़्शवन्द आलिमे जलील पावन्दे शरीअत उनके क़ल्व ने कुछ पसन्द नहीं किया हालांकि कोई नाजाइज़ वात न थी यह ख़तरा आते ही गुनूदगी आ गई देखा कि मअ्रक-ए-हश्र वपा है उनके और जन्नत के दर्मियान एक दलदल का दरिया हाइल है यह उसके पार जाना चाहते थे दरिया में उतरे जितना ज़ोर करते धंसते जाते यहां तक कि वग़लों तक धंस गये अव निहायत परेशान किया जाए इतने में देखा कि हज़रत अमीर कुलाल तशरीफ़ लाए और एक हाथ से निकाल कर दरिया के उस पार कर दिया आपकी आंख खुल गई क़वल उसके कि यह कुछ अर्ज़ करें हज़रत अमीर कुलाल ने फरमाया हम अगर कुश्ती न लड़ें तो यह ताक़त कहां से आए यह सुन कर फौरन क़दमों पर गिर पड़े और वैअ़त की (फिर वतज़्किरा नफ़्स कुशी इरशाद फरमाया इमाम दाऊद ताई इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के

शागिर्दों में से थे इमाम ने जव देखा कि उनकी दुनिया की तरफ़ तवज्जोह नहीं उनको सव से अलग करके पढ़ाना शुरू किया एक दिन तन्हाई में फरमाया ऐ दाऊद आला तैयार कर लिया मक़्सूद किस दिन हासिल करोगे एक साल दर्स में हाज़िर रहे यह रियाज़त की तलवा आपस में मुज़ाकरा करते उनको आफताव से ज़्यादा वज्हें रौशन मालूम होतीं नफ़्स वोलना चाहता मगर यह चुप रहते ग़रज़ एक साल कामिल सुकूत फरमाया जव उनके वालिद माजिद का इंतिक़ाल हुआ अस्सी (८०) दिरहम और एक मकान वरसा में मिला वह दिरहम हम उम्र भर के लिए काफी हुए और मकान के एक दर्जे में वैठा करते जव वह गिर गया दूसरे में वैठना शुरू किया जव वह इस क़ाविल न रहा तो और दर्जे में उधर उनकी रूह ने परवाज़ किया उधर वाज़ सालेहीन ने ख़्वाव में देखा कि दाऊद ताई निहायत खुशी के साथ हश्शा वश्शा दौड़े हुए चले आ रहे हैं उन्होंने कभी आपको इस हालत में न देखा था पूछा क्या है क्यों दौड़े जाते हो फरमाया अभी जेल ख़ाना से छूटा हूं ख़वर पाई कि वही वक़्त इंतिक़ाल का था। *अद्दुनिया सिज्नुल-मुमिन व जन्नतुल-काफिर।* (फिर फरमाया) मुसलमान उमर भर कितने ही तंगी व मसाइव में रहे एक हवा जन्नत की देंगे और पूछेंगे तुमने दुनिया में क्या तक्लीफ उठाई कहेंगे वल्लाह कोई तक्लीफ़ न उठाई और काफिर को हज़ार वरस तक नाज़ व नेअ्मत में रखा जाए किसी क़िस्म की तक्लीफ़ न पहुंचाई जाएग गर्म हवा भी न लगने पाए क़व्र में एक झोंका उसे जहन्नम का देंगे कहेगा वल्लाह मुझे दुनिया में कोई आराम नहीं मिला (फिर फरमाया) नईम और मलिक कवीर होते हैं दुनिया की एक ज़रा सी तक्लीफ़, पर अक़्ल तो गवारा नहीं करती कि मलिक कवीर आराम दुनिया की मताअ् क़लील के वदले छोड़ दिया जाए मगर नफ़्स उसके अक्स को गवारना नहीं करता। *ख़लक़ल-इंसाना मिन अजल व कानल- इंसाना अजूला।* इंसान अपने क़दमों के नीचे देखता है आगे नज़र नहीं करता यहां के आराम को आराम समझता है और यहां की तक्लीफ़ को तक्लीफ़ हालांकि वहुत से आराम यहां के वहां की तक्लीफ़ हैं और वहुत सी यहां की तक्लीफ़ वहां के आराम हैं (फिर फरमाया) मेरे हज़रत वालिद

माजिद कुद्दिसल्लाहु सिर्रहुल-अज़ीज़ के ख़ालाज़ाद भाई अलिफ़ के नाम व न जानते थे यहां एक शख़्स सूफ़ी बने हुए थे उनके पास आम्दो रफ़्त ज़्यादा थी उन्होंने तफ़्ज़ीला कर लिया मेरा पन्द्रह सोला बरस का सिन था मैं उन्हें हदीसें सुनाता और समझाता कि अह्ले सुन्नत का मज़्हब यह है कि तफ़्ज़ील बातिल है वह न मानते अफ़्यून के आदी थे जब हज को गये और तीन मंज़िल मदीना तैयबा रह गया अफ़ियून की डिबिया निकाली खाना चाही फौरन बदन में एक झुर झुरी पैदा हुई और कहा क्या हुज़ूर के सामने भी खाऊंगा और हाथ से फेंक दी वहां से वापस आने पर चन्द रोज़ ज़िन्दा रहे राह में अफ़्यून खाना छोड़ दिया था यह (यानी अफ़्यून का खाना) थी बद आमाली मगर वह थी अक़ीदे की बुराई और अक़ीदे की बुराई बदतर है बद आमाली से मरते वक़्त बीबी को बुला कर कहा मेरा भतीजा मुझे समझाया करता था और मेरी समझ में न आता था अब मैं समझा कि वही हक़ था तुम शाहिद रहो कि मेरा वही अक़ीदा है जो अहमद रज़ा का है मैंने उनको एक रोज़ ख़्वाब में देखें (यहां अल्फ़ाज़ करीमा साक़ित हो गये। १२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरला लहू) कहने लगे तुमने वह हदीस मुझ से नहीं बयान की थी कि जो दुनिया में हंसते वह वहां रोते हैं और जो दुनिया में रोते हैं वह वहां हंसते हैं (फिर फरमाया) तीन चीज़ें ज़रूरी हैं एक लुक़्मा जिस से जान बाक़ी रहे और एक पार्चा जिस से अपना सतर ढांक ले और एक सूराख़ जिस में घुस कर बैठ रहे इसलिए कि हलाल माल बहुत मिल सकता है (फिर फरमाया) जब नफ़्स कम्ज़ोर हो जाएगा रूह और क़ल्ब क़वी हो जाएगा खाना न खाइए आठ दिन कामिल बैठे रहे कुछ असर न होगा।

अर्ज़ : हुज़ूर यह शेअ़र कैसा है -

अरे यह वह हैं अब्दुल-क़ादिर महबूब सुबहानी
कि नाबीना को बीना चोर को अबदाल करते हैं

इरशाद : कोई हरज नहीं हुज़ूर ने तो काफ़िरों को औताद व अबदाल बनाया है (फिर फरमाया) एक साहब पीर कामिल की तलाश में थे बहुत कोशिश की मगर पीरे कामिल न मिला अल्लाह तआला फरमाता है। *वल्लज़ीना जाहदू फीना लनुहदियन्नहुम सुबुलना*। वह जो

हमारी राह में मुजाहिदा करते हैं ज़रूर हम उन्हें अपनी राह दिखाएंगे यह जो लोग कहते हैं हम ने इस क़द्र मुजाहिदात किए कुछ न हुआ। झूठे हैं ताकीद के साथ फरमाया जाता है। *लनुहदियन्नहुम* हक़ीक़तन मुजाहिदा ही नहीं करते ख़ैर उनकी तलब सादिक़ थी जब कोई न मिला तो मज्बूर हो कर एक रात अर्ज़ किया ऐ रब तेरी इज़्ज़त की क़सम आज सुबह की नमाज़ से पहले जो मिलेगा उस से बैअत कर लूंगा सुबह की नमाज़ पढ़ने जा रहे थे सब में पहले राह में एक चोर मिला जो चोरी किए आ रहा था उन्होंने हाथ पकड़ लिया कि हज़रत बैअत लीजिए वह हैरान हुआ बहुत इंकार किया न माने आख़िरकार उसने मज्बूर हो कर कह दिया कि हज़रत मैं चोर हूं यह देखिए चोरी का माल मेरे पास मौजूद है आपने फरमाया मेरा तो मेरे रब से अहद है कि आज सुबह की नमाज़ से पहले जो मिलेगा बैअ़त कर लूंगा इतने में हज़रत सैयदना ख़िज़्र अलैहिस्साम तशरीफ़ लाए और उस चोर को मरातिब दिए तमाम मक़ामात फौरन तय कराए वली किया और उस से बैअत ली और उन्होंने उन से बैअ़त ली (फिर फरमाया) तलबे सादिक़ कभी ख़ाली नहीं जाती दुनिया में जिन चीज़ों को तलब करते हैं वह दो क़िस्म हैं एक वह कि आप तलब करें और वह भागें और दूसरी वह जो अपनी जगह पर रहें कहीं भाग कर न जाएं न आपकी तरफ़ आएं और यहां फरमाया जाता है जो मेरी तरफ़ एक बालिश्त आता है मैं उसकी तरफ़ एक गज़ आता हूं और जो मेरी तरफ़ दो गज़ आता है उसकी तरफ़ चार गज़ आता हूं और जो मेरी तरफ़ आहिस्ता आता है मैं उसकी तरफ़ लपक कर आता हूं और जो मेरी तरफ़ लपक कर आता है मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर आता हूं (फिर फरमाया) हज़रत सैयदना शाह आले मुहम्मद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु आप मारहरा शरीफ़ में तशरीफ़ फरमा हैं एक साहब सब सज्जादों में घूमे हुए मुजाहिदे रियाज़तें किए हुए हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए यही शिकायत की कि इतनी बरसों से तलब में फिरता हूं मक़्सूद हासिल नहीं होता फरमाया ठहरो एक हुजरा में ख़ानक़ाह शरीफ़ के ठहराया ख़ादिम को हुक्म दिया उन्हें मछली खाने को दी जाए और पानी का एक क़तरा न दिया जाए और बाद खाना

खाने के फौरन हुजरा बाहर से बन्द कर दिया जाए ख़ादिम ने मछली दी जब वह खा चुके फौरन ज़ंजीर बन्द कर दी अब यह अन्दर से चिल्लाते हैं चीख़ते हैं कि मुझे पानी दिया जाए मगर कौन सुनता है सुबह को हुज़ूर नमाज़ के वास्ते तशरीफ़ लाए ख़ादिम ने हुजरा खोला। खुलते ही पानी पर जा गिरे और जिस क़द्र पिया गया ख़ूब पिया नमाज़ के बाद हज़रत ने फरमाया ख़ैरियत है अर्ज़ किया हुज़ूर रात तो ख़ादिमों ने मार ही डाला था कि मुझे ऐसी गर्मी में बन्द कर दिया फरमाया फिर रात कैसी गुज़री अर्ज़ किया जब तक जागता रहा पानी का ख़्याल जब सोया सिवाए पानी के और कुछ न देखा फरमाया तलबे सादिक़ उसका नाम है कभी ऐसी तलब भी की थी जिसकी शिकायत करते हो वह मुजाहिदात कैसे हुए थे क़ल्ब साफ़ था नफ़्स का जो धोखा था फौरन खुल गया और मक़्सूद हासिल हो गया अपना नाम लेने वाले को वह ज़ाए नहीं छोड़ता (इसी सिलसिला में फरमाया) सुल्तान आलमगीर रहमतुल्लाहि तआला अलैहि को एक बहरूपिए ने सूफ़ी बन कर धोखा दे दिया आपने हस्बे वादा इंआम देना चाहा उसने कहा खुदा का झूठा नाम लेने से तो तुम जैसा बादशाह मेरे पास हाज़िर हुआ सच्चा नाम लूंगा तो क्यों न मुझ पर रहम फरमाएगा (फिर फरमाया) यही मानी हैं हज़रत जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के इस शेअ्र के -

जो किसी का तशब्बुह करता है अल्लाह उसको भी उसी गरोह में शामिल कर देता है। *मन तशब्बहा बेक़ौमिन फ़हुवा मिन्हुम*। तशब्बहा का यह फाइदा होता है (फिर फरमाया) यह हासिल है हमारी नमाज़ व रोज़ा का सिर्फ़ असली नमाज़ियों का तशब्बुह है और *मन तशब्बहा बेक़ौमिन फ़हुवा इन्शाअल्लाहु तआला मिन्हुम*। इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने लिखा है तवाजुद से वज्द पैदा होता है तशब्बुह की सूरत यह है कि बतकल्लुफ़ वज्द बनाए होते-होते हो जाएगा हां यह नीयत न हो कि लोग मेरी तारीफ़ करें यह रिया है और हराम है हदीस में है। *ला तुमारिज़ू फ़तमर्रज़ू फ़तूमिनू फ़तुदख़िलुन्नार*। झूठे बीमार मत बनो कि सच्चे बीमार हो जाओगे और मर जाओगे तो जहन्नम में दाख़िल होगे।

अर्ज़ : तो हुज़ूर बतकल्लुफ़ बीमार बनना गुनाहे कबीरा है।

इरशाद : हां अगर यह हदीस सही हो तो कबीरा हो जाएगा कि एक तारीफ़े कबीरा की यह है कि जिस पर हदीस सही में लानत आई हो या बईद वारिद हो।

अर्ज़ : सग़ीरा का इस्तिख़्फ़ाफ़े कबीरा है।

इरशाद : बाज़ वक़्ते सग़ीरा का इस्तिख़्फ़ाफ़ कुफ़्र हो जाएगा जब कि उसका गुनाह होना ज़रूरियाते दीन से हो उलमा फरमाते हैं किसी ने कोई गुनाह किया उस से लोगों ने कहा तौबा कर जवाब दिया चेह करदह कि तौबा कुनम, कुफ़्र, बहुत से सग़ाइर ऐसे हैं जिनका मअ्सियत होना ज़रूरियाते दीन से है मसलन अज्नबीया से मस व तक़्बीले सग़ीरा है *अला अल्लमम* में दाख़िल है अगर हलाल जाने काफिर है (फिर फरमाया) जिसको समझा कि यह हल्का गुनाह है फौरन सग़ीरह से कबीरा हो गया औलिया-ए-किराम फरमाते हैं इस गुनाह को दूसरे गुनाह से निस्बत देता है कि यह उस से छोटा है यह नहीं देखता कि गुनाह किस का कर रहा है अगर देखता तो यह फ़र्क़ न करता।

अर्ज़ : हुज़ूर चांद देखने के वक़्त एक दुआ आई है। *अऊज़ुबिल्लाहि मिन शर्रे हाज़ा*। उसके क्या मानी हैं।

इरशाद : दुनिया में ईमाने ख़ैर महज़ है और कुफ़्रे शर महज़ उन दोनों के सिवा कोई चीज़ शर महज़ है न ख़ैर महज़ आफताब के गुरूब होने के बाद चांद जब रौशन होता है उस वक़्त सरकश व मुतमर्रिद जिन्न ज़मीन पर मुन्तशिर होते हैं इसी वास्ते हदीस में आया है अपने बच्चों को रोके रहो मग़्रिब से इशा तक बहुत लोग इस बात को बहादुरी समझते हैं कि जब लोगों की पहचल मौकूफ़ हो उस वक़्त चलें फिरे यह जिहालत है हदीस में है जब पहचल मौकूफ़ हो बाहर न निकलो और अकेले मकान में तन्हा सोने को भी लोग फ़ख़्र समझते हैं हालांकि उसको भी मना फरमाया है उसके बाद कुछ वाक़ेआत मारगुज़ीदा अश्ख़ास के ज़िक्र हुए उस पर इरशाद फरमाया हदीस में है। *अऊज़ु बेकलिमातिल्लाहित्ताम्माते मिन शर्रे मा ख़लक़*। जो सुबह को पढ़ लेगा तमाम दिन ज़हरीले जानवरों से महफ़ूज़ रहेगा और जो शाम को पढ़ ले तो सुबह तक।

अर्ज़ : हुज़ूर गेंद खेलना कैसा है।

इरशाद : अबस है अगरचे साहिबे हिदाया ने हर अबस को हराम लिखा है लेकिन सही यह है कि अबस बातिल है हदीस में है। *कुल्लु लहवल-मुमिने मिन बातिले इल्ला फह सलासि*। मुसलमान का हर लहव बातिल है मगर तीन बातों में अव्वल घोड़ा फिराना दूसरे तीर अन्दाज़ी तीसरे अपनी औरत से मुलाइबत यह इन तीनों बातों में दाख़िल नहीं इसलिए बातिल है।

(हुज़ूर एक साहब की तरफ़ मुतवज्जोह हो कर हुक्म मरअला इरशाद फरमा रहे थे एक और साहब ने यह मौक़ा क़दम बोसी से फ़ैज़याब होने का अच्छा समझा) क़दम बोसी हुए फौरन चेहरा मुबारक का रंग मुतग़ैयर (हज़रत कुद्दिसा सिर्रहू को अपनी क़दम बोसी निहायत नागवार होती बारहा लोगों को उस से सख़्ती से मना फरमाया। १२ मुअल्लिफ गुफिरा लहू) हो गया और इरशाद फरमाया इस तरह मेरे क़ल्ब को सख़्त अज़ीयत होती है यूं तो हर वक़्त क़दम बोसी नागवार होती है मगर दो सूरतों में सख़्त तक्लीफ़ होती है एक तो उस वक़्त कि मैं वज़ीफ़ा में हूं दूसरे जब मैं मश्गूल हूं और गफ़लत में कोई क़दम बोस हो कि उस वक़्त में बोल सकता नहीं (फिर फरमाया) कि मैं डरता हूं खुदा वह दिन न लाए कि लोगों की क़दम बोसी से मुझे राहत हो और जो क़दम बोस न हो तो तक्लीफ़ हो कि यह हलाकत है (फिर फरमाया) ताज़ीम उसी में है कि जिस बात को मना किया जाए वह फिर न की जाए अगरचे दिल न माने कौन मुसलमान है कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक सुने तो सज्दा करने और सर झुका देने को उसका दिल न चाहे वल्लाहुल अज़ीम अगर सज्दा किया जाए तो मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नाराज़ होंगे राज़ी न होंगे वरना हम से जो सज्दा भी उनकी अज़्मत के लाइक़ नहीं हो सकता उनको फ़रिश्तों ने सज्दा किया उनको जिब्रील ने सज्दा किया।

अर्ज़ : हुज़ूर जिब्रील अलैहिस्सलाम ने भी किसी वक़्त सज्दा किया था।

इरशाद : फ़रिश्तों को सज्दा करने का हुक्म था और ऐसा क़तई हुक्म कि एक जो उनमें मिला हुआ था उसने न माना मलऊन अबदी कर दिया गया और उन में से जो न मानता यही हाल होता मगर मलाइका तो मासूम हैं अइम्मा-ए-दीन फरमाते हैं मलाइका को आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सज्दा का जो हुक्म हुआ था वह हक़ीक़तन सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को था आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम क़िब्ला थे जैसे काबा क़िबला है और सज्दा अल्लाह को (फिर फरमाया) वह फ़ज़ाइल जो अता किए हज़रत ईसा रूहुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम को जैसे मुर्दों को ज़िन्दा करना और मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को अच्छा कर देना और उनके सिवा। उनका असर तो यह हुआ कि उनके उम्मती बनने वाले उनको खुदा और खुदा का बेटा कहने लगे। किस के फ़ज़ाइल हैं जो उस सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फ़ज़ाइल तक पहुंच सकें फरमाया गया तुम्हारा दीन यह है। *अ श्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व* रसूलुहू। अब्दुहू पहले है रसूलुहू बाद को अब्द के दरजा से न बढ़ा देना अहादीस में किस क़द्र ताकीद के साथ सज्दा की मुमानअत फ़रमाई गई कहीं फरमाया सज्दा बेग़ैर अल्लाह हराम है कहीं फरमाया सज्दा अल्लाह के लिए ख़ास है कहीं फरमाया सज्दा ग़ैरुल्लाह को न करो इतनी एहतियातों के साथ सज्दा हराम किया गया वरना क्या जानिए क्या होता (फिर उन साहब से फरमाया) अल्लाह आपको शर से बचाए और अमन व अमान में रखे मआफ़ फरमाइए गुस्से में ऐसे अल्फ़ाज़ निकल गये मैं सच कहता हूं कि उस से मुझे ऐसी नागवारी होती है गोया तीर सीना से पीठ को निकल गया।

अर्ज़ : हुज़ूर अक्सर दुकानदार जब किसी को सौदा क़र्ज़ देते हैं तो क़ीमत से ज़्यादा लेते हैं यह जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : कोई हरज नहीं ग़ायत कि ख़िलाफ़े औला है।

अर्ज़ : हुज़ूर अक़्दे अनामिल भी हदीस में आया है।

इरशाद : कोई ख़ास तरीक़ा उसका हदीस में मज़्कूर नहीं अल्बत्ता एक हदीस में है। *आक़दनल-अनामिला फइन्नहुन्ना मस्ऊलाते मुस्तनतेक़ात*। पूरों पर ज़िक्रे इलाही का शुमार करो कि उन से सवाल

होना है यह बोलेंगे।

अर्ज़ : हुज़ूर सहर में क़ल्बे हक़ीक़त हो जाता है या नहीं।

इरशाद : सहर में असल शय बिल्कुल मुग़ैयर नहीं होती है सहर-ए-फिरऔन के बारे में फरमाया जाता है। *सेहरू आयुनन्नास़ा वस्तरहिबूहुम*। लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया। *यख़ीलु इलैहि मिन सहरेहिम इन्नहा तुस्आ*। मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ख़्याल में उनके जादू से यह बात पैदा हो गई कि वह रस्सियां और लाठियां दौड़ाती हैं सुल्तान जहांगीर मरहूम जद्दे सुल्तान आलमगीर रहमतुल्लाह तआला अलैह के दरबार में एक बाज़ीगर आया और चन्द तमाशे दिखाए फिर अर्ज़ की हज़रत मुझे आसमान पर जाने की ज़रूरत है एक मेरा दुशमन आसमान पर है औरत को हिफ़ाज़त के लिए महल्लात शाही में भिजवा दीजिए ख़ैर औरत भेज दी गई उस ने पेचक निकाल कर आसमान की तरफ़ फेंकी अब यह उस कच्चे डोरे पर चढ़ता हुआ आसमान की तरफ़ चला यहां तक कि नज़रों से ग़ायब हो गया थोड़ी देर के बाद शोर व गुल की आवाज़ें आने लगीं और एक हाथ आ कर गिरा फिर दूसरा हाथ फिर एक पांव फिर दूसरा फिर सर और धड़ भी जुदा हो कर गिरा जिस से मालूम हुआ कि दुशमन ग़ालिब और यह मग़लूब हुआ औरत ने जब यह ख़बर सुन्नी महल से निकल कर आई तमाम आज़ा जमा किए फिर ख़ूब आग रौशन करके मआ उन आज़ा के जल कर ख़ाकिस्तर हो गई थोड़ी देर में देखा तो वही बाज़ीगर उसी डोरे पर से उतरा चला आता है उसने हाज़िर हो बादशाह से कहा कि हुज़ूर की तवज्जोह से मैं अपने दुशमन पर ग़ालिब आया अब हुज़ूर मेरी बीवी को महल से बुल्वा दें यहां हुज़ूर खुद ही हैरान थे कि कौन बाज़ीगर और किस की बीवी अभी-अभी तो दोनों आग में जल गये जब उसने तक़ाज़ा किया तो बादशाह ने सारी कैफ़ियत बयान की कि यह राख जली हुई पड़ी है उसने कहा हुज़ूर हम ग़रीबों के साथ ऐसा मुआमला किया जाएगा मेरी बीवी तो महल में है मैं तो हुज़ूर के सुपुर्द कर गया था अब बादशाह और तमाम हाज़िरीन हैरान कि उसको क्या जवाब दें उसने कहा अगर हुज़ूर इजाज़त दें तो मैं आवाज़ देकर महल

से बुला लूं बादशाह की इजाज़त पर उसने आवाज़ दी फौरन वह औरत से महल-से निकल आई।

अर्ज़ : हुज़ूरे वाला अगर उसमें आमाले बद जैसे शयातीन से इस्तिआनत वग़ैरह न हों तो जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : आमाल जिस में कुछ न हों जैसे आजकल के भान मता तमाशे करते हैं उसमें महज़ हथ फेरी होती है उलमाए किराम फरमाते हैं यह भी हराम है कि उसमें धोखा देना है और धोखा देना शरीअत पसन्द नहीं फरमाती हदीस में है। *मन ग़ शना फ़लैसा मिन्ना*। वह हम में से नहीं जो धोखा दे हां काफिर हरबी से ऐसा कर सकता है ज़िम्मी से नहीं कि वह हमारी अमान में है। *लहुम मालना व अलैहिम मा अलैना* ऐसे ही मस्तामिन है कि उसके लिए एक साल तक ज़िम्मी के अहकाम हैं उज़्र हमारी शरीअत में जाइज़ नहीं।

अर्ज़ : मोजिज़ा में क़ल्बे माहियत होता है या नहीं।

इरशाद : इसमें उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि क़ल्बे माहियत मुहाल है या मुम्किन जो कहते हैं कि मुहाल है उनके नज़्दीक पहली हक़ीक़त फना हो जाती है और दूसरी हक़ीक़त रब्बुल-इज़्ज़त पैदा फरमा देता है तो मोजिज़ा में तब्दील हक़ीक़त ने हुई बल्कि तज्दीदे माहियत और जो मुम्किन मानते हैं वह कहते हैं कि मोजिज़ा में क़ल्बे हक़ीक़त होता है लेकिन उस पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि मोजिज़ा वाक़ई होता है। *कुलना लहुम कूनू क़िरदतन ख़ासेईन*। वह सब बन्दर हो गये उसमें कोई शुबह नहीं यह तावील कि उनकी अक़्लें बन्दर की सी हो गई वही लोग करते हैं जिन की अक़्लें बन्दर की सी हैं उनके दिल में नुसूसे कुरआनिया की अज़्मत नहीं जितने गुम्राह हुए सब इसी दरवाज़ा से कि उन्होंने नुसूस में तावीलें करना शुरू कीं जो नस अपनी औंधी अक़्ल के मुवाफ़िक़ हुई ख़ैर और जहां ज़रा और हुई फौरन तावील गढ़ दी (फिर फ़रमाया) उनकी अक़्लें बन्दर की अक़्ल से भी बदतर हैं बन्दर के क़ल्ब में अज़्मत है कुरआने अज़ीम की। एक मरतबा नन्हें मियां (बिरादरे खुर्द आला हज़रत क़िबला कुद्दिसा सिर्रुहुल-अज़ीज़) अपनी छत पर कुरआने अज़ीम पढ़ रहे थे सामने दूर, पर एक बन्दर बैठा था यह किसी काम

को उठ कर गये बन्दर दौड़ता हुआ सामने दीवार पर गुज़रा और उस पार जाना चाहता था जैसे ही कुरआने अज़ीम के महाज़ात पर आया। कुरआने अज़ीम को सज्दा किया और अपनी राह चला गया (फिर फरमाया) मैंने बन्दर को क़याम करते देखा मैं अपने पुराने मकान में जिसमें मेरे मंझले भाई मरहूम रहा करते थे मज्लिसे मीलाद पढ़ रहा था। एक बन्दर सामने दीवार पर चिपका मुअद्दब बैठा सुन रहा था जब क़याम का वक़्त आया मुअद्दब खड़ा हो गया फिर जब बैठे वह भी बैठ गया वह बन्दर था। वहाबी न था हदीस में है *मा मिन शैइन इल्ला व यअ़लमु इन्नी रसूलुल्लाह अल-अमरतुल-जिन्ने वल-इन्से*। कोई शय ऐसी नहीं जो मुझे अल्लाह का रसूल न जानती हो, सिवाए सरकश जिन्न और आदमियों के (फिर फरमाया) वह तो वह हैं उनके गुलामों का कहना ऐसा मानते हैं कि मुतीअ़ गुलाम भी ऐसा न मानेगा हज़रत सैयदी इब्ने मस्ऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अकाबिरे औलिया से हैं। *नफ़अ़नल्लाहु तआला बेबरकातेहिम फ़िद्दीने वद्दुनिया वल-आख़िरते*। आप जंगल में रहते थे एक शख़्स ने एक बैल नज़्र माना जब वह ख़ूब मोटा ताज़ा हो गया तो उसको लेकर हज़रत की ख़िदमत में चला। तैयार बहुत था रास्ता में छूट गया हर चन्द तलाश किया न मिला ख़ैर मायूस हो कर लौट आया एक और शख़्स कि उसके पास एक ही बैल था तमाम खेती वग़ैरह का काम उसी से लेता निहायत लाग़र व नहीफ हो गया था लेकर हाज़िर हुआ अर्ज़ किया हज़रत मेरे रिज़्क़ का ज़रिया यही बैल है दुआ फरमाइए यह दुबला बहुत है उस में ताक़त आ जाए आपके पास चन्द शेर बैठे थे एक को इरशारा फरमाया वह गया और उस बैल का शिकार किया और कुछ खाया फिर दूसरे को इशारा फरमाया वह गया और कुछ खाया इसी तरह सबने खाया और वह बैल ख़त्म हो गया यह शख़्स अपने दिल में कहने लगा मैं अच्छी दुआ कराने आया था कि मेरा दुबला बैल भी हाथ से गया थोड़ी देर में एक अच्छा मोटा ताज़ा बैल आया जो उस आदमी से छूट गया था और सामने आकर मुअद्दब खड़ा हो गया फरमाया उसे उसके बदले में ले ले उसने ले तो लिया लेकिन दिल में यह ख़तरा गुज़रा कि यह शेर हज़रत की

ख़िदमत में बैठे हैं हज़रत के सामने तक तो कुछ नहीं बोलते यहां से फिर मुझे और उस बैल को खा लेंगे आपको फौरन उसके ख़तरा पर इत्तिला हो गई और क्यों न हो जो उसको जानता है उस से कोई शय पोशीदा नहीं फरमाया शेरों से डरते हो अब उनके दिल में यह ख़तरा आया कि मालूम नहीं किस का बैल है कोई पूछे तो क्या कहूंगा खुद ही फरमाया तुम से कोई न बोलेगा एक शेर को इशारा फरमाया वह उनके साथ कुत्ते की तरह हो लिया और उनकी और उनके बैल की हिफ़ाज़त की आबादी के क़रीब आकर वह शेर वापस चला गया। (इसी सिलसिला में फरमाया) एक साहब औलियाए किराम में से थे उनकी ख़िदमत में दो आलिम हाज़िर हुए आपके पीछे नमाज़ पढ़ी तज्वीद के बाज़ क़वाइदे मुस्तहिब्बा अदा न हुए उनके दिल में ख़तरा गुज़रा कि अच्छे वली हैं उनको तज्वीद भी नहीं आती उस वक़्त तो हज़रत ने कुछ न फ़रमाया मकान के सामने एक नहर जारी थी यह दोनों साहब नहाने के वास्ते वहां गये कपड़े उतार कर किनारे पर रख दिए और नहाने लगे इतने में एक निहायत मुहीब शेर आया और सब कपड़े जमा करके उन पर बैठ गया। यह दोनों साहब ज़रा-ज़रा सी लंगोटियां बांधे हुए अब निकलें तो कैसे उलमा की शान के बिल्कुल ख़िलाफ़। जब बहुत देर हो गई हज़रत ने फरमाया कि भाईयो हमारे दो मेहमान सवेरे आए थे वह कहां गये किसी ने कहा हुज़ूर वह इस शक्ल में हैं तशरीफ़ ले गये और शेर का कान पकड़ कर एक तपांचा मारा उस ने दूसरी तरफ़ मुंह फेर लिया आपने उस तरफ़ मारा उसने उस तरफ़ मुंह फेर लिया फरमाया हम ने नहीं कहा था कि हमारे मेहमानों को न सताना जा चला जा शेर उठ कर चला गया फिर उन साहिबों से फरमाया तुमने ज़बानें सीधी की हैं और हम ने क़ल्ब सीधा किया यह उनके ख़तरा का जवाब था।

अर्ज़ : मन्दिर में नमाज़ पढ़ना कैसा है।

इरशाद : अगर वह कुफ़्फ़ार के क़ब्ज़ा है तो मक्रूह व मम्नूअ़ है कि वह मावाए श्यातीन है और अव्वल तो मन्दिरों में जाना ही कब जाइज़ है।

एक रोज़ बाद नमाज़ ज़ुहर बाहर तशरीफ़ फरमा हुए आली जनाब फ़याज़िले इक्तिसाब मौलवी चौधरी अब्दुल-हमीद ख़ां साहब रईस सहावर

मुसन्निफ़ कन्जुल-आख़िरा भी हाज़िर थे उन से इरशाद फरमाया कि इस बार मुझे ३४ दिन कामिल बुख़ार रहा किसी वक़्त कम न हुआ उन्होनें अर्ज़ किया हुज़ूर जाड़ा भी आता था उस पर इशाद हुआ जाड़ा ताऊन और ववाई अमराज़ जिस क़द्र हैं और नाबीनाई वीक चश्मी वरस, जुज़ाम वग़ैरह वग़ैरह का मुझ से नवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वादा है कि यह अमराज़ तुझे न होंगे जिस पर मेरा ईमान है (फिर फरमाया) इसमें भी ख़ौफ़ है कि कोई मरज़ न हो बफ़ज़्लेही तआला बुख़ार व दर्दे सर व दर्दे कमर तो अक्सर रहता है एक मरतवा कमर में वहुत शिद्दत से दर्द हुआ और उसका असर आसाव पर पड़ा कि हाथ सीधा न होता था (फिर फरमाया) बुख़ार दर्दे सर तो मुवारक अमराज़ हैं कि अंविया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को हुआ करते एक साहव हज़रत औलियाए किराम में से थे उनको दर्दे सर लाहिक़ हुआ तमाम रात नवाफ़िल गुज़ार दी इस शुक्रिया में कि मुझे वह मरज़ दिया जो हज़रत अंवियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का मरज़ है और यहां यह हालत है कि जव कभी दर्दे सर हुआ तो यही कोशिश की जाती है कि अव्वले वक़्त नमाज़ इशा से फारिग़ हो जाएं एक साहव के रुख़सारा पर लक़्वा का असर हो गया था उन्होंने हाज़िर हो कर हुज़ूरे वाला से दुआए ख़ैर चाही इरशाद फरमाया लोहे कि पतर पर सूरः ज़िलज़ाल शरीफ़ कुन्दह करा लीजिए और उसे देखते रहा कीजिए।

अर्ज़ : हुज़ूर विस्मिल्लाह कराने की कोई उम्र शरअन मुक़र्रर है।

इरशाद : शरअन मुक़र्रर नहीं हां मशाइख़े किराम के यहां चार वरस चार महीने चार दिन मुक़र्रर हैं हज़रत ख़्वाजा कुतवुल-हक़ वददीन **बख़्तियार** काकी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की उम्र जिस दिन चार **बरस चार** महीने चार दिन की हुई तक़रीवे विस्मिल्लाह मुक़र्रर हुई लोग **बुलाए गये** हज़रत ख़्वाजा ग़रीव नवाज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी **तशरीफ़** फरमा हुए विस्मिल्लाह पढ़ाना चाही मगर इल्हाम हुआ कि **ठहरो व** हमीदुद्दीन नागोरी आता है वह पढ़ाएगा उधर नागौर में क़ाज़ी **हमीदुद्दीन** साहव रहमतुल्लाहि अलैहि को इल्हाम हुआ कि जल्द मेरे एक **बन्दे को** विस्मिल्लाह पढ़ा क़ाज़ी साहव फौरन तशरीफ़ लाए और आपसे

फरमाया साहवज़ादे पढ़िए विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम आपने पढ़ा। *अऊज़ुविल्लाहि मिनश्शैतानिर्रज़ीम। विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम* और शुरू से लेकर पन्द्रह पारे हिफ़्ज़ सुना दिए हज़रत क़ाज़ी साहव और ख़्वाजा साहव ने फरमाया साहवज़ादे आगे पढ़िए फरमाया मैंने अपनी मां के शिकम में इतने ही सुने थे और इसी क़द्र उनको याद थे वह मुझे याद हो गये।

अर्ज़ : हुज़ूर के काकी होने क्या वजह है।

इरशाद : काक कुलचे को कहते हैं हज़रत को एक मरतवा चन्द फ़ाक़ा हुए थे और घर भर में किसी के पास कुछ खाने को न था उस वक़्त आसमान से आपके वास्ते काकी आई थीं यूं काकी मशहूर हो गये (फिर फरमाया) हज़रत शैख़ फ़रीदुल-हक़ वद्दीन गंज शकर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को एक मरतवा ८० फाक़े हो चुके थे नफ़्स भूखा था अल-जूअ् अल-जूअ् पुकार रहा था उसके वहलाने के लिए कुछ संगरेज़े उठा कर मुंह में डालते-डालते ही शकर हो गये जो कंकर मुंह में डालते शकर हो जाता इसी वजह से आप गंज शकर मशहूर हैं। हज़रत महवूवे इलाही रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का लक़व ज़र वख़्श है हज़रत की वख़्शिश की यह हालत थी कि वादशाह के यहां से ख़्वान वड़े-वड़े क़ीमती जवाहिरात के ला कर रखे गये एक साहव हाज़िर थे उन्होंने अर्ज़ की *अल- हिदाया मु तरेका* इरशाद फरमाया अमा तन्हा खुशतर, यह फरमा कर सव उनको दे दिए हज़रत सैयदना इमाम अवू यूसुफ़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास हारून रशीद ने रुपये अशरफ़ियों के ख़्वान भेजे एक साहव ने अर्ज़ की *अल-हुदा या म तरेकह* इरशाद फरमाया यह इम्साल फवाकेह के लिए है जो हदिया पेश किया जाए तो तमाम हाज़िरीन में मुश्तरक होता है उनके सिवा और चीज़ों का यह हुक्म नहीं उन दोनों वाक़ेओं को लिख कर मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह तआला अलैह ने यह एतराज़ किया कि दोनों का जवाव आपस में मुवाफ़िक़ नहीं और मैंने उनके हाशिए पर यह जवाव लिखा कि इमाम अवू यूसुफ़ रहमतुल्लाह तआला अलैह मक़ामे तशरीअ् में थे उनके अफ़आल व अक़्वाल व अहवाल यहां तक कि उनकी एक-एक वज़अ् से

इस्तिदलाल किया जाता है और थे मक़ामे तबत्तुल में उनका मरतबा उनके मरतबा से इलाहिदा है यहां ग़ैर से बिल्कुल इंक़िता है बख़िलाफ़ उसके उनका एक-एक फ़ेअ्ल बल्कि उनकी पूरी कोशिश तक हुज्जत होती है उनके तमाम हालात मन्कूल होते हैं कुतुबे फ़िक़्ह में है कि एक मरतबा आप यौमुश्शक में यानी जिस रोज़ शुबह हो कि वह रमज़ान की पहली है या शाबान की तीस आप बाद जुहवे कुबरा के बाज़ार में तशरीफ़ लाए और फरमाया रोज़ा खोल दो उस वक़्त की वज़अ् मन्कूल है कि सियाह घोड़े पर सवार थे सियाह लिबास पहने थे सियाह अमामा बांधे थे ग़रज़ कि सिवाए रेशे मुबारक के कोई चीज़ सफेद न थी उस से यह मस्अला इस्तिंबात किया गया कि सवाद (सियाह रंग) का पहनना जाइज़। एक साहब ने सवाल किया आपका रोज़ा है या नहीं चुपके से कान में फरमाया अना साइम मैं रोज़े से हूं उस से यह मस्अला निकला कि मुफ़्ती खुद यौमुश्शक में रोज़ा रखे और अवाम को न रखने का हुक्म दे ग़रज़ कि हासिल जवाब यह है कि आपने उन दोनों साहिबों के मरातिब में फ़र्क़ नहीं किया उन्होंने यह कहा दोनों क़ौलों में कितना फ़र्क़ है लेकिन दोनों के मरतबों में भी तो कितना फ़र्क़ है।

अर्ज़ : हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम नबी हैं या नहीं।

इरशाद : जम्हूर का मज़्हब यही है और सही भी यही है कि वह नबी हैं ज़िन्दा हैं ख़िदमते बहर उन्हीं से मुतअल्लिक़ है और इल्यास अलैहिस्सलाम बर (खुशकी) में हैं (फिर फरमाया) चार नबी ज़िन्दा हैं कि उनको वाद-ए-इलाहिया अभी आया ही नहीं यूं तो हर नबी ज़िन्दा हैं। *इन्नल्लाहा हर्रमा अलल-अर्ज़े इन ताकुला अज्सादल-अंबियाए फ़नबीयल्लाहे हैयुन यरज़िक़ु*। बेशक अल्लाह ने हराम किया है ज़मीन पर कि अंबिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम के जिस्मों को ख़राब करे तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिए जाते हैं अंबिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर एक आन को महज़ तस्दीक़ वाद-ए-इलाहिया के लिए मौत तारी होती है बाद उसके फिर उनको हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियवी अता होती है ख़ैर उन चारों में से दो आसमान पर हैं और दो ज़मीन पर ख़िज़्र व इल्यास अलैहिस्सलाम ज़मीन पर हैं और इद्रीस व ईसा अलैहिमस्सलाम आसमान

पर हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर उन पर भी मौत तारी होगी।

इरशाद : ज़रूर *कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल-मौत* (फिर फरमाया) जब यह आयत नाज़िल हुई कुल्लु मन अलैहा फान। जितने ज़मीन पर हैं सब फना हो जाएंगे फ़रिश्ते खुश हुए कि हम बच्चे कि हम ज़मीन पर नहीं जब दूसरी आयत नाज़िल हुई। *कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल-मौत*। मलाइका ने कहा अब हम भी गये।

अर्ज़ : हुज़ूर इद्रीस अलैहिस्सलातु वस्सलाम के आसमान पर जाने का वाक़या क्या है।

इरशाद : आपके वाक़या में उलमा को इख़्तिलाफ़ है इतना तो ईमान है कि आप आसमान पर तशरीफ़ फरमा हैं कुरआने अज़ीम में है। *वरफ़नाहु मकानन अलीया*। हमने उनको बुलन्द मकान पर उठा लिया बाज़ रिवायात में यह भी है कि बाद मौत आप आसमान पर तशरीफ़ ले गये एक रिवायत में यह है एक बार आप धूप की शिद्दत में तशरीफ़ लिए जा रहे थे दोपहर का वक़्त था आपको सख़्त तक्लीफ़ हुई ख़्याल फरमाया कि जो फ़रिश्ता आफताब पर मुवक्किल है उसको किस क़द्र तक्लीफ़ होती होगी अर्ज़ की ऐ अल्लाह उस फ़रिश्ता पर तख़्फ़ीफ़ फरमा फौरन दुआ कुबूल हुई और उस पर तख़्फ़ीफ़ हो गई उस फ़रिश्ता ने अर्ज़ किया या अल्लाह मुझ पर तख़्फ़ीफ़ किस तरफ़ से आई इरशाद हुआ मेरे बन्दे इद्रीस ने तेरी तख़्फ़ीफ़ के वास्ते दुआ की मैंने उसकी दुआ कुबूल की अर्ज़ की मुझे इजाज़त दे कि मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हूं इजाज़त मिलने पर हाज़िर हुआ तमाम वाक़या बयान किया और अर्ज़ किया कि हज़रत का कोई मतलब हो तो इरशाद फरमाएं फरमाया एक मरतबा जन्नत में ले चलो अर्ज़ की यह तो मेरे क़ब्ज़ा से बाहर है लेकिन इज़्राईल मलकुल-मौत से मेरा दोस्ताना है उनको लाता हूं शायद कोई तदबीर चल जाए ग़रज़ इज़्राईल अलैहिस्सलाम आए आपने उन से फरमाया उन्होंने अर्ज़ किया हुज़ूर बेग़ैर मौत के तो जन्नत में जाना नहीं हो सकता फरमाया रूह क़ब्ज़ कर लो उन्होंने बहुक्म खुदा एक आन के लिए रूह क़ब्ज़ की और फौरन जिस्म में डाल दी आपने

फरमाया कि मुझ को दोज़ख़ जन्नत की सैर कराओ हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम दोज़ख़ पर लाए तवक़ाते जहन्नम खुलवाए आप देखते ही बेहोश हो कर गिर पड़े इज़्राईल अलैहिस्सलाम वहां से ले आए जब होश हुआ तो अर्ज़ किया यह तक्लीफ़ आपने अपने हाथों से उठाई फिर जन्नत में ले गये वहां की सैर करने के बाद इज़्राईल अलैहिस्सलाम ने चलने के वास्ते अर्ज़ किया आपने इल्तिफ़ात न फरमाया फिर दोबारा अर्ज़ किया आपने जवाब न दिया जब फिर उन्होंने अर्ज़ किया तो फरमाया अब चलना कैसा जन्नत में आकर भी कोई वापस जाता है अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता को उन दोनों में फैसला करने के वास्ते भेजा उस ने आकर पहले हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम से सारा वाक़या सुना फिर आप से दरयाफ़्त किया कि आप क्यों नहीं तशरीफ़ ले जाते इरशाद फरमाया अल्लाह तआला फरमाता है *कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइकतुल-मौत*। और मैं मौत का मज़ा चख चुका हूं और फरमाता है। *व इन मिन्कुमुल-औरादिहा* तुम में से हर एक जहन्नम की सैर करेगा और मैं जहन्नम की भी सैर कर आया और फरमाया है *वमाहुम मिन्हा बेख़ारेजीन*। और वह लोग जन्नत से कभी न निकलेंगे अब मैं जन्नत में आ गया क्यों जाऊं हुक्म हुआ मेरा बन्दा इद्रीस सच्चा है उसको छोड़ दो।

अर्ज़ : हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम की लिक़ा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से साबित है या नहीं।

इरशाद : लिक़ा साबित है (फिर फरमाया) किस नबी को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से लिक़ा न हुई सब अव्वलीन व आख़िरीन व अंबिया व मुरसलीन ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पीछे बैतुल-मक़्दिस में नमाज़ पढ़ी हज़रत जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं -

दर आं मस्जिद इमाम अंबिया शुद
सफ़ पेशीनां रा पेशवा शुद
नमाज़ इसरा में था यही सर अयां हों मानी अव्वले आख़िर
कि दस्त बस्ता हैं पीछे हाज़िर जो सलतनत आगे कर गये थे

(फिर फरमाया) यहां तमाम अंबिया और मुरसलीन के साथ नमाज़

पढ़ी और बैतुल-मामूर में सब अंबिया और उम्मते मरहूमा ने भी कुछ लोग पहली सफ में थे कुछ दूसरी कुछ तीसरी और कुछ उन सफ़ों में थे जो बैतुल-मामूर के बाहर थीं फ़र्क़ मरातिब में था उनमें कुछ के कपड़े सपेद थे और कुछ के मैले सपेद वाले सालेहीन हैं और मैले हम जैसे गुनहगार पढ़ी सबने बैतुल-मामूर में।

अर्ज़ : हुज़ूर बाज़ लोग तक्बीरे तहरीमा के वक़्त हाथ उठा कर छोड़ देते हैं फिर नीयत बांधते हैं।

इरशाद : नहीं चाहिए बल्कि बाज़ लोग तो पहलवानों की तरह झटका भी देते हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर मस्जिद में बदबू के साथ न जाना चाहिए अगर कोई दवा बदबूदार लगाई हो तो क्या करे।

इरशाद : खुजली वग़ैरह में अगर कन्धक वग़ैरह लगाई हो तो मस्जिद की हाज़िरी मुआफ़ है।

एक साहब फराइज़ का एक इस्तिफ़्ता लाए कि सौतेली मां की औलाद को तरेका पहुंचता है या नहीं उस पर इरशाद फरमाया यह अजीब सवाल है ऐसा सवाल अब तक नहीं आया मुस्तफ़्ती यह चाहता है कि धोखे से उसके मुवाफ़िक़ लिख दिया जाए उस वक़्त ज़रूरत इस बात की है कि जवाब के सोचने से पहले सवाल को समझे कि उस में धोखा तो नहीं है एक मरतबा एक साहब मेरे पास इस्तिफ़्ता लाए कि ज़ौजा ने एक मकान अपने शौहर के हाथ बय बिला बदल किया अब ज़ौजा के मरने के बाद वह मकान उसके तरेका में होगा या नहीं मैंने कहा में उस वक़्त तक फतवा नहीं दे सकता जब तक बयनामा की नक़ल न लाओ फ़ुक़्हाए किराम लिखते हैं कि बय बिला बदल **बातिल है** यानी बिला मुआवज़ा बय करना और हमारे यहां उर्फ़ में बय बिला बदल के यह मानी हैं कि बय तो हुई लेकिन उसका मुआवज़ा क़र्ज़ है अदा नहीं हुआ मैंने उन साइल से कहा अगर बय बिला बदल की सूरत होगी तो यही होगी उसके सिवा नहीं हो सकती ग़रज़ बयनामा देखने से मालूम हुआ कि यही सूरत थी वह इसी मरअला को शाहजहानपुर ले गये और लिखा लाए कि बय बिला बदल बातिल है और वह मकान उस

औरत का तरेका है मुझे लाकर दिखाया छे: सात मुहरें भी थीं (फिर फरमाया) मुझे चाहिए था कि उसी वक़्त उस पर जवाव लिख देता (फिर फरमाया) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अख़्तियार था ख़्वाह हक़ीक़त पर हुक्म फरमाएं या ज़ाहिर पर लेकिन अक्सार अहकाम ज़ाहिर ही पर फरमाते और वाज़ दफा वातिन पर भी हुक्म फरमाया एक शख़्स हाज़िर लाया गया जिस ने चोरी की थी फरमाया *उक़्तुलूहू* उसको क़त्ल करो हज़रत अबू वकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह उसने तो चोरी की है फरमाया *फ़क़्तऊहू* अच्छा हाथ काटा जाए दाहिना हाथ काट लिया गया उसने फिर चोरी की वायां पैर काट लिया उस ने फिर चोरी की वायां हाथ काट लिया चौथी वार फिर चोरी की और दाहिना पैर काट लिया गया। पांचवीं मरतवा उस ने मुंह में कोई शय छुपा कर रखी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उसके क़त्ल का हुक्म दिया और फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सच फरमाया था *उक़्तुलूहू* यह उसी का नतीजा था।

बतज़्किरा आदा व हासेदीन इरशाद फरमाया मेरी इतनी उम्र गुज़री लोग मेरी मुख़ालिफ़त ही करते रहे एक तरफ़ कुफ़्फ़ार का नरग़ा दूसरी तरफ़ हासेदीन का मज्मा मुझ से वाज़ लोगों ने कहा कि मज्मूआ आमाल भरा हुआ है सेफ़ियां भरी पड़ी हैं कोई अमल कर लीजिए मैंने कहा जिन्होंने यह तल्वारें मुझे दी हैं उन्हीं का यह हुक्म है कि तलवार हाथ में कभी न लेना हमेशा ढाल ही से काम लेना चुनांचे कभी किसी पर हरवा न किया सिवाए एक दफ़ा के कि मैंने करना चाहा और न हुआ जिस से सावित कर दिया गया कि तेरे किए कुछ नहीं हो सकता हम करते हैं (फिर फ़रमाया) वह खुद ऐसी मदद करता है कि अपने आप इंतिज़ाम करने की ज़रूरत नहीं मेरी उम्र १६ साल की थी उस वक़्त रामपुर को रेल न थी वैल गाड़ी पर सवार हो कर गया साथ में औरतें भी थीं रास्ता में दरिया पड़ा गाड़ी वाले ने ग़लती से वैलों को उस में हांक दिया उसमें दलदल थी वैल पहुंचते ही घुटनों तक धंस गये और निस्फ़ पहिया गाड़ी का जितना वैल ज़ोर करते अन्दर धंसते चले जाते

थे अव मैं निहायत हैरान कि साथ में औरतें हैं उतर सकता नहीं कि दलदल में मैं खुद धंस जाने का अन्देशा उसी परेशानी में था कि एक बूढ़े आदमी जिनकी सूरते नूरानी और सफेद दाढ़ी थी न उस से पहले उन्हें देखा था न जब से अब तक देखा तशरीफ़ लाए और फरमाया क्या है मैंने तमाम वाक़या अर्ज़ किया फरमाया यह तो कोई वात नहीं गाड़ी वाले से फरमाया हांक उस ने कहा किधर हांकूं आप देखते हैं दलदल में गाड़ी फंसी है फ़रमाया अरे तुझे हांकना नहीं आता उधर को हांक यह कह कर पहिया को हाथ लगाया फौरन गाड़ी दलदल से निकल गई (फिर फरमाया) ऐसी मऊनतें तो अल्हम्दु लिल्लाह वहुत ज़ाइद हुई पहली वार की हाज़िरी में मिना शरीफ़ की मस्जिद में मग़्रिब के वक़्त हाज़िर था उस वक़्त मैं वज़ीफ़ा वहुत पढ़ा करता था अव तो वहुत कम कर दिया है वहम्दुलिल्लाह तआला मैं अपनी हालत वह वह पाता हूं जिस में फुक़्हाए किराम ने लिखा है कि सुन्नतें भी ऐसे शख़्स को मुआफ़ हैं लेकिन अल्हम्दुलिल्लाह सुन्नतें कभी न छोड़ें नफ़्ल अल्वत्ता उसी रोज़ से छोड़ दिए हैं ख़ैर जव सव लोग मस्जिद से चले गये तो मस्जिद के अन्दरूनी हिस्सा में एक साहब को देखा कि क़िवला वज़ीफ़ा में मसरूफ़ हैं मैं सेहन मस्जिद में दरवाज़ा के पास था और कोई तीसरा मस्जिद में न था यकायक आवाज़ गुनगुनाहट की सी अन्दर मस्जिद के मालूम हुई जैसे शहद की मक्खी बोलती है मैं वज़ीफ़ा छोड़ कर उनकी तरफ़ चला कि उन से दुआए मग़्फ़िरत कराऊं कभी मैं किसी बुजुर्ग के पास वहम्दुलिल्लाह तआला दुनियावी हाजत लेकर न गया जव गया तो उसी ख़्याल से कि उन से दुआए मग़्फ़िरत कराऊंगा ग़रज़ दो ही क़दम उनकी तरफ़ चला था कि उन वुजुर्ग ने मेरी तरफ़ मुंह करके आसमान की तरफ़ हाथ उठा कर तीन मरतवा फरमाया। *अल्लाहम्मग़ फ़िरल लेअख़ी हाज़ा अल्लाहुम्मग़फ़िर लेअख़ी हाज़ा अल्लाहुम्मग़फ़िर लेअख़ी हाज़ा* मैं समझ गया कि फरमाते हैं हमने तेरा काम कर दिया अव तू हमारे काम में मुख़ल न हो मैं वैसे ही लौट आया (फिर फरमाया) वरैली में एक मज्ज़ूव वशीरुद्दीन साहब इख़्वान ज़ादा की मस्जिद में रहा करते थे जो कोई उनके पास जाता कम से कम पचास गालियां सुनाते मुझे

उनकी ख़िदमत में हाज़िर होने का शौक़ हुआ मेरे वालिद माजिद कुद्दिसा सिर्रुहू की मुमानअत कि कहीं बाहर वग़ैर आदमी के साथ लिए न जाना एक रोज़ रात के ग्यारह बजे अकेला उनके पास पहुंचा और फ़र्श पर जा कर बैठ गया वह हुजरा में चारपाई पर बैठे मुझ को वग़ौर पन्द्रह बीस मिनट तक देखते रहे। आख़िर मुझ से पूछा साहबज़ादा तुम मौलवी रज़ा अली ख़ां साहब के कौन हो मैंने कहा मैं उनका पोता हूं फ़ौरन वहां से झपटे और मुझको उठा कर ले गये और चारपाई की तरफ़ इशारा करके फरमाया आप यहां तशरीफ़ रखिए पूछा क्या मुक़द्दमा के लिए आए हो मैंने कहा मुक़द्दमा तो है लेकिन मैं इसलिए नहीं आया हूं मैं तो सिर्फ़ दुआए मग़्फ़िरत के वास्ते हाज़िर हुआ हूं क़रीब आधे घन्टे तक बराबर कहते रहे अल्लाह करम करे अल्लाह रहम करे अल्लाह करम करे अल्लाह रहम करे उसके बाद मेरे मंझिले भाई (मौलवी हसन रज़ा साहब मरहूम) उनके पास मुक़द्दमा की ग़रज़ से हाज़िर हुए उन से खुद ही पूछा क्या मुक़द्दमा के लिए आए हो उन्होंने अर्ज़ किया जी हां फरमाया मौलवी साहब से कहना कुरआन शरीफ़ में यह भी तो है। *नसरुन मिनल्लाहि व फ़तहुन क़रीब*। बस दूसरे ही दिन मुक़द्दमा फतह हो गया।

अर्ज़ : इमाम को दूसरी रकअत में याद आया कि मैं वेवुज़ू हूं उसने वेवुज़ू ही नमाज़ ख़त्म की तो काफिर होगा या नहीं।

इरशाद : अगर लोगों की शर्म की वजह से उस ने वुज़ू न किया तो कुफ़्र न होगा हराम और गुनाहे कवीरा का इर्तिकाब किया और अगर मआज़ल्लाह इस्तिहक़ारन ऐसा किया और मुसलमान से ऐसा मुतसव्विर नहीं तो अल्वत्ता कुफ़्र हो जाएगा।

अर्ज़ : निसाब का मालिक अगर नाबालिग़ को कर दे तो ज़कात है या नहीं।

इरशाद : नहीं होगी कि नाबालिग़ मुकल्लफ़ नहीं।

अर्ज़ : तम्लीक किस तरह होगी।

इरशाद : या तो कुछ दे और ज़ुबान से कहे कि मैंने तुमको यह दे दिया। या दलालतन तम्लीक पाई जाए जैसे कुछ दिया और नीयत हिबा

की और समझा गया कि मालिक कर दिया तो हिबा सही हो जाएगा तुआती से बय हो जाती है हिबा तो दूसरी चीज़ है (फिर फरमाया) औरतों को ज़ेवर बना देते हैं अगर उर्फ़ में वहां मालिक कर देना समझा जाता हो तो औरत मालिक हो गई अगर उर्फ़ उसका न हो या मुख़्तलिफ़ हो तो नहीं।

अर्ज़ : नाबालिग़ अगर माल फ़रोख़्त करे तो बय होगी या नहीं।

इरशाद : वली की इजाज़त पर मौक़ूफ़ है बशर्तेकि समन मिस्ल (नर्ख़ बाज़ार) पर बेचे और समन क़लील बक़द्र *मा यतग़ाबुन फ़ीहिन्नासे*। का एतबार नहीं।

मुअल्लिफ़ : चन्द उलमाए किराम हाज़िरे ख़िदमत थे हुज़ूरे वाला ने उन से इस्तिफ़सार फरमाया वह कौन सा हिबा है जो नाबालिग़ करे और वली की इजाज़त नहीं बल्कि मुमानेअत है और हिबा सही हो हालांकि वली की इजाज़त पर भी नाबालिग़ का हिबा सही नहीं सब ने सुकूत किया और अर्ज़ किया हुज़ूर ही इरशाद फरमाएं फरमाया वह हिबा सवाब का है कि घटता नहीं बल्कि बढ़ता है।

अर्ज़ : हुज़ूर इस सवाब के हिबा करने वाले को भी सवाब मिलेगा।

इरशाद : हां। इसमें तो किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं इख़्तिलाफ़ इसमें है कि वह सवाब अगर चन्द आदमियों को हिबा किया जाए तो वह तक़सीम हो कर पहुंचाया इतना ही इतना सब को मिलेगा और सही यह है कि अल्लाह के फ़ज़्ल से इतना ही इतना सब को मिलेगा हां वहाबिया ने लिखा है कि यह नियाबत हुई यानी इस हिबा करने वाले ने उसकी तरफ़ से यह अमल किया अब उसके लिए कोई सवाब नहीं और मोअ्तज़ेला पहुंचने का इंकार करते हैं।

अर्ज़ : इल्मे मन्तिक़ से इल्मे बयान अफ़्ज़ल है या नहीं।

इरशाद : हां फलासफ़ा की बनाई हुई मन्तिक़ से तो अफ़्ज़ल ही है।

अर्ज़ : और हुज़ूर शरीअत की मन्तिक़।

इरशाद : हां शरीअत की मन्तिक़ बेशक इल्मे बयान से अफ़्ज़ल है।

अर्ज़ : उसकी क्या तारीफ़ है।

इरशाद : वह एक ऐसा क़ानून है जिसकी मेराआते ख़ता कुफ़्र से

बचाए।

अर्ज : हुज़ूर उसके जानने वाले भी हुए हैं।

इरशाद : हज़रात सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम ने किया था जिस से वह ख़ता गुमां से बचते थे हालांकि फलासफा की मन्तिक उस वक़्त भी थी नहीं और फिर अइम्मा-ए-मुज्तहेदीन कौन सी मन्तिक जानते थे।

अर्ज : उलमाए ज़ाहिर में कोई ऐसा गुज़रा या नहीं।

इरशाद : मैं जिस को बताऊंगा आप कहेंगे यह उलमाए बातिन में से थे शरीअत की मन्तिक एक नूर का नाम है जिसको खुदा अता फरमाए आप चाहें कि मुल्लात वालों में कोई ऐसा हो मैं मुल्लात वालों में से किस को लाऊं जो नूर वाला हो।

अर्ज : इल्मे ज़ाहिरी में वह कौन इल्म है।

इरशाद : वह इल्म उसूले फिक़ह व हदीस है और बाक़ी यह सब मन्तिक व फल्सफा तो फुज़ूल है।

(फिर फरमाया) इस्तिदलाल पर दार व मदार, दो बातों की तरफ ले जाता है या हैरत या ज़लालत इमाम फख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह तआला अलैह की नज़अ् का जब वक़्त आया शैतान आया कि उस वक़्त शैतान पूरी जान तोड़ कोशिश करता है कि किसी तरह उसका ईमान सलब हो जाए अगर उस वक़्त फिर गया तो फिर कभी न लौटेगा उसने उन से पूछा कि तुम ने उम्र भर मुनाज़िरों मुबाहिसों में गुज़ारी खुदा को भी पहचाना आपने फरमाया बेशक खुदा एक है उसने कहा इस पर क्या दलील आपने एक दलील क़ायम फरमाई वह ख़बीस मुअल्लिमुल मलकूत रह चुका है उसने वह दलील तोड़ दी उन्होंने दूसरी दलील क़ायम की उसने वह भी तोड़ दी यहां तक कि ३६० दलीलें हज़रत ने क़ायम की और उसने सब तोड़ दीं अब वह सख़्त परेशानी में और निहायत मायूस आपके पीर हज़रत नज्मुद्दीन कुबरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु कहीं दूर दराज़ मक़ाम पर वुज़ू फरमा रहे थे वहां से आपने आवाज़ दी कह क्यों नहीं देता कि मैंने खुदा को बेदलील एक माना।

आफताब आमद दलील आफताब

मर्द तैले ख्वाही अज़ूए रू मताब

अर्ज : हुज़ूर दूर्बीन से आसमान नज़र आता है या नहीं।

इरशाद : हम अपनी आंखों से तो आसमान देख रहे हैं क्या दूर्बीन लगाने से अन्धा हो जाता है कि बग़ैर दूर्बीन के देखते हैं और दूर्बीन से न सुझाई दे हमारा ईमान है कि जिस को हम देख रहे हैं यही आसमान है।

क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा हम ने उसको कैसा बनाया और हमने उसको कैसी ज़ीनत दी और उसमें कोई शिगाफ़ नहीं हम ने उसे ख़ूबसूरत बनाया देखने वालों के वास्ते किया वह आसमान को नहीं देखते कैसा शफ़्फ़ाफ़ बनाया गया। फलासफा भी यही कहते थे कि जो नज़र आता है यह आसमान नहीं शफ़्फ़ाफ़ बेलौन है (फिर फरमाया) उस से अकज़ब कौन जिसकी तकज़ीब करे कुरआन (फिर फरमाया) नजात मुन्हसिर है इस बात पर कि एक-एक अक़ीदा अहले सुन्नत व जमाअत का ऐसा पुख़्ता हो कि आसमान व ज़मीन टल जाएं और वह न टले फिर उसके साथ हर वक़्त ख़ौफ़ लगा हो उलमाए किराम फरमाते हैं जिस को सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो मरते वक़्त उसका ईमान सल्ब हो जाएगा। सैयदना उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं अगर आसमान से निदा की जाए कि तमाम रूए ज़मीन के आदमी बख़्श दिए गये मगर एक शख़्स तो, मैं ख़ौफ़ करूंगा कि वह शख़्स मैं ही न हूं और अगर निदा की जाए रूए ज़मीन के तमाम आदमी दोज़ख़ी हैं सिवाए एक शख़्स के तो मैं उम्मीद करूंगा कि वह शख़्स मैं ही न हूं ख़ौफ़ व रिजा का मरतबा ऐसा मोअ्तदिल होना चाहिए (फिर फरमाया) ख़ैर यह तो हिस्सा उमर का था (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) लेकिन कम से कम हर मुसलमान को इतना तो होना ही चाहिए कि सेहत व तन्दुरुस्ती के वक़्त ख़ौफ़ ग़ालिब हो और मरते वक़्त रिजा। हदीस में है हर झटका मौत का हज़ार ज़र्ब तल्वार से सख़्त तर है मलाइका दबोचे बैठे रहते हैं वरना आदमी तड़प कर न मालूम कहां जाए उस वक़्त अगर मआज़ल्लाह कुछ उस तरफ़ से नागवारी आई तो सल्बे ईमान हो गया इसलिए उस वक़्त बताया जाए कि किस के पास जा रहा है।

अर्ज़ : अगर खुदाए तआला के समीअ् व बसीर होने पर ईमान है तो कबीरा तो दरकनार सग़ीरा भी नहीं हो सकता।

इरशाद : ईमान और है और शुहूद और ईमान इर्तिकाब सैयआत के मनाफ़ी नहीं हां अगर शुहूद होगा तो बेशक कबीरा तो दरकनार सग़ीरा भी नहीं हो सकता अकाबिरे औलिया पर भी अकल व शर्ब व नौम के वक़्त एक गूना ग़फ़्लत दी जाती है वरना खाने पीने पर क़ादिर न हूं (फिर फरमाया) ग़फ़्लत मुतलक़ा कुफ़्र है और ग़फ़्लत ग़ालिबा फ़िस्क़ और तज़्किरा ग़ालिब विलायत और तज़्किरा मुतलक़ नुबुव्वत फिर तज़क्कुर ग़ालिब में भी मरातिब हैं।

यह वही तज़किर ग़ालिब है और ग़फ़्लत मुतलक़ा यह हैं जिसे हज़रत मौलाना फरमाते हैं -

अर्ज़ : हुज़ूर बच्चा से मुहब्बत तो बच्चा की बिना पर होती है अल्लाह के वास्ते कौन करता है।

इरशाद : अल्हम्दुलिल्लाह कि मैंने माल मिन हैस हो माल से कभी मुहब्बत न रखी सिर्फ़ इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह के लिए उस से मुहब्बत है इसी तरह औलाद मिन हैस हो औलाद से भी मुहब्बत नहीं सिर्फ़ इस सबब से कि सिला रहम अमल नेक है उसका सबब औलाद है और यह मेरी अख़्तियारी बात नहीं मेरी तबीअत का तक़ाज़ा है।

अर्ज़ : हुज़ूर बीबी बच्चा के सबब से अक्सर औक़ात इंसान गुनाह में मुब्तला हो जाता है।

इरशाद : फिर उसका क्या इलाज अल्लाह तआला फरमाता है। ऐ ईमान वालो तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से तुम्हारे दुश्मन भी हैं तुम उन से बचो और तुम्हारे माल व औलाद फित्ना हैं और ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम को खुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें और जो ऐसा करे तो वही लोग ख़सारा में हैं एक बार अमामीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा दरबारे अक़्दस में हाज़िर हुए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सीना से लगा लिया और फरमाया। *इन्नकुम लतुजनिबूना वलेतुबख़लूना*। तुम लोगां को नामर्द कर देते हो और बख़ील बना देते हो। चूंकि अज़्वाज व

औलाद को दुश्मन बताया गया था मुम्किन था कि कोई समझ लेता उनको तक्लीफ़ देना चाहिए लिहाज़ा उसी जगह फरमा दिया। *व इन तअ्फ़ू व तुस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़इन्नल्लाहा ग़फ़ूरुर्रहीम*। और अगर तुम मुआफ़ कर दो और दर गुज़र कर दो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।

अर्ज़ : कामदार जूता का क्या हुक्म है।

इरशाद : अगर झूठा काम है तो मुतलक़न मक्रूह है हत्ता कि औरतों को भी और अगर सच्चा है तो चार अंगुल से कम मर्दों को जाइज़ है उस से ज़्यादा नहीं और औरतों को मुतलक़न जाइज़ है।

मुअल्लिफ़ : एक मस्अला तलाक़ का पेश हुआ जिस में लिखा था ज़ैद ने कहा मैंने अपनी बीबी को तलाक़ को दिया उस पर इरशाद फरमाया क्या ख़ूब अब अगर लिखने वाले की ग़लती कही जाए तो और हुक्म होता है और अगर उन्हें अल्फ़ाज़ को सही माना जाए तो हुक्म बदल जाएगा यूं कहना कि मैंने अपनी बीवी को तलाक़ को दिया उसके मानी यह होंगे कि उसने अपनी बीवी को तलाक़ दिल्वाने के लिए दूसरे को हवाला कर दिया उसके मानी यह हूंगे कि उसने अपनी बीवी को तलाक़ दिलवाने के लिए दूसरे को हवाला कर दिया और उसमें तलाक़ नहीं पड़ेगी और अगर यूं कहा कि मैंने अपनी बीवी को तलाक़ दिया तो तलाक़ हो जाएगी लोग इस क़द्र धोखे दे कर सवाल करते हैं।

अर्ज़ : शैख़ से बज़ाहिर कोई ऐसी बात मालूम हो जो ख़िलाफ़े सुन्नत है तो उस से फिर जाना कैसा।

इरशाद : महरूमी और इंतेहाई गुम्राही है।

अर्ज़ : अगर ज़ैद ने एक वक़्त शैख़ पर एतराज़ किया और दूसरे वक़्त नादिम हुआ तो क्या अब भी उस पर कोई इल्ज़ाम है।

इरशाद : उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं।

अर्ज़ : दुर्रे मुख़्तार कबीरी सग़ीरी वग़ैरह में लिखा है कि रुकूअ् में दोनों टखनों को मिलाना सुन्नत है।

इरशाद : लम यस्बुत। कहीं साबित नहीं दस बारह किताबों में यह मस्अला लिखा है और सब का मुन्तही ज़ाहदी है।

अर्ज़ : एक मरीज़ का गला फूल गया है उसके लिए कोई दुआ इरशाद हो।

इरशाद : *अम अवरमू अमरन फ़इन्ना मुबरेमून*। लिख कर गले में डाल लिया जाए।

अर्ज़ : हुज़ूर नई रौशनी वाले कहते हैं कि खुतबा से मक़्सूद अवाम को तरग़ीब व तरतीब व तज़्कीर है अगर उर्दू में न पढ़ा जाए तो यह फाइदा हासिल न होगा तो खुतबा मआज़ल्लाह बेकार हो जाएगा।

इरशाद : सहाबा किराम के ज़माना में अजम के कितने ही शहर फतह हुए कई हज़ार मिंबर नसब हुए कई हज़ार मस्जिदें बनाई गई। कहीं मन्कूल नहीं कि सहाबा ने उनकी ज़बान में खुतबा फरमाया हो उस वास्ते कि वह जानते थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम वाक़िफ़ हैं तमाम *मा काना वमा यकूनु*। से तमाम वक़ाए गुज़िश्ता आइन्दा की आपको ख़बर है हुज़ूर को यह मालूम था कि हिन्दी हबशी रूमी, अजमी हर ज़बान वाले मुसलमान होंगे अरबी न समझेंगे और कभी इजाज़त न दी कि उनकी ज़बान में खुतबा पढ़ा जाए खुद दरबारे अक़्दस में रूमी हबशी अजमी अभी ताज़ा हाज़िर आए हैं अरबी एक हरफ़ नहीं सझते मगर कहीं साबित नहीं कि हुज़ूर ने उनकी ज़बान में खुतबा फरमाया हो या कुछ खुतबा अरबी में और कुछ उनकी ज़बान में फरमाया हो एक हरफ़ भी उनकी ज़बान का खुतबा में मन्कूल नहीं। *मा अताकुमुर्रसूलु फ़खुज़ूहु वमा नहाकुम अन्हु फन्तहू।* अब रहा यह एतराज़ कि फिर तज़्कीर से फाइदा क्या उसका जवाब यह है कि दो-दो पैसे की नौकरी के वास्ते उमरें अंग्रेज़ी में गिनवाते हैं और अरबी ज़बान जो ऐसी मुतबर्रक उसी में उनका कुरआन उनका नबी अरबी उनकी जन्नत की ज़बान अरबी उसके लिए इतनी कोशिश भी न करें कि खुतबा समझ सकें यह एतराज़ तो उन्हीं पर पड़ेगा न कि ख़तीब पर।

अर्ज़ : *वक़ेफ़ूहुम इन्नहुम मस्ऊलूना*। की तफ़्सीर में *अन विलायते अली* सही है या नहीं।

इरशाद : रवाफ़िज़ के नज़्दीक यह तफ़्सीर है।

अर्ज़ : कुल ला अस्अलुकुम अलैहि अजरल-मवद्दतं फ़िल-क़ुरबा। के

क्या मानी हैं।

इरशाद : उसकी दो तफ़्सीर हैं एक तो यह कि कोई क़बीला कुफ़्फ़ारे मक्का का ऐसा न था जो सरकार से क़राबत न रखता हो और क़बीला वाले साथ करम अह्ले अरब की तीनत में रखा गया था तो वह जो तक्लीफ़ें पहुंचाते थे उनकी बाबत इरशाद फरमाया गया कि और किसी बात का ख़्याल न करो क़राबतदारी ही का पास करके हुज़ूर को तक्लीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहो। दूसरी तफ़्सीर यह है कि क़ुर्बा से मुराद सादाते किराम व अह्ले बैत इज़ाम में और इस्तिसना बहरे सूरत मुन्क़ता है। *ला अस्अलुकुम अलैहि अजरन* सालिबा कुल्लिया है।

अर्ज़ : ला सलाता इल्ला बेहुज़ूरिल-क़ल्ब क्या हदीस है।

इरशाद : इमाम तहावी ने मुआनियुल-आसार में उसे बतौर हदीस के बिला सनद ज़िक्र किया है।

अर्ज़ : एक क़ब्र कच्ची है हर बार पानी भर जाता है उसमें पक्की डाट लगा दें।

इरशाद : क़ब्र पर डाट लगाने में हरज नहीं हां खोली न जाए मैयत को दफन करके जब मिट्टी दे दी गई तो वह अमानत हो जाता है अल्लाह उसकी कशफ़ जाइज़ नही दो हाल से ख़ाली नहीं मुअज़्ज़ब है या मुनइम अलैह अगर मुअज़्ज़ब है तो देखने वाला देखेगा उसे जिस से उसे रंज पहुंचेगा और कर कुछ नहीं सकता और अगर मुनइम अलैह है तो उसमें उसकी नागवारी (फक़ीर कहता है कि अगर सूरत मआज़ल्लाह सूरते औला है तो नागवारी और ज़्यादा होनी चाहिए और बेवजह नाहक़ ईज़ाए मुस्लिम हराम खुसूसन ईज़ाए मैयत नीज़ हदीस के इरशाद से साबित है कि मुर्दे को क़ब्र से तकिया लगाने से भी अज़ीयत होती है तो मआज़ल्लाह महज़ अपनी ख़्वाहिश के लिए न ज़रूरत व हाजत के लिए उस पर कुदाल चलाना और क़ब्र को खोद डालना किस क़द्र सख़्त ईज़ा का बाइस होगा आह! मुसलमानों के क़ब्रिस्तानों की आज जो रद्दी हालत है उस पर जिस क़द्र रोया जाए कम है क़ब्र पर लोग बैठ-बैठ कर हुक़्क़े पीते खुराफ़ात करते लग्व बातें बनाते गालियां बकते क़हक़हे उड़ाते हैं ग़ैर क़ौम ही के लोगों पर बस नहीं खुद मुसमलान भी यह नाशाइस्ता बेहूदा हरकतें करते हैं। बच्चे क़ुबूर पर खेलते कूदते फिरते हैं बल्कि गधे उन पर लोटते लीद करते हैं बकरियां बैठती

मेंगनियां करती हैं वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह मुसलमानो! खुदा के लिए आंखें खोलो एक दिन तुम्हें भी जाना है उन मर्दों की ख़ातिर कुछ इंतिज़ाम नहीं करते अपने ही लिए करो। (१२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू) है अल्लामा ताश कुवरा ज़ादा रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने यह हदीस देखी कि उलमाए दीन के बदन को मिट्टी नहीं खाती बदन उनका सलामत रहता है शैतान ने उनके दिल में वसवसा डाला हमारे उस्ताद बहुत बड़े आलिम हैं उनकी क़ब्र खोल कर देखूं कि उनका बदन किस हाल पर है उस वसवसा ने उन पर ऐसा ग़लबा किया कि एक शब में जा कर क़ब्र खोली देखा कफ़न भी मैला न था जब देख चुके।

क़ब्र से आवाज़ आई देख चुका अल्लाह तुझे अन्धा करे उसी वक़्त दोनों आंखें बह गई। इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह तआला अलेह ने शरहुस्सुदूर में लिखा है कि एक औरत का इंतिक़ाल हुआ दफ़्न कर दी गई उसके शौहर को बहुत मुहब्बत थी मुहब्बत ने मज्बूर किया कि उसकी क़ब्र खोले कर देखे क्या हाल है एक आलिम साहब से यह इरादा ज़ाहिर किया उन्होंने मना किया न माना और उनको क़ब्रिस्तान तक साथ ले गया आलिम ने हर चन्द मना किया लेकिन उसने क़ब्र खोली आलिम साहब क़ब्र के किनारे बैठे रहे वह नीचे उतरा देखा कि उसी औरत के दोनों पांव पीछे से लेजा कर उसकी चोटी से बांध दिए गये हैं उसने चाहा कि खोल दूं हर चन्द ताक़त की मगर न खोल सका अल्लाह की लगाई हुई गिरह कौन खोल सके उन आलिम साहब ने मना फ़रमाया न माना दोबारा फिर ज़ोर किया आलिम साहब ने फिर मना किया कि देख उसी में ख़ैरियत है उसे ऐसे ही रहने दे उसने कहा एक बार तो और ज़ोर कर लूं फिर जो होगा देखा जाएगा ज़ोर कर ही रहा था कि बिल-आख़िर ज़मीन धंसी और वह मर्द व औरत दोनों ज़मीन में चले गये। वल-अयाज़ बिल्लाह तआला।

अर्ज़ : यह कौन हैं जिनके बदन को ज़मीन नहीं खाती।

इरशाद : हाफ़िज़ बशर्तेकि अमल करता हो कुरआन पर, बहुतेरे कुरआन की तिलावत करते हैं और कुरआन उन्हें लानत करता है। *रब तआलल-कुरआनु वल-कुरआनु यलअनुहू*। और आलिमे दीन और शहीद फ़ी सबीलिल्लाह और वली और वह कि दुरूद शरीफ़ बकसरत पढ़ा

करता हो और वह जिस्म जिसने कभी अल्लाह की नाफ़रमानी न की और वह मुअज़्ज़िन जो बिला उजरत अज़ान दिया करता हो सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जो बिला उजरत सात बरस महज़ अल्लाह की रज़ा के लिए अज़ान दे। *वजबत लहुल-जन्नह*। उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई।

अर्ज़ : यह हदीस है।

इरशाद : यह क़ादियानी मल्ऊनों का हदीस पर इफ़्तरा और ज़ियारत है हदीस में इतना है। *वकाना मूसा हैयन व अदरका नुबुव्वती मा वसअहू इल्ला इत्तिबाई*। अगर मूसा ज़िन्दा होते और मेरी नुबुव्वत का ज़माना पाते तो उन्हें कुछ गुंजाइश न होती सिवा मेरी इताअत के इफ़्तरा भी किया और काम न कटा उनका मक़्सूद उस इफ़्तरा से वफ़ाते मसीह साबित करना है और जब वफ़ात साबित हो जाएगी तो उनके नज़्दीक नुज़ूल न होगा तो एक मिस्ल का नुज़ूल मानना पड़ेगा हालांकि तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियवी है सही हदीस में है। *इन्नल्लाहा हर्रमा अलल-अर्ज़े इन ताकुला अज्सादिल-अंबियाए फ़नबियल्लाहि हैयुन यरज़ुकु*। बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के अज्साम खाना हराम फरमा दिया है तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिए जाते हैं दूसरी सही हदीस में है। *अल-अंबियाए अहयाउन फ़ी कुबूरेहिम युसल्लूना*। अंबिया सब ज़िन्दा हैं अपनी क़ब्रों में नमाज़ें पढ़ते हैं अगर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की वफ़ात मान भी ली जाए तो उनकी मौत बल्कि तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के लिए सिर्फ़ आनी है एक आन की मौत तारी होती है यह मस्अला क़तीया यक़ीनिया ज़रूरियाते मज़्हबे अह्ले सुन्नत से है। उसका मुंकिर न होगा मगर बद मज़्हब गुम्राह तो फिर ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ज़िन्दा ही हैं उनका नुज़ूल मुम्तना क्योंकर हो गया (फिर फरमाया) चार अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम वह हैं जिन पर अभी एक आन के लिए भी मौत तारी नहीं हुई दो आसमान पर सैयदना इद्रीस *(अला इहदल-क़ौलैने कमा सबक़ा*। १२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू) अलैहिस्सलातु वस्सलाम और

सैयदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम और दो ज़मीन पर सैयदना इल्यास अलैहिस्सलातु वस्सलाम और सैयदना ख़िज़्र अलैहिस्सलातु वस्सलाम हर साल हज में यह दोनों हज़रात जमा होते हैं हज करते हैं ख़त्मे हज पर ज़मज़म शरीफ़ का पानी पीते हैं कि वह पानी उनको किफायत करता है साल भर के तआम व शराव से।

अर्ज़ : सौमे विसाल तो गै़र हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिए नाजाइज़ है। फिर जब यह साल भर कुछ नोश नहीं फरमाते हैं तो साल भर का सौम मुत्तसिल हुआ।

इरशाद : सौम में नीयत ज़रूरी है बेग़ैर नीयत के रोज़ा नहीं होता।

अर्ज़ : अय्यामे तशरीक़ व ईदुल-फ़ित्र में कुछ न कुछ खाना ज़रूरी है।

इरशाद : इन अय्याम में रोज़ा हरम है खाना ज़रूरी नहीं रोज़ा एक माह का फ़र्ज़ है और खाना किसी (यानी *अलत्ताईन* १२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू) रोज़ का फ़र्ज़ नहीं।

अर्ज़ : रोज़े के लिए तो इफ़्तार रुक्न है बग़ैर इफ़्तार के रोज़ा नहीं हो सकता।

इरशाद : रोज़े के लिए इफ़्तार रुक्न क्या मानी ज़रूरी भी नहीं रोज़ा हो जाएगा अगरचे कभी इफ़्तार न करे सुम्मा अतिम्मुस्सियामा इलल्लैल रात आई और रोज़ा पूरा हो गया बख़िलाफ़ नमाज़ के कि उस में खुरूज बसनआ एक फ़ेअ़ल ज़रूरी है नमाज़ है फ़ेअ़ल उसके लिए एक फ़ेअ़ल ऐसा करना ज़रूरी है जिससे मालूम हो कि नमाज़ ख़त्म हो गई और रोज़ा है तर्क या कफ बइख़्तिलाफ़ क़ौलैन और कफ फ़ेअ़ल है क़ल्ब का नमाज़ सिर्फ़ नीयत से बेग़ैर अफ़्आले जवारेह के अदा नहीं हो सकती और रोज़ा में कोई फ़ेअल नहीं सिर्फ़ नीयत है किसी फ़ेअ़ल की ज़रूरत नहीं क़ल्ब ने जैसे समझा था कि मेरा रोज़ा है अब समझ ले कि मेरा रोज़ा ख़त्म हो गया बस अब इफ़्तार करे या नहीं रोज़ा ख़त्म हो गया (फिर फ़रमाया) मस्अला है कि ताख़ीर इफ़्तार मक्रूह है मगर अगर किसी के पास खाने को न हो तो क्या खाए इफ़्तार उनके वास्ते रखा गया है जो बशरीयत में फंसे हुए हैं क़ुव्वते मल्कीया उनमें नहीं और

ख़िज़्र व इल्यास अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को आला दरजा की मलकूती कुव्वत हासिल है।

अर्ज़ : औलियाए इलाही की क्या पहचान है।

इरशाद : हदीस में इरशाद फरमाया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम *औलिया अल्लाह अल्लज़ीना इज़ा रअऊ ज़िक्रल्लाह*। औलिया अल्लाह वह लोग हैं जिन के (जो मुसन्निफ़ कभी आस्तान-ए-क़ुदसीया हुज़ूर पुर नूर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर हाज़िर हो कर ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ उसे बेशक ज़रूर खुदा याद आया। १२ फ़क़ीर उबैदुर्रज़ा गुफ़िरा लहू) देखने से खुदा याद आए।

अर्ज़ : दाइरा दुनिया कहां तक है।

इरशाद : सातों आसमान तो ज़मीन दुनिया है और उन से वरा सिदरतुल-मुन्तहा अर्श व कुर्सी दारे-आख़िरत है। (फिर फरमाया) दारे दुनिया शहादत है और दारे आख़िरत ग़ैब-ग़ैब की कुंजियों को मफातीह और शहादत की कुंजियों को मक़ालीद कहते हैं कुरआने अज़ीम में इरशाद होता है। *व इन्दा मफ़ातीहुल-ग़ैबे ला यअ्लमुहा इल्ला हुवा* अल्लाह ही के पास हैं ग़ैब की मफ़ातीह (कुंजियां) उनको खुदा के सिवा कोई (बज़ाते खुद) नहीं जानता और दूसरी जगह फरमाया है *लहू मक़ालीदुस्समावाते वल-अर्ज़े* खुदा ही के लिए हैं मक़ालीद (कुंजियां) आसमान व ज़मीन की और मफ़ातीह का हर्फ़े अव्वल (म) व हर्फ़े आख़िर (ह) और मक़ालीद का हर्फ़े अव्वल (म) व हर्फ़े आख़िर (द) उन्हें मुरक्कब करने से नामे अक़्दस ज़ाहिर होता है मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस से या तो उस तरफ़ इशारा है कि ग़ैब व शहादत की कुंजियां सब दे दी गई हैं मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को कोई शय उनके हुक्म से बाहर नहीं।

दोजहां की बेहतरियां कि अमानी दिल व जां नहीं
कहो क्या है वह जो यहां नहीं मगर इक नहीं कि वह हां नहीं

अर्ज़ : हुज़ूरे वाला कुर्सी की क्या सूरत है।

इरशाद : कुर्सी की सूरत अह्ले शरअ् व हदीस ने कुछ इरशाद न फरमाई फलासफ़ा कहते हैं कि वह आठवां आसमान है सातवां आसमानों

को मुहीत है तमाम कवाकिब साबिता उसी में हैं। मगर शरअ़ ने यह न फरमाया इसी तरह अ़र्श को जहलाए फलासफ़ा कहते हैं कि नवां आसमान है और उसको फलके अतलस कहते हैं। कि इसमें कोई कौकब नहीं मगर हदीस से मालूम होता है कि वह तमाम आसमान व ज़मीन को मुहीत है और उसमें पाए हैं याक़ूत के उस वक़्त तो चार फ़रिश्ते उसको कन्धों पर उठाए हैं और क़यामत के दिन आठ फरिश्ते उठाएंगे और यह तो कुरआने अज़ीम से साबित है *व युहमलूना अर ए रब्बिका फ़ौक़हुम*। (फ़रिश्ते) उन फरिश्तों के पांवों से ज़ानुवों तक पांच सौ बरस की राह का फ़ासिला है आयतुल-कुर्सी को इसी वजह से आयतुल-कुर्सी कहते हैं कि उसमें कुर्सी का ज़िक्र है *वसिया कुर्सीयहुस्समावाते वल-अर्ज़े*। उसकी कुर्सी आसमान व ज़मीन की उस्अत रखती है (फिर फरमाया) आसमान ही की उस्अत ख़्याल में नहीं आती बीच का आसमान जिस में आफताब है उसका निस्फ़ क़तर नौ करोड़ तीस लाख मील है और पांचवां उससे बड़ा पांचवें का एक छोटा पुरज़ा जिसे तदवीर कहते हैं वह आफताब के आसमान से बड़ा है फिर यही निस्बत पांचवें को छठे के साथ है और उसको सातवें के साथ और सही हदीस में आया कि यह सब कुर्सी के सामने ऐसा है कि एक लक व दक़ मैदान में जिसका किनारा नज़र नहीं आता एक छल्ला पड़ा हो। *मस्समावाते अस्सबा वल-अरज़ूना अस्सबआ मअल-कुर्सी इल्ला कल-हल्क़ते मिल्क़ातु फ़ी अर्ज़े फुलातिन*। और यह सब ज़मीन व आसमान कुर्सी के आगे ऐसे हैं कि एक लक़ व दक़ मैदान में एक छल्ला पड़ा हो। और उन सब अर्श व कुर्सी व ज़मीन व आसमान की उस्अत ऐसी ही है अज़्मते क़ल्ब मुबारक सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने और क़ल्बे मुबारक की अज़्मत को कोई निस्बत ही नहीं हो सकती अज़्मते रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू से यह ग़ैर मुतनाही वह मुतनाही और मुतनाही को ग़ैर मुतनाही से निस्बत मुहाल (फिर फरमाया) औलियाए किराम फरमाते हैं। सैयदी शरीफ़ अब्दुल-अज़ीज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं सातों आसमान और सातों ज़मीनें मुमिन कामिल की उस्अते निगाह में ऐसे हैं जैसे किसी लक़ व दक़ मैदान में

एक छला पड़ा हो अल्लाहु अकबर जब गुलामों की यह शान है तो अज़मते शाने अक़्दस को कौन ख़्याल कर सके।

अर्ज़ : सहाबा किराम को भी कश्फ़ होता था।

इरशाद : ला इलाहा इल्लल्लाह उनके गुलामों औलियाए किराम के पेशे नज़र अर्श से तहतुस्सुरा तक होता है फिर सहाबा की शान का क्या पूछना हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से दरयाफ़्त फरमाया *कैफ़ा अस्बहता* तुमने क्योंकर सुबह की अर्ज़ की *अस्बहता मुमिनन हक़्क़न*। मैंने सुबह की इस हाल में कि मैं सच्चा मोमिन था इरशाद फरमाया हर दावा की एक दलील होती है जिस से उस दावा की सच्चाई साबित होती है तुम्हारे दावे की क्या दलील है अर्ज़ की मैंने सुबह की इस हाल में कि अर्श से तहतुस्सरा तक तमाम मौजूदाते आलम मेरी पेशे नज़र है जन्नतियों को जन्नत में ऐश करते देख रहा हूं और जहन्नमियों का जहन्नम में चीखते चिल्लाते अज़ाब पाते देख रहा हूं इरशाद फरमाया तुम पहुंच लिए हो इत्मीनान रखो (फिर फरमाया) माज़ी तो माज़ी मुस्तक़्बिल भी उनकी पेशे नज़र होता है औलियाए किराम फरमाते हैं कोई पत्ता सब्ज़ नहीं होता मगर आरिफ़ की निगाह में।

अर्ज़ : हुज़ूर जो अशिया अब तक वजूद में न आईं उनको वजूद सिवा ज़माने के और किसी चीज़ में तो है नहीं और ज़माने ही में वह हज़रात मुलाहिज़ा फरमाते हैं तो ज़माना का वजूद साबित हो गया।

इरशाद : ज़माना को पहले मौजूद मान लोगे जब तो अशिया का ज़र्फ़ उसे मानोगे और वह है मौहूम उसका वजूद ही नहीं वजूद अशियाका ज़र्फ़ किया है जो सूरतें उन अशिया की होंगी वही पेशे नज़र होती हैं।

अर्ज़ : जिस वक़्त पेशे नज़र हैं उस वक़्त उन अशिया का वजूद नहीं तो उनकी सुर कहां से आएंगी ला मुहाला मानना पड़ेगा कि अपने वक़्त मौजूद में उनकी सूरतें मौजूद हैं वही पेशे नज़र होती हैं।

इरशाद : वक़्त किस चीज़ का नाम है वक़्त है ही नहीं असल यह है कि अल्लाह तआला ने हम को ज़माने और जेहत में घेर दिया किसी

चीज़ को बेग़ैर ज़माने के नहीं समझ सकते रब्बुल-इज़्ज़त ज़माने से पाक है मगर बोलते हैं वह अज़ल में भी ऐसा ही था जैसा अब है और अबद तक ऐसा ही रहेगा। था और है और रहेगा यह सब ज़माने पर दलालत करते हैं और वह ज़माने से पाक और हवादिस जो हैं फ़िल-हक़ीक़तन वह भी ज़माना से जुदा हैं मगर उनका ज़माने से जुदा होना अक़्ल बताएगी और किसी ज़रिया से न मालूम होगा।

अर्ज़ : मुशब्बह कहते हैं *यदुल्लाहि फ़ौक़ा ऐदीहिम*। यह और उसके सिवा जो आयात तशबीह पर दलालत करती हैं मुहकम हैं और *लैसा कमिस्लेही शैयुन* वग़ैरह आयात तन्ज़ीह मुतशाबेह इस तरह वहाबिया कह दें कि *ला यनामु मन फ़िस्समावाते वल-अर्ज़िल-ग़ैबे इल्लल्लाह*। मुहकम और *मा तशाऊना इल्ला अन यशा अल्लाह*। मुतशाबेह और जब्रीया उसका अक्स कहते हैं उसका मेअ्यार क्या है जिससे मुहकम और मुशाबेह का इम्तियाज़ हो जाए।

इरशाद : जिस आयत को उसके ज़ाहिर माना पर हमल करने से कोई अक़्ली इस्तेहाला लाज़िम आता हो वह मुतशाबेह है। *यदुल्लाहे फ़ौक़ा ऐदीहिम*। के माना ज़ाहिर अगर लें तो उसका हाथ माना और जब हाथ हुआ तो जिस्म भी हुआ और हर जिस्म मुरक्कब और मुरक्कब अपने वजूद में अपने उन अज्ज़ा का मुहताज है जिन से वह मुरक्कब है जब तक वह मौजूद न हो लें यह मौजूद नहीं हो सकता तो खुदा का मुहताज होना लाज़िम आया और हर मुहताज हादिस और कोई हादिरु क़दीम नहीं और जो क़दमी न हो खुदा नहीं हो सकता तो सिरे से उलूहियत का ही इंकार हो गया इसलिए साबित हुआ कि *यदुल्लाहे फ़ौक़ा ऐदीहिम*। मुहकम नहीं मुतशाबेह है और *लैसा कमिस्लेही* मुहकम है इसी तरह *ला यअ्लमु मन फ़िस्समावाते वल-अर्ज़िल-ग़ैबे इल्लल्लाह*। को अपने ज़ाहिर पर रखा जाए तो यह मानी होंगे कि किसी तरह का इल्मे ग़ैब किसी को नहीं सिवा रब अज़्ज़ा व जल्ल के हालांकि अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ने सदहा उलूमे ग़ैब जन्नत, व नार व मलाइका व जिन्न, हिसाब सवाब, अज़ाब एक़ाब, मीज़ान सिरात, आराफ़ के मुतअल्लिक़ बयान फरमाए तो मआज़ल्लाह किज़्बे इलाही लाज़िम

आया तो मालूम हुआ कि यह अपने उमूम ज़ाहिर पर नहीं बल्कि आयात मुस्बिता ने इल्म अताई की तख़्सीस कर दी है और जब इस आयत में बिल-अता व बिज़्ज़ात दोनों को आम ठहरा लिया तो मानी यह हो जाएंगे कि ज़ाती इल्मे ग़ैब भी सिवा खुदा के किसी को नहीं और अताई इल्मे ग़ैब भी किसी को सिवा खुदा के नहीं मआज़ल्लाह कैसा बड़ा इस्तेहाला लाज़िम आया कि खुदा को किसी दूसरे ने इल्म अता किया तो जाहिल हुआ और जहल नुक़्सान है और जिसमें नुक़्सान हो खुदा नहीं हो सकता तो उलूहियत से हाथ धो बैठना हुआ तो यह अपने उमूमे ज़ाहिरी पर मुहकम नहीं हो सकती हां अपने मानी में ज़रूर मुहकम है इस तरह *वमा ज़लमनाहुम वलाकिन कानू अंफ़ुसहुम यज़्लेमून*। को अगर उसके ज़ाहिर पर रखो तो यह मानी होंगे कि बन्दे खुद उन अफ़आल का ख़ल्क़ करते हैं तो कुरआने अज़ीम में जो सवाल फरमाया गया है। *हल मिन ख़ालिक़े ग़ैरुल्लाह*। क्या खुदा के सिवा और ख़ालिक़ है हर आक़िल के नज़्दीक उसका जवाब नफी में होगा और उसका जवाब मआज़ल्लाह इस्बात में होगा कि हां हज़ारों से ज़ाइद ख़ालिक़े खुदा के सिवा मौजूद हैं जो अपने अफ़आल के खुद ख़ालिक़ हैं मआज़ल्लाह तो ज़ाहिर हुआ कि यह भी मुहकम नहीं बस यह मुहकम है *ला अस्अलु अम यफ़अलु वहुम यस्अलूना वमा तशाऊना इल्ला अन यशाअल्लाहु।* बन्दे कुछ इरादा भी नहीं कर सकते जब तक मशीयते इलाही न हो फिर भी खुद जो कुछ चाहे करे कोई उस से यह सवाल करने वाला नहीं कि तूने ऐसा क्यों किया वह फाइल मुख़्तार है। *यफ़अलु मा यशाओ व यहकुमु मा युरीद*। और बन्दे जो कुछ भी करें उन से सवाल होगा बावजूद उसके *वमा रब्बुका बेज़ल्लामिन लिल-अबीद। ला यज़्लिमु मिस्क़ाला ज़र्रतिन*। तुम्हारा रब बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं, ज़र्रह बराबर जुल्म नहीं करता।

अर्ज़ : तशबीह सही है या तन्ज़ीह।

इरशाद : तशबीह महज़ कुफ़्र है और तन्ज़ीह महज़ गुमराही और तन्ज़ीह मआ तशबीह बिला तशबीह अक़ीदा हक़्क़ अह्ले सुन्नत है।

अर्ज़ : तन्ज़ीह मआ तशबीह बिला तशबीह क्या मतलब है।

इरशाद : *लैसा कमिस्लेहीशैयुन इन्नहू हुवस्समीउल-बसीर*। यह

तन्ज़ीह मआ तशबीह बिला तशबीह है तशबीह महज़ तो यह हुई कि वह हमारी ही तरह एक जिस्म मिनल-अज्साम है उसके कान आंख हमारी ही तरह गोश्त पोस्त से मुरक्कब हैं वह उन्हीं से देखता सुनता है और यह कुफ़्र है और तन्ज़ीह महज़ यह कि देखने सुनने में उसको बन्दों से मुशाबिहत होती ही लिहाज़ा उस से भी इंकार कर दिया जाए कि हम नहीं कह सकते कि खुदा देखता सुनता है यह कुछ और सिफ़ात हैं जिनको देखने सुनने से ताबीर किया गया है और यह गुमराही है असल सही अक़ीदा यह है कि *लैसा कमिस्लेही शैयुन*। यह तन्ज़ीह हुई कि उसकी मिस्ल कोई शय नहीं और *इन्नहू हुवस्समीउल-बसीर*। तशबीह हुई और जब सुनने देखने को ब्यान किया कि उसका देखना आंख का सुनना कान का मोहताज नहीं वह बे आलात के सुनता देखता है यह नफ़ी तशबीह है कि बन्दों से जो वहम मुशाबिहत होता उसको मिटा दिया तो मा हसल वही निकला तन्ज़ीह मआ तशबीह बिला तशबीह (फिर फरमाया) तन्ज़ीह मआ तशबीह बिला तशबीह से तो कुरआने अज़ीम पढ़े, इल्म व कलाम यक़ीनन उसकी सिफ़ात हैं यह तशबीह हुई मगर उसका इल्म दिल व दिमाग़ व अक़्ल का और कलाम ज़बान का मुहताज नहीं। यह नफी तशबीह और वही *लैसा कमिस्लेही शैयुन*। हर एक के साथ मिल कर फिर वही हासिल हुआ तंज़ीह मआ तशबीह बिला तशबीह हयात उसकी सिफ़त है अगर यह कहा जाए कि वह ज़िन्दा है तो उस में इसी तरह रूह है हमारी ही तरह उसकी रग व पे में खून दौड़ता फिरता है जैसा मुशब्बह मुलाइना कहते हैं तो यह कुफ़्र है और अगर उस से इंकार कर दिया जाए जैसे मुलाहिदा बातनीया बका करते कि वह *हैयुन ला हैयुन नूरुन ला नूरुन*। है तो यह खुली ज़लालत है हक़ यह है कि वह हैयुन है खुद ज़िन्दा है और तमाम आलम की हयात उस से वाबस्ता है मगर न रूह से कि यह खुद उसकी मख़्लूक़ है न वह गोश्त व पोस्त व खून व इस्तख़्वां से मुरक्कब है न वह जिस्म है जिस्म व जिस्मानियात व ज़मान व जेहत से पाक है यह वही तंज़ीह मआ तशबीह बिला तशबीह है (फिर फरमाया) असल यह है कि अल्फ़ाज़ उसके लिए वज़अ् ही नहीं किए गये अल्फ़ाज़ तो मख़्लूक़ ने मख़्लूक़ के

लिए बनाए हैं खुदा को आलिम क़ादिर मुही मुमीत राज़िक़ मुतकल्लिम मोमिन मुहैमिन ख़ालिक़ बारी मुसव्विर वग़ैरह सिफ़ात से मौसूफ़ करते हैं और यह सब हैं इस्म फाइल और इस्म फाइल दलादल करता है हुदूस और ज़माना हाल या ज़माना मुस्तक़्बिल पर और वह हुदूस व ज़माने से पाक है क़ालल्लाहु तआला *व यबक़ा वज्हु रब्बिका* और सिवा सदहा सेग़े कुरआन पाक ने फरमाए हैं जो माज़ी या हाल या मुस्तक़्बिल से ख़ाली नहीं और वह ज़मानों से मुनज़्ज़ह और कुरआन में बराबर आता है। *बिल्लाहे लिल्लाहे अलल्लाहे फिल्लाहे मिनल्लाहे* और बे आती है *अस्साक़* के लिए और अल्लाह उस से पाक है कि कोई शय उस से मुल्तसिक़ हो सके लाम आता है नफ़ा के लिए और वह उस से पाक है कि किसी शय से उसको नफ़ा पहुंच सके अला आता है ज़रर या इस्तेलाल के लिए और वह उस से बरतर है कि किसी शय से उसको ज़रर पहुंच सके वह उस से मुतआली है कि कोई उस से बुलन्द हो सके फ़ी आया है ज़रीफ़त के लिए और वह उस से पाक है कि वह किसी शय का ज़र्फ़ बन सके मिन आता है इब्तिदाए ग़ायत के लिए और वह उस से पाक है कि वह किसी का इब्तिदाई किनारा या हद्दे इब्तिदाई बन सके इला आता है इंतिहाए ग़ायत के लिए और वह उस से पाक है कि वह किसी का इंतिहाई किनारा बन सके फ़िल-हक़ीक़त यह सब अफ़्आल व अस्मा व हुरूफ़ अपने मआनी हक़ीक़िया से मअ्दूल हैं (फिर फरमाया) यह सब वही तंज़िया मआ तशबीह बिला तशबीह है।

मुअल्लिफ़ : मौलवी हशमत अली साहब क़ादरी रिज़वी लखनवी सल्लमहु के दिल में यह ख़्याल आया कि कुरआने अज़ीम में *युअल्लेमूना लहू मा यशाओ मिन महारीबा व तमासीला*। है। यानी सैयदना सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए जिन्न उनकी हस्बे मन्शा मेहराबें और तस्वीरें बनाते थे और यह साबित है कि अगली शरीअतों को जब रब अज़्ज़ा व जल्ल बग़ैर इंकार के बयान फरमाए तो वह अहकाम हमारे लिए भी होते हैं और तस्वीरों पर कुरआने अज़ीम ने इंकार न फरमाया और जिन अहादीस से हुर्मत साबित होती है वह सब आहाद हैं तो कुरआने अज़ीम को मन्सूख़ नहीं कर सकतीं यह शुबह दिल में लिए हुए हाज़िर

ख़िदमत हुए और अर्ज़ किया हुज़ूरे वाला हुर्मत तसावीर मुतवातिर है।

इरशाद : हां हुर्मते तसावीर मुतवातिर है मगर वह अहादीस जिन से हुर्मत साबित होती है वह सब फर्दन फर्दन आहाद हैं मगर मज्मूआ से हुर्मत मुतवातिर हो जाती है तो यूं कह सकते हैं कि हुर्मत तसावीर की हदीस मुतवातिरुल-माना है और हर्दीस मुतवातिरुल-माना कुरआने अज़ीम को मन्सूख़ कर सकती है जैसे ऐसी अहादीस ने *युअल्लेमूना लहू मा यशाओ मिन महारीबा व तमासील।* को मन्सूख़ कर दिया। (यह हज़रत की करामत कहिए तो बजा है और यह इसी बार नहीं अक्सर ऐसा हुआ है कि शुबह बयान हुआ नहीं और जवाब फरमा दिया। १२ मुअल्लिफ़ ग़ुफ़िरा लहू।)

अर्ज़ : अल्लाह का लफ़्ज़ मुरक्कब है या मुफ़रद।

इरशाद : मशहूर यह है कि आल तारीफ़ और इलाह से मुरक्कब है हम्ज़ह की हरकत लाम को दे कर उस को हज़फ़ कर दिया और लाम को लाम में इदग़ाम कर दिया लफ़्ज़ *अल्लाह* हो गया मगर मुझे दूसरा क़ौल पसन्द है कि लफ़्ज़ *अल्लाह* मुरक्कब नहीं बल्कि हैयअते कज़ाइया इल्म है ज़ात बारी का कि जिस तरह उसकी ज़ात ग़ैर मुरक्कब होना चाहिए और उनका मुवैद उसका तरज़े इस्तेमाल भी है कि वक़्ते निदा उसका अलिफ़ नहीं गिरता या अल्लाह में ऐसा नहीं होता कि हम्ज़ा और अलिफ़ गिर कर य लाम में मिल जाए अगर लाम तारीफ़ होता तो ज़रूर ऐसा होता कि उसका हम्ज़ा वसली होता है और मुनादी बया मारूफ़ बिल्लाम के पहले ईहा ज़्यादा करते हैं यहां हराम है और अगर मानी का तसव्वुर करके हो तो कुफ़्र है ईहा के मानी होते हैं एक मुबहम ज़ात जिसका बयान आगे है वहां इबहाम कैसा वह तो आरफ़ल-मआरिफ़ है हर शय को ताईन तो वहीं से अता होती है (फिर फ़रमाया) वह तो इस क़द्र ज़ाहिर है कि उसका बेग़ायत जुहूर वही सबब हो गया उसकी बेनिहायत बतून का, क़ायदा है कि शय जब तक एक हद्दे मुअ्तदाद तक ज़ाहिर रहती है मरई होती है और जब उस हद से गुज़रती है नज़र नहीं आती आफताबे तुलूअ् के बाद कुछ बुख़ारात सहाबात वग़ैरह में होता है पूरी तरह नज़र आता है ख़ूब अच्छी तरह उस पर निगाह जम सकती है और जितना बुलन्द होता जाता है निगाह में ख़ैरगी आती जाती है

यहां तक कि जब बिल्कुल निस्फ़ुन्नहार पर आ जाता है निगाह की मजाल नहीं कि उस पर हम सके मगर फिर भी उसका जुहूर एक हद ही तक है इसलिए अगरचे जम उसको देख नहीं सकते फिर भी उसकी रौशनी से मुस्तफ़ीद हो सकते हैं। चौदहवीं शब को जब आफताब हम से बिल्कुल पोशीदा हो जाता है किसी की ताक़त नहीं कि आफ़ताब से रौशनी ले सके उस वक़्त माहताब और अह्ले ज़मीन के दर्मियान मुतवस्सित हो कर आफताब से नूर लेता है और अह्ले ज़मीन को नूर पहुंचाता है जो चाहे कि उस माहताब से नूर न लूंगा बल्कि आफताब ही से लूंगा हरगिज़ नहीं ले सकता बिला तशबीह ज़ाते बारी तआला बेहद ज़ाहिर थी और इसी सबब से बेहद बातिन थी तमाम मौजूदात में उस से मुस्तफ़ीद होने की इस्तेदाद भी न थी इसलिए अल्लाह तआला ने एक माहताबे नुबुव्वत बनाया कि आफताबे उलूहियत से मुनव्वर हो कर तमाम मख़्लूक़ात को मुनव्वर कर दे।

अर्श तक फैली है ताब आरिज़
यूं चमकते हैं चमकने वाले

जो चाहे कि बेग़ैर वसीले उस माहताबे रिसालत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कुछ हासिल कर लूं वह खुदा के घर में नक़ब लगाना चाहता है बेग़ैर इस तवस्सुल के कोई नेमत कोई दौलत किसी को कभी नहीं मिल सकती है जिससे तमाम आलम मुनव्वर व मौजूद है वह न हो तो तमाम आलम पर तारीकी अद्म छा जाए वह क़मरे बुरुज रिसालत सैयदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं उलमाए किराम फरमाते हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़ज़ाना सरे इलाही और जाए निफ़ाज़ हुक्मे खुदा हैं रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू ने अपने करम के ख़ज़ाने अपनी नेमतों के ख़्वान हुज़ूर के क़बज़े में कर दिए जिसको चाहें दें और जिसको चाहें न दें कोई हुक्म नाफ़िज़ नहीं होता मगर हुज़ूर के दरबार में से कोई नेमत कोई दौलत किसी को भी कभी नहीं मिलती मगर हुज़ूर की सरकार से सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यही मानी हैं *इन्नमा अना क़ासिमुन वल्लाहु युअ्ती* जज़ा ई नीस्त कि मैं ही बांटने वाला हूं और अल्लाह देता है।

वह न था तो बाग़ में कुछ न था वह न हो तो बाग़ हो सब फना

ख़िदमत हुए और अर्ज़ किया हुज़ूरे वाला हुर्मत तसावीर मुतवातिर है।

इरशाद : हां हुर्मते तसावीर मुतवातिर है मगर वह अहादीस जिन से हुर्मत साबित होती है वह सब फर्दन फर्दन आहाद हैं मगर मज्मूआ से हुर्मत मुतवातिर हो जाती है तो यूं कह सकते हैं कि हुर्मत तसावीर की हदीस मुतवातिरुल-माना है और हर्दीस मुतवातिरुल-माना कुरआने अज़ीम को मन्सूख़ कर सकती है जैसे ऐसी अहादीस ने *युअल्लेमूना लहू मा यशाओ मिन महारीबा व तमासील।* को मन्सूख़ कर दिया। (यह हज़रत की करामत कहिए तो बजा है और यह इसी बार नहीं अक्सर ऐसा हुआ है कि शुबह बयान हुआ नहीं और जवाब फरमा दिया। १२ मुअल्लिफ़ गुफ़िरा लहू।)

अर्ज़ : अल्लाह का लफ़्ज़ मुरक्कब है या मुफ़रद।

इरशाद : मशहूर यह है कि आल तारीफ़ और इलाह से मुरक्कब है हम्ज़ह की हरकत लाम को दे कर उस को हज़फ़ कर दिया और लाम को लाम में इदग़ाम कर दिया लफ़्ज़ *अल्लाह* हो गया मगर मुझे दूसरा क़ौल पसन्द है कि लफ़्ज़ *अल्लाह* मुरक्कब नहीं बल्कि हैयअते कज़ाइया इल्म है ज़ात बारी का कि जिस तरह उसकी ज़ात ग़ैर मुरक्कब होना चाहिए और उनका मुवैद उसका तरज़े इस्तेमाल भी है कि वक़्ते निदा उसका अलिफ़ नहीं गिरता या अल्लाह में ऐसा नहीं होता कि हम्ज़ा और अलिफ़ गिर कर य लाम में मिल जाए अगर लाम तारीफ़ होता तो ज़रूर ऐसा होता कि उसका हम्ज़ा वसली होता है और मुनादी बया मारूफ़ बिल्लाम के पहले ईहा ज़्यादा करते हैं यहां हराम है और अगर मानी का तसव्वुर करके हो तो कुफ़्र है ईहा के मानी होते हैं एक मुबहम ज़ात जिसका बयान आगे है वहां इबहाम कैसा वह तो आरफ़ल-मआरिफ़ है हर शय को ताईन तो वहीं से अता होती है (फिर फ़रमाया) वह तो इस क़द्र ज़ाहिर है कि उसका बेग़ायत ज़ुहूर वही सबब हो गया उसकी बेनिहायत बतून का, क़ायदा है कि शय जब तक एक हद्दे मुअ्ताद तक ज़ाहिर रहती है मरई होती है और जब उस हद से गुज़रती है नज़र नहीं आती आफताबे तुलूअ् के बाद कुछ बुख़ारात सहाबात वग़ैरह में होता है पूरी तरह नज़र आता है ख़ूब अच्छी तरह उस पर निगाह जम सकती है और जितना बुलन्द होता जाता है निगाह में ख़ैरगी आती जाती है

यहां तक कि जब बिल्कुल निस्फ़ुन्नहार पर आ जाता है निगाह की मजाल नहीं कि उस पर हम सके मगर फिर भी उसका ज़ुहूर एक हद ही तक है इसलिए अगरचे जम उसको देख नहीं सकते फिर भी उसकी रौशनी से मुस्तफ़ीद हो सकते हैं। चौदहवीं शब को जब आफताब हम से बिल्कुल पोशीदा हो जाता है किसी की ताक़त नहीं कि आफ़ताब से रौशनी ले सके उस वक़्त माहताब और अह्ले ज़मीन के दर्मियान मुतवस्सित हो कर आफताब से नूर लेता है और अह्ले ज़मीन को नूर पहुंचाता है जो चाहे कि उस माहताब से नूर न लूंगा बल्कि आफताब ही से लूंगा हरगिज़ नहीं ले सकता बिला तशबीह ज़ाते बारी तआला बेहद ज़ाहिर थी और इसी सबब से बेहद बातिन थी तमाम मौजूदात में उस से मुस्तफ़ीद होने की इस्तेदाद भी न थी इसलिए अल्लाह तआला ने एक माहताबे नुबुव्वत बनाया कि आफताबे उलूहियत से मुनव्वर हो कर तमाम मख़्लूक़ात को मुनव्वर कर दे।

अर्श तक फैली है ताब आरिज़
यूं चमकते हैं चमकने वाले

जो चाहे कि बेग़ैर वसीले उस माहताबे रिसालत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कुछ हासिल कर लूं वह खुदा के घर में नक़ब लगाना चाहता है बेग़ैर इस तवस्सुल के कोई नेमत कोई दौलत किसी को कभी नहीं मिल सकती है जिससे तमाम आलम मुनव्वर व मौजूद है वह न हो तो तमाम आलम पर तारीकी अद्म छा जाए वह क़मरे बुरुज रिसालत सैयदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं उलमाए किराम फरमाते हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़ज़ाना सरे इलाही और जाए निफ़ाज़ हुक्मे खुदा हैं रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू ने अपने करम के ख़ज़ाने अपनी नेमतों के ख़्वान हुज़ूर के क़बज़े में कर दिए जिसको चाहें दें और जिसको चाहें न दें कोई हुक्म नाफ़िज़ नहीं होता मगर हुज़ूर के दरबार में से कोई नेमत कोई दौलत किसी को भी कभी नहीं मिलती मगर हुज़ूर की सरकार से सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम यही मानी हैं *इन्नमा अना क़ासिमुन वल्लाहु युअ्ती* जज़ा ई नीस्त कि मैं ही बांटने वाला हूं और अल्लाह देता है।

वह न था तो बाग़ में कुछ न था वह न हो तो बाग़ हो सब फना

यह है जान जान से बका ही बन है बुन से ही बारी है

अर्ज़ : यह हदीस है *लौलाका लम्मा अज़हरता अर्रबीबियतो।*

इरशाद : मैंने हदीस में नहीं देखा हां सूफ़िया की किताब में आया है। *लौलाका लम्मा अज़हरता रुबूबियती।* या ई हमा मानी सही और सही हदीस के मुवाफ़िक़ हैं सही हदीस में है *खलक़्तुल-जिन्ना ला अरफ़हुम करामतिका व मंज़िलतुका इन्दी वलौलाका मा खलक़्तुदुनिया।* ऐ मेरे हबीब मैंने ख़ल्क़ को इसलिए पैदा किया कि जो इज़्ज़त व मंज़िलत तुम्हारी मेरे यहां है मैं उनको पहचनवा दूं और ऐ मेरे हबीब अगर तुम न होते तो मैं दुनिया को न पैदा करता यानी और न आख़िरत को कि दुनिया दारुल-अमल और आख़िरत दारुल-जज़ा है जब दारुल-अमल न होता दारुल-जज़ा कहां से आता यह तो उस पर मुतफ़र्रअ़ है तो जब न दुनिया होती न आख़िरत तो खुदा का खुदा होना किस पर ज़ाहिर होता यही माना हैं उसके कि ऐ मेरे हबीब अगर तुम न होते तो मैं अपना खुदा होना अपनी उलूहियत न ज़ाहिर करता सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

अर्ज़ : मौत वजूदी है या अदमी।

इरशाद : मौत और हयात दोनों वजूदी हैं कुरआने अज़ीम फ़रमाता है। *ख़लक़ल-मौता वल-हयाता लेयब्लुवकुम अय्युकुम अहसनु अमला।* उस ने मौत व हयात को पैदा किया ताकि देखे कि तुम में कौन अच्छे अमल करता है मौत एक मेंढे की शक्ल पर है इज़्राईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम के क़ब्ज़े में जिसके पास से वह हो कर निकलती है वह मर जाता है और हयात एक घोड़ी की शक्ल पर है जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सवारी में जिस बेजान के पास से हो कर निकलती है वह ज़िन्दा हो जाता है (फिर फ़रमाया) अल्लाहु अकबर यह मौत ऐसी चीज़ है कि सिवा ज़ात बारी अज़्ज़ा जलालुहू के कोई उस से न बचेगा जब आयत नाज़िल हुई। *कुल्लु मन अलैहा फ़ान। व यबक़ा वजहु रब्बिका ज़ुल-जलाले वल-इकराम।* जितने ज़मीन पर हैं सब फ़ना होने वाले हैं और बाक़ी रहेगा वजहे करीम रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू का फ़रिश्ते बोले हम बचे कि हम ज़मीन पर नहीं फिर आयत नाज़िल हुई। *कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल-मौत।* हर जानदार मौत को चखने वाला है फ़रिश्तों ने कहा अब हम भी गये जब आसमान व ज़मीन सब फ़ना हो जाएंगे।

और सिर्फ़ मलाइका मुक़र्रेबीन में जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल और चार फ़रिश्ते हमल-ए-अर्श (अर्श के उठाने वाले) रह जाएंगे इरशाद फ़रमाएगा और वह खूब जानने वाला है इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करेंगे कि बाक़ी हैं तेरे बन्दे जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल और चार फ़रिश्ते अर्श के उठाने वाले और यह भी फ़ना हो जाएंगे और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और वह हमेशा रहेगा इरशाद फ़रमाएगा जिब्रील की रूह क़ब्ज़ कर जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम की रूह क़ब्ज़ करेंगे वह एक अज़ीम पहाड़ की तरह सज्दा में रब्बुल-इज़्ज़त की तस्बीह व तक़्दीस करते हुए गिर पड़ेंगे फिर फ़रमाएंगे इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करेंगे बाक़ी हैं तेरे बन्दे मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल और अर्श के उठाने वाले और यह भी फ़ना होंगे और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और कभी न फ़ना होगा फ़रमाएगा मीकाईल की रूह क़ब्ज़ कर मीकाईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी एक अज़ीम पहाड़ की मानिन्द सज्दे में तस्बीह करते हुए गिर पड़ेंगे फिर इरशाद फ़रमाएगा इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करेंगे बाक़ी हैं तेरे बन्दे इस्राफ़ील, इज़्राईल और हमल-ए-अर्श और यह भी फ़ना होंगे और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और वह हमेशा रहेगा इरशाद फ़रमाएगा इस्राफ़ील की रूह क़ब्ज़ कर इस्राफ़ील अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी एक अज़ीम पहाड़ की तरह सज्दा में तस्बीह व तक़्दीस करते हुए गिर पड़ेंगे और फिर फ़रमाएगा इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करेंगे बाक़ी हैं तेरे बन्दे हमला अर्श और बाक़ी है तेरा बन्दा इज़्राईल और यह भी फ़ना होंगे और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और वह हमेशा बाक़ी रहेगा फ़रमाएगा हमला अर्श की रूह क़ब्ज़ कर वह सब भी इसी तरह मर जाएंगे फिर इरशाद फ़रमाएगा इज़्राईल अब कौन बाक़ी है अर्ज़ करें बाक़ी है तेरा बन्दा इज़्राईल और यह भी फ़ना होगा और बाक़ी है तेरा वज्हे करीम और कभी फ़ना न होगा। इरशाद फ़रमाएगा मत मर जा इज़्राईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी एक अज़ीम पहाड़ की मानिन्द रब्बुल-इज़्ज़त के हुज़ूर सज्दे में तस्बीह करते हुए गिर पड़ेंगे और रूह निकल जाएगी उस वक़्त सिवा रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू के कोई न होगा उस वक़्त इरशाद होगा। *लेमनिल-मुल्कु अल-यौमा।* आज किस के लिए बादशाहत है कोई हो तो जवाब दे खुद रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू जवाब फ़रमाएगा। *लिल्लाहिल- वाहिदिल-*

क़हहार। अल्लाह वाहिदे क़हहार के लिए है जब तक चाहेगा यही हालत रहेगी फिर जब चाहेगा इस्राफील अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ज़िन्दा फरमाएगा वह सूर फूंकेंगे क़यामत क़ायम होगी हिसाब होगा जन्नती जन्नत में और अबदी दोज़ख़ी दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे और गुनहगार मुसलमान जहन्नम से नजात पा जाएंगे कि मुनादी जन्नत व दोज़ख़ के दर्मियान जन्नत व दोज़ख़ वालों को निदा करेगा जहन्नमी निहायत खुशी के साथ झांकने लगेंगे कि शायद नजात के लिए हम को निदा दी गई है और जन्नत वाले निहायत ख़ौफ़ के साथ झिझकते डरते गुरफ़ाते जन्नत से झोंकेंगे कि कहीं फिर हम से कोई ख़ता हो गई है जिस से दोज़ख़ में भेज दिए जाएं फिर मौत का मेंढ़ा लाया जाएगा जन्नतियों से पूछा जाएगा तुम उसको पहचानते हो सब कहेंगे हां यह मौत है फिर जहन्नमियों की तरफ़ मुंह करके पूछा जाएगा तुम उसको पहचानते हो सब कहेंगे हां हम पहचानते हैं यह मौत है फिर जन्नत व दोज़ख़ के दर्मियान यहियां अलैहिस्सलाम अपने हाथ से उसको ज़िबह फरमाएंगे फिर जहन्नमियों से कहा जाएगा अब तुम हमेशा जहन्नम में रहो कभी मरना नहीं बिल्कु मायूस हो कर पलटेंगे ऐसा रंज उनको कभी न हुआ होगा फिर जन्नतियों से कहा जाएगा अब तुम जन्नत में हमेशा रहो अब कभी मरना नहीं वह निहायत खुश हो पलटेंगे ऐसी खुशी उनको कभी न हुई होगी।

अर्ज़ : तरावीह में ख़त्म के रोज़ *मुफ़्लिहून* तक पढ़ना कैसा है।

इरशाद : सुन्नत है हदीस में ऐसा करने वाले को हाल मुर्तहिल फरमाया है यानी मंज़िल पर पहुंच कर कूच कर देने वाला जब एक पारा पढ़ चुकता है शैतान कहता है अब शायद रुक जाए न पढ़े जब दूसरा पारा ख़त्म करता है कहता है अब शायद न पढ़े इसी तरह हर पारह पर कहता है यहां तक कि जब तीसों पारे ख़त्म हो जाते हैं कहता है अब न पढ़ेगा अब तो ख़त्म कर चुका फिर जब *मुफ़्लिहून* तक पढ़ता है कहता है यह न मानेगा पढ़ता ही रहेगा मायूस हो जाता है उसकी उम्मीद टूट जाती है।

अर्ज़ : जिन दो रकअतों में अव्वल में कुल अऊज़ुबे रब्बिन्नास और दूसरी में *अलम मुफ़्लिहून*। तक पढ़ाएगा उन में ख़िलाफ़े तरतीब लाज़िम आएगा।

इरशाद : क्यों लाज़िम आएगा औलियाए किराम ने एक-एक रकअत में दस-दस ख़त्म किए हैं आख़िर में *कुल अऊज़ुबे रब्बिन्नास* के बाद *अलम* पढ़ा ही होगा।

अर्ज़ : सूरः इख़्लास का तरावीह में तीन बार पढ़ना कैसा है।

इरशाद : मुस्तहब है सही हदीस में आया है कि सूरः इख़्लास सुलुसे क़ुरआन है तो तीन बार पढ़ने में पूरे क़ुरआने अज़ीम के सवाब के मिलने की उम्मीद है।

अर्ज़ : यह भी आया है कि सूरः काफिरून रुबुए क़ुरआन है तो उसको अगर चार मरतबा पढ़े।

इरशाद : ख़ैर मुसलमानों में राइज यूं है और सूरः इख़्लास का सुलुस क़ुरआन होना मुतवातिर हदीस में है और सूरः काफिरून का रुबअ् होना मुतवातिर नहीं।

अर्ज़ : बाज़ लोग *कुल हुवल्लाह।* शरीफ़ तीन बार पढ़ते हैं और हर बार बिस्मिल्लाह बआवाज़ पढ़ते हैं।

इरशाद : एक बार बआवाज़ तस्मियां होना चाहिए ख़्वाह कहीं हो अलम के अव्वल हो या सूरः *कुल अऊज़ुबे रब्बिन्नास*। के अव्वल हो या सूरः इख़्लास शरीफ़ के अव्वल हो और बाक़ी आहिस्ता हो।

अर्ज़ : *वलक़द आतैनाका सबअन मिनल-मसानी*। से क्या मुराद है।

इरशाद : सबअ् मसानी की तफ़सीर की गई है सूरः फातिहा शरीफ़ के साथ।

अर्ज़ : क़ब्रिस्तान में बआवाज़ क़ुरआने अज़ीम पढ़ना कैसा है।

इरशाद : ऐसी आवाज़ से पढ़ना मुस्तहसन है कि अमवात सुनें और उनका दिल बहले न इतनी कर यह आवाज़ से कि मुर्दे को भी परेशान करे।

अर्ज़ : वक़्त दफन अज़ान क्यों कही जाती है।

इरशाद : दफ़ा शैतान के लिए हदीस में है अज़ान जब होती है शैतान ३६ मील भाग जाता है अल्फ़ाज़ हदीस में यह हैं कि रूहन तक

भागता है और रूहन मदीना तैयबा से ३६ मील है और वह वक़्त होता है दख़ल शैतान का जिस वक़्त मुंकर नकीर सवाल करते हैं। *मन रब्बुका* तेरा रब कौन है यह लईन दूर से खड़ा इशारा करता है अपनी तरफ़ कि मुझको कह दे जब अज़ान होती है भाग जाता है वसवसा नहीं होता फिर सवाल करते हैं *मा दीनुका* तेरा दीन क्या है उसके बाद सवाल करते हैं *मा तक़ूलु फ़ी हाज़र्रजुल* उनके बारे में क्या कहता है अब न मालूम कि सरकार ख़ुद तशरीफ़ लाते हैं या रौज़ा मुक़द्दसा से पर्दा उठा दिया जाता है शरीअ़त ने कुछ तफ़्सील न बताई और चूंकि इम्तिहान का वक़्त है इसलिए *हाज़न्नबी* न कहेंगे *हाज़र्रजुल* कहेंगे।

अर्ज़ : यह ज़मीन क़यामत के रोज़ दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी।

इरशाद : हां उन ज़मीन व आसमान का दूसरे ज़मीन व आसमान से बदला जाना तो क़ुरआने अज़ीम से साबित है इरशाद होता है। *यौमा तुबद्दिलुल अरज़ु ग़ैरल-अर्ज़े वस्समावाते वबरज़ुल्लाहा अल-वाहिदुल- क़ह्हार*। जिस दिन बदल जाएगी यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से और आसमान भी और खुल जाएंगे (क़ब्रों से लोग) अल्लाह वाहिदे क़ह्हार के लिए मगर आसमान के लिए यह नहीं मालूम कि वह आसमान काहे का होगा हां ज़मीन के बारे में सही हदीस आई है जिस में है कि आफ़ताबे क़यामत के दिन सवा मील पर आ जाएगा सहाबी जो उसके रावी हैं फरमाते हैं मुझे नहीं मालूम कि मील से मुराद मील मसाफ़त है या मील सुर्मा (फिर फरमाया) अगर मील मसाफ़त ही मुराद है तो भी कितना फासिला है आफताब चार हज़ार बरस के फासिला पर है और फिर उस तरफ़ पीठ किए है उस रोज़ कि सवा मील पर होगा और उस तरफ़ मुंह किए होगा उस रोज़ की गर्मी का क्या पूछना उसी हदीस में है कि ज़मीन लोहे की कर दी जाएगी (फिर फरमाया) और जन्नत में चांदी की ज़मीन हो जाएगी और यह ज़मीन उस्अत क्या रखती है उन तमाम इंसानों जानवरों के लिए जो रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िर तक पैदा हुए होंगे हदीस में है कि रहमान बढ़ाएगा ज़मीन को जिस तरह मट्टी बढ़ाई जाती है उस वक़्त करवी शक्ल पर है इसलिए उसकी गोलाई उधर की अशिया को हाइल है और उस वक़्त ऐसी हम्वार कर दी जाएगी कि

अगर एक दाना ख़शख़ाश का उस किनारा पर पड़ा हो उस किनार-ए-ज़मीन से दिखाइ देगा हदीस में है। *यबसरुहुमुन्नाज़िर व यस्मओहुम अद्दाई*। देखने वाला उन सबको देखेगा और सुनाने वाला उन सबको सुनाएगा।

अर्ज़ : हुज़ूर यह राही है कि यह ज़मीन जन्नत की शकर बना दी जाएगी।

इरशाद : मैंने न देखा हां यह तो है कि महशर के अरसात में गर्मी शिद्दत की होगी प्यास बहुत होगी और दिन तवील है भूख की तक्लीफ़ भी होगी इसलिए मुसलमान के लिए ज़मीन मिस्ल रोटी के हो जाएगी कि अपने पांव के नीचे से तोड़ेगा और खाएगा।

अर्ज़ : हुज़ूरे वाला यह सही है कि काब-ए-मुअज़्ज़मा जन्नत में जाएगा।

इरशाद : हां काबा मुअज़्ज़मा और तमाम मसाजिद।

अर्ज़ : और हुज़ूर रौज़-ए-अक़्दस।

इरशाद : रौज़-ए-अक़्दस अफ़्ज़ल है या काबा मुअज़्ज़मा।

अर्ज़ : रौज़-ए-अक़्दस।

इरशाद : फिर जब मफ़्ज़ूल जाएगा तो अफ़्ज़ल के जाने में क्या शुबह सिर्फ़ रौज़ा अक़्दस ही नहीं बल्कि तमाम तुरबतें अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की।

अर्ज़ : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की क़सम खा कर ख़िलाफ़ करने से कफ़्फ़ारा लाज़िम आता है।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की क़सम खाना जाइज़ है।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : क्यों। क्या बेअदबी है।

इरशाद : हां।

अर्ज़ : सैयदना सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम के असा में दीमक

लग जाना सही है।

इरशाद : हां सैयदना सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम जिन्नों से बैतुल-मक़्दिस बनवा रहे थे और आपका क़ायदा यह था कि खुद खड़े हो कर काम लेते थे अगर आप वहां तशरीफ़ फरमा न होते तो वह मेअ्मार शरारत करते थे अभी एक साल का काम बाक़ी थी कि आपके इंतिक़ाल का वक़्त आ गया आपने गुस्ल फरमाया कपड़े नए पहने खुशबू लगाई और इसी तरह तशरीफ़ लाए और असा पर तकिया फरमा कर खड़े हो कर खड़े हो गये इज़्राईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली आप इसी तरह असा पर टेक लगाए रहे पहले तो जिन्नों की रात को फुर्सत मिल भी जाती थी अब दिन रात बराबर काम करना पड़ता था हज़रत हर वक़्त खड़े ही रहे थे और इजाज़त मांगने की किसी में हिम्मत न थी नाचार साल भर तक यक्लख़्त रात दिन बराबर काम किया अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के अज्साम बेऐनिहा वैसे ही रहते हैं उनमें कोई तग़ैयुर नहीं आता सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम का जिस्मे मुबारक भी इसी तरह रहा जब काम पूरा हो चुका दीमक को हुक्म हुआ उस ने आप के असा को खाना शुरू किया जब असा कमज़ोर हुआ आप नीचे तशरीफ़ लाए जिन पहले ग़ैब के इल्म का अदआ रखते *तबनियतुल-जिन्ने इन लौ कानू यअ्लमूनल-ग़ैबा मा लबिसू फ़िल-अज़ाबिल-मुहीन*। खुल गया जिन्नों का हाल कि अगर ग़ैब जानते क्यों रहते एक साल सख़्त अज़ाब में।

अर्ज़ : क्या हुज़ूर हैवानात भी नातिक़ हैं।

इरशाद : बिला शुबह।

अर्ज़ : इंसान को और हैवानात से तमीज़ नातिक़ ही थी नातिक़ ही फसल है और फसल का दो जिन्सों में इश्तिराक मुहाल।

इरशाद : यह तमीज़ किस के नज़्दीक है जाहिल फलासफ़ा हुमक़ा के नज़्दीक हर शय नातिक़ है शजर, हजर, दीवार व दर सब नातिक़ हैं नस है। *क़ालू अन्तक़नल्लाहु अल्लज़ी अन्तक़ा कुल्ला शैइन*। आज़ा कहेंगे कि हम को उस अल्लाह ने नातिक़ किया जिसने हर शय को नातिक़ कर दिया और नुसूस का उनके ज़याहिर पर हमल वाजिब बिला

ज़रूरत उन में तावील बातिल व ना मस्मूअ् *इन्ना मिन शैइन इल्ला युसब्बेहु बेहम्देही वलाकिन ला तफ़्क़हूना तस्बीहहुम*। कोई शय ऐसी नहीं कि अल्लाह की तस्बीह व तहमीद न करती हो लेकिन तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते हर शय मुकल्लफ़ है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने और खुदा की तस्बीह के साथ।

अर्ज़ : *कुल्लु क़द अलिमा सलातेही व तस्बीहहू*। से उनका नमाज़ पढ़ना साबित है।

इरशाद : अव्वल तो यह आयत ख़ास परिन्दों और ज़विल-उकूल के बाब में है सबाक़ आयत है। *अलम तरा अन्नल्लाहा युसब्बेहु लहू मन फ़िस्समावाते वल-अर्ज़े वत्तैरु सफ़्फ़ातिन। कुल्ला क़द अलिमा सलातहू व तस्बीहहू*। क्या नहीं जो लोग ज़मीन व आसमान में हैं और परिन्दे सफ बांधे हुए अल्लाह की तस्बीह करते हैं हर एक ने अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह को पहचान लिया दूसरे यह कि इस आयत में लफ़ व नश्र मुरत्तब माना जाए कि *मन फ़िस्समावाते वल-अर्ज़*। ने अपनी नमाज़ को जान लिया और परिन्दों ने अपनी तस्बीह को तीसरे यह कि अगर इस आयत को आम रखा जाए तो अज़ क़बील अतफ़ आम अलल-ख़ास हो जाएगा जमादात नबातात की नमाज़ वही उनका ईमान व तस्बीह है।

(फिर फरमाया) उनमें माद्दए मअ्सियत भी है उनके लाइक़ जो सज़ा होती है वह उनको दी जाती है अह्ले कश्फ फरमाते हैं तमाम जानवर तस्बीह करते हैं जब तस्बीह छोड़ देते हैं उसी वक़्त उनको मौत आती है हर पता तस्बीह करता है जिस वक़्त तस्बीह से ग़फ़्लत करता है उसी वक़्त दरख़्त से जुदा हो कर गिर पड़ता है जब मज्मा हुआ कुफ़्फ़ार का मदीना तैयबा पर कि इस्लाम का क़लअ् क़ुमअ् कर दें ग़ज़्ब-ए-अहज़ाब का वाक़या है रब अज़्ज़ा व जल्ला ने मदद फरमाना चाही अपने हबीब की शुमाली हुआ को हुक्म हुआ जा और काफिरों को नीस्त व नाबूद कर दे उस ने कहा *अल-हलाइलु ला यख़रुजना बिल्लैले*। बेबियां रात को बाहर नहीं निकलतीं। *फ़अक़ामहल्लाहु तआला* तो अल्लाह तआला ने उसको बांझ कर दिया इसी वजह से शुमाली हुआ से कभी पानी नहीं बरसता फिर सबा (यानी परवाई) से फरमाया *फ़क़ालत समेअ्ना व अतअ्ना* तो उसने अर्ज़ किया हम ने सुना और

इताअत की वह गई और कुफ़्फ़ार को वरबाद करना शुरू किया सिर्फ़ एक ख़न्दक़ दर्मियान थी उस पर मुसलमान थे उस पार कुफ़्फ़ार उधर सुवह तक चिराग़ जलते रहे और दूसरी तरफ़ ऊंट वारह-वारह कोस पर गिरे तो परवाई को यह नेमत दी कि वारिश उसी के साथ होती है फिर फरमाया एक-एक रूहानियत तो हर-हर नवात हर-हर जमाद से मुतअल्लिक़ है उसे ख़्वाह उसकी रूह कहा जाए या और कुछ वही मुकल्लफ़ है ईमान व तस्वीह के साथ हदीस में है। *मा मिन शैइन इल्ला व यअ्लमु इन्नी रसूलुल्लाह इल्ला मरदतल-जिन्नि वल-इन्सा*। कोई शय ऐसी नहीं जो मुझ को खुदा का रसूल न जानती हो सिवा सरकश जिन्न और इंसानों के।

अर्ज़ : फिर इंसान और दीगर हैवानात में मावेहिल-इम्तियाज़ किया है।

इरशाद . अक़्ल है और वह तकालीफ़े शरईया जो रखी गई हैं उस पर और वह अमानत है जिसको उठा लिया इंसान ने -

वेशक हम ने अमानत पेश फरमाई आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उस से डर गये और आदमी ने उठा ली वेशक वह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला वड़ा नादान है।

अर्ज़ : हुज़ूरे वाला वह अमानत क्या थी।

इरशाद : उस में इख़्तिलाफ़ है उलमा फरमाते हैं वह इश्क़े इलाही है (फिर वयान साविक़ की तरफ़ तवज्जोह फरमाई फरमाया) उलमा फरमाते हैं जो उनके सेमअ् व इद्राक पर ईमान न लाए उसके ईमान में नक़्स है यह सव ईमान लाए हैं हुज़ूर पर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) कोई चीज़ ऐसी नहीं यहां तक कि मस्नूआते इंसानिया जैसे (अपनी घड़ी और डिविया की तरफ़ इशारा करके फरमाया यह घड़ी यह डिविया कि उनको इंसान ने वनाया है मगर रोज़े अज़ल सवसे अहद लिया गया था कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान लाओ तो अगर फहम व इद्राक न था तो यह अहद कैसा कुरआने अज़ीम में है।) *फ़क़ाला लहा वलिल-अर्ज़े इतया तौअन और करहन। क़ालता आतैना ताएईना*। फरमाया आओ तुम खुशी से या मज्बूरन। (कि चाहते न थे मगर मज्बूर हो कर चले आए) तो उन्होंने कहा कि हम खुशी से आए जिस तरह तुम्हारा वदन नहीं समझता वह रूह

समझती है जो इस वदन से मुतअल्लिक़ है इसी तरह वह अज्साम भी सुनने समझने वाले नहीं वल्कि वह रूहानियतें जो उन से मुतअल्लिक़ हैं।

अर्ज़ : तो फिर यह तक़्सीमे मौजूदात दुनिया की हैवानात नवातात जमादात की तरफ़ ग़लत ठेहरेगी।

इरशाद : हां यह ज़ाहिर वीनों की तक़्सीम है और ज़ाहिर नज़र में यह तक़्सीम सही भी है मगर नज़र दक़ीक़ में नहीं इब्तिदाए इस्लाम में कुफ़्फ़ार दुशमन सख़्त थे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लिए जा रहे थे राह में एक पहाड़ पर तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाया पहाड़ से आवाज़ आई हुज़ूर मुझ पर न तशरीफ़ लाएं कि मुझ पर कोई जगह अमन की नहीं मुझे ख़ौफ़ है कि अगर कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर को मुझ पर पा लिया और ईज़ा दी तो अल्लाह मुझ पर वह सख़्त अज़ाव नाज़िल करेगा कि कभी न नाज़िल किया होगा सामने दूसरा पहाड़ था उस ने आवाज़ दी। *इला या रसूलुल्लाह* या रसूलुल्लाह हुज़ूर मेरी तरफ़ तशरीफ़ लाएं सरकार उस पर तशरीफ़ ले गए तो अगर इल्म व इद्राक व नुत्क़ न था तो क्यों कर ऐसा हुआ जब आयते करीमा नाज़िल हुई *वक़ूदुहन्नासु वल-हिजारते*। जहन्नम का ईधन आदमी और पत्थर हैं वल-अयाज़ विल्लाह तआला पहाड़ों ने रोना शुरू किया यह आंसू हैं दरिया जो वह गये हैं (फिर फरमाया) रुजूअ् व खुशूअ् व खुज़ूअ् आम है तमाम हैवानात व नवातात व जमादात को *या जिवालु औवी मअ्हू वत्तैरा। वन्नालहू अल-हदीद*। दाऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के लिए लोहे का नर्म हो जाना उसी के हुक्म से था महज़ इराद-ए-अल्लाह से मोम हो जाता था जैसे ठन्डा हो जाना आग का इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर फरमाया *या नारेकूनी वरद व सलामन अला इब्राहीम*। ऐ आग ठन्डी और सलामती हो जा इब्राहीम पर या नारे आम फरमाया था जितनी आगें थीं दुनिया की सव ठन्डी हो गईं रूए ज़मीन पर कहीं आग का नाम व निशान न रहा और यह आग तो ऐसी ठन्डी हो गई कि उलमा फरमाते हैं अगर सलामन न फरमाता तो इतनी ठन्डी हो जाती कि उसकी ठन्डक ईज़ा देती कई कोस के गर्द में आग थी कोई उसके क़रीव में न जा सकता था अव फ़िक्र हुई कि उनको डालेंगे क्योंकर शैतान मल्ऊन आया और गोफन वनाना सिखाया

कि इस तरह का बना कर उसमें इब्राहीम (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) को बिठा कर फेंक दो जब आपको गोफन में बिठा कर फेंका आप आग की महाज़ात पर आए जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम हाज़िर हुए अर्ज़ की अलका हाजतु इब्राहीम। कोई हाजत है फरमाया। अमा मिन्का फला है तो मगर तुम से नहीं अर्ज़ की तू जिस से है उसी से कहिए फरमाया अल्लमहू बहाली कफानी अन सुवाली। वह खुद जानता है अर्ज़ की ज़रूरत नहीं। कुलना या नारेकूनी बरदन व सलामा अला इब्राहीम।

अर्ज़ : यह सही है कि हैवानात मिट्टी हो जाएंगे तो उनकी अरवाह कहां जाएंगी।

इरशाद : मिट्टी हो जाएंगी यह तो साबित है आगे कुछ न फरमाया शरअ् ने, जो हैवानात मूज़ी हैं वह दोज़ख़ में काफिरों को अज़ाब देने के लिए जाएंगे उनको खुद कोई तक्लीफ़ न होगी जिस तरह फ़रिशतगाने अज़ाब को खुद कोई तक्लीफ़ न होगी और अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता बलअम बाऊर की शक्ल में जन्नत में जाएगा और बलअम उस कुत्ते की शक्ल हो कर जहन्नम में जाएगा और नाक़ा सालेह अलैहिस्सलातु वस्सलाम और नाक़ा अज़बा जन्नत में जाएंगे बाक़ी हैवानात मिट्टी कर दिए जाएंगे उनको मिट्टी होता देख कर कुफ़्फ़ार कहेंगे। या लैतनी कुन्ता तुराबा। काश मैं भी (उन्हीं की मानिन्द) मिट्टी हो जाता।)

अर्ज़ : क्या हुज़ूर जन्नत में जिन्नात में न जाएंगे।

इरशाद : एक क़ौल यह भी है कि जन्नत के आस पास मकानों में रहेंगे जन्नत में सैर को आया करेंगे। (फिर फरमाया) जन्नत तो जागीर है आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उनकी औलाद में तक़सीम होगी।

❖❖❖

एतराज़ व जवाब

वाक़्या हकीम बरकात अहमद मरहूम

हिस्सा दोम

अल्हम्दु लिल्लाह! यह जनाज़-ए-मुबारका मैंने पढ़ा।

इस इबारत का हासिल सिर्फ़ यह है कि आला हज़रत फाज़िले बरैलवी ने एक मक़्बूल बारगाहे रिसालत हकीमे बरकात अहमद साहब मरहूम की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने पर मसर्रत का इज़्हार किया और हम्द बारी बजाए लाए न यह कि आला हज़रत ने इस ख़्वाब की बिना पर जो मौलाना बरकात अहमद साहब के बारे में किसी खुदा रसीदा ने देखा था खुद को हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इमाम तसव्वुर कर लिया और उस पर फ़ख़्र किया यह मुख़ालिफ़ीन का इफ़्तरा और महज़ बकवास है उस पर अल-मल्फ़ूज़ की इबारत का कोई लफ़्ज़ दलालत नहीं करता।

हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अपने किसी उम्मती पर करम फरमाते हुए उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना कोई बईद नहीं लेकिन यह लाज़िम नहीं कि यह नमाज़े जनाज़ा ज़ाहिरी नमाज़े जनाज़ा की जमाअत में शामिल हो कर ही अदा की जाए और अगर बिल-फ़र्ज़ साथ भी हो तो क्या इस्तेहाला किया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी हयाते ज़ाहिरी में हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की इक़्तिदा में नमाज़ें अदा नहीं फरमाईं।

यहां यह भी साबित हो गया कि इमाम का मोम से न अफ़्ज़ल होना ज़रूरी है न तसावी और यह कि नबी ग़ैर नबी की इक़्तिदा में नमाज़ अदा कर सकता है अल-ग़रज़ मुख़ालेफ़ीन का एतराज़ बिल्कुल लचर है।

❖❖❖

एतराज़ व जवाब
वाक़्या अब्दुर्रहमान क़ारी

हिस्सा दोम

यहां देवबन्दी उलमा यह एतराज़ करते हैं कि अब्दुर्रहमान क़ारी सहाबी या ताबई थे। आला हज़रत ने उन्हें काफ़िर कह दिया लेकिन बावजूद पैहम मुतालया के आज तक यह न साबित कर सके कि अब्दुर्रहमान क़ारी कोई सहाबी या ताबई थे फरेब देने के लिए अब्दुर्रहमान इब्ने अब्दुल-क़ारी का नाम पेश करते हैं जो बक़ौल अक्सर ताबई और बक़ौल वाक़ेदी उन सहाबा में से हैं जो हुज़ूर के ज़माना में पैदा हुए मगर उन्होंने न हुज़ूर से कुछ सुना न रिवायत किया कुजा अब्दुर्रहमान क़ारी जिस की बग़ावत व सरकशी का तज़्किरा करते हुए आला हज़रत ने उसके कुफ़्र की सराहत की है और कुजा अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल-क़ारी अदावत में क़ारी और अब्दुल-क़ारी का फ़र्क़ भी सूझा मज़ीद यह कि अब्दुर्रहमान इब्ने अब्दुल-क़ारी जो इन्दल-अक्सर ताबई और वाक़ेदी के क़ौल के बमूजिब सहाबी हैं उनकी पैदाइश ६ हिज. में हुई और जो वाक़्या आला हज़रत ने अब्दुर्रहमान क़ारी का ज़िक्र किया है वह मुहर्रम ७ हिज. का है और वह अब्दुर्रहमान उसी मौक़ा पर क़त्ल हुआ तो तारीख़ से भी साबित हुआ कि वह अब्दुर्रहमान और है और यह दूसरे हैं।

❖❖❖

मस्अला हिफ़ाज़ते कुरआन
और उलमा-ए-वहाबिया के झूठे इल्ज़ामात

साइल ने कुरआन पाक के *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। होने का दवाम साबित करने के लिए यह दलील पेश की कि अल्लाह तआला ने कुरआन पाक के अल्फ़ाज़ की हिफ़ाज़त का वादा फरमाया है *इन्ना लहू लहाफ़िज़ून* और जब अल्फ़ाज़ महफ़ूज़ तो मआनी भी महफ़ूज़ इसलिए मआनी अल्फ़ाज़ से जुदा नहीं हो सकते और मआनी की सिफ़त है। *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। होना तो यह सिफ़त भी मआनी के साथ महफ़ूज़ लिहाज़ा साबित हुआ कि *इन्ना लहू लहाफ़िज़ून*। ही से कुरआन पाक के *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। होने का दवाम साबित है बअल्फ़ाज़ दीगर साइल के गुमान में अल्फ़ाज़ की हिफ़ाज़त मआनी की हिफ़ाज़त को मुसतल्ज़िम है और मआनी की हिफ़ाज़त *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। की हिफ़ाज़त और चूंकि लाज़िम का लाज़िम लाज़िम होता है लिहाज़ा अल्फ़ाज़ की हिफ़ाज़त को *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। की हिफ़ाज़त लाज़िम है जब अल्फ़ाज़ महफ़ूज़ तो तिबयान होना भी महफ़ूज़।

साइल की दलील का पहला मुक़द्दमा यानी अल्फ़ाज़ की हिफ़ाज़त मआनी की हिफ़ाज़त को मुसतल्ज़िम है दुरुस्त था इसलिए कि मआनी अल्फ़ाज़ से जुदा नहीं हो सकते लेकिन दूसरा मुक़द्दमा कि मआनी की हिफ़ाज़त मआनी की सिफ़त, *तिबयानन लेकुल्ले शैइन।* की हिफ़ाज़त को मुसतल्ज़िम है दुरुस्त नहीं इसलिए कि मआनी का *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। होना उन मआनी के समझने पर मौक़ूफ़ है मआनी के सिर्फ़ महफ़ूज़ होने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह समझ भी लिए जाएं वरना लाज़िम आएगा कि अल्फ़ाज़ के इल्म में आते ही तमाम मआनी का भी इल्म हो जाए तालीमे इलाही की ज़रूरत न रहे हालांकि ऐसा नहीं है यानी अल्फ़ाज़ कुरआन के इल्म के बाद मआनी मुराद जानने के लिए बयाने इलाही का मुहताज है जैसा कि इस आयत से ज़ाहिर है। *सुम्मा इन्ना अलैना बयानहू।* यानी कुरआन पाक को आपके सीने में जमा करने के बाद हम पर उसका बयान है तो वाज़ेह तौर पर साबित हुआ कि अल्फ़ाज़ कुरआन की महफ़ूज़ी और *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। होने की महफ़ूज़ी के दर्मियान मुलाज़िमा नहीं और जब मुलाज़िमा नहीं तो इस दलील से साइल का मद्दुआ यानी कुरआन के *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*।

होने का दवाम साबित नहीं यही बात आला हज़रत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब में इफ़ादा फरमाई है फरमाते हैं कुरआन के अल्फ़ाज़ की हिफ़ाज़त का वादा फरमाया गया है अगरचे मआनी उन अल्फ़ाज़ के साथ हैं लेकिन उन मआनी का इल्म में होना क्या ज़रूरी नबी कलामे इलाही के समझने में बयाने इलाही का मुहताज होता है। *सुम्मा इन्ना अलैना बयानहू*। ज़ाहिर है कि आला हज़रत अज़ीमुल-बरकत ने जवाब मज़्कूर में न अल्फ़ाज़ कुरआन के महफ़ूज़ होने का इंकार किया है न मआनी के महफ़ूज़ होने का न *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। होने का बल्कि साइल की पेश करदह दलील से *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। होने के दवाम के सुबूत का इंकार किया है जो अक़्ल व नक़्ल की रौशनी में दुरुस्त है अक़्लन तो यूं कि मुलाज़िमा न होना वाज़ेह है और नक़्लन खुद इसी आयत से साबित है जो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह ने नक़्ल फरमाई है। *फ़लिल्लाहुल- हुज्जतुस्सामिया*। रहा उसके बाद यह फरमाना और मुम्किन है कि बाज़ आयात का निस्यान हुआ हो दलील मज़्कूर से मद्दुआ के साबित न होने पर दूसरी तंबीह है यानी जब बाज़ आयात का निस्यान मुम्किन हैं और मआनी अल्फ़ाज़ के साथ हैं तो मआनी का निस्यान भी मुम्किन तो *तिबयानन लेकुल्ले शैइन*। के दवाम का इस आयत से कैसे इस्बात होगा ज़ाहिर है कि उस में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की कोई तौहीन नहीं न कुरआन के महफ़ूज़ होने का इंकार है बल्कि निस्यान होना तो खुद कुरआन से साबित है अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है *मा नन्सख़ा मिन आयतिन औ नुनसेहा नाते बेख़ैरिन मिनहा और मिस्लेहा*। जब कोई आयत हम मन्सूख़ फरमाएं या भुला दें तो उस से बेहतर या उस जैसी ले आएंगे रहा यह कि महफ़ूज़ होने का क्या मतलब है तो वह यह है कि नस्ख़ व इंसा के बाद जो बचा, जो हुज़ूर से मुतवातिर मन्कूल है जिसको हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने फिर हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने जमा फरमाया और *मा बैनद्दफ़तैन*। आज तक मौजूद है वह हर क़िस्म की तब्दीली और तग़ैयुर से महफ़ूज़ है और रहेगा तो मालूम हुआ कि आला हज़रत के कलाम का यह हिस्सा भी पहले की तरह इरशादे कुरआनी के मुताबिक़ है और मुख़ालेफ़ीन के एतराज़ात महज़ इल्ज़ाम तराशी और बुहतान पर मबनी हैं।

(अल-मल्फ़ूज़ हिस्सा सोम : स० 8-9)

❖❖❖

अंबिया-ए-किराम की तौहीन के इल्ज़ाम का दन्दान शिकन जवाब

आला हज़रत फ़ाज़िल बरैलवी कुद्दिसा सिर्रुहू ने इस रिवायत को हज़रत अल्लामा अब्दुल-बाक़ी ज़रक़ानी रहमतुल्लाह अलैह से नक़ल किया है अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम अपनी कुबूर मुतह्हरा में हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियवी के साथ रौनक़ अफरोज़ हैं। बल्कि सैयदी मुहम्मद बिन अब्दुल-बाक़ी ज़रक़ानी फरमाते हैं अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की कुबूरे मुतह्हरा में अज़्वाजे मुतह्हरात पेश की जाती हैं। वह उनके साथ शब बाशी फरमाते हैं।

उस पर मुख़ालिफीन ख़्वाह मख़्वाह वावैला करते हैं कि उस में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तौहीन की गई है बात दरअसल यह है कि वहाबियों ने और उनके उलमा ने अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शाने अक़्दस में जो गुस्ताख़ियां और तौहीनें की हैं जिनकी बिना पर उनके ऊपर हुक्मे कुफ़्र आयद किया गया है उन कुफ़्रियात के जवाबात तो बन न पड़े परेशान हो कर अपनी पुरानी आदत और बेबुनियाद और ग़लत प्रोपेगन्डे के साथ अब यह कोशिश कर रहे हैं किसी तरह आला हज़रत के कलाम में भी कोई ऐसी बात मिल जाए जिसकी बुनियाद पर तौहीने खुदा व रसूल का मुर्तकिब ठहरा का हुक्मे कुफ़्र आयद किया जा सके मगर उनकी सई, सई ला हासिल व नाकाम रही और इन्शाअल्लाह तआला वह अपने मुआनेदाना मिशन में हरगिज़ कामयाब न हो सकेंगे।

अव्वलन तो यूं कि यह आला हज़रत कुद्दिसा सिर्रुहू का अपना क़ौल नहीं बल्कि हज़रत अल्लामा अब्दुल-बाक़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल है जो ज़रक़ानी जिल्द सादिस, सफ़ा १६६ पर मौजूद है।

तरजमा : सुबकी ने तबक़ात में इब्ने फौरक से नक़्ल किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी क़ब्र शरीफ़ में हक़ीक़ी हयात के साथ बिला शाइबा मजाज़ ज़िन्दा हैं उसमें अज़ान व इक़ामत के साथ नमाज़ अदा फरमाते हैं इब्ने अक़ील ने कहा यहां तक कि

अज़्वाजे मुतह्हरात के साथ मुबाशिरत भी फरमाते हैं।

मगर वहाबियों में हिम्मत हो तो अल्लामा ज़रक़ानी इमाम सुबकी और इब्ने अक़ील पर कुफ़्र का फतवा लगाएं जिन्होंने इस रिवायत को नक़ल किया और अपनी किताबों में जगह दी सानियन यह कि अंबिया का अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात से शब बाशी करना कोई ऐब या बुरी बात नहीं है कि जिसकी बिना पर उसको अंबिया की तौहीन क़रार दिया जाए।

एक मुहमल एतराज़ का मसकत जवाब

इस हिकायत पर जो आला हज़रत ने बाद शुमाली की नाफरमानी के बारे में पेश की है वहाबियों ने यह एतराज़ किया है कि आला हज़रत ने मआज़ल्लाह लिख दिया कि बाद शुमाली पर अल्लाह तआला का हुक्म नहीं चला।

दर्ज ज़ैल इबारत आपके सामने मौजूद है उस में कहीं यह नहीं है कि बाद शुमाली पर अल्लाह का हुक्म नहीं चला यह लिखा है कि।

बाद शुमाली को हुक्म हुआ कि जा काफिरों को नीस्त व नाबूद कर दे उस ने कहा *अल-हराइरू ला यख़रुजना बिल्लैले*। बीवियाँ रात को नहीं निकलतीं जिसका मफाद यह है कि बाद शुमाली को हुक्म हुआ उस ने नहीं, नाफरमानी की तो अल्लाह ने उसको नाफरमानी की सज़ा दी हुक्म न मानना और इताअत न करना और बात है और न चलना और बात है देखिए अल्लाह तआला ने ताज़ीमे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हुक्म दिया। *व तुअज़्ज़ेरूहु व तुवक़्क़ेरूहू*। उनकी ताज़ीम व तौक़ीर करो। वहाबियों ने उसकी तामील नहीं की और वह ताज़ीम नहीं करते यूंही कहा जाएगा वहाबियों ने खुदा के हुक्म की नाफ़रमानी की न यह कि उन पर खुदा का हुक्म नहीं चला जैसा कि शैतान को हुक्म हुआ था कि सज्दा करे उस ने इंकार किया नाफरमानी की तो उसका मतलब यह नहीं हो सकता कि उस पर खुदा का हुक्म नहीं चला।

ज़ालिमों ने इबादते का मफ़्हूम ही बदल दिया। (अल-मल्फ़ूज़, हिस्सा चहारुम, स० ७८)

❖❖❖

मस्अला शहादते अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर वहाबिया के एतराज़ात का रद्दे बलीग़

आला हज़रत के इस इरशाद पर कि रसूलों में से कौन शहीद किया गया अंबिया अल्बत्ता शहीद किए गये देवबन्दियों को एतराज़ है कि आला हज़रत ने शहादते रुसुल का इंकार करके मआज़ल्लाह कुरआन का इंकार किया है इसलिए कि कुरआन में शहादते रुसुल का सराहतन ज़िक्र है जैसा कि सूरः बक़रह की आयत। अफ़कुल्लमा जाअकुम रसूलुन बेमा ला तहवा अंफुसकुम अस्तक्बरतुम फ़फ़रीक़न कज़्ज़बतुम व फ़रीक़न तक़्तुलून। वग़ैरह आयात से ज़ाहिर है वहाबियों का यह एतराज़ भी मुग़ालता के सिवा कुछ नहीं कि आला हज़रत ने रसूल बामानी साहिबे शरीअ़ते जदीदा की शहादत से इंकार किया है कि यही मानी मुहावरात उलमा में मारूफ़ हैं और उस मानी के एतबार से नबी आम और रसूल ख़ास है यानी हर रसूल नबी है।

लेकिन हर नबी रसूल नहीं इसलिए कि नबी वह इंसान है जो तबलीग़े अहकाम के लिए मबऊस हुआ हो आम अर्ज़ी कि शरीअ़ते जदीदा लाया हो या न लाया हो और रसूल वह है जो तबलीग़े अहकाम के लिए हुआ हो और शरीअ़ते जदीदा भी रखता हो आला हज़रत के इरशाद में उस मानी के मुराद होने पर क़रीना यह है कि आपने रसूल को नबी के मुक़ाबले में इस्तेमाल किया और जिस आयत में रसूलों की शहादत का तज़्किरा है अंबिया ही मुराद हैं इसलिए कि उसी रुकूअ़ में उन्हें यहूद के बारे में फरमाया गया।

कुल फ़लम तक़्तुलूना अंबिया अल्लाहे मिन क़बला इन कुन्तुम मुमिनीन।

तरजमा : आप फरमा दीजिए कि तुम अल्लाह के नबियों को क्यों क़त्ल करते हो अगर मोमिन हो।

इन्नल-कुरआन यफ़्सुरू बअ्ज़ुहू बअ्ज़न। कुरआन का बाज़, बाज़ की तफ़्सीर करता है तो कुरआन ही से साबित हो गया कि आयत में रुसुल से मुराद अंबिया ही हैं और आला हज़रत का यह फरमाना कि रसूलों में से कौन सा शहीद किया गया, अंबिया अल्बत्ता शहीद किए गये कुरआन के ऐन मुताबिक़ है चुनांचे तफ़्सीरों से भी उसकी ताईद होती है जैसा कि "अत्तहक़ीक़ात" मुसन्निफ़ा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरीफुल-हक़ साहब में तफ़्सील से मज़्कूर है नीज़ तफ़्सीरों में उन आयात के तहत हज़रत ज़करिया व यहिया अलैहस्सलाम के अस्माए गिरामी पेश किए गये जो बिल-इत्तेफ़ाक़ नबी हैं इस से साबित हो गया कि आयात में जहाँ-जहाँ शहादते रुसुल का तज़्किरा है अंबिया ही मुराद हैं।

(बहवाला अल-मल्फूज़ जिस्सा चहारुम, स० २७)

❖❖❖